विनोबा साहित्य

20

द्वितीय भाग

शेषामृतम्

2001

परंधाम प्रकाशन, पवनार, वर्धा

बाबा – असर हो, न हो। अशुद्ध चित्त ही असर डालने की सोचता है। सूक्ष्म कर्मयोग सब साधकों के लिए नहीं है। पूर्वजन्म में साधना की हो, वही वह कर सकता है। *

प्रश्न – थोड़ा अहंकार है। धीरे-धीरे कम होगा ऐसा विश्वास है।

बाबा – जब लगता है थोड़ा है, तब है ज्यादा। खुदको कम लगता है। नदी खतरे की सीमा से एक इंच भी ज्यादा हो, तो सावधान होना चाहिए। नहीं है, माने थोड़ा है। थोड़ा है माने ज्यादा है। अंदर तो है ही। जब दीख पड़े, तो ज्यादा है, ऊपर आ गया है। *

प्रश्न – एकांतवास से आध्यात्मिक भूख पूरी होगी? पर उसमें तल्लीनता बढ़ने से समाज में शायद लौटना न हो सके।

बाबा – एकांतवास के लिए कहीं बाहर नहीं जाना है। निद्रा ही पर्याप्त है। रात को नौ बजे सोना। रात को एक से दो बजे लेटकर या बैठकर ध्यान। चित्त रहेगा और आप रहेंगे, तीसरा नहीं रहेगा। सोने के बाद बोलना नहीं। यह कोरा भास है कि कहीं बाहर जाने से आध्यात्मिक भूख पूरी होगी। पेट में भूख नहीं रहे, शरीर गिर जाने की सुध नहीं रहे, तो बात अलग है। भगवान ने भूख दी यह अच्छा किया, समाज में लौटना पड़ेगा। खाना है, तो सेवा भी करनी है, खेती आदि। *

प्रश्न – आश्रम में विदेशियों को धूम्रपान और अनफर्टाइल अंडे लेने की छूट दे सकते हैं?

बाबा – चाय-काफी ले सकते हैं। धूम्रपान नहीं। इन दिनों सिगरेट की हर डिब्बी पर "जीवन के लिए खतरनाक" लिखा जाता है। आप प्राणायाम-ध्यान करेंगे तो उसका धुंआ सीधे आपके फेफड़ों में जायेगा। धूम्रपान में शराब से अधिक दोष है। थोड़ी शराब दवा की तरह उतना नुकसान नहीं करती, जितना बीड़ी-सिगरेट। अनफर्टाइल अंडे में हिंसा तो नहीं है, पर शतगुणी कामवासना भरी पड़ी है। *

प्रश्न – मन कैसे मौन हो?

बाबा – वाणी के मौन से मन का मौन प्रायः नहीं सधता। उपवास करते समय जितना संयम चाहिए, उससे अधिक उपवास छोड़ने के बाद चाहिए। दुगुना खाने की इच्छा होती है। उसी प्रकार मौन काल के बाद

प्रश्न – वाल्मीकि जैसे महाकवि को उर्मिला का इतना विस्मरण क्यों हुआ?

बाबा – इस प्रश्न की चर्चा शायद बंगाल से शुरू हुई है। 'विस्मृता-उर्मिला' नाम का एक लेख गुरुदेव ने लिखा था। लक्ष्मण मां के पास गये, परंतु उर्मिला से वे नहीं मिले। यह ठीक है कि वे संयमी थे, लेकिन उर्मिला का विस्मरण नहीं होना चाहिए था। शायद ऐसे भाव उस लेख के थे।

इसके बाद कुछ कवियों ने उस प्रसंग का वर्णन भी किया है। अगर उस वर्णन में अश्लीलता नहीं है, तो मैं उसमें दोष नहीं देखता। लेकिन वाल्मीकि जैसे कवि, जिनकी बराबरी का कवि और नहीं, इस प्रसंग का जरा भी जिक्र नहीं करते, तो क्या सचमुच वह प्रसंग हुआ ही नहीं? ऐसा नहीं है। लक्ष्मण उर्मिला से जरूर मिले होंगे, लेकिन कवि ने उर्मिला की मुलाकात को महत्त्व देने के बजाय लक्ष्मण की अनासक्ति और उसकी भक्ति तथा निष्ठा को महत्त्व देना उचित समझा। लक्ष्मण का वैराग्य बताने की दृष्टि से ही शायद कवि ने उर्मिला के साथ की भेंट का वर्णन नहीं किया। लक्ष्मण माता के पास भी गया, तो वहां से भी वह मानों छूटकर आया है। अगर माता उसे रोकती भी तो वह नहीं रुकता। वह तो राम का भक्त था। लेकिन मातृप्रेम कितना अद्भुत था, यह बताने के लिए कवि ने उस प्रसंग का वर्णन किया है।

मेरा मानना है कि उर्मिला-लक्ष्मण मुलाकात के प्रसंग का वर्णन न करके भी वाल्मीकि ने उसका वर्णन कर दिया है। उस अभाव में भी वाल्मीकि की बहुत भारी कला प्रकट होती है। *

प्रश्न – मुक्त पुरुष और अवतार में क्या फर्क है?

बाबा – (अ) वासना है तब तक मुक्ति नहीं, तब तक जन्म रहेगा। (आ) वासना खत्म होने के बाद मुक्ति होगी, फिर जन्म नहीं। (इ) मुक्त पुरुष भी, ईश्वरी आदेश से विश्वोद्धारार्थ आ सकेगा, उसको उसका 'अवतरण' कहेंगे। (ई) साधुपरित्राणादि उद्देश्य से ईश्वर स्वयमेव साकार होगा; यह 'अवतार' की कल्पना है। इसमें वह जगद्व्यापार में हिस्सा लेगा, ऐसी अपेक्षा है।

(इ)वाला जगद्व्यापार में हिस्सा लेगा नहीं। अलावा –

(उ) जिस साधक की आरोहणक्रम से यह आखिरी देह होगी, उसके

(ऊ) निरहंकारी सामान्य साधक के भी जीवन में, थोडे समय के लिए, ईश्वर अपना संकल्प जोड़ सकता है। ऐसे मनुष्य को 'प्रेषित' कह सकेंगे।*

प्रश्न – परस्पर दिल खोलने की चाभी कौन-सी?

बाबा – 1. कुछ सिखाना 2. कुछ सीखना 3. सेवा करना 4. सेवा लेना 5. सहचर्चा। *

प्रश्न – सांसारिक कर्तव्य अदा करते हुए, प्रतिकूल वातावरण में आत्मोन्नति कैसे करें?

बाबा – सांसारिक कर्तव्य नाम का कोई भी कर्तव्य नहीं, ऐसा अपने मन में पक्का निश्चय करना होगा। परमेश्वर-दर्शन के लिए नित्य प्रयत्न ही कर्तव्य है। उसके लिए साधनरूप शरीर को खिलाना पड़ता है तो उस कर्जे को चुकाने के लिए समाज की थोड़ी सेवा करें। भगवान की भक्ति, आत्मसाक्षात्कार, अहंकार मिटाने की कोशिश करना ही फर्ज है, बाकी सांसारिक फर्ज कोई नहीं। *

प्रश्न – आत्मसमर्पण का पहला कदम कौन-सा?

बाबा – भगवान इतने भोले हैं कि पत्र-पुष्प से भी संतुष्ट हो जाते हैं। लेकिन आध्यात्मिक दृष्टि से उत्तर देना हो तो, पहले इंद्रियां भगवान को दें, मन चाहे भटकता हो। जो भी देखें वहां भगवान को देखें, जो भी सुनें वहां भगवान को सुनें। पहले इंद्रियां देना, फिर मन-बुद्धि आयेंगे। फिर उत्तरोत्तर अंतर में जाते-जाते समर्पण करना। *

प्रश्न – गरीबी हटाने के लिए विदेश से पैसा लें?

बाबा – गरीबी हटाने के लिए पैसा नहीं, श्रम चाहिए। *

प्रश्न – आपका घर कहां है?

बाबा – इस सामने बहनेवाली नदी का घर कहां है? *

प्रश्न – गुरुकृपा और ईश्वरकृपा का फर्क?

बाबा – परमात्मा पापी का उद्धार करता है। पापी गुरुकृपापात्र नहीं होता। गुरुकृपापात्र तो वह होता है जो स्वच्छ, निर्मल हो। *

प्रश्न – पारतंत्र्य को कैसे हटाया जाये?

बाबा – लोग 'पर' कायम रखते हैं और 'तंत्र' हटाने की कोशिश करते हैं, तो पारतंत्र्य कायम रहता है। 'पर' को खत्म करो तो पारतंत्र्य खत्म ही

प्रश्न – आप इतने दुबले क्यों?

बाबा – अपने शरीर की मिट्टी कम किये बगैर मुझे मिट्टी (भूदान) कैसे मिलेगी? *

प्रश्न – जीवित समाधि लेना क्या आत्महत्या नहीं?

बाबा – जीवित समाधि के समय अगर चित्त शांत है तो वह आत्महत्या नहीं। *

प्रश्न – भारत की उन्नति के लिए मिलिटरी क्या करे? (– एक सिक्ख अफसर)।

बाबा – **निरभउ निरवैरु** – सबको निर्भय और निर्वैर बनाना मिलिटरी का काम है। *

प्रश्न – अच्छाई अदृश्य क्यों होती है?

बाबा – बुराई दृश्य होती है इसलिए। *

प्रश्न – आप क्षेत्र-संन्यास लेकर पवनार में बैठ गये तो अब यात्रा नहीं चलेगी?

बाबा – मेरी यात्रा भूलोक से ब्रह्मलोक तक चलती ही रहती है। *

प्रश्न – संतकार्य में कालसापेक्ष भाग कितना होता है और कालनिरपेक्ष कितना होता है?

बाबा – संतों का दर्शन, उनके विचार कालनिरपेक्ष होते हैं और दुनिया में रहते हुए काल को ध्यान में लेकर जो कुछ किया वह कालसापेक्ष होता है। उनका जीवन, चरित्र कालसापेक्ष होता है। उनका दर्शन, विचार कालनिरपेक्ष। *

प्रश्न – एकआध व्यक्ति के प्रति सहज स्नेह पैदा होता है। एकआध व्यक्ति के प्रति द्वेष तो नहीं, पर उससे दो हाथ दूर रहने की इच्छा होती है। क्या यह ठीक है?

बाबा – हम क्या करते हैं? मां को नजदीक जाकर, झुककर प्रणाम करते हैं। गुरु को झुककर पर थोड़ा दूर से प्रणाम करते हैं। और दूसरे लोगों को केवल हाथ जोड़कर प्रणाम करते हैं। मां और गुरु, इन दोनों में भी हमने फरक किया। तो मनुष्य कोई अविवेकी नहीं। किसी को नारायणस्वरूप समझकर उससे दूर रहते हैं, तो वह गलत नहीं माना जायेगा। साधारणतया सभी से दूर ही रहें। लेकिन जहां सेवा का सवाल आयेगा, वहां झट् से

प्रश्न – आप व्याख्यान में अपने को हमेशा थर्ड (तृतीय पुरुष) में क्यों रेफर करते हैं?

बाबा – क्योंकि बाबा 'परसनल' (व्यक्तिगत) नहीं है। 'इम्परसनल' (अव्यक्तिगत) है। 'इम्परसनल' को रेफर (संकेत) करने के लिए कम-से-कम तृतीय पुरुष का उपयोग करना पड़ता है। अगर व्याकरण में 'चौथे पुरुष' की योजना होती, तो बाबा उसका उपयोग करता। *

प्रश्न – करुणा और प्रेम से समाज-परिवर्तन के कार्यक्रम का क्या स्वरूप होगा?

बाबा – 1. सत्ता का विकेंद्रीकरण। नीचे ज्यादा-से-ज्यादा सत्ता, ऊपर कम-से-कम सत्ता। बिल्कुल ऊपर नैतिक सत्ता। 2. सहकारिता, 3. व्यक्ति के विकास के लिए पूरा मौका, 4. समाज के लिए समर्पण बुद्धि, 5. शिक्षा में ज्ञान और काम को जोड़ना। *

प्रश्न – हम क्या हैं, हमारा स्वरूप क्या है, हम कहां से आये हैं और हमें कहां जाना है?

बाबा – जहां हमें जाना है, वह अपने पांव से नहीं जाना है। भगवान खींचकर अपनी ओर ले जानेवाला है। जिसने हमें भेजा, वही हमें जोरों से अपनी तरफ खींच लेगा, इसलिए उसकी चिंता हमें नहीं करनी चाहिए।

हमें अपनी मानसिक तैयारी यह रखनी चाहिए कि यहां हमारी आसक्ति न रहे। यदि यहां के लिए आसक्ति रखेंगे तो जब वह खींचकर ले जायेगा, तब हम दुःखी होंगे। यदि हम आसक्ति नहीं रखेंगे, सेवा करके छूट जायेंगे तो हमें दुःख नहीं होगा। भागवत में आता है – **गृहेषु अतिथिवद् वसन्** – यानी घर में मेहमान के समान रहो। घर में भी हमें आसक्ति और मालिकी की भावना नहीं रखनी चाहिए। चित्त अगर आसक्त है, चिपका हुआ है तो हम ईश्वर की परीक्षा में फेल हैं। जिसका चित्त अनासक्त रहेगा, ईश्वर की सेवा करनी है, यह समझकर काम करता रहेगा, तो बुलावा आने पर खुशी-खुशी, आनंदपूर्वक जायेगा। हर बच्चा जन्म पाता है तब रोता है। पर कम-से-कम, मरते समय रोओ नहीं, हंसते-हंसते जाओ। इसका एकमात्र उपाय है – आसक्ति त्यागकर सेवा करना। *

प्रश्न – जीवन यानी क्या? सत्य क्या है? जीवन का सत्य के साथ क्या

गांधीजी ने जीवन को 'सत्य के प्रयोग' कहा। .मैं सत्य की 'शोध' कहता हूं। प्रयोग विज्ञान का शब्द है। उसमें सत्य का एक-एक अंश हाथ में आता है। समूचा सत्य एकदम प्राप्त नहीं होता।

सत्य, यानी 'है'। संस्कृत में सत्य का अर्थ नैतिक सत्य (मॉरल ट्रुथ) करते हैं। किसी भी चीज की व्याख्या करनी हो तो वह सत्य के आधार पर ही हो सकती है। परंतु परम सत्य (सुप्रीम ट्रुथ) की व्याख्या नहीं हो सकती। जिससे हम अंतरात्मा को पहचान सकते हैं और जिससे अंतरात्मा का समाधान होता है वही सत्य है। जहां अंतरात्मा को असमाधान हो या उसे धक्का लगे तब वह असत्य है। मतलब अंतरात्मा सत्यासत्य का साक्षी है। अनुभूति अलग-अलग हो सकती है। सत्य में समत्व होता है। यह दूसरी पहचान है। सत्य में संतुलन है, समदर्शन है, समाधान है; अंतःसमाधान है। समत्वयुक्त निर्णय में सत्य है।

सत्य कैसे प्राप्त हो? गांधीजी ने कहा कि सत्य अहिंसा से प्राप्त होता है। सत्य नम्रता, तटस्थता और अनाग्रह से प्राप्त होता है, ऐसी मेरी राय है। विज्ञान में अनाग्रह होता है। प्रयोगों में जो सही होगा, वही सिद्ध होगा।

सत्य एक बुनियादी मौलिक गुण है। सत्य सबसे बड़ा नीतिधर्म है। एक तरफ समूचा नीतिशास्त्र और दूसरी तरफ केवल सत्य हो, तो दोनों की तुलना में सत्य का पलड़ा भारी होगा। इसलिए बाकी के सारे नीतिधर्म सत्य की तुलना में गौण हैं। आत्मप्राप्ति के लिए सत्य अत्यंत महत्त्व की चीज है। सत्य यानी केवल वाणी का सत्य नहीं, मनसा-वाचा-कर्मणा सत्य का पालन होना चाहिए। मनुष्य का जीवन सत्य पर खड़ा होगा, तभी उसे आत्मा का दर्शन होगा। परमेश्वर तक पहुंचने का मार्ग सत्य से ही बना हुआ है।

*

प्रश्न – मनुष्य की बुनियादी आवश्यकता क्या है? उसकी पूर्ति कैसे होगी?

बाबा – मनुष्य मुख्यतया सामाजिक प्राणी है, और उससे भी अधिक उसकी अपनी वंशावली है। वंशावली यानी उसके बाप-दादा या पूर्वज नहीं, लेकिन उसका जन्म, पूर्वजन्म, पुनर्जन्म और वह सब, जो उसके जीवन को आकार देता है।

मेरा धर्म है – समाजसेवा करना। मेरे जीवन का अंतिम लक्ष्य है –

बाबा – ऐसा मानने का कारण नहीं। बहुत-से मनुष्यों से जड़ तथा पशु-पक्षी अधिक चेतन हो सकते हैं। यह तो उनके विकास पर निर्भर है। *

प्रश्न – साधारण लोग तो बहुत हंसते-खेलते नजर आते हैं, तो क्या वे 'योगियों से अधिक आनंद में हैं' ऐसा समझना चाहिए?

बाबा – जो लोग इस प्रकार से सदा हंसते-खेलते नजर आते हैं, वे दुःख आने पर इतने दुःखी होते हैं कि जिसका ठिकाना नहीं। इसलिए हमें आनंद या विषाद, दोनों की अति से बचना चाहिए। सच्चा आनंदी तो वही है, जो दुःख में भी आनंद मनाये, बल्कि मनुष्य सुख-दुःख से अपने आत्मा को तटस्थ समझे। तभी वह सच्चे आनंद का अनुभव कर सकता है।

टॉल्स्टॉय ने अपने से छह प्रश्न किये थे और जब तक उनका संतोष-कारक उत्तर नहीं मिल गया, तब तक उनका जीवन दुःखी रहा। उनके प्रश्न थे – 1. मैं किसके लिए जीता हूं? 2. जीवन का उद्देश्य क्या है? 3. जीवन का कारण क्या है? 4. अच्छे और बुरे का भेद क्या अर्थ रखता है? 5. हमें किस प्रकार जीना चाहिए? 6. मृत्यु क्या है? मैं अपनी रक्षा किस प्रकार करूं? इसका उत्तर अंत में उन्होंने यही पाया कि ईश्वर की इच्छा के अनुसार जीवनयापन करना ही मानवजीवन का मुख्य उद्देश्य है और उसकी इच्छा है कि मनुष्य आपस में प्रेमभाव से शांतिपूर्वक रहें। मनुष्यसमाज इसके विपरीत आचरण कर रहा है, अतः दुःखी है। *

प्रश्न – जीवन में रस लेने का क्या अर्थ है?

बाबा – रस तो वह है, जो सनातन तथा एकरस हो। उपनिषद में रस की यही व्याख्या है कि जिससे जीव उत्पन्न होते, कायम रहते तथा जिसमें लीन होते हैं – **रसो वै सः**। अतः हमें भी जीवन और मरण के समय एक समान आनंद में लीन रहना चाहिए। जीवन के प्रत्येक कार्य में, चलते-फिरते, उठते-बैठते, बोलते हुए हमें रसानंद का अनुभव होना चाहिए। तभी हम जीवन का सच्चा रस ले सकेंगे।

प्रश्न – मतलब कि हमें एकरस रहना चाहिए।

बाबा – मगर यह बिना आत्मज्ञान के नहीं हो सकता। यह अवस्था स्थितप्रज्ञ की सुख-दुःखातीत अवस्था है। श्रीकृष्ण भगवान को यह अवस्था प्राप्त थी। जब उन्हें व्याध ने तीर मारा, तब उन्होंने उसका उपकार ही माना

प्रश्न – मानसिक और आत्मिक सुखों में केवल परिमाण का अंतर है, गुण का नहीं, यह बात सही है?

बाबा – दोनों में आकाश-पाताल का अंतर है। प्रकाश और अंधकार के समान दोनों भिन्न हैं। वैसे तो निद्रा में भी एक आनंद है और उपनिषदों ने उसकी तुलना आत्मानंद से कर डाली है। जहां तक दुःखनिवृत्ति का सवाल है, वह आनंद अवश्य है। दुःखनिवृत्ति तो क्लोरोफार्म से भी होती है। आत्मिक सुख के लिए आत्मानुभव की आवश्यकता है। मानसिक सुख-दुःख से परे जाने पर ही यह आनंद मिलता है। आनंद एक स्थायी वस्तु है। वह जीवन में नित्य अनुभव की वस्तु है। आने-जानेवाली अस्थिर चीज नहीं। वह स्थिर-समाधि है। *

प्रश्न – जब आत्मा आनंदरूप है, तब फिर हम दुःख क्यों करते हैं?

बाबा – हम दुःख का अपने ऊपर आरोप कर लेते हैं – अज्ञान और अविवेक के कारण। अपने स्वरूप के ज्ञान के द्वारा ही वह दूर हो सकता है। *

प्रश्न – सौंदर्य, सुगंध तथा आनंददायक वस्तुओं में क्या परमात्मा का रूप अधिक स्पष्ट नहीं होता?

बाबा – सुंदर-असुंदर, सुगंध-दुर्गंध, सुख-दुःख ये सब वस्तुएं सापेक्ष हैं; या तो ईश्वर दोनों में है अथवा दोनों से परे है, वह केवल एक में नहीं रह सकता। सुगंध-दुर्गंध तो हमारी इंद्रियों की मर्यादा के कारण मालूम होती है। कानों से बहुत धीमा या बहुत तेज स्वर, दोनों ही नहीं सुन सकते। फिर इस मर्यादा में ईश्वर कैसे बंध सकता है? वह तो दोनों से परे है, अथवा दोनों में एक समान है। *

प्रश्न – चैतन्य तो केवल मनुष्य ही का गुण है, बाकी प्रकृति को तो जड़ ही समझना चाहिए ना?

बाबा – यह ठीक नहीं है। हमें जागृत चैतन्य और सुप्त चैतन्य, इस प्रकार दो विभाग करने चाहिए। जिन्हें हम जड़ समझते हैं, उनमें भी चैतन्य है। सूर्य, पृथ्वी आदि जो ग्रह जड़ समझे जाते हैं, उनमें भी अंतर्यामी आत्मा या व्यक्तित्व हो सकता है। वृक्षों में भी वट, पीपल या तुलसी में विशेष चैतन्य होना चाहिए। पशुओं में भी गाय की आत्मा विशेष जागृत मानी

प्रश्न – जीवन का उद्देश्य क्या है?

बाबा – जीवन का उद्देश्य है, गुणविकास। भगवान सर्वगुणसंपन्न है। दूध में दूध मिल जाये, इस तरह हमें भी भगवान में मिल जाना है। अपने में जो गुण हैं उनका विकास करना और भगवान के गुणों का ग्रहण करना। गुणग्रहण, गुणवृद्धि, गुणगान यही जीवन का कर्तव्य है। महापुरुषों को याद करके, हम उनके प्रखर गुण का ही अभिवादन करते हैं न? हरिश्चंद्र की सत्यनिष्ठा, भीष्म की प्रतिज्ञा, वसिष्ठ की सौम्यता, विश्वामित्र का पुरुषार्थ। इस तरह, मानवजीवन का उद्देश्य गुणविकास ही है। *

प्रश्न – देह और आत्मा का क्या संबंध है?

बाबा – एक भाई मरने की तैयारी में था। उसने रिश्तेदारों को पास बुलाकर मरने के बाद क्या-क्या किया जाये वह सारा बताया। यह जो कहनेवाला था, वह आत्मा है। वह व्यवस्था करता है। वह मरता नहीं। शरीर छोड़कर चला जाता है। *

प्रश्न – सूक्ष्म देह किसे कहते हैं?

बाबा – जो मेरे सामने बैठा है वह कौन-सा देह है? स्थूल देह है। तो यह जिसने कहा कि 'यह स्थूल देह है' वही सूक्ष्म देह है। इस पुस्तक या घड़ी से पूछो, सूक्ष्म देह किसे कहते हैं? तो कहेगी, मालूम नहीं। लेकिन जिसने जवाब दिया कि 'जो बैठा है वह स्थूल देह' – वही सूक्ष्म देह है। जैसे पुस्तक पढ़नेवाला पुस्तक से भिन्न है, वैसे ही यह जवाब देनेवाला स्थूल देह से भिन्न है। यह स्थूल शरीर चलानेवाला जो अंदर है, वही सूक्ष्म देह है। *

प्रश्न – क्या ज्ञान से कर्मफल नष्ट होते हैं?

बाबा – ज्ञान या भक्ति से कर्म की वासना नष्ट होती है, जिससे वे कर्म फिर नहीं होते, परंतु जो हो चुके हैं, उन्हें तो भोगना ही पड़ेगा। तीर निकल जाने के बाद पछताने से क्या होता है? पश्चात्ताप से चित्त की शुद्धि होती है और उससे आगे कर्म होना बंद हो जाता है। ज्ञानी और अज्ञानी में यही अंतर है कि अज्ञानी दुःखपूर्वक भोगता है और ज्ञानी आनंदपूर्वक। पश्चात्ताप से मानसिक शुद्धि होती है और पाप के फल मिलते भी हैं, तो भी असर नहीं होता। यही पापनाश समझना चाहिए।

प्रश्न – यह भी कहा है कि ईश्वरकृपा से पाप क्षीण होते हैं। उसमें अपनी कृति कुछ काम नहीं आती?

बाबा – भक्तिमार्ग की भाषा में यही कहना पड़ेगा। परंतु ज्ञानमार्ग में तो अपनी ही कृति मुख्य मानी गयी है। अगर दोनों का समन्वय करना है, तो यह कहना होगा कि ईश्वरकृपारूपी अग्नि तो सब जगह पड़ी है। हम अपनी इच्छा से यदि उसके पास गये, तो उसकी गरमी मिलेगी। इसमें कृपा और कर्तृत्व दोनों का मेल बैठता है।

प्रश्न – इस प्रकार तो ईश्वरकृपा एक तटस्थ वस्तु हो जाती है। क्या उसमें अपना या स्वतंत्र कर्तृत्व कुछ भी नहीं है?

बाबा – यह भी मान सकते हैं कि ईश्वरकृपा चुंबक के समान हमें आकृष्ट करती है। यदि हम लोहे के समान उसका विरोध न करें, तो वह हमें अपनी ओर खींच लेगी। परंतु हम उसके बीच अपनी इच्छा का विरोधी विकर्षण लगाते हैं, वह बाधक होता है। चुंबक लोहे से संपूर्ण समर्पण चाहता है। *

प्रश्न – कभी-कभी संदेह होता है कि क्या इतने छोटे शरीर में आत्मा और परमात्मा, दोनों रह सकते हैं?

बाबा – आपमें खटाई और मिठाई, दोनों एकसाथ कैसे रहती हैं? क्या आप उनके रहने का कोई खास स्थान बता सकते हैं? उसी प्रकार आत्मा और परमात्मा का हाल है।

प्रश्न – असल में तो दोनों एक ही हैं न?

बाबा – हां, जब वैसा अनुभव आये तब! अभी तो यही समझना चाहिए कि परमात्मा इस शरीर में रहते हुए भी उसके बाहर हवा या आकाश के समान व्याप्त है और आत्मा केवल शरीर में ही सीमित है। पहले तो हमें यह अनुभव होना चाहिए कि वह देह से अलग है। *

प्रश्न – ईश्वर की इच्छा किस प्रकार जानी जा सकती है?

बाबा – ईश्वरी इच्छा का अर्थ है – पुण्यमय जीवन। अतः हमारे जीवन का उद्देश्य पुण्य-प्रवृत्तियों को बढ़ाना और पाप-वृत्तियों को घटाना होना चाहिए, जहां तक कि हमें पूर्णता प्राप्त न हो जाये। इस जीवन में नहीं, तो अगले जीवन में सही, बिना पूर्णता प्राप्त किये हमें शांति नहीं

ही उपस्थित नहीं होता। और मनुष्य में पाप-पुण्य का भेद होता है। पापी मनुष्य के हृदय में भी यह भावना रहती है कि मैं पाप कर रहा हूं, जो मुझे नहीं करना चाहिए।

प्रश्न – फिर वह पाप से दूर क्यों नहीं होता?

बाबा – प्रयत्न तो करता है, पर आदत के बंधन के कारण उससे दूर नहीं हो पाता। परंतु ज्यों-ज्यों उसे पाप से घृणा और दुःख होने लगेगा, त्यों-त्यों वह उससे मुक्त होता जायेगा।

प्रश्न – हम तो देखते हैं कि जिनमें विवेकबुद्धि है, वे अधिक दुःखी रहते हैं। पापी तो कभी सोचते ही नहीं कि वे क्या कर रहे हैं।

बाबा – यह विवेक का दुःख ही उनके सुख का कारण है। असल में सुखप्राप्ति जीवन का उद्देश्य नहीं। शांति प्राप्त कर दोनों से परे होना और पुण्य की पूर्णता प्राप्त करना ही उसका उद्देश्य है। *

प्रश्न – पापों का अंत कैसे आयेगा?

बाबा – पापों का अंत लाने के लिए 1. नये पाप न करने का निश्चय होना चाहिए 2. पुराने पाप लोगों में जाहिर हो जाने चाहिए 3. पश्चात्तापपूर्वक पापों का प्रायश्चित्त होना चाहिए। उसके लिए अपने को सजा करनी चाहिए। सजा यानी उपवास करना या संपत्ति छोड़ना आदि 4. नामस्मरण करना, जिससे पाप खत्म हो जायें। *

प्रश्न – आपने कहा कि मुझे भूतकाल में कोई रस नहीं है। क्या यही कारण है कि आप पाप का प्रतिकार नहीं करते? क्या आप पाप (ईविल) को भूतकाल की चीज समझते हैं?

बाबा – पाप पर हमला (कनफ्रंट) करने का अर्थ है उसे महत्त्व देना। वह है ही नहीं। उसकी कोई गर्भितशक्ति (पोटेन्सी) नहीं। वह शक्तिहीन (इंपोटेंट) है। हम ही उसकी ओर ध्यान देकर उसे महत्त्व देते हैं। उसकी संपूर्ण उपेक्षा करेंगे, तो वह यों ही खत्म हो जायेगा। मैं सदैव सूर्य की उपमा दिया करता हूं। सूर्य अंधकार पर हमला नहीं करता। वह आ गया तो अंधकार खत्म! अंधकार नाम की कोई चीज है और उसका मुकाबला करना है – ऐसी बात ही नहीं। हम अंधकार को देखते हैं, लेकिन सूर्य से कहा जाये कि तुम अंधकार दूर करते हो, तो वह पूछेगा, 'कहां है अंधकार?'

रहेगा। वैसे उसे कोई प्रतिष्ठा, स्टैंडिंग ही नहीं है। हम ही उसे प्रतिष्ठा देते हैं। पाप खत्म ही है। 'रेजिस्ट नॉट ईविल' यानी पाप का प्रतिकार मत करो। 'बिकाज बाय रेजिस्टिंग यू गिव्ह पोटेन्सी टू ईविल' – क्योंकि प्रतिकार करने से आप ही उस पाप को शक्ति प्रदान करते हैं। इसलिए पाप की ओर ध्यान ही न दें। पाप है ही नहीं, ऐसा मानकर अपने रास्ते चलते चलो – गो दाय वे!

*

प्रश्न – श्रीअरविंद का कथन है कि मनुष्ययोनि प्राप्त होने के बाद आत्मा अन्य योनियों में नहीं जाता। परंतु हमारे प्राचीन सिद्धांतों के अनुसार ऐसी बात नहीं है। इस संबंध में आपकी क्या राय है?

बाबा – स्वाभाविक अपेक्षा यह है कि मानव-जन्म पाने के बाद हम नीचे की योनि में न जायें, ऊपर की योनि में ही जायें। लेकिन ऐसा कोई नियम नहीं हो सकता कि मानव-जन्म के बाद दूसरी योनि मिल ही नहीं सकती। जड़भरत की कहानी है। वह हिरन के बच्चे की सेवा करता था। उससे आसक्ति पैदा हुई, तो उसे दूसरा जन्म हिरन का लेना पड़ा। जैसी तीव्र वासना होती है, वैसा जन्म होता है। मैं इसे वैज्ञानिक मानता हूं। आपका आगे का जन्म आपकी तीव्र वासना पर निर्भर है। इसके अलावा मनुष्य-जन्म में भगवान ने ऐसी शक्ति दे रखी है कि वह उत्तम-से-उत्तम देवता के समान बन सकता है और नीची-से-नीची योनि तक भी गिर सकता है। गाय मांसाहारी नहीं हो सकती। शेर शाकाहारी नहीं हो सकता। उन्हें ऊपर चढ़ने के लिए एक मर्यादा है, नीचे गिरने के लिए भी एक मर्यादा है। पर मानवों में कोई महामानव, देवता की कोटि के मिलते हैं, तो कोई गिरे हुए भी। एक बहुत बड़े दार्शनिक ने कहा है कि जितना मेरा मानव के साथ परिचय बढ़ता जा रहा है, उतनी ही मेरी श्रद्धा कुत्ते पर बढ़ती जा रही है। यानी कई मानव ऐसे होते हैं, जो पशु से भी हीन बरतते हैं। तो मानव-जन्म की विशेषता यह है कि उसे नीचे गिरने और ऊपर उठने का पूरा स्वातंत्र्य है।

मैं यह भी मानता हूं कि मानव की तरह पशु भी मुक्ति की तरफ जा सकता है। गजेंद्र-मोक्ष की कहानी पर मेरी श्रद्धा है। सामान्यतया मुक्ति का साधन पशुयोनि में नहीं है, फिर भी ईश्वर से सब प्राणी समान फासले पर हैं। ईश्वर वर्तुल का मध्यबिंदु है और वर्तुल के घेरे पर मानव, कुत्ता, गधा

दूसरी योनियों में भी मुक्ति प्राप्त हो सकती है, क्योंकि ईश्वर की कृपा सब पर समान है। आप भक्ति करते हैं, तो भगवान आपको बुद्धि देता है। आपको पश्चात्ताप होता है, तो भक्ति निर्माण होती है। यह बौद्धिक-प्रक्रिया नहीं, हार्दिक-प्रक्रिया है। बौद्धिक ज्ञान होगा, लेकिन वह हृदय में उतरना चाहिए। सार यह कि दूसरी योनियों में मुक्ति की शक्यता (पॉसिबिलिटी) है, संभावना (प्राबेबिलिटी) नहीं है। *

प्रश्न – मृत्यु के बाद इस जन्म में अर्जित ज्ञान भी साथ जाता है?

बाबा – निश्चय ही ज्ञान के बीज साथ में जाते हैं। बहुत-सा ज्ञान तो हम इसी जन्म में भूल जाते हैं, पर उसका प्रभाव विद्यमान रहता है। हम सीखी हुई भाषा भूल जाते हैं, परंतु भाषा सीखने की क्षमता बढ़ जाती है, जिससे शीघ्रता से फिर उसे सीख सकते हैं। शंकराचार्य का अल्प अवस्था में ही इतना ज्ञानी होना यही सिद्ध करता है।

प्रश्न – क्या हम विज्ञान के आधार से पुनर्जन्म के सिद्धांत को सही साबित कर सकते हैं?

बाबा – विज्ञान मूलतः इंद्रियगम्य है। इसलिए उसकी एक सुनिश्चित मर्यादा होती है। विज्ञान तो अत्यंत नम्र होता है। विज्ञान यह नहीं कहता कि परमेश्वर है ही नहीं। क्योंकि इस प्रकार का निषेधात्मक वाक्य कहने के लिए भी ज्ञान चाहिए। विज्ञान तो कहता है कि परमेश्वर हो भी सकता है, नहीं भी हो सकता। लेकिन हम अभी तक उसके बारे में कुछ भी नहीं जानते। विज्ञान इंद्रियों के सहारे आगे बढ़ता है। चाहे जितनी बढ़िया दूरबीन क्यों न हो आखिर देखना होगा हमें अपनी आंख से ही। कोई भी सिद्धांत इंद्रियों के जरिये सही हुए बगैर विज्ञान उसे नहीं मानता। लेकिन इंद्रियों की अपेक्षा मन अधिक शक्तिशाली होता है और मन से भी शक्तिशाली है आत्मा। क्योंकि उस मन के सारे व्यापार मैं (आत्मा) जान सकता हूं। चंद्रमा से निकली प्रकाश-किरणों को यहां आने में तीस सेकंड लगते हैं, लेकिन हमारा मन एक सेकंड से कम समय में ही यहां से चंद्रमा तक पहुंच सकता है। इस प्रकार सृष्टि में लघुता और विशालता दोनों अनंत हैं। तो फिर तर्क के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि मानवजीवन का आदि-अंत क्यों होगा? एक मुसलमानभाई से चर्चा में मैंने कहा था कि एक लड़का

व्यक्त हो जाता है और फिर अनंतकाल तक अव्यक्त रहता है। यह बात तर्कसंगत मालूम नहीं होती।

यदि हम पुनर्जन्म को नहीं मानेंगे तो जीवन में कोई स्वाद ही नहीं रहेगा। मान लो, इस समय कोई सांप मुझे काटता है और मैं मर जाता हूं, तो क्या इसका मतलब यह हुआ कि मैंने आज तक जो सारा ज्ञान प्राप्त किया वह बेकार गया? सांप के जैसे बुद्धिशून्य और क्षुद्र प्राणी के काटने से मेरा सारा ज्ञान एक क्षण में नष्ट हो सकता हो तो फिर मेरी सारी ज्ञानलालसा ही खत्म हो जायेगी। लेकिन मुझे और भी ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा होती है, क्योंकि मैं पुनर्जन्म में विश्वास करता हूं। मुझे सिगरेट-बीड़ी पीने की इच्छा कभी नहीं हुई, तो इसका कारण यह हो सकता है कि मैंने अपने पूर्वजन्मों में कुछ ऐसे अनुभव लिये हों और उनकी व्यर्थता मुझे महसूस हुई हो। इसका मतलब यह है कि हर कोई अपने पुराने जन्मों के अनुभवों की पूंजी लेकर नया जन्म लेता है।

प्रश्न – भक्तिभाव कैसे उत्पन्न होगा?

बाबा – भक्ति नहीं बनती, तो कुछ पुण्यकार्य करें। पड़ोसियों की सेवा आदि अच्छे काम करते-करते मन भक्ति की ओर खींचा जायेगा – रास्ता खुल जायेगा। सत्कार्य करने से चित्तशुद्धि होगी, भक्ति का संस्कार मिलेगा। दान, धर्म, सेवा करते रहें। *

प्रश्न – ईश्वरी-प्रेरणा से चल रही हूं या अपनी इच्छा से इसकी परख क्या?

बाबा – अपनी प्रेरणा से जो चलता है, उसे अपने आग्रह होंगे। जो ईश्वर की प्रेरणा से चलता है, उसे अपने आग्रह नहीं होंगे। यह अलग बात है कि हरएक के पास अपना विचार होता है, वह अपना विचार समझाता भी है। लेकिन, इतना होते हुए भी वह अपना आग्रह नहीं रखता। ऐसा होगा, तब माना जायेगा कि वह ईश्वरी-प्रेरणा से चल रहा है। *

प्रश्न – श्रद्धा का स्वरूप कैसा है?

बाबा – बच्चे को मां पर श्रद्धा होती है। मां कहती है कि आकाश में वह चांद है, तो बच्चा श्रद्धापूर्वक उसे मान लेता है। बच्चों में यदि ऐसी स्वाभाविक श्रद्धा नहीं होती तो ज्ञान का मार्ग ही कुंठित हो जाता। पहले श्रद्धा रखनी पड़ती है, फिर अनुभव आता है, उसके बाद उसकी विद्या

लिए गुरु ने श्वेतकेतु से पेड़ पर से फल लाने को कहा। फिर कहा – इसे तोड़ो – उसने तोड़ा। गुरु ने पूछा – भीतर क्या दीखता है?

'बीज' – शिष्य ने कहा।

उसे भी तोड़ो और देखो, भीतर क्या दीखना है?

'कुछ भी तो नहीं!'

तब गुरु कहता है – जिसमें कुछ भी नहीं दीखता है, उसमें से इतना बड़ा पेड़ पैदा हुआ। फिर कहा – **श्रद्धत्स्व सोम्य।** बेटा, श्रद्धा रखो, बरगद के फल के बीज में कुछ भी नहीं होता, तब भी उसमें से वटवृक्ष बना। कैसे? – मालूम नहीं। फिर भी श्रद्धत्स्व सोम्य। *

प्रश्न – बुद्धि कहती है कि हम जिसे जान सकते हैं, उसमें विश्वास यानी श्रद्धा से क्यों काम लें?

बाबा – बुद्धि सबकुछ तो जान नहीं सकती। फिर श्रद्धा से काम क्यों न लिया जाये? श्रद्धा और बुद्धि में विरोध कहां है? श्रद्धा ही तो बुद्धि को प्रेरित करती है और उसी बुद्धि से हम श्रद्धा रखने को बाध्य होते हैं। जहां हमारी बुद्धि नहीं पहुंचती, वहां फिर विश्वास का ही आश्रय लेना पड़ता है। *

प्रश्न – क्या जीवन में गुरु-दीक्षा आवश्यक है?

बाबा – गुरुभावना अपने देश में बहुत काम करती है। उसके कारण बहुतों को लाभ हुआ है और बहुतों को हानि भी। परमात्मा हम सबको पैदा करते हैं, तो यों ही छोड़ नहीं देते। हमारी चिंता करने, रक्षा करने के लिए उनके पास कोई योजना होनी चाहिए। इसलिए ऐसे गुरु हो सकते हैं।

लेकिन अब मैं अपने अनुभव से बोलूं, तो मुझे अभी तक ऐसा मनुष्य नहीं मिला, जिसे खालिस दुर्जन कह सकूं। गुण-दोष का मिश्रण तो देखा, लेकिन 'दुर्जन'मात्र नहीं देखा। सद्भावना हर मनुष्य में देखने को मिली। इसी तरह यह भी अनुभव नहीं आया कि कोई पूर्ण पुरुष हो। हो सकता है, मेरी आंखों को पहचानने का मौका न मिला हो। जो भी हो, गुरु को तो पूर्ण पुरुष होना चाहिए। मुझे अनेक सत्पुरुषों के सहवास में रहने का अवसर मिला है। घर में माता-पिता ऐसे थे, जिनके स्मरणमात्र से पापवासना छूती ही नहीं थी। ऐसे ही अनेक मार्गदर्शक मित्र भी मिले। लेकिन जिसे

यह अलग बात है कि किसी में कोई, तो किसी में कोई गुण होता है। प्रेम, करुणा, सत्यनिष्ठा ये गुण किसी में देखे गये। उनसे वे गुण मिलते हैं, इसलिए वे 'गुण-गुरु' हो सकते हैं। लेकिन जिसे मैं अपने-आपको सौंप दूं और वह मुझे मुक्त कर दे, ऐसा पूर्ण गुरु अभी तक दिखायी नहीं दिया। कोई मुझसे कहे कि 'मैं तुझे मुक्त कर देता हूं', तो मैं कहूंगा, 'ऐसी मुक्ति मुझे नहीं चाहिए।' मेरे पेट में रोग है। कोई कहे कि 'अमुक मंत्र से वह मिट जायेगा,' तो मैं उस तरह रोग से मुक्ति पाना नहीं चाहूंगा। यद्यपि मैं मानता हूं कि मंत्र से रोग मिट सकता है, क्योंकि वह श्रद्धा का सवाल है। रोग क्यों आया और कैसे गया, इसका ज्ञान मुझे चाहिए।

ऐसे अव्यक्त गुरु मुझे मिले हैं। उनका प्रभाव भी पड़ा है। प्राचीन काल से जो अनेक महापुरुष हो गये हैं, उनसे मुलाकातें होती हैं, बातचीत भी होती है। जैसे आपलोगों से बातें हो रही हैं, वैसे ही उनके साथ भी होती हैं। बुद्धि भी उन्हें ग्रहण करती है, जितना कर पाती है। इस प्रकार अनेक महापुरुष हवा में घूमते रहते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं। *

प्रश्न – क्या बिना गुरु के आत्मज्ञान संभव है? यदि नहीं तो गुरु कहां से पाया जाये?

बाबा – बिना गुरु के आत्मज्ञान असंभव नहीं, यद्यपि कठिन अवश्य है। विवेक से बढ़कर कोई गुरु नहीं। *

प्रश्न – मंत्र क्या और कितने प्रकार के होते हैं?

बाबा – मंत्र मूलतः मनन के लिए होते हैं। मंत्र में एकआध छोटा-सा शब्द होता है, जिसमें बहुत अर्थ भरा रहता है और वह मनन में मदद करता है।

मंत्र दो-तीन प्रकार के होते हैं। एक प्रकार के मंत्र को 'विधि' कहते हैं। वह मामूली मंत्र होता है। जैसे उपनयन के समय गायत्रीमंत्र दिया जाता है, इसी तरह विवाह के समय भी मंत्र बोला जाता है। संन्यास या वानप्रस्थाश्रम की दीक्षा के समय भी मंत्र प्राप्त होते हैं। ये मंत्र निश्चित होते हैं। यानी विद्या, गृहस्थाश्रम या दूसरे आश्रमों में प्रवेश करने की विधियां निश्चित हैं। उस समय मंत्र देनेवाला गुरु या पुरोहित निमित्तमात्र होता है। वह महाज्ञानी या अनुभवी हो, यह अपेक्षा नहीं। अच्छा हो, सदाचारी हो, इतनी

कुछ मंत्रों का उपयोग बुरे काम के लिए होता है जैसे जारण-मारण के मंत्र। ऐसे मंत्रों को 'तामस-मंत्र' भी कहते हैं। उनके द्वारा संहार-शक्ति प्राप्त होती है। दूसरे प्रकार के सकाम मंत्र अच्छे काम के लिए उपयोग में आते हैं। ऐसे मंत्र काम के साथ कुछ प्रेरणा देते रहें, ऐसी भावना से दिये जाते हैं। जैसे, हमने अपने काम के साथ 'जय-जगत्' मंत्र जोड़ा है ताकि भावना रहे कि हमारा काम दुनिया को जोड़ने के लिए है। इसमें भी व्यक्तिगत सत्कामना और सामूहिक सत्कामना ऐसा भेद हो सकता है।

तीसरे प्रकार के जो मंत्र हैं, वे परमात्म-ज्ञान में प्रवेश कराते हैं। उनका उद्देश्य है, साधना में मदद पहुंचाना। ऐसे मंत्र अनुभवी गुरु से प्राप्त होने चाहिए। वह मंत्र गुप्त होता है। यानी व्यक्ति की प्रगति के लिए उसकी परिस्थिति को ध्यान में लेकर गुरु एक विशेष मंत्र उसे देता है। संतों ने राम-कृष्ण-हरि आदि व्यापक मंत्र भी दिये हैं। जहां तक व्यक्तिगत मंत्र का संबंध है, साधक की शक्ति-बुद्धि ध्यान में लेकर अनुकूल मंत्र दिया जाता है। अनुभवी योग्य गुरु न मिले, तो शास्त्र के आधार पर ही आगे बढ़ें। जप की जगह स्वाध्याय करें।

चौथे प्रकार का मंत्र सबसे महत्त्व का है। ऐसे मंत्र का केवल जप ही नहीं, उसके अर्थ पर चित्त में सतत चिंतन भी करना पड़ता है। केवल जप से नुकसान नहीं, लेकिन उतना लाभ भी नहीं। असम के संत श्री शंकरदेव-माधवदेव की बात है। माधवदेव पहले शक्ति के भक्त थे। शंकरदेव ने उन्हें समझाया, मंत्र दिया तो उनकी भावना बदल गयी। शंकरदेव ने दिया मंत्र आध्यात्मिक था। क्या था, प्रकट नहीं। लेकिन मान सकते हैं कि उन्होंने माधवदेव को जड़ पकड़ने को सिखाया। जड़ को पानी देते हैं, तो पत्र-पुष्प आदि सबको मिल जाता है।

इस प्रकार का मंत्र किसी प्रकार के बंधन में नहीं डालता। मंत्र देने के बाद गुरु भी स्वतंत्र है और शिष्य भी स्वतंत्र। वह शिष्य की स्वतंत्रता और बुद्धिविकास में बाधा नहीं डालता।

मंत्र की आवश्यकता है ही, ऐसी भी बात नहीं। बहुत मिसालें ऐसी मिल सकती हैं, जहां मोक्षदाता गुरु ने स्पर्शादि द्वारा भी मदद की है। पर इस प्रकार तत्काल मोक्ष दिलानेवाला गुरु मिले, तो उसमें मुझे रुचि नहीं

पास आयेगा। स्पर्शादि से दीक्षा देना असंभव नहीं, पर मैं उसे पसंद नहीं करता। अपने लिए तो पसंद करता ही नहीं, साधक की दृष्टि से भी उसे लाभदायक नहीं मानता। गफलत से कोई मुक्ति में चला जाये, तो क्या वह ठीक बात होगी? *

प्रश्न – मंत्र-दाता गुरु कौन है? गुरु-शिष्य संबंध क्या है?

बाबा – गुरु का मुख्य अर्थ है, दृष्टिदाता। इस जमाने में कुछ लोग गुरु शब्द के पीछे पड़े हैं। वे 'गुरु' कहना या कहलवाना पसंद नहीं करते। यह ठीक है कि दुनिया में ढोंगी गुरु भी हो सकते हैं। लेकिन उन्हें हम क्यों 'कंडेम' (दूषण लगायें) करें? वे 'सेल्फ कंडेम्ड' (स्वयं-निंदित) ही हैं। लेकिन आजकल एक भाषा बन गयी है कि 'किसी को गुरु नहीं मानना चाहिए, शिष्य नहीं बनना चाहिए' आदि। इसमें गुरुभाव छोड़कर मित्रभाव पसंद करें यही वृत्ति है। मैं मित्रभाव को सबसे बढ़कर मानता हूं। लेकिन गुरु-शिष्यभाव भी मानता हूं। मैंने अपनी मर्यादा मान रखी है कि न मैं किसी का शिष्य बनूं और न किसी को शिष्य बनाऊं।

कोई मुझे लिखता है कि 'अमुक महात्मा के स्पर्श से हममें एकदम परिवर्तन हुआ, पर हम उन्हें गुरु वगैरह नहीं मानते।' यह तो केवल एक नयी भाषा हुई। जहां स्पर्श आदि के प्रभाव को आपने मान्यता दे दी, वहां वह गुरु-शिष्य की श्रद्धा ही कही जायेगी। पुराने जमाने में गुरु-शिष्य का संबंध बहुत मान्य था। ज्ञानेश्वर ने 'ज्ञानेश्वरी' में सर्वत्र गुरु-महिमा गायी है। ज्ञानदेव ने गुरु को सर्वस्व अर्पण किया था। वे भाषा भी ऐसी ही लिखते हैं – **निवृत्ति गुरु माझा अंधपण फेडिलों** – निवृत्ति गुरु ने मेरा अंधत्व मिटा दिया। परंतु मेरा चित्त कुछ ऐसा बना है कि मैं प्रभावादि की बात पसंद नहीं करता।

पुरानी बात है, उन दिनों महादेवभाई का सिर बहुत दुखता था। मेरा भी थोड़ा दुखता था। हमारे एक मित्र, बाबाजी मोघे वहां थे। उन्होंने कहा कि 'सिर दुखने की मेरे पास एक औषधि है, लेकिन वह औषधि एक मंत्र के साथ ही दी जा सकती है।' महादेवभाई को तब 'यंग इंडिया' का बहुत काम रहता था, इसलिए बहुत परेशान थे। वे औषधि लेने को तैयार हो गये। बाबाजी ने तांबूल के पत्ते पर कुछ लकीर खींचकर पान बनाकर खाने

सुझाया। मैंने कहा, रोग मिटाने के लिए पान चबाकर देख सकता हूं, परंतु लकीर खींचने की बात नहीं मान सकता।

मैं मंत्र को ढोंग नहीं मानता। मानता हूं कि मंत्र में सामर्थ्य होती है, पर उससे रोग मिटाना नहीं चाहूंगा। नहीं तो रोग आयेगा और ज्ञान दिये बिना चला जायेगा। उससे बुद्धि पर प्रहार होता है।

मैं स्पर्श की सामर्थ्य मानता हूं। बच्चे पर मां के स्पर्श का प्रभाव होता है, क्योंकि बच्चे की मां पर पूरी श्रद्धा होती है। उसके लिए मां से बढ़कर दुनिया में कोई चीज नहीं है। मां को भी बच्चे के प्रति अत्यंत प्रेम होता है। तो अन्योन्य श्रद्धा और प्रेम के कारण स्पर्शमात्र से काम होता है। वैसी असीम शक्ति ज्ञानी पुरुषों में भी हो सकती है और उससे परिवर्तन आ सकता है।

परंतु उपनिषद में दिशा दिखानेवाले गुरु की बात कही गयी है। एक धनवान जंगल में जाता है। कुछ चोर उसकी आंखें और हाथ बांधकर उसके पैसे चुरा लेते हैं। वह चिल्लाता है, "अरे मुझे चोरों ने लूट लिया।" वहां एक सज्जन आता है और उसकी आंखें खोल देता है। मुसाफिर पूछता है, "गांधार देश कहां है?" तो सज्जन जवाब देता है, **एतां दिशं गंधाराः, एतां दिशं व्रजेति।** गांधार देश इस दिशा में है, इस दिशा में जाओ। मुसाफिर निकल पड़ता है। फिर उपनिषद कहती है, **स ग्रामाद् ग्रामं पृच्छन्, पंडितो मेधावी, गंधारानेव उपसंपद्येत** – इस ग्राम से उस ग्राम, इस तरह पंडितों को पूछते-पूछते वह गांधार देश पहुंच गया। तो गुरु को दिखाने का ही काम करना है। *

प्रश्न – गुरुकृपा कैसे प्राप्त होगी?

बाबा – **अमानित्वं, अदंभित्वं,** आदि गीता (अ.13.7-11) में बताये शिष्य-गुणों का विकास करना ही गुरु की उपासना है। गुरु अंतर्यामी हैं। उनकी कृपा शिष्य को सहज प्राप्त है। *

प्रश्न – संन्यास की दीक्षा लेने के लिए मेरा दिल तड़प रहा है। गेरुए वस्त्रों के प्रति मुझे अत्यंत आकर्षण है। संन्यास के बारे में आपके क्या विचार हैं?

बाबा – संन्यास के लिए मेरे मन में बहुत आदर है। लेकिन गेरुआ पहनना आदि, जो संन्यासी का बाह्य वेश है, उसको मैं महत्त्व नहीं देता।

आज के जमाने के संदर्भ में मैं बोल रहा हूं। पुराने जमाने की बात अलग थी। समाज के सेवक होने के बजाय हम समाज की सेवा पाने के अधिकारी बन जाते हैं। इसलिए मेरी सिफारिश है कि समाजसेवक का बाह्य वेश सादा हो और अंतर में संन्यास की भावना उत्तरोत्तर मजबूत बने। *

प्रश्न – आपके जीवनकार्य की कल्पना क्या है?

बाबा – मेरे जीवनकार्य की कल्पना थोड़े में चतुर्विध है – 1. आत्मा की उन्नति का सतत प्रयत्न 2. आश्रम-संस्था के द्वारा सेवक-वर्ग की निर्मिति का प्रयत्न 3. ग्रामसेवा के प्रयोग हेतु आदर्श कार्य का प्रयत्न 4. सर्वत्र तत्त्व-संकीर्तन। *

प्रश्न – आपकी साधना का स्वरूप बतलाइए।

बाबा – मैं तो इतना ही जानता हूं कि हम पर अनेक लोगों के उपकार हैं – माता-पिता, भाई, मित्र, शिक्षक, मार्गदर्शक आदि के। इसी तरह हमारे लिए अनाज, कपड़ा आदि उत्कृष्ट पदार्थ पैदा करनेवाले, घर बनानेवाले, ऐसे अनेक लोगों की सेवा बचपन से हमें मिलती रही है। इसलिए बाबा ने सोचा कि हमें भी अपनी ओर से सेवा करनी चाहिए। उससे लोगों के उपकार चुकाये जायेंगे, ऐसी बात नहीं। फिर भी प्रयत्न करना ही चाहिए। इसे आप साधना कहते हों तो भले ही कहें, मैं इसे साधना नहीं समझता। हम खाते हैं तो दूसरों को भी खाने को मिले ऐसा प्रयत्न किया, तो उसमें से भूदान-ग्रामदान आंदोलन चल पड़ा और लोगों को खाने-कमाने के साधन मिलने लगे।

दुनिया की सेवा करना और अपने पर अधिक उपकारों का बोझ न बढ़ाना – यही है बाबा की साधना। सारे धर्मशास्त्र संयम और करुणा के बारे में बताया करते हैं। संयम यानी स्वयं किसी झमेले में न पड़ना और दूसरों को कष्ट न देना, यह बाबा का मत है। करुणा यानी दूसरे से हमें मिला, उसी तरह हमें भी दूसरों को थोड़ा देना है। *

प्रश्न – सादा जीवन बिताने से आपको कोई खास सुखानुभूति होती है क्या?

बाबा – मनुष्य के लिए सादगी बड़ी शोभा है। विशेष कर तब, जबकि जनता दरिद्र हो। जब हम सादगी से रहते हैं तो ज्यादा ध्यान बाहर की चीजों में नहीं लगाना पड़ता। मकान में बहुत फर्निचर रखा, तो उसे साफ रखने

से अमृतत्व की प्राप्ति हो सकती है? उत्तर मिला – धनसंपत्ति से अमृतत्व मिलने की आशा नहीं है। सादगी में मनुष्य का जीवन ऊंचा उठता है, इसलिए हम सादगी पसंद करते हैं। हम आश्रम में रहते थे, तब दो ही धोती रखते थे। अब पदयात्रा में बारिश में घूमना होता है, इसलिए चार धोती रखी हैं। संपत्ति कुछ मर्यादा तक बढ़ाना आवश्यक है, क्योंकि दरिद्रता में ध्यान नहीं लगता और प्रचुरता में भी व्यक्ति अंतर्मुख नहीं हो सकता। इसलिए समत्व की आवश्यकता है। जीवन में समत्व और सादगी हो, पर दरिद्रता न हो।

*

प्रश्न – वर्तमानयुग में मानवता के नाते संपूर्ण जीवन जीने का सर्वोत्तम मार्ग कौन-सा हो सकता है?

बाबा – हमें जो अनुभव है, उसके आधार पर इसका उत्तर है – 1. परिपूर्ण जीवन की शक्यता हम किसान के जीवन में देखते हैं। अतः जीवन में निरंतर भूमाता की सेवा हो। 2. शरीरश्रम से खेती की सेवा करें, बैल की मदद से नहीं और उसी आधार पर जीवन जीयें। 3. इसके साथ सतत नामस्मरण और आध्यत्मिक ग्रंथों का अध्ययन करें। 4. इसके अलावा आसपास के लोगों की जितनी सेवा कर सकते हैं, करें। ये चार चीजें होती हैं, तो परिपूर्ण जीवन का अनुभव आयेगा और उत्तम विकास होगा।

*

प्रश्न – मुझे ईश्वर यानी क्या, यह समझ में ही नहीं आता।

बाबा – ईश्वर यानी प्रत्येक गुण का पूर्ण स्वरूप।

प्रश्न – जिसमें सारे गुण पूरे खिले हों, ऐसे आदर्श मानव की कल्पना आती है। परंतु उससे ईश्वरदर्शन की तड़पन या भक्ति जाग्रत् नहीं होती।

बाबा – सारे गुण खुद अपने में उतारें, उन्हें विकसित करें यही है भक्ति। प्रत्येक चीज के पीछे जो मूलतत्त्व है, उसका महत्त्व पहचानना यही है ईश्वरदर्शन। वह सर्वव्यापी और पूर्ण है। सामने जो कुछ भी दीखता है, वह ईश्वर ही है। बाह्य आकार से ऊपर उठकर भीतर के मूलतत्त्व को पहचानो।

पहले सगुण ब्रह्म की उपासना हो। गुणयुक्त होने के कारण वह आकर्षक और सरल है। परंतु असल में निर्गुण-सगुण में कोई अंतर नहीं

परिणत रूप है। यदि निर्गुण कोरे कागज के समान है, तो सगुण लिखे हुए कागज के समान है। परंतु समझना चाहिए कि निर्गुण में असीमता है और सगुण ससीम है। सगुण को निर्गुण तक पहुंचने की सीढ़ी ही समझना चाहिए। *

प्रश्न – ईश्वर-प्राप्ति का मार्ग क्या है?

बाबा – ईश्वर-प्राप्ति का सरल उपाय यह है कि उसकी मनुष्य को उत्कट इच्छा हो। इच्छा नहीं तो ईश्वर-प्राप्ति भी संभव नहीं। इच्छा है, दरवाजा खुला है, तो ईश्वर स्वयं प्रवेश करेगा। ईश्वर ऐसे मनुष्यों को ढूंढ़ता ही रहता है, जो उसकी इच्छा करते हैं। परंतु मनुष्य दरवाजा बंद किये रहता है। ईश्वर को अंदर आने ही नहीं देता। हमें ईश्वर को पाने की जितनी इच्छा है, उससे अधिक ईश्वर को हमारे भीतर प्रवेश करने की इच्छा है। लेकिन हम ही हृदय बंद रखते हैं तो वह क्या करेगा? हृदय खोलने का उपाय है – सत्य, प्रेम, करुणा। *

प्रश्न – परमात्मा का परिचय कैसे हो?

बाबा – परमात्मा का परिचय यानी मूर्तियों के भीतर जो अप्रकट तत्त्व पड़ा है उसका परिचय होना। परमात्मा सबके अंदर भरा है, परंतु साथ-साथ काम-क्रोधादि विकार भी भरे हैं। उन विकारों को हटा दिया जाये तो अंदर का परमात्मा दीख पड़ेगा। गुरु निर्देश कर सकता है, परंतु परमात्मा का अनुभव तो अपने प्रयत्न से ही आ सकता है। *

प्रश्न – जीवात्मा और परमात्मा में क्या संबंध है?

बाबा – दोनों एक ही हैं, केवल शक्ति-सामर्थ्य का अंतर है। शुद्ध होने पर जीव और ईश्वर में कोई अंतर रह ही नहीं सकता।

हम शरीर में हैं, परंतु इस शरीर को पहचाननेवाले; शरीर से काम लेनेवाले 'हम' शरीर से भिन्न हैं। शरीर-मन-बुद्धि कमजोर पड़ते हैं, तो 'हम' कमजोर नहीं पड़ते। हमारे पिंड को संभालनेवाली जो शक्ति है – वह आत्मा है। वैसे ही बाहर ब्रह्मांड को संभालनेवाली जो शक्ति है – वही ईश्वर है। ब्रह्म बिंब है, शरीर प्रतिबिंब है। बाहर की परमात्मशक्ति लेकर आत्मशक्ति बलवान बनती है। *

प्रश्न – आत्मा ब्रह्मरूप कैसे है?

सूर्य न हो तो सारी पृथ्वी ठंडी पड़ जायेगी। बाहर हवा नहीं होती तो अंदर नाक में वायु नहीं होती। दुनिया में जो वायु फैली है, वही नाक में है। मान लो, पानी नहीं होता, तो खेती, रसोई आदि कैसे होती? इस तरह सृष्टि का अनुग्रह हम पर होता है। तो ब्रह्म व्यापक है। जो भीतर है, वह बाहर भी है। **यथा पिंडे तथा ब्रह्मांडे** – इधर आत्मशक्ति है, उधर परमात्म-शक्ति। *

प्रश्न – ईश्वर की सत्ता का अनुभव होता है, परंतु उसके चैतन्य का अनुभव क्यों नहीं होता?

बाबा – जड़ में भी जब हम सुप्त चैतन्य का भाव समझ पायेंगे, तब अनुभव होगा, काष्ठ में अग्नि की तरह।

प्रश्न – मगर उसके आनंदरूप का अनुभव कैसे हो?

बाबा – वह तभी होगा, जब हम उसका विस्तार जगत् की सत्ता में देखने लगेंगे। जन्म-मृत्यु सभी में नित्य ही उसी रसरूप का आनंद मिलना चाहिए। दुःख में भी एक प्रकार के आनंद का अनुभव करना चाहिए। दर्द होता हो तो वह और किसी को होता है ऐसा समझना चाहिए। *

प्रश्न – ब्रह्म को सदा स्मरण रखना कैसे संभव है?

बाबा – गीता में मान्य आत्मस्मृति अपने आत्मस्वरूप ही की स्मृति है। उसका असली रूप समझ लेना ही काफी है। सदा याद रखना जरूरी नहीं है। जैसे हमें यह जान लेना काफी है कि केंद्रबिंदु से वृत्त के सब बिंदु समानांतर हैं। इसका ज्ञान हो जाये तो वह स्मृति में जम जायेगा और आवश्यकता पड़ते ही उपस्थित हो जायेगा। प्रयत्न की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी।

प्रश्न – परंतु कार्यों में वह स्मृति भूली जाती है।

बाबा – यदि कार्य सत्कार्य, कर्तव्य कर्म है, तो उससे आत्मस्मृति का विरोध नहीं है। असदाचार से उसका विरोध है। अतः यम-नियमों का साधन करने से और कर्तव्य पालन में निरत रहने से वह स्मृति आंतरिकरूप से जाग्रत् रहती ही है।

प्रश्न – फिर हम प्रार्थनादि करके उस स्मृति को क्यों जाग्रत् करते हैं?

कहा है कि – **आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः। सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः।** ध्रुव-स्मृति के लिए आहार-व्यवहार, सब शुद्ध करने की जरूरत है। *

प्रश्न – ईश्वर का भान होना यानी क्या?

बाबा – भगवान का भान होना पहला कदम है और अंतिम कदम है मुक्ति। जब आप ध्यान में डूब जाते हैं, मग्न होते हैं, तब भगवान सर्वत्र व्याप्त है, इस बात से जो शुरू होता है, वह है भान या ज्ञान। वह श्रद्धा, तर्क और गुरुकृपा से बनता है। उसके बाद साधना शुरू होती है। आखिर तक पहुंच जायेंगे, तो उसे मुक्ति कहते हैं। *

प्रश्न – ॐ यानी क्या?

बाबा – हम जब गहरा श्वास-निःश्वास करते हैं उस समय जो आवाज सुनायी देती है वह ॐ है – ॐऽऽऽ, ॐऽऽऽ। भारतीय प्रार्थनाओं का प्रारंभ ॐ से होता है और समाप्ति भी ॐ से ही होती है। ईसाई प्रार्थना 'आमेन' के साथ समाप्त होती है। आमेन ओमन शब्द से बना है। और ओमन ॐ से। आमेन यानी शांति। ॐ शांतिः शांतिः शांतिः। ओमन भी शांति ही है। अरबी भाषा में अमन का अर्थ शांति होता है। अमन, आमेन, ओमन, ॐ।

ॐ का और एक अर्थ है – संपूर्ण विश्व, प्रत्येक वस्तु, सर्व – व्योमन्। व्योमन् यानी विश्व – संपूर्ण आकाश। इसी से ओम्निपोटंट (सर्व-शक्तिमान) ओम्निप्रेजेंट (सर्व-स्थित) शब्द निकले हैं। 'ओम्नि' शब्द 'ॐ' से बना है।

ॐ का दूसरा अर्थ है – 'हां'। अगर मुझे 'नहीं' कहना हो तो मैं 'नो' कहूंगा। संस्कृत में न+उ मिलकर 'नो' बनता है। ॐ विधायक – 'हां' है। जीवन की तरफ हमारी वृत्ति विधायक होनी चाहिए, निषेधक नहीं। हमें सबको 'हां' कहना चाहिए। यह ॐ सर्वत्र व्याप्त है। *

प्रश्न – राम और ॐ में क्या अंतर है?

बाबा – ॐ का झुकाव निर्गुण की ओर है, जबकि राम का सगुण की ओर। लेकिन सगुण-निर्गुण एक ही तत्त्व है। *

प्रश्न – निर्गुण-निराकार परमेश्वर का स्मरण कर प्रणाम किया तो वह 33 कोटि देवताओं को पहुंचता है। फिर हिंदुस्तान में इतनी सारी मूर्तियां और देवता

है और सगुण-साकार भी। वह एक है और अनेक भी। वह असंख्य, अनंत और शून्य भी है।

हिंदुस्तान में इतनी सारी मूर्तियां क्यों हैं, इसका उत्तर सरल है। हिंदुस्तान में ब्रह्मविद्या का सूक्ष्म विचार हुआ है। **एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति** यह व्यापक भारतीय विचार है। सब तरह की मनोभूमिकावाले साधकों की चिंता करनेवाले सर्वसमावेशक धर्म में स्वाभाविकरूप से ही विविधता को अवकाश रहेगा। विचार में एकनिष्ठ धर्म में उतना नहीं रह सकता।

*

प्रश्न – ब्राह्मीस्थिति और ब्राह्मीवृत्ति में क्या भेद है?

बाबा – वृत्ति क्षणिक वस्तु है, लेकिन स्थिति सनातन और स्थायी वस्तु है, जिसे प्राप्त कर फिर जन्म-मरण नहीं होता। जीव ब्रह्म में लीन हो जाता है। शरीर रहते पूर्णता प्राप्त होना कठिन है। इसलिए मेरा खयाल है कि ब्राह्मीस्थिति प्राप्त होते ही शरीर छूट जाना चाहिए।

*

प्रश्न – क्या आपको ईश्वर-साक्षात्कार हुआ है?

बाबा – प्रश्न बहुत प्रचलित है। प्रश्न में प्रयुक्त शब्दों का अर्थ बिना जाने उत्तर कैसे दे सकते हैं? 'घड़ी' कहने से आप और हम एक ही अर्थ समझते हैं, क्योंकि वह स्थूल वस्तु है। पर 'ईश्वर' और 'साक्षात्कार' ये शब्द सूक्ष्म अर्थ बतानेवाले हैं। आप उनका अर्थ क्या समझते हैं और मैं क्या समझता हूं, यह निश्चित हुए बिना उत्तर संभव नहीं। तथापि व्याख्या की परवाह न करते हुए उत्तर देना हो, तो इस तरह दूंगा, 'हुआ है और नहीं भी!'

*

प्रश्न – प्रेरणा भगवान ही दे रहे हैं, यह कैसे पहचाने?

बाबा – प्रेरणा भगवान की है या शैतान की, यह समझना अनुभूति पर निर्भर है। आपको अंदर से कैसी अनुभूति होती है? प्रसन्नता की। कल प्रेरणा हुई और प्रसन्नता महसूस हुई तो वह प्रेरणा ईश्वर की है। आज मन में विचार आया और कल चला गया, प्रसन्नता का भी खास अनुभव नहीं हुआ, तो समझ लें कि वह ईश्वर की प्रेरणा नहीं है। ईश्वर की ओर से प्रेरणा होने पर प्रसन्नता और हिम्मत बढ़नी ही चाहिए।

*

प्रश्न – अंत में भगवत्-स्मरण हो, इसके लिए जीवन में किस चीज की

बाबा – भगवत्-स्मरण के लिए न आसन लगाने की आवश्यकता है न और किसी चीज की। गीता के आठवें अध्याय में बतायी गयी प्रक्रिया ध्यानयोग की एक विशेष साधना है। गीता एक समग्र ग्रंथ है। परमार्थ चिंतन की जितनी शाखाएं हैं, सब पर वह प्रकाश डालती है। गीता में भगवान ने कहा है कि 'जो अनन्यचित्त है, सदैव मेरा स्मरण करता है – केवल मनन के समय ही नहीं, जीवनभर करता है – उसके लिए मैं सुलभ हूं।'

योग का विचार है कि प्राणायाम आदि द्वारा परमात्मा को ग्रहण किया जाये। वह भी एक मार्ग है। जिनके चित्त में प्रेम प्रकाशित नहीं होता, उन्हें निग्रहमार्ग में जाना पड़ता है। ध्यानयोग का निग्रहमार्ग भी उसमें बताया है। लेकिन भगवान ने उसी अध्याय में कहा है कि मैं उसके लिए सुलभ हूं, जो निरंतर मेरा स्मरण करता है।

आगे नौवें अध्याय में भगवान कहते हैं – **यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत् । यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्।** यानी 'तू जो करता है, जो खाता है, जो देता है या जो तप करता है, सबकुछ मुझे अर्पण करता चल और हृदय प्रेम से भरा रख।' तो भक्तिमार्ग से बढ़कर दूसरा मार्ग नहीं।

लेकिन परमेश्वर का प्रेम इतना सुलभ नहीं। कुछ लोगों का ईश्वर पर विश्वास ही नहीं बैठता। बैठे भी, तो इंद्रियां आदि जो मोह-जाल खड़ा करती है, उसके कारण उसकी ओर ध्यान ही नहीं जाता। संकट के समय ध्यान जाता है, तो वह संकट-निवारण के लिए ही जाता है। यानी मतलब के लिए ईश्वर की ओर ध्यान जाता है, ईश्वर के लिए नहीं। परंतु निरंतर परमात्मा का स्मरण रहा, तो अंत में परमात्मा हमारी सेवा अवश्य करेगा। हमने जीवनभर उसकी सेवा की, तो वही ध्यान रखेगा कि अंत में इसे मेरी सेवा की आवश्यकता होगी। *

प्रश्न – 'काल' (टाइम) के बारे में आपकी क्या राय है?

बाबा – 'काल' एक तत्त्व माना गया है। वह अत्यंत सूक्ष्म वस्तु है। विज्ञान के सारे प्रयोग 'काल में' होते हैं, 'काल पर' नहीं। काल को नापा जाता है, सूर्य, चंद्र आदि की गतियों के साथ तुलना करके! वैसे अब यह भी संभव हो सकेगा कि हम कहीं से 12 ता. को चलें और 11 ता. को पहुंचे या 1966 में चले और 1965 में पहुंचे।

नापा जाता है। केवल सहूलियत के लिए काल को नापा जाता है, वैसे काल अनादि-अनंत है। दूसरा काल है जो वेगक्षय करता है। कोई शोक में डूबा हो तो हम कहते भी हैं कि 'थोड़ा काल बीतने दो, फिर मन शांत हो जायेगा।' काल बड़ा सूक्ष्म तत्त्व है। *

प्रश्न – 'कवि' शब्द की उत्पत्ति कहां से हुई?

बाबा – 'कू' में से। 'कू' यानी कूजन। जो कूजन करता है वह है कवि। शास्त्र ने भी कवि के लिए क्रांतदर्शिता का गुण बताया है। *

प्रश्न – क्या एक ही जन्म में मोक्ष मिल सकता है?

बाबा – अवश्य मिल सकता है। क्योंकि मानवदेह ऐसी है कि उसमें चिंतनशक्ति पड़ी है। यह शक्ति चींटी में नहीं। चींटी चिंतन करेगी तो खाने की चीजें इकट्ठा कैसे करें इसका करेगी, इससे ज्यादा चिंतन उससे नहीं होगा। परमात्मा का चिंतन करने की शक्ति मानवदेह में है। लेकिन परमात्मा का निरंतर ध्यान और सत्कर्म करते हुए भी इस जन्म में मोक्ष नहीं सधा तो अगला जन्म मानव-जन्म मिलेगा और मोक्ष सधेगा। लेकिन प्राप्त करने का प्रयत्न तो इसी जन्म में होना चाहिए, तो शायद अगले जन्म में प्राप्त होगा। अगले जन्म में प्राप्त करेंगे ऐसा सोचेंगे तो शायद दस जन्म लग जायेंगे। *

प्रश्न – परलोक क्या है, कहां है और वहां का राजा कौन है?

बाबा – परलोक रात को, बिछौने पर है और उसके राजा हम ही हैं। सोने पर हम परलोक में जाते हैं और जागृत होने पर इहलोक में आते हैं। जो गाढ़ निद्रा लेते हैं, वे ब्रह्मलोक में जाते हैं। जिनको अच्छे सपने आते हैं, वे स्वर्गलोक में जाते हैं और जिनको बुरे सपने आते हैं, वे नरक में जाते हैं। निद्रा समाधि है, उसमें आप परलोक में जाते हैं और फिर वापस आते हैं। परमेश्वर की इच्छा है, इसलिए वापस आते हैं। इसी को व्यापकरूप देकर शास्त्रकारों ने समझाया है कि जैसे अगले दिन का अधूरा काम दूसरे दिन जागृत होने पर पूरा करते हैं, वैसे ही इस जन्म का काम पुनर्जन्म में आगे चलाते हैं। *

प्रश्न – ये भूः भुवः आदि लोक क्या हैं?

बाबा – ये लोक मानसिक अवस्थाओं के प्रतीक हैं। मैं तो इन्हें स्वप्न

वृत्तियां सम हो जाती हैं। हिंसक पशु और अहिंसक मृग सभी एक समान हो जाते हैं। उसी सुषुप्ति-अवस्था का बढ़ा हुआ आकार इन लोकों में हमको मिलता है। ये सब अवस्थाएं हैं। किसी में मन तथा किसी में बुद्धि प्रधान है। उनसे ऊबकर मनुष्य का आत्मा आगे-आगे बढ़ना चाहता है और सत्यमय ब्रह्मलोक में जाता है। सत्त्वगुण आत्मा के सबसे अधिक समीप होने पर भी वह अंतिम स्थिति नहीं है। इसी लिए कहा है कि **आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन**। उनका भी नाश है।

प्रश्न – ब्रह्मलोक का नाश कैसा?

बाबा – ब्रह्मलोक यानी ब्रह्मदेव का लोक, न कि ब्रह्म का लोक। ब्रह्मलोक तो सब लोकों से परे है। वह एक साम्यावस्था है, जिसके प्राप्त होने पर जीव ब्रह्मलीन और शांत हो जाता है।

प्रश्न – इस श्लोक में पुनरावर्तन का अर्थ पुनर्जन्म है?

बाबा – पुनरावर्तन अर्थात् परिवर्तन, पुनर्जन्म नहीं। *

प्रश्न – आप योगशक्ति पर विश्वास करते हैं?

बाबा – अवश्य। वह दो प्रकार की होनी है। एक तो वह जो यम-नियम आदि करने के बाद प्राप्त होती है। दूसरी, जिसका इनसे संबध नहीं और केवल मानसिक होती है। उसका दुरुपयोग होना संभव है। पतंजलि ने अपने योगसूत्र में इसलिए यम-नियम को ही मुख्य रखा है। बाकी हठयोगी आदि केवल शरीरशोधन या सिद्धिप्राप्ति के लिए योग करते हैं। पातंजल योग का उद्देश्य चित्तशोधन के द्वारा आत्मप्राप्ति है। *

प्रश्न – क्या आत्मा के स्वरूप का चिंतन आवश्यक है?

बाबा – चित्तशोधन द्वारा भी आत्मप्राप्ति हो सकती है और स्वतंत्ररूप से भी हो सकती है परंतु चित्तशोधन द्वारा यह सरल होती है। शुद्ध चित्त में आत्मा का प्रतिबिंब अच्छा पड़ता है। *

प्रश्न – स्वरूप-चिंतन का क्या अर्थ है?

बाबा – मुख्य चिंतन यह होना चाहिए कि आत्मा शरीर से अलग है। केवल बौद्धिकरूप से समझ लेने से काम नहीं चलता, उसका अनुभव भी होना आवश्यक है। यह केवल अभ्यास से ही हो सकता है।

से तितिक्षा बढ़ती है, परंतु शरीर के अधिक पीड़न से उत्तेजना भी बढ़ जाती है। हमें तो मनोवृत्ति ही ऐसी बनानी चाहिए कि हम शरीर से अलग हैं।

प्रश्न – शरीर से किस प्रकार अलग हुआ जाये?

बाबा – अपने को इंद्रियां और शरीर से अलग समझना सबसे बड़ी वैज्ञानिक प्रक्रिया है। इसकी शिक्षा पहले से ही बालकों को दी जानी चाहिए। कोमल हृदय पर किसी भी तत्त्व का जमाना सरल होता है। परंतु हम बच्चों को पहले ही से इंद्रियलोलुप बनाते हैं। उन्हें यह समझाना चाहिए कि इंद्रियां केवल ज्ञान की साधन हैं, न कि भोग की। कड़वी होते हुए भी यदि कोई चीज लाभदायक सिद्ध कर दी जाये, तो वे अवश्य खायेंगे और मीठी चीजें यदि हानिकर सिद्ध हों तो वे कभी नहीं खायेंगे। बालकों को सदा यही शिक्षा देनी चाहिए कि हम आत्मरूप हैं और शरीर से अलग हैं। इंद्रियां उसके ज्ञान या कर्म के साधन हैं। इस प्रकार उनमें निर्लिप्तभाव का उदय होगा और वे आजन्म वैसा व्यवहार करेंगे। *

प्रश्न – कुछ मनोवैज्ञानिकों का मत है कि मनुष्य-स्वभाव प्राकृतिकरूप से ही अधोगामी है?

बाबा – ऐसा नहीं है। वह प्रकृति से शुद्ध है, परंतु बाहरी प्रभावों और प्रवृत्तियों के कारण विकारयुक्त हो जाता है। सारे वातावरण में सत् और असत् विचार भरे पड़े हैं। वे हमारे दिमाग से आकर टकराते हैं और हमें दुःखी कर डालते हैं। उनसे प्रभावित न होकर हमें दृढ़ता और सद्विचारों की तरंग स्वयं उत्पन्न करनी चाहिए। आत्मा का स्वरूप तो शुद्ध-बुद्ध और निरंजन है। वैज्ञानिक मन का विश्लेषण करते हैं, परंतु 'मनोजय' का उपाय नहीं बतलाते। हमारे यहां बाहरी और भीतरी दोनों उपाय बताये गये हैं। मन अशांत या विकारयुक्त होते ही स्नान कर डालना चाहिए। बुरे विचारों को वचनरूप तथा कार्यरूप में न आने देना चाहिए। अगर वे मन में भी न आयें तो बहुत अच्छा, अन्यथा उन्हें वचन और कार्य में तो रोकना ही चाहिए। *

प्रश्न – चित्त शुद्ध करने की प्रक्रिया क्या है?

बाबा – अपने में कौन-सा गुण है, यह देखें। दुनिया में ऐसा एक

प्रक्रिया है। जब गुण का अत्यंत उत्कर्ष होगा, तब उन गुणों के आधार से समाधि लगेगी। दूसरा, मुझमें कुछ दोष हैं। वे जिस मनुष्य में नहीं होंगे, उसका आदर करें, उसका द्वेष न करें।

मान लीजिए एक वर्तुल है और उसके मध्य में परमात्मा है तो हम सब परमात्मा से समान फासले पर हैं। किसी के पास सत्य (गुण) है। इनके पास क्षमा है। और उनके पास प्रेम है। सत्यवाला अपना गुण बढ़ाते-बढ़ाते परमेश्वर के पास पहुंचे। परमेश्वर के पास पहुंचने के बाद बाकी गुण अपने-आप ही आयेंगे। सत्यवाला सीधा परमेश्वर के पास पहुंचेगा। अगर वह क्षमावाले के मार्ग पर जाने लगेगा, तो वह भूमिति के तत्त्व के खिलाफ होगा। त्रिकोण की दो रेखाएं तीसरी से बड़ी होती हैं। इसलिए उसके मार्ग पर जाने के बदले, अपने मार्ग से जाना ही सीधा और सरल होगा। वहां पहुंचने के बाद पूर्णता सहज ही प्राप्त होगी। इस तरह चित्तशुद्धि की दुहरी प्रक्रिया है।*

प्रश्न – शीघ्र और अहंशून्य निर्णय कैसे किया जाये?

बाबा – सहजप्राप्त सत्कार्य करते रहने से अहंशून्यता की ओर जाने में मदद होगी। यह शीघ्र सधे, इसकी आवश्यकता नहीं, धीरे-धीरे सधता रहेगा। भगवान की कृपा हुई तो शीघ्र भी सध सकता है, लेकिन वह बात अपने अधीन नहीं है। *

प्रश्न – 'तुम महान हो, क्षुद्र जीव नहीं' यह भाव रखते हुए काम करने पर अहं का भाव कैसे निकल सकता है? क्या इस भाव से कार्य करना अहंबोधक नहीं?

बाबा – हम क्षुद्र जीव नहीं और न दूसरे ही क्षुद्र हैं। अहंता तो तब आती है, जब दूसरों को क्षुद्र मानकर अपने को बड़ा समझें। *

प्रश्न – समाधान कैसे मिल सकता है?

बाबा – अपने को भूलने से ही समाधान प्राप्त होगा। सदैव याद रखो कि हम दूसरों की सेवा के लिए हैं, अपने लिए नहीं। यदि सोचोगे कि मैं अपने लिए हूं, तो असमाधान ही रहेगा। मेरा जीवन मेरे लिए नहीं, यह खयाल करने से ही समाधान मिलेगा। जितना अपने को याद करोगे, उतना असमाधान होगा और जितना अपने को भूलोगे, उतना ही समाधान मिलेगा।

बाबा – दरवाजा बंद रहा तो सूर्य अंदर प्रवेश नहीं करता। पूरा खोला तो पूरा प्रवेश करेगा, आधा खोला तो आधा प्रवेश करेगा। अब खोलना यानी क्या? **सांस सांस पर राम कहो, वृथा सांस मत खोय** – प्रत्येक सांस के साथ रामनाम चलना चाहिए। एक क्षण भी नामस्मरण के बिना नहीं जाना चाहिए। यह है खुला चित्त। इसका अर्थ यह नहीं कि स्मरणरूप क्रिया चलनी चाहिए, क्रिया की जरूरत नहीं। जिसको 'कान्शसनेस' कहते हैं ऐसी जाग्रति चित्त में चाहिए। हम उसके पास हैं, वह हमारे पास है, ऐसी निरंतर अंदर में जाग्रति चाहिए। यह होता है तो चित्त खुला है। *

प्रश्न – चित्तस्फोट कैसे होगा?

विनोबा – चित्त माईन्यूट (सूक्ष्म) होना चाहिए। स्थूल नहीं रहना चाहिए। चित्त स्थूल इसलिए बनता है कि उस पर संसार के आवरण होते हैं। उन आवरणों को हटाने पर चित्त सूक्ष्म की ओर मुड़ता है। *

प्रश्न – वासनात्याग कैसे हो?

बाबा – वासनाओं के निराकरण का क्रम होगा – 1. कुवासना-त्याग, 2. सद्वासना भी सबको उपलब्ध न हो, तो उसका भी त्याग, 3. सद्वासना हो, लेकिन उसके भोग में मात्रा हो और 4. व्याकुलता को काबू में रखने के लिए सद्वासनात्याग। *

प्रश्न – हम आत्मज्ञान की ओर बढ़ रहे हैं, इसका मापदंड क्या है?

बाबा – निर्विकारता ही उसका पैमाना है। केवल काम-क्रोध आदि स्थूल विकार ही नहीं परंतु आलस्य, स्वाद, शरीरसुख की कामना आदि सूक्ष्म विकार भी हममें कम होते जाने चाहिए। *

प्रश्न – असत्य से कैसे छूटें?

बाबा – असत्य को जब तक लाभदायक के बदले घातक नहीं समझेंगे, तब तक वह दूर नहीं होगा। अभी तो हम असत्य को ही सत्य की अपेक्षा अधिक लाभदायक और प्रिय समझते हैं, इसलिए उसके प्रयोग में संकोच नहीं करते। साहित्य में भी असत्य को 'अतिशयोक्ति' नाम देकर ऊंचा उठाने का प्रयत्न किया है। वास्तव में 'स्वभावोक्ति' से ही असली आनंद आना चाहिए। *

की रोशनी छोड़ी जाये, तो आंख को पीड़ा होगी, सहन नहीं होगा। इसका नाम है – द्वेष। यदि हराभरा मैदान आंख के सामने हो, तो आनंद होता है, खुशी होती है। यह है – राग। इस तरह स्पष्ट है कि इंद्रियों में राग-द्वेष अनिवार्य हैं। बल्कि इंद्रियों में राग-द्वेष न हो तो वे बेकार बन जायेंगी। खाने के लिए कोई वस्तु बनायी गयी और नाक को दुर्गंध आयी तो वह नहीं खाते। इस तरह कुछ राग-द्वेष लाभदायी होते हैं, कुछ राग-द्वेष नुकसान करनेवाले भी हैं।

दोष वहां आता है, जहां हम मर्यादा से आगे बढ़ जाते हैं। मधुर गायन सुनने से आनंद होता है, लेकिन बहुत अधिक सुनने से दिमाग को नुकसान भी पहुंचता है। घंटों गाना सुनते रहें, जागते रहें, तो वह अति हो जायेगा। वह आसक्ति है। जहां विषयों का मर्यादित सेवन होता है, वहां राग-द्वेष हानिकारक नहीं होते। जहां अतिरेकी सेवन होता है, वहीं हानि होती है। वेदांत समझानेवाले यह नहीं समझाते कि राग-द्वेष दो प्रकार के हैं। उलटे उसका खंडन ही करते हैं। मनुष्य कई राग-द्वेषों से मुक्त हो सकता है। पर जो जरूरी राग-द्वेष हैं, उनसे मनुष्य को देह से मुक्त होने पर ही छुट्टी मिलती है, देह के रहते वह संभव नहीं है। देह में रहते हुए इतना ही हो कि राग-द्वेष मर्यादा से बाहर न जायें। ज्ञानी की जिह्वा पैनी होनी चाहिए। कोई कुछ भी खा ले, तो या तो वह पागल है या अच्छे अर्थ में वह ध्यानयोगी हो सकता है। लेकिन जो सच्चा ज्ञानी होगा, वह खाने की चीज का गुणधर्म और मात्रा बराबर पहचानेगा।

*

प्रश्न – हमारी वासनाएं और आत्मा की इच्छा या प्रेरणा, दोनों का अंतर कैसे पहचानें?

बाबा – दोनों का अंतर अंधकार और प्रकाश जैसा है। वासना चित्त को अशांत करती है, जबकि परमात्म-प्रेरणा शांति देती है। वासना का चित्त पर बोझ होता है, जबकि परमात्म-प्रेरणा से प्रेरित चित्त सब भारों से मुक्त होता है।

*

प्रश्न – आप प्राचीन धर्मग्रंथों के अध्ययन पर जोर देते हैं, लेकिन आधुनिक साहित्य के बारे में कुछ नहीं कहते। क्या आइन्स्टीन का साहित्य अमर साहित्य नहीं है?

में प्राचीन किताबें पढ़ें। यह थोड़े में नुस्खा है, युक्ति है। विज्ञान में नयी-नयी खोजें होती रहती हैं। विज्ञान निरंतर बदलता रहेगा। न्यूटन के जमाने में न्यूटन से बढ़कर दूसरा विद्वान नहीं था। परंतु आज स्कूल का बच्चा भी उससे अधिक जानता होगा। यह खयाल भी गलत है कि आइन्स्टीन का साहित्य अमर है। विज्ञान बहुत गति से आगे बढ़ रहा है, इसलिए नयी-नयी खोजें होंगी और पुरानी पीछे रह जायेंगी। *

प्रश्न – ईश्वरानुभूति होने का सबसे मुख्य प्रमाण क्या है?

बाबा – यह अनुभूति जीवन में उतर जायेगी और अपने-पराये का भेद दूर होकर एक सत्ता का अनुभव होगा।

प्रश्न – इसका मतलब दूसरे के दुःख को अपना दुःख और दूसरे के सुख को अपना सुख समझना?

बाबा – अगर व्यक्ति सारे संसार का दुःख अपने ऊपर लेकर बैठ जायेगा तो उसके बराबर दुःखी कोई न होगा। दूसरों के सुख-दुःख से सुखी-दुःखी होने का अर्थ है – लोगों से सहानुभूति की भावना, न कि उनके दुःख से एकरूप हो जाना।

प्रश्न – फिर आत्मौपम्य बुद्धि का क्या अर्थ होगा?

बाबा – उसका अर्थ है – समत्वबुद्धि। सुख और दुःख को सम समझना, फिर चाहे वे अपने हों या दूसरों के। हमें सुख-दुःख में तटस्थ और समत्वबुद्धि रखनी चाहिए और अनासक्तभाव से उसे दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। *

प्रश्न – 'सामूहिक समाधि' से आपका क्या मतलब है?

बाबा – मनुष्य अपनी देह से छूटता है, तो भी उसकी मुक्ति की अपेक्षा बाकी रह जाती है। अमुक्त रहते हुए मुक्ति की अपेक्षा रखता है। इसका अर्थ यह हुआ कि उसकी मुक्ति 'देहबद्ध' – यानी एक विशिष्ट देह के साथ बंधी है। लेकिन जिस समय वह पहचान लेगा कि मैं इस एक ही शरीर में नहीं, अन्य सभी शरीरों में हूं, तभी वास्तव में उसकी उपाधियों से मुक्ति होगी। ऐसी स्थिति में यदि एक देह से छूटने पर कोई समझ ले कि मैं मुक्त हो गया, तो वह मुक्त नहीं। तब तो वह मुक्ति ही बंधन बन बैठती है। इस तरह 'मुक्ति' का स्वच्छ और निर्मल अर्थ लेना हो तो उसे

प्रश्न – सामूहिक साधना कैसे सधे?

बाबा – वास्तव में व्यक्तिगत साधना के अभाव में सामुदायिक साधना बनेगी नहीं। लेकिन, व्यक्तिगत साधना का स्वरूप ही निरहंता यानी ही व्यक्तिशून्यता और सामुदायिक साधना का स्वरूप यानी सर्वापेक्षता अथवा अन्योन्य सहकार। इस प्रकार की साधना का पैमाना बढ़ने के लिए परस्पर संवित् जाग्रत् रहना चाहिए। अर्थात् हमारी सभी हलचलें – स्वार्थ की या परार्थ की या परमार्थ की; अंतर या बाह्य दोनों प्रकार की – हमारे एक आत्मा की सन्निधि में रहती हैं, वे सब आत्माओं की सन्निधि में होनी चाहिए।

*

प्रश्न – धन और द्रव्य दोनों में क्या अंतर है?

बाबा – संस्कृत में एक 'धन' शब्द है और एक 'द्रव्य' शब्द है। 'धा' धातु से धन बना है, जिसका अर्थ है रखना। तो धन का अर्थ हुआ, एक जगह बैठनेवाला। 'द्रव्य' शब्द द्रु धातु से बना है, जिसका अर्थ है बहना। तो द्रव्य यानी दौड़नेवाला, फुटबाल का खेल। मेरे पास गेंद आयी तो मैंने लात मारकर उसे आपकी ओर फेंकी। आपने लात मारकर दूसरे की ओर, उसने तीसरे की ओर। मान लीजिए, मैंने गेंद आपकी ओर फेंकी और आपने उसे पकड़ रखा, तो क्या होगा? तो सारा खेल समाप्त! आपके पास गेंद आये, और आप उसे दूसरे के पास भेज दें, तभी खेल चलेगा। वैसे ही द्रव्य का होना चाहिए। आपके पास आया, तो तुरंत फेंक दें। यदि धन ऐसा दौड़ता रहे, द्रव्य बने तो तारक होगा।

मान लीजिए, मैं गांव का तेली हूं और आप हैं गांव के जुलाहा। आप मेरा तेल खरीदते हैं, तो आपका थोड़ा पैसा मेरे पास आया। मैंने हजाम से हजामत करवायी, तो मेरे पास से पैसा उसके पास गया। फिर हजाम को कपड़ा खरीदना पड़ा, तो पैसा आपके पास आया। यानी जुलाहे से पैसा तेली के पास आया, तेली से हजाम के पास गया और हजाम से फिर जुलाहे के पास आया। इस तरह गांव में एक-दूसरे के धंधे को मदद करते जायें, तो वह पैसा जीवन के लिए तारक होगा। खेलता हुआ पैसा ही 'द्रव्य' है।

इसके विपरीत आपके पास पैसा आया और आपने जेब में रख लिया, गांव में एक-दूसरे से माल नहीं खरीदा, बुढ़ापे में काम आयेगा, यह कहकर

हम भोजन के लिए बैठे हैं। थाली में लड्डू आया। हाथ ने ले लिया और हाथ बन गया स्वार्थी यानी लड्डू को पकड़ रखा, मुंह में नहीं डाला तो शरीर को पोषण कैसे मिलेगा? लेकिन हाथ ऐसा नहीं करता। वह लड्डू मुंह में डालता है। मुंह उसे चबा-चबाकर पेट में ढकेल देता है और पेट पचाकर उसका खून बनाता है तथा शरीर में चारों ओर भेज देता है। शरीर के अवयव स्वार्थी नहीं होते। यदि हृदय स्वार्थी बना और उसने खून को इधर-उधर नहीं बहाया, तो हार्टफेल हो जायेगा। शरीर के सारे अवयवों में अन्योन्य प्रेम है। अपनी चीज दूसरों को देने की यह क्रिया जैसे शरीर में चलती है, वैसी ही समाज में चलनी चाहिए।

चीज पास न रखकर बांट देने में ही लाभ है। आपके पास कटहल है, तो वह भी बांटकर खायें। आपका कटहल इनके पास जायेगा, इनका आपके पास आयेगा। यह जो दान की प्रक्रिया है, वह सतत चले – एक के पास से दूसरे के पास, दूसरे से तीसरे के पास, तो समाज खड़ा रहेगा।

आज गांव की स्थिति उलटी है। गांव के लोग गांव के तेली का तेल नहीं खरीदते। तेली गांव के बुनकर का कपड़ा नहीं खरीदता। बुनकर गांव के चमार से जूता नहीं खरीदता। यानी हम गांववाले एक-दूसरे की मदद नहीं करते, अपना स्वार्थ देखते हैं। बाहर सस्ता मिलता है, तो वहां से खरीदते हैं। परिणामस्वरूप गांव का शोषण होता है। यदि हमें दूसरे गांव से चीज खरीदनी हो, तो ग्रामसभा द्वारा खरीदें। आज क्या होता है? हर कोई बाहर से माल खरीदता है और अपनी-अपनी चीजें बाहर बेचता है। इसी लिए बाहरी लोगों द्वारा गांवों का शोषण होता है। इसके बजाय ग्रामसभा द्वारा व्यवहार हो।

इस तरह व्यवहार चलेगा, तभी 'धन' 'द्रव्य' बनेगा। 'धन' नाशकारक तो 'द्रव्य' लाभदायक है। धन के बिना तो अच्छा चलेगा, उससे कोई मामला नहीं बिगड़ेगा। पर द्रव्य के बिना चल नहीं सकता। *

प्रश्न – खुशी किसे कहते हैं और गम किसे?

बाबा – चित्त को समाधान हो, उसे 'खुशी' और चित्त को असमाधान हो, उसे 'गम' कहते हैं।

यह नहीं हो सकता कि हमें गर्मी के दिनों में ठंडा पानी मिले तो खुशी न महसूस हो। लेकिन चित्त ऐसा बन सकता है कि कर्तव्य के लिए तकलीफ होने पर भी इन्सान उसे उठाये और उसी को आनंद समझे। यह सुख का विषय है और यह दुःख का, यह पहचाने, लेकिन कर्तव्य के लिए दुःख भुगतना पड़े तो उसे खुशी से भोगे। *

प्रश्न – पैदा होते ही बालक रोता क्यों है?

उत्तर – इसका आध्यात्मिक उत्तर है कि बालक पैदा हुआ यानी परमेश्वर के यहां से आया। आधार छोड़कर आने से वह अपने को निराधार महसूस करता है। फिर उसे मां मिलती है, जो परमेश्वर की जगह ले लेती है। मैं कहता हूं, हम पैदा हुए तो रोते हुए आये, लेकिन मरते समय तो हंसना चाहिए, क्योंकि अब पुनः भगवान के पास जा रहे हैं। *

प्रश्न – विज्ञान की नयी-नयी खोजों से सृष्टि की ज्ञानसंबंधी उलझनें कम होने के बजाय बढ़ती-सी दीख रही हैं। क्या किया जाये?

बाबा – कहा जाता है, 'लिटिल नॉलेज इज ए डेंजरस थिंग (अल्प ज्ञान खतरे की चीज है), वैसे ही 'लिटिल साइन्स इज ए डेंजरस थिंग' (अल्प विज्ञान खतरे की चीज है)। आज दुनिया में 'लिटिल साइन्स' (अल्प विज्ञान) है, इसी लिए उलझनें हैं। विज्ञान खूब बढ़ना चाहिए। ज्यों-ज्यों वह बढ़ता जायेगा, उलझनें दूर होती जायेंगी। *

प्रश्न – आज चारों ओर श्रद्धाहीन जीवन दिखायी दे रहा है। कहीं श्रद्धा और निष्ठा दिखायी नहीं देती। क्या समाज ऐसा ही चलता रहेगा?

उत्तर – श्रद्धा पर भगवान ने बहुत बड़ा भाष्य किया है। श्रद्धाहीन कोई भी नहीं है। श्रद्धा के बिना जीवन ही संभव नहीं। लेकिन वह सात्त्विक, राजस, तामस त्रिविध है और उनमें सात्त्विक श्रद्धा ही तारक होती है। उसकी वृद्धि के लिए संतों का उत्तम साहित्य उपलब्ध है। उसमें कुछ भाग पुराना-सा हो गया है, उतना छोड़कर उसका चिंतन, मनन करना चाहिए। इसके अलावा सात्त्विक आहारादि की भी योजना होनी चाहिए। *

प्रश्न – दिवास्वप्न, आदर्शवाद और यथार्थवाद में कितना अंतर है?

बाबा – दिवास्वप्न व्यर्थ है। आदर्शवाद की ओर मनुष्य को जाना

प्रश्न – देश में जो अन्याय चल रहा है, उसका मुकाबला कैसे करें?

बाबा – इस समय भारत में इतना अन्याय चल रहा है कि हम उसके पीछे पड़े, तो हमारे लिए न्याय के साथ एक भी कदम उठाना कठिन हो जायेगा। फिर भी हम कदम उठा रहे हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि काल-प्रवाह हमारे लिए अनुकूल है। यह हमारा दर्शन है। वैसे तो जरा आंख खोलो, तो सर्वत्र अन्याय-ही-अन्याय दीखता है। राजनैतिक क्षेत्र से लेकर रचनात्मक क्षेत्र तक और खादी से लेकर गादी तक सर्वत्र अन्याय दीख रहा है। लेकिन मेरी दृष्टि यह है कि छोटे-मोटे अन्यायों को दूर करने में शक्ति खर्च करने के बजाय भावात्मक (पॉजिटिव) काम उठायें, तो ठोस परिणाम आयेगा। हमें परिणामपरायण भी नहीं बनना है और न परिणामनिरपेक्ष ही। दूसरे लोग छोटे-मोटे काम करते हैं और सफल होते हैं, तो मैं कहता हूं कि अच्छा हुआ! समर्थ रामदास ने कहा है – **परस्परें उभारावें, भक्तिमार्गासी** – अर्थात् भक्तिमार्ग का आयोजन दूसरों के जरिये ही करवाया जाये। कर्ममार्ग के लिए तो यह कहा ही जाता है, लेकिन भक्तिमार्ग के लिए भी कहा गया है कि दूसरों के जरिये काम करवाये जायें। **दास डोंगरीं राहतो। यात्रा देवाची पाहतो** – समर्थ रामदास कहते हैं कि वे स्वयं पहाड़ पर रहते हैं और भगवान के मंदिर में चल रही यात्रा को दूर से ही देखते हैं। *

प्रश्न – वर्तमान समाज में मुक्ति के लिए किन चीजों की आवश्यकता है?

बाबा – तीन चीजें जरूरी हैं – 1. हम जिसे सत्य समझते हैं, उस पर चलना। 2. सुखी लोगों के लिए प्रेम रखना, और 3. दुःखी लोगों के लिए करुणा। ये तीनों चीजें अत्यंत आवश्यक हैं। इनके अलावा दो चीजें और हैं जो इन्हीं में से निकलती हैं – 1. निर्भयता और 2. इंद्रियों पर संयम। इन दो को हमने अलग स्थान नहीं दिया, क्योंकि सत्य, प्रेम, करुणा में ये आ ही जाती हैं। ये पांच चीजें हों, तो मुक्ति का मार्ग खुल जाता है।

प्रश्न – कोणार्क के नग्न चित्रों का क्या अर्थ है?

बाबा – उसमें तो बहुत गहरी आध्यात्मिक दृष्टि है। जिस क्रिया से मैं पैदा हुआ, उसकी मैं तो कीमत कम नहीं करता। वह पवित्र क्रिया ही माननी चाहिए। किंतु ब्रह्मचर्य उससे भी अधिक ऊंचा है। इसलिए वीर्यशक्ति

चाहिए, यह मेरी समझ में ही नहीं आता। यदि उसे स्त्रियों का संपर्क मिलता हो, तो उससे उसे पवित्रता का ही अनुभव आना चाहिए। साधारण अवस्था में जितना पवित्र लगता है, उससे ज्यादा पवित्र स्त्रियों के संपर्क में लगना चाहिए, तभी वह ब्रह्मचारी है। *

प्रश्न – पहले धर्म पैदा हुआ या मानव?

उत्तर – धर्म दो प्रकार का होता है। एक मानव का और दूसरा प्रकृति का। प्रकृति का धर्म मानव से पहले पैदा हुआ, जबकि मानव का धर्म मानव के साथ पैदा हुआ। *

प्रश्न – प्रयत्न करने पर भी क्रोध आ जाता है, फिर पश्चात्ताप होता है। फिर भी क्रोध आता है। शमन का क्या उपाय है?

बाबा – क्रोध एक निर्दोष रिपु है। उसमें बहुत डंक या जहर नहीं है। जहर होता है द्वेष में, मत्सर में। द्वेष की भावना बरसों से रहती है। बरसों से उसकी योजना बनती है। क्रोध तो उफान है, वेग है। क्रोध जंगल के सूअर के समान है, जो सामने से सीधा हमला करता है। क्रोध का कभी-कभी उपयोग भी होता है। लेकिन उसको क्रोध नहीं, तेज कहते हैं। महाभारत में कहा है – तेज हमेशा अच्छा नहीं और क्षमा भी हमेशा अच्छी नहीं।

क्रोधशमन के लिए अच्छा उपाय है कि क्रोध आ रहा है ऐसा भास हो, तब तुरंत मिश्री का एक टुकड़ा अपने मुंह में और एक टुकड़ा सामनेवाले के मुंह में डाल देना। मैं ऐसा करता था, तो इसका अच्छा परिणाम आता था। मुंह बंद भी होता था और मीठा भी होता था। लेकिन मुख्य बात यह है कि मुझे क्रोध आ रहा है, यह भान होगा, तब तो मिश्री मुंह में जायेगी! *

प्रश्न – क्या आपको आशा है कि आपका लक्ष्य पूरा होगा?

बाबा – मुझे तो पूरी आशा है। आप गंगोत्री में गंगा से जाकर पूछिए कि क्या तुझे समुद्र में पहुंचने की आशा है? तो वह क्या कहेगी? मेरी हद तक मैं इतना ही कहूंगा कि जब तक यह काम पूरा नहीं होता और जब तक मेरे पांव में भगवान ने ताकत रखी है, तब तक मैं चलते रहनेवाला

बुद्ध आये, पर मसले हल नहीं हुए। तो यह सारा भगवान का नाटक चल रहा है। हमें देखना इतना ही है कि हमने जिस रास्ते को अख्तियार किया है, वह कारगर है या नहीं। अगर आप उस रास्ते से ही नहीं जाना चाहते तो कौन क्या करेगा? *

प्रश्न – आपकी पदयात्रा चलती है, उसमें ग्रामोद्योगों के नियम होने चाहिए या नहीं?

बाबा – देखो, नियम मेरे लिए हैं, मैं नियमों के लिए नहीं। कारण मैं मुक्ति के लिए कार्य कर रहा हूं, बंधन के लिए नहीं। इसलिए नियम करने की वृत्ति मुझमें नहीं है। समाज में परिवर्तन करने की शक्यता मुझे लगे, तो मैं करूंगा। अन्यथा अपने पास में एक चावल की पोटली रखूं और उसे पकाकर खाऊं और किसी जगह पर चावल न मिले, तो चावल के बिना चला लूं, तो उसमें अपनी तपस्या का ही प्रचार होता है, ग्रामोद्योगों का प्रचार नहीं। *

प्रश्न – (जर्मन टेलिविजनवालों का) – भूदान-ग्रामदान के जरिये क्या हासिल किया?

बाबा – बाबा हॅज अचीव्ह्ड् ए बिग झीरो ॲण्ड बाबा इज गोइंग टु अचीव्ह अनदर झीरो। टू झीरोज मेक इनफिनिट इन मॅथमेटिक्स। सो, वन झीरो इज अचीव्ह्ड् ॲण्ड अनदर इज गोइंग टु बी अचीव्ह्ड् (बाबा ने एक बड़ा शून्य हासिल किया है और बाबा दूसरा शून्य हासिल करनेवाला है। दो शून्य मिलकर गणित में अनंत होता है। एक शून्य तो मिला है, दूसरा शून्य मिलनेवाला है)। *

प्रश्न – सोशॅलिस्ट लोग कहते हैं कि आपके तरीके से भूमिसमस्या के सुलझाने में पांच सौ बरस लगेंगे। आपका इस संबंध में क्या खयाल है?

बाबा – क्रांतियां ऐसे गणित से नहीं हुआ करतीं! अगर मेरी अकेले की शक्ति से ही यह काम होना हो, और आप सब लोग हाथ-पर-हाथ धरे खामोश बैठनेवाले हों, तब तो इस तरह गणित का हिसाब लगाइए। लेकिन मैं आपसे कहना चाहता हूं कि यह काम तांत्रिक या यांत्रिक नहीं है। यह काम तो मांत्रिक है। इसका एक मंत्र है। वह चल पड़ा है। जब कोई 'मंत्र' समाज में जाता है तो फिर वह तीव्र गति से काम करता है।

सिद्ध करने में, हजम करने में, जो समय लगता है वही लगता है। एकबार मंत्र सिद्ध हुआ, तो काम भी सिद्ध हुआ समझिए। इसलिए यह काम पांच सौ बरस में नहीं, एक साल में भी पूरा हो सकता है। और वास्तव में तो वह पूरा हो चुका है। *

प्रश्न – क्या आपकी अहिंसा की भूमिका और पश्चिम के शांतिवादियों की भूमिका एक ही है?

बाबा – अहिंसा के बारे में चार भूमिकाएं (पोजिशन्स) होती हैं – व्यावहारिक (प्राग्मैटिक), सैद्धांतिक (डाग्मैटिक), वैचारिक (रैशनल), और सर्वातीत (ट्रान्सेन्डेण्टल)। पश्चिम के शांतिवादियों की पहली भूमिका है। वे युद्ध के गुणावगुणों (मेरिट्स) में नहीं जाते और हर युद्ध का विरोध करते हैं। वैज्ञानिकों की भूमिका तीसरी होती है। पं. नेहरू की भूमिका (प्राग्मैटिक) थी, जबकि मेरी भूमिका सर्वातीत (ट्रान्सेन्डेण्टल) है। *

प्रश्न – कर्मसंन्यास यानी क्या?

बाबा – कर्मसंन्यास यानी कर्म छोड़ना नहीं है। मनुष्य कुछ-न-कुछ कर्म करता ही है। खाना-पीना छोड़ नहीं सकता, तो गरीब को खिलाने का कर्म कैसे छूट सकता है?

संन्यास का अर्थ है – सत्कर्म करना, अहंकार छोड़ना। कुछ संन्यासियों के देह की वासना खत्म हो जाती है, इसलिए वे उपवास कर देह छोड़ने का सोचते हैं। पर वे तो बहुत आगे गये हुए लोग हैं। संन्यास का मतलब है कि मूल में जो रस है, वह छोड़ना। देहरक्षण और लोकसंग्रह के लिए जिन कर्मों की आवश्यकता नहीं, वे कर्म छोड़ें, बाकी कर्म करें – लेकिन संकल्प छोड़कर, वासना छोड़कर। *

प्रश्न – विश्वास में सावधानता का क्या स्थान?

बाबा – इतनी ही सावधानता रखी जाये कि आपके भीतर दूसरों के बारे में अविश्वास न पैठ जाये। ईश्वर से हम प्रार्थना करें कि हे ईश्वर! दूसरों के लिए अविश्वास न निर्माण हो इतना सावधान रहने की शक्ति और जाग्रति मुझे दे।

पूर्ति

वेदोपनिषद

मैंने चारों वेद देखे हैं। सबका अध्ययन किया है, ऐसा नहीं कह सकता। कुछ अध्ययन किया है, तो वह केवल ऋग्वेद का किया है। ऋग्वेद को मैं आध्यात्मिक काव्य ही मानता हूं। और उस दृष्टि से उसका स्वतंत्र अर्थ मेरे मन में अंकित भी हुआ है।

वेद से हमें ऐतिहासिक या व्यावहारिक जानकारी मिल सकती है। लेकिन वह वेद का तात्पर्य नहीं। **यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति** (ऋसा 1.23.12) – जो परमात्मा को जानता नहीं, वह ऋग्वेद को लेकर क्या करेगा? वेद के बारे में एक वचन है – **सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति** (कठ 39)। उपनिषद कहते हैं कि सब वेद एक परमात्मा का ही विवेचन करते हैं। वैदिक ऋषियों को वेद के गौ इत्यादि शब्दों के स्थूल अर्थ अभिप्रेत नहीं हैं। जैसे, **चत्वारि शृंगा त्रयो अस्य पादाः, द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य, त्रिधा बद्धो वृषभः** (ऋसा 4.5.6)। चार सींगों का, तीन पांवों का बैल, आदि। ऐसे अनेक वचन ऋग्वेद में मिलते हैं। स्थूल दृष्टि से अर्थ करने पर भी ऋग्वेद के ऋषियों को गोवध मान्य है, ऐसी छाप तो मुझ पर पड़ी नहीं। गाय का नाम **अघ्न्या** – अहननीय और **मा गामनागामदितिं वधिष्ट** (ऋसा 8.12.8) गरीब गाय को न मारें, ऐसी स्पष्ट आज्ञा है। इतना सबूत ही पर्याप्त होना चाहिए।

ऋषियों को गोवध मान्य नहीं था, फिर भी इसका आशय यह नहीं कि उस काल में गोवध होता ही नहीं था। लेकिन हमारा उससे कोई ताल्लुक नहीं। गाय के संबंध में हिंदू लोगों की भावना वैदिक ऋषिमान्य है, इसमें मुझे कोई संदेह नहीं है। ऋषिकाल में सर्वसाधारण लोग क्या करते थे, यह एक ऐतिहासिक मुद्दा है। और उस विषय में मैं खास जानता नहीं।

वेद के विषय में तीन काल के तीन वचन यहां उद्धृत करता हूं – (1) **सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति** (कठ 39), (2) **वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यः** (गी 15.15) (3) **वेद अनंत बोलिला। अर्थ इतुकाचि साधिला, विठोबासी शरण जावें** (वेद ने अनंत (बहुत) कहा है, लेकिन अर्थ इतना ही है कि भगवान की शरण जायें।) (तुका 402)।

के कर्मों को देखो। विष्णु की कृति को जो देखेगा, वह हर जगह देखेगा कि उसने अबाध्य अकाट्य नियम बनाये हैं।

* *

वेदमंत्र हमारी संस्कृति के मूल में हैं। वेद का एक बहुत सुंदर मंत्र है जिसका अर्थ है – 'अरिष्टनेमि हमारे लिए कल्याणकारक हो।' 'नेमि' यानी मर्यादा, कानून। जिसकी मर्यादा को कोई तोड़ नहीं सकता, उस 'अरिष्टनेमि' का आपके काम के लिए आशीर्वाद प्राप्त हो। भगवान की जो 'नेमि' है, मर्यादा है, उसे ठीक से समझना चाहिए।

भगवान की 'नेमि' तोड़कर कालनेमि बनता है। कालनेमि बड़ा असुर है। भगवान उसको खत्म करने के लिए अवतार लेते हैं। पुराण में वर्णन है कि कालनेमि नाम का एक राक्षस था। उसने अपना कानून बनाया। लोग उस कालनेमि को मानकर भगवान की नेमि के विरुद्ध जाते हैं, तब कालनेमि का नाश करने के लिए भगवान अरिष्टनेमि अवतार लेते हैं।

* *

आपो भूयिष्ठा (1.22.8) – मटका बनाना है तो एक कहता है पानी श्रेष्ठ। पानी नहीं तो मटका नहीं बनेगा। दूसरा कहता है कि अगर मटके को तपाया नहीं गया तो उसका क्या उपयोग इसलिए अग्नि श्रेष्ठ। तो तीसरा कहता है कि मिट्टी के बिना मटका कैसे बनेगा? ऋषि पूछते हैं कि तीनों में श्रेष्ठ कौन?

* *

हिंदुस्तान में पहली बार 'मैत्री' शब्द का उच्चारण वेद भगवान ने किया है। उसकी मिसाल सूर्यनारायण हैं। विश्वामित्र ऋषि का मंत्र है, जिसमें सूर्य को मित्र (ऋसा 3.1.8;3.6.2) कहा है।

हर कोई कह रहा है कि मेरे घर में सूर्य है, मेरी तरफ सूर्य देख रहा है। सबके साथ समान मैत्री करनेवाले सूर्यनारायण को आदर्श मित्र मानकर उसको ही 'मित्र' संज्ञा दे दी है। यह वैदिक भाषा है। पारसी भाषा में भी सूर्य के लिए मित्र शब्द है, दूसरी भाषा में नहीं है। अगरचे सूर्य जितनी मैत्री अपने देश में पैदा करता है और आनंददायी होता है, उससे बहुत ज्यादा आनंददायी यूरोप में होता है। हमें तो जरा उसका ताप भी होता है,

वेदों में एक भक्त का वर्णन है। वह भगवान से कहता है – भगवन्! तू मुझे बहुत अच्छा लगता है, इतना अच्छा कि जितना जरा-जर्जर बूढ़े को वस्त्र। वस्त्रों का प्रेम बुढ़ापे का लक्षण तो है ही, शरीर को जीर्ण बनाने का भी साधन है। बिना जरूरत के दिनभर सारे शरीर पर कपड़े डाले रखने से सबसे बड़ी हानि यह है कि शरीर नाजुक, निस्तेज और कमजोर हो जाता है। संस्कृत में सूर्य को 'मित्र' कहते हैं। इसका कारण पेड़-पौधे भी जानते हैं। सूर्यनारायण उत्तम मित्र है, उत्तम वैद्य भी है। **वैद्यो नारायणो हरिः** इस वाक्य में सूर्यनारायण की ओर भी संकेत है। मैं प्रायः यथासंभव खुले शरीर से ही रहता हूं। उससे मुझे शारीरिक और बौद्धिक लाभ का भी अनुभव आता है।

* *

वाणी से सख्य भी साध सकते हैं और वैर भी बांध सकते हैं। वाणी का वैर जितना टिकता है, शस्त्रों का भी उतना नहीं टिकता। इसलिए सारे विश्व से मैत्री की इच्छा रखनेवाले विश्वामित्र की प्रार्थना है – **अमृतं मे आसन्** (ऋसा. 3.2.8) मेरी वाणी में अमृत हो। परंतु सहृदय व्यक्ति के शब्द कटु होते हैं ऐसा आजकल का अनुभव है। सही बात तो यह है कि उतावले लोग ही कटु बोलते हैं। सच्चे आदमियों को जब अक्ल नहीं होती तब वे उतावले होते हैं और फिर कटु बोल जाते हैं। अक्ल हो तो वे मित और मधुर बोलते हैं और काम में लग जाते हैं।

* *

अव स्म यस्य वेषणे... (ऋसा 5.1.11) परमात्मा को प्राप्त करने के लिए, परमात्मा की सेवा के लिए साधक ने हाथ में कुल्हाड़ी ली है। पसीने से तरबतर हुआ वह साधक रास्ते में पसीने की बूंदें गिराता है। यज्ञ में घी की आहुति देते हैं वैसे यह पसीने की आहुति देता है। यस्य वेषणे = जिसकी सेवा के लिए साधक, स्वेद यानी पसीना, पथिषु = रास्ते में। जुह्वति = आहुति देता है। पसीना बहाने का यह विचार काफी प्राचीन है। आपलोग भी निश्चय करो कि जिस दिन शरीर परिश्रम नहीं करेंगे उस दिन खाना नहीं खायेंगे।

* *

वेद में भरद्वाज ऋषि का मंत्र आया है – **नाहं तंतुं न वि जानाम्योतुं।**

में यह वैदिक ऋषि भगवान की प्रार्थना कर रहा है, क्योंकि जीवन ओतप्रोत है। टुकड़े-टुकड़े जोड़कर सीना तो दरजी का काम है। वह कोई समग्रता नहीं। समग्रता यानी जीवन ओतप्रोत है इसका हमें भान होना चाहिए।

* *

वीणा का उल्लेख बहुत प्राचीन ग्रंथों में आता है – **तद् य इमे वीणायां गायन्ति एतं ते गायन्ति** (छां 10) । उस समय और वाद्य भी थे, लेकिन वीणा सबसे सुंदर वाद्य माना गया।

इंद्र के लिए ब्रह्मगान हो रहा है, उसका एक जगह वर्णन आता है।

अव स्वराति गर्गरः गोधा परि सनिष्वणत्
पिंगा परि चनिष्कदत् इंद्राय ब्रह्मोद्यतम् (ऋसा 8.9.5)

गर-गर नाम का एक वाद्य आवाज कर रहा है और गोधा पीटा जा रहा है। गोधा पर से मैं यह समझा कि कोई गाय के चमड़े का वाद्य होगा। पिंगा की ध्वनि निकल रही है और इंद्र के लिए ब्रह्मगान गाया जा रहा है। ऐसे इस पद्य में तीन वाद्यों का उल्लेख आया है। ये वाद्य कौन-से हैं, हम जानते नहीं। लेकिन उनकी जो ध्वनि बतायी है, उस पर से ध्यान में आ जाता है। **अव स्वराति गर्गरः** पर से 'गरगर' वाद्य समझ सकते हैं। क्या आवाज निकल सकती है, यह भी समझ सकते हैं। **गोधा परि सनिष्वणत्** यह क्या वाद्य है? गोधा शब्द आया है, तो गाय के चमड़े का वाद्य हो सकता है। **पिंगा परि चनिष्कदत्** इसमें पिंगा शब्द से जो ध्वनि निकलती है, उस पर से वाद्य की ध्वनि का पता चलता है। इस तरह से प्राचीन काल में ये वाद्य चलते थे और गायन के साथ इनका उपयोग करते थे।

वाद्य तीन प्रकार के होते हैं – एक तंतु-वाद्य, दूसरा सुशीर-वाद्य और तीसरा चर्म-वाद्य। चर्म के बने हुए वाद्यों को पीटने से आवाज निकलती है – जैसे मृदंग। एक सुंदर संस्कृत श्लोक है, उसमें लिखा है कि मृदंग बोलता है, 'धिक्तान'। अरे, धिक्कार है उन लोगों को जो भगवान का नाम नहीं लेते, इसलिए 'धिक्तान'। इस तरह से वह बोल रहा है। यह अपने देश का वाद्य है, चमड़े का। उसे चर्म-वाद्य कहते हैं।

सुशीर-वाद्य यानी जो हवा के आधार से, वायु के आधार से बजाये जाते हैं। जैसे बांसुरी, हारमोनियम आदि। हारमोनियम के अंदर हवा है।

हुई है, वह भी इसमें आता है। इन सबमें संगीत के खयाल से सर्वश्रेष्ठ माना जाता है – तंतु-वाद्य।

* *

ऋग्वेद में एक अति महत्त्व का वचन आया है **उत त्वः पश्यन् न ददर्श वाचं। उत स्वः शृण्वन् न शृणोत्येनाम्** (ऋसा 10.9.4)। इसका अर्थ है – कोई (त्वः) वाणी को देखकर भी देखते नहीं। 'वाणी का देखना' यह प्रयोग कहता है कि ऋग्वेद के काल में प्राचीन आर्य लोगों में लेखनकला थी।

* *

ऋषि कहता है **एतावान् अस्य महिमा अतो ज्यायाँश्च पूरुषः** (ऋसा 10.13.3)। यह सारी सृष्टि, जमीन, वृक्ष, पर्वत ईश्वर की महिमा है। इसलिए तो उसका महत्त्व है ही परंतु चेतन पुरुष का उससे भी अधिक महत्त्व है। जड़ के मोह में पड़कर चेतन की विस्मृति होगी तो हम खुद जड़ बनेंगे। इसलिए जड़ संपत्ति का मोह छोड़ो, चेतन मानव का प्रेम संपादन करो।

* *

वेदों ने आज्ञा दी है – **व्रजं कृणुध्वं स हि वो नृपाणः** (10.14.10) – व्रज बनाओ, तुम्हारे मनुष्यों को वही पिलायेगा, वही पालेगा। नृपाण यानी मनुष्य को पिलानेवाला और पालनेवाला – ऐसा दोहरा अर्थ 'पा' धातु का संस्कृत में होता है।

* *

ब्रह्मचर्य, स्वाध्याय और ईश्वर-भक्ति की विविध उपासना की 'त्रि-पथगा' में समर्थ रामदास स्वामी ने स्वयं तो जी भरकर स्नान किया ही, स्नान से डरनेवालों को भी स्नान कराया – **सो अस्नातृन् अपारयत् स्वस्ति।**

* *

पांच और पांच, दस उंगलियों से जो काम होता है, उसे 'दशयंत्र' कहते हैं। सोमरस दस उंगलियों से निचोड़ा जाता है, इसलिए वेद में **दशयंत्रा सोमाः** कहा गया है।

* *

भक्तों ने ईश्वर को पिता, गुरु, माता आदि का स्थान दिया है। वेद की प्रार्थना **पिता नोऽसि पिता नो बोधि** प्रसिद्ध ही है, यद्यपि वेद में **त्वं माता**

हो जाती है। ऋग्वेद की यह शिकायत हम इन दस हजार वर्षों में भी दूर नहीं कर सके हैं। हमारे देश में ज्यादातर बढ़इयों की पीठें धनुषाकार दिखायी पड़ती हैं और वे सामान्यतः दीर्घायु भी कम होते हैं। वैसे तो बढ़ईगिरी को शरीर के लिए लाभदायक समझना चाहिए, पर दिनभर पीठ झुकाकर काम करने की आदत हमें यह लाभ नहीं उठाने देती।

* *

प्राचीन काल में जमीन बहुत ज्यादा थी और लोग बहुत कम थे, तो बोला जाता था 'अष्टपुत्रा सौभाग्यवती भव'। फिर भी ब्रह्मचर्य की प्रतिष्ठा थी। वेद में आता है, **दशास्यां पुत्रान् आदेहि। पति एकादशं** (ऋवे 18.85.45) – दस पुत्रों को जन्म दें और बाद में ग्यारहवां पुत्र अपने पति को समझें। यानी दस पुत्र तक छूट थी। आज दस पुत्र कौन मांगेगा? प्राचीन काल में ब्रह्मचर्य को आध्यात्मिक मूल्य था परंतु आज के सामाजिक संदर्भ में ब्रह्मचर्य को सामाजिक मूल्य भी प्राप्त हो गया है। डबल इंजीन लगा है।

* *

जवान कैसे होते हैं? **सत्यश्रुताः कवयो युवानः** (ऋवे 5.57.8) । सत्यप्रतिज्ञ और कवि, क्रांतिदर्शी – दूर का देखनेवाले। हम कहां जा रहे हैं, इसका दर्शन होना चाहिए और सत्य की प्रतिज्ञा होनी चाहिए। आपको खयाल होना चाहिए कि आप क्रांतिदेवता के वाहन हैं।

* *

वेद में वर्णन आता है कि दुनिया को सरस्वती ने सत्यनिष्ठा की प्रेरणा दी है। प्रजा का धारण किया है। वह सारे समाज को सत्कार्य की प्रेरणा दे रही है। सर्वत्र सुमति जगाती है। सरस्वती को विद्या की देवी, वाग्देवता माना है। ऐसी सरस्वती का अधिकार बहनों को हैं। वे चुपचाप खामोश रहें, नीची नजरवाली रहें, सिर ढांक लें, हाथ-पांव में बेड़ियां डालें, भले ही वे सोने की हों, यह ठीक नहीं। स्त्री शारदा यानी सरस्वती की प्रतिनिधि होनी चाहिए। ज्ञान की छोटी-सी पूंजी पर स्त्री तेजस्वी नहीं बन सकती और पुरुषप्रधान समाज में स्वतंत्र होकर काम करने की शक्ति उसमें नहीं आ सकती। इसलिए स्त्रियों को ज्ञान में थोड़ा भी पीछे नहीं रहना चाहिए। स्त्रियों को संस्कृति की रक्षा करनी है, प्रकृति से ऊपर उठना है, पुरुष को प्रकृति से ऊपर उठाना है, इसलिए उन्हें पूरा ज्ञान होना चाहिए।

चाहिए। सेना आगे चली जायेगी और गोला-बारूद पहुंचने में देरी होगी, तो लड़ाई कैसे जीतोगे? सरस्वती की उपेक्षा करके अग्नि और इंद्र का भी काम बनता नहीं, ऐसा वेदों में कहा है। ऋषि कहता है कि मैं सरस्वतीयुक्त इंद्राग्नि की उपासना करता हूं।

* *

ऋग्वेद में एक सूक्त है – हे अग्ने स्थूल शरीर को तू जला, सूक्ष्म शरीर को नहीं। हे भूमाते, तू इस मिट्टी को स्वीकार कर।

हमने अपने पिताजी की रक्षा गढ़ा खोदकर उसमें डाली और उस पर पेड़ लगाया। मिट्टी मिट्टी में ही मिल जाये यह ठीक है। उसे पानी में न डालें।

* *

सृष्टि सारी हरितवर्ण है। संस्कृत में 'हरित' शब्द है और वेद में उसके लिए 'हरि' शब्द आया है। वेद में हरिसूक्त है। यह पृथ्वी हरितरूपवाली है, इंद्र आकाश से हरित वर्ण की वर्षा करवाता है – ऐसा वर्णन वेद में आता है। वर्षा होते ही सारी सृष्टि हरितवर्ण हो जाती है। एक-एक रंग में एक-एक भाव माना गया है। लाल रंग में प्रेम माना गया है और हरित में शीतलता।

* *

वेद में आया है – "अघा में गायें मारी जाती हैं।" अघा यानी मघा नक्षत्र। मघा को अघा कहते हैं। अघा यानी घात नहीं। अभी नाम पड़ा मघा। 'म' यानी महान। 'घा' यानी वृष्टि। मघा में गायें बारिश की मार खाते-खाते मर जाती हैं।

* *

अहिंसा टुकड़ों में काम नहीं करती। वह अखंड एकरस है। वेदों ने उसे ही 'अदिति' नाम दिया है।

* *

वेदों में कहा है कि जो अपने घर पर आनेवाले को अच्छा भोजन कराता है, रात को निद्रा का अच्छा प्रबंध करता है, वह महायज्ञ करता है।

* *

ऋषि-पत्नी कह रही है कि – हे ज्ञानीजनो, सुनो! ये सब लोग

वेदों में वर्णव्यवस्था नहीं है। सत्ययुग का वर्णन करते हैं कि तब एक ही वर्ण था, केवल हंस-वर्ण यानी नीरक्षीर-विवेकी समाज था। प्रारंभ में जीवन खूब सादा था। जंगल के कंद-मूल-फल खाना, नदी का पानी पीना और ध्यान-धारणा करना, ऐसा वह काल था। इस कारण कायदा-कानून की जरूरत नहीं थी। धीरे-धीरे विभिन्न प्रकार के नये-नये काम निकलते गये, और आवश्यकतानुसार बढ़ते-बढ़ते चार वर्ण हुए।

* *

वेदों में विशः शब्द का अर्थ मनुष्य होता है। वैश्य को 'आम जनता' कहना होगा।

* *

तीनों वर्णों के लिए वेदाध्ययन मान्य था। उस जमाने में लेखन-मुद्रण की सुविधा नहीं थी। वेद उच्चार-प्रधान थे इसलिए जिनके उच्चारण स्पष्ट रहते थे, उन्हें ही वेदाध्ययन का अधिकार था। शूद्रों का इसी कारण अधिकार नहीं माना गया था।

* *

वैदिकधर्म में प्रार्थना है – **जिजीविषेत् शतं समाः** और **पश्येम शरदः शतम्।** लेकिन आज का दिन आखिरी है समझकर व्यवहार करना चाहिए। हमने नियम किया था, कभी किसी से कर्जा लेना नहीं और देना नहीं। देना है तो दान देना और लेना है तो दान लेना। देनेवाला भी मुक्त और लेनेवाला भी मुक्त। आज का काम आज पूरा करके सोयेंगे। आज का दिन आखिरी समझकर काम पूरा कर लेंगे। भगवान ने बुलाया, तो यह नहीं कहेंगे कि अभी थोड़ा काम बचा है।

* *

केनोपनिषद में कहा है कि अग्नि और इंद्र ने तपस्या की, लेकिन उन्हें ब्रह्म के दर्शन नहीं हुए। फिर उमा हैमवती के दर्शन उन्हें हुए और उस उमा ने इंद्र और अग्नि को आत्मज्ञान दिया। इस तरह दुनिया को आत्मज्ञान देनेवाली उमाएं प्रकट हों।

* *

हरएक के हृदय में परमात्मा विराजमान है। उस परमेश्वर के पास

मिट्टी के घर में तो हरि रहेंगे नहीं, और पत्थर की मूर्ति में भी हरि रहेंगे नहीं। वे तो यहां हृदय में रहते हैं। **अंगुष्ठमात्रः पुरुषः मध्ये आत्मनि तिष्ठति** (कठ 67)। भगवान का रूप कैसा है? अंगूठे जितना। बाहर वह पुरुष विराट, व्यापक है, लेकिन अंदर विराजमान है वह अंगूठे जितना है। तो उसका हमें दर्शन करना है, उससे हमें बात करनी है।

* *

बाबा का मत है कि वेद, उपनिषद और गीता हिंदूधर्म की प्रस्थानत्रयी है। वैसे गीता, उपनिषद और ब्रह्मसूत्र को प्रस्थानत्रयी माना जाता है। ब्रह्मसूत्र स्वतंत्र ग्रंथ नहीं। वह गीता-उपनिषद पर आधारित है। गीता और उपनिषदों के वचनों का उसमें मेल दिखाया है। वेद हमारा मूल प्रस्थान है। इसलिए बाबा ने कहा – **वेद-वेदांत-गीतानां विनुना सार उद्‌धृतः ।**

* *

मुझे इस बात का दुःख नहीं है कि वेदमंत्रों का ज्यादा परिचय आम लोगों को नहीं। क्योंकि संतों ने ब्रह्मविद्या मातृभाषा में खोल दी है। सारा वेद-सार उसमें आ जाता है। फिर भी वेद का अपना महत्त्व है। वेद, संस्कृति का मूल उद्‌गम-स्थान है। उसमें सूचन जिसे संस्कृत में लिंग कहते हैं, मिलता है। हरएक अपना विचार वेद में ढूंढ़ता है। इसका एक मंत्र **द्वा सुपर्णा** (ऋसा. 1.23.8) उपनिषदों में (मुंडक 36) भी आया है। द्वैतियों ने उसके आधार से द्वैत स्थापना की। अपना-अपना आधार वेद में ढूंढ़ने का रिवाज है। क्योंकि वह मूल स्रोत है। उसमें से सब विचार निकले, इसलिए संशोधक अपने विचार उसमें ढूंढ़ना चाहते हैं। उपनिषद, गीता, भागवत, विष्णुसहस्त्रनाम, महाभारत, मनुस्मृति और संतों पर वेद का असर है।

* *

श्वेतकेतु के पिता उसे ज्ञान (छां 12) दे रहे हैं। नमक की मिसाल देकर समझाते हैं कि आत्मा व्यापक है। लड़के ने पूछा 'वह कैसे?' इस पर पिता ने उसको पानी लाकर उसमें नमक डालने को कहा। उसने नमक डाल दिया। फिर पिता ने कहा कि ऊपर से थोड़ा-सा पीओ। उसने पी लिया। पिता ने पूछा कि कैसा लगता है। लड़का बोला खारा। पिता ने कहा कि ऊपर से थोड़ा पानी फेंक दो और बीचवाला पीओ। पीने पर लड़के को वह भी खारा लगा। इसके बाद पिता ने कहा कि सब फेंक दो और नीचे

था और चखने पर ही पता चलता था, उसी तरह आत्मा सारे विश्व में घुलमिल गया है। देखनेवालों को मालूम नहीं होता, चखनेवालों को मालूम होता है। तो आत्मा एक चखने की चीज है। लड़का समझ गया।

* *

वेद का बहुत ही सुंदर वाक्य है – जो विद्वान हैं, ज्ञानी हैं, उनकी वाणी कैसी हो उस विषय में कहते हैं – **अवोदेवं उपरिमर्त्यम्** ... (ऋसा 8.4.2) मर्त्यों से कुछ ऊपर और देवों से कुछ नीचे ऐसे उसकी वाणी होनी चाहिए। तब वह जनता के काम आयेगा। एक बिल्कुल ऊंचा व्यक्तित्व हो, और उसकी वाणी ऐसी हो जो सबकी वाणी को दबाये या वश में करे, वशीकरण मंत्र चलाये, तो काम नहीं बनेगा, उससे फायदा नहीं होगा। * *

पुरोहितम् (ऋसा 1.1.1) पु = प्युरिफाइंग, रोहितम् = रेड (लाल) – रक्त शुद्ध करनेवाला। दूसरा अर्थ है सामने रखा हुआ। सूर्य का पीठ की ओर से और अग्नि का सम्मुख रहकर सेवन करना चाहिए। * *

इमा या गावः स जनास इंद्रः (ऋसा 6.4.13) – ये जो गायें दीखती हैं, वे ही इंद्र हैं। इंद्र पर्जन्यधारा बरसाता है, गायें दुग्धधारा। ऋग्वेद कहता है, दोनों की योग्यता समान है। * *

देवस्य पश्य काव्यं महित्वा। अद्या ममार स ह्यः समान (ऋसा 10.7.6) – भगवान का काव्य देखो। उसके लिए महान बनना पड़ेगा। कल जो जीवित था आज मर गया। समान = श्वासोच्छ्वास। * *

वृजनेन वृजिनान् त्सं पिपेष (ऋसा 3.4.1) – इंद्र ने अपनी सामूहिक शक्ति से कुटिलता का नाश किया। * *

त्रिः सप्त नामाघ्न्या बिभर्ति (ऋसा 7.7.12) – गाय इक्कीस नाम धारण करती है। ऋग्वेद में गाय के मुख्य इक्कीस नाम आये हैं – 1. अघ्न्या 2. अदिति 3. अष्टाकर्णी 4. अष्टापदी 5. इळा 6. उस्रा 7. उस्रिया 8. गौ 9. गौरी 10. दक्षिणा 11. दूधा 12. धेना 13. धेनु 14. पशु 15. पृश्नि 16. मातृ 17. रोहिणी 18. वशा 19. वाश्रा 20. सुरभि 21. स्तरी। इसके अलावा और भी नाम गाय के वेद में आये हैं।

* *

उदीर्ध्वं जीवो असुर्न आगात् । अप प्रागात् तम आ ज्योतिरेति (ऋसा 1.18.7)–

गांधीजी

गांधीजी ने अपने परिवार को आश्रम का स्वरूप दिया। उसमें बाहर के अनेक लोगों को समाकर परिवार को व्यापक बनाया। संन्यासी का वेश धारण किये बिना गृहस्थाश्रम का संन्यासाश्रम में रूपांतर करने की यह प्रक्रिया है।

* *

पूना में बापू को तीन बार मिला। उनका अपूर्व आनंद, शांति, प्रेम देखकर सामान्य मनुष्य तो मुग्ध होगा ही, परंतु उनसे इतना परिचय रखनेवाला मैं भी एकदम स्तब्ध हुआ इसमें शंका नहीं। बुद्धि की इतनी स्थिरता और शुद्धावस्था मैंने अन्यत्र कहीं नहीं देखी।

* *

मैं गांधीजी का नाम बहुत कम लेता हूं। दूसरे बहुत ज्यादा लेते हैं, इसलिए मेरा कम लेना शोभादायक है। लेकिन मेरी आत्मा साक्षी है कि मैं उनका छोटा-सा बालक हूं। 1916 में मैं जब उनके पास पहुंचा, तो मैं बालक था। तबसे आज तक मैं किसी के आश्रय में नहीं गया, उन्हीं के आश्रय में हूं। पहले से आखिर तक उन्होंने जो विचार हमें दिये, जो निधि दी, उसको 'एसीमिलेट' करने की मेरी काफी कोशिश रही है। उन्होंने जो उसूल रखे, उनका हमने बहुत गहराई से अध्ययन किया, ऐसा मेरा दावा है। हम तो पामर जीव हैं। 1916 में जब मैं उनके पास पहुंचा, तभी उन्होंने मुझसे कहा कि 'विनोबा, गांव-गांव में आश्रम होना चाहिए और हमें गांव-गांव में बिखरना चाहिए।' किस तरह सर्वोदय समाज का रूप बनना है, इसका वे चित्र खींचते थे और आखिर तक वह बदलता रहता था। परंतु इसका मूल स्वरूप आप थोड़े से क्रूड शब्दों में देखना चाहते हैं, तो 'हिंद-स्वराज्य' में देख सकते हैं। मैंने क्रूड इसलिए कहा कि आगे वे जिन शब्दों में रखते थे, वैसे शब्द उसमें नहीं हैं। परंतु जैसे उपनिषदों की भाषा कानों को क्रूड लगती है, वैसे 'हिंद-स्वराज्य' की भाषा भी क्रूड है। जब हम शंकराचार्य के भाष्य देखते हैं, तो उनकी भाषा की सफाई, विवेचन पद्धति, दलील से किसी भी प्रश्न का उत्तर देने की सामर्थ्य, इन

नतमस्तक थे। वैसे ही 'हिंद-स्वराज्य' में गांधीजी का विशुद्ध हृदय प्रकट हुआ है। उन्होंने उसमें जैसा कहा है, उसको जैसे-का-तैसा हम लें, ऐसा वे नहीं चाहेंगे और न हम भी वैसा लेंगे। उसमें कुछ परिवर्तन की जरूरत है। परंतु उसको ध्यान में रखकर हम काम करें, तो जिस शक्ति की खोज हुई है, उसका हम उपयोग कर सकेंगे।

* *

उरुलीकांचन के प्राकृतिक चिकित्सा की जब बात निकली, तब गांधीजी ने एक-एक को बुलाकर कहा कि प्राकृतिक चिकित्सा का काम करना चाहते हो, तो आजन्म ब्रह्मचर्य रखो, तभी वह कर पाओगे। सुननेवाले तो सुनकर दंग रह गये। प्राकृतिक चिकित्सा का संबंध मिट्टी, हवा और एनिमा से हो सकता है, पर गांधीजी ने उसका संबंध ब्रह्मचर्य से भी जोड़ दिया। अब यह हमें न सूझे और हम ऊपर-ऊपर की बातें करते रहें, तो उससे अपने देश का काम नहीं बनेगा। इसलिए हमें अपने देश की भक्ति, आत्मज्ञान आदि सब चीजों पर ध्यान देना चाहिए। ये हमारे जीवन की बुनियादी चीजें हैं। इसके लिए शास्त्र-पारंगतता की नहीं, बल्कि श्रद्धा की जरूरत है। हमारे हृदय का मुख्य हिस्सा भक्तिभाव से भरा हो।

* *

बापू सद्गुण-विकास और चित्तशुद्धि पर बार-बार जोर देते थे। तुलसीदासजी को जैसे रामनाम, वैसे उनके लिए सत्य-अहिंसा थी। वे खुदके जीवन का नित्य परीक्षण करते थे। उनके जीवन को जिन्होंने बारीकी से देखा है, उनका अनुभव है कि बापू हर क्षण आगे बढ़ते थे। यह कैसे होता था? अगर मनुष्य अपने में कोई दोष ही नहीं पाता है, तो वह आगे कैसे बढ़ेगा? बापू आगे बढ़ते थे, इसका अर्थ ही यह है कि वे अपना नित्य परीक्षण करते थे और जो दोष दिखायी देते थे, उनको दुरुस्त करते थे।

* *

गोरक्षण, चर्मविभाग, तेलघानी, खादी आदि सब चलानेवाले गांधी आश्रम यानी झमेला आश्रम। प्रार्थना नाममात्र की, व्रतों में निष्ठा नहीं, अध्ययन तो बिल्कुल ही नहीं। तो अध्ययनशून्य, भक्तिहीन, व्रतनिष्ठारहित लोग कितना क्या काम करेंगे? बाकी गांधी विचारधारा में आध्यात्मिक चिंतन-मनन के अलावा, अलग-अलग विचारधाराएं और आज की परिस्थिति

ही था। यानी जिनको अपना कोई न स्वार्थ था और न अहंकार। वे केवल दूसरे के दुःख से दुःखी ही नहीं होते थे बल्कि दूसरे के पाप से अपने को पापी भी मानते थे। यह बहुत बड़ा फर्क हो जाता है। इसी लिए लोग उन्हें महात्मा कहते थे। महात्मा यानी आत्मा इतनी विशाल हो गयी कि हरएक के शरीर के साथ जुड़ गयी। दूसरे के पापों से अपने को पापी मानना और समझना, ऐसा करनेवाले बहुत ही बिरले लोग होते हैं। ऐसे लोग मुक्त भी नहीं होना चाहते। ये मोक्ष की परवाह नहीं करते, सबका पाप-पुण्य अपने सिर पर उठाते हैं। उन्हें क्या नाम दिया जाये! वे परम भक्त होते हैं। ऐसे महापुरुष का स्मरण करने से हमें अपनी आत्मा की ताकत का भान होता है। जो ताकत ऐसे महापुरुषों की आत्मा में होती है, वह ताकत हम सबमें आ सकती है। इसका भान ये महापुरुष कराते हैं। खाना, पीना, सामान्य काम हर कोई करता है, पर देह से ऊपर उठनेवाले ही सत्पुरुष हो सकते हैं। यह जब देखते हैं तो विश्वास होता है कि हम भी वैसी चेष्टा करें, तो हम भी उठ सकते हैं। ऐसे सत्पुरुषों के स्मरण से हमें खुदको लाभ होता है।

* *

लोग मानते हैं कि महात्मा दूसरे के दुःख से दुःखी होते हैं। किंतु दूसरे के दुःख से दुःखी होना महात्मा का नहीं, मनुष्य का लक्षण है। अपने दुःख से दुःखी और अपने सुख से सुखी होना तो जानवर का लक्षण है। दूसरे के दुःख से दुःखी होना और सुख से सुखी होना, यह मनुष्य का ही लक्षण है और ऐसा लक्षण अगर बापू में था तो इसमें उनकी कोई विशेषता नहीं है। उनकी तो यही विशेषता है कि वे सबके पापों से पापी होते थे। अपने ऊपर सबके पापों का आरोप करते थे, सारा बोझा अपने सिर पर लेते थे।

* *

बुद्ध ने भिक्षुओं को तैयार किया, महावीर ने श्रमणों को, शंकर ने परिव्राजकों को। गांधीजी ने रचनात्मक कार्यकर्ताओं पर भरोसा रखा।

बुद्ध-महावीर-शंकर ने परिव्राजकों को अत्यंत अपरिग्रह, भिक्षा, तितिक्षा इन गुणों का आधार दिया। गांधीजी ने एकादश-व्रतों का आधार दिया।

* *

एक गांधीजी हजारों सैनिकों की पलटन का काम अकेले करते थे। वे खुद ही एक पलटन थे। उनकी ताकत और आवाज बुलंद थी।

यानी वहां जामन बनता था। जामन अगर अलग पड़ा रहा, तो वह खट्टा और निकम्मा होगा। अपने देश में अध्यात्म-विचार का ऐसा ही हुआ। योगी, मुनि जनता से अलग होकर ध्यान-धारणा आदि करते थे, तो वे खट्टे और निकम्मे बने। उनका विचार सड़ गया। कोई बच्चा चिल्लाये, तो उनके ध्यान में खलल पहुंचती। क्रोध इतना था कि वे बात-बात में शाप दे देते। कोई सुंदरी देखी, तो मोहित हो जाते। कारण यही था कि वे समाज के अंदर घुल-मिलकर नहीं रहे। जनता से अलग पड़ गये। आध्यात्मिक गुणों का विकास, ताकत का विकास लोगों में रहकर ही होता है। इसलिए 45 साल के बाद भी बापू ने यही मंत्र दिया कि ''हमें गांव-गांव में फैलना है।'' इसे हमें अमल में लाना है। उसे अमल में नहीं लायेंगे, तो स्वराज्य फीका पड़ेगा, उसे खतरा होगा। स्वराज्य का असली रंग कायम रखना है, इसलिए यह बहुत जरूरी है कि गांव-गांव में खादीवाले फैलें। सरकारी मदद कहीं-न-कहीं खत्म होने ही वाली है। उसके पहले नया तंत्र हम खड़ा नहीं करेंगे, तो टिक नहीं सकेंगे। गांव-गांव में अपने किले बनाने चाहिए।

* *

गांधीजी ने भी ब्रह्मचर्य पर जोर दिया था। गृहस्थाश्रम में भी ब्रह्मचर्य का पालन करो, यह एक विशेष प्रेरणा दी। अक्सर माना जाता है कि ब्रह्मचर्य वानप्रस्थों और संन्यासियों के लिए है। गृहस्थाश्रम में ब्रह्मचर्य नहीं आता। साधारण समाज इसे मानता था, लेकिन शास्त्रकार ऐसा नहीं मानते। गांधीजी ने इस विषय को प्रोत्साहन दिया और खुद इसका आचरण भी किया। ब्रह्मचर्य का विचार उनके मन में तीव्रता से चला, तब उनकी उम्र 23-24 साल की थी और उसे उन्होंने जाहिरा तौर पर कहा। सन् 1906 में जब उनकी उम्र 38 साल की थी, जाहिरा तौर पर उन्होंने इसका व्रत लिया और दूसरों को भी प्रेरणा दी। दक्षिण अफ्रीका से यहां आने के बाद भी अनेकों को प्रेरणा दी। सार्वजनिक सेवकों के लिए इसकी आवश्यकता वे बताते रहे। हमारे योगी, साधक आदि ब्रह्मचर्य का विचार साधना के लिए मानते थे। लेकिन गांधीजी ने ब्रह्मचर्य निष्काम सेवा के लिए भी माना। इस कारण इस विचार को जोरदार प्रेरणा मिली। यह विचार कई सालों से विकसित होता आया।

* *

इतनी थोड़ी मुद्दत में नहीं नापा जा सकता। और इससे भी कोई इन्कार नहीं कर सकता कि इस सदी में जितने जीवन, कम-से-कम हिंदुस्तान में गांधीजी ने बदले हैं उतने और किसी दूसरे ने नहीं।

* *

एक न्यूयार्कवाला भाई पूछ रहा था कि "क्या आज दिल्ली की सरकार, सेना, कोर्ट-कचहरी में कहीं भी गांधीजी का असर दीखता है?" मैंने उससे कहा कि गांधीजी का असर चर्मचक्षु नहीं देख सकते। वह इतना सूक्ष्म है कि भारत के खून और हड्डी में व्याप्त हो गया है।

* *

गौतम बुद्ध की बात है। गौतम बुद्ध के चार शिष्य बुद्ध की मृत्यु के बाद गुरु के नाम से विचार-प्रचार करने निकले। चारों में से एक ने कहा – "मेरे गुरु ने कहा है कि मन सत्य है और सृष्टि मिथ्या है।" दूसरे ने कहा – "मेरे गुरु ने सिखाया है कि सृष्टि सत्य है और मन मिथ्या है।" तीसरे ने कहा – "मेरे गुरु ने जो कुछ कहा, उसका सार है कि सृष्टि भी मिथ्या है और मन भी मिथ्या। कुछ है ही नहीं, सब शून्य है।" चौथे ने कहा – "मेरे गुरु के कहने के अनुसार यह सृष्टि भी सत्य है और मन भी सत्य।" इस तरह विज्ञानवाद, सर्वअस्तित्ववाद और शून्यवाद आदि बने। वे चारों एक-दूसरे के खिलाफ बात करते थे। इसी प्रकार आज गांधी के चार शिष्य गांधी के नाम से देश में एक-दूसरे के विरोध में प्रचार कर रहे हैं और देश के दिमाग में 'कन्फ्यूजन' पैदा करते हैं। वे सब एकत्र बैठकर समान अंश पर जोर देते, तो एक दूसरी ही सूरत होती। अगर वे कहते हैं कि उनमें कोई 'सबस्टॅन्शियल कामन ग्राउण्ड' जैसा कुछ भी नहीं है, तो मैं मानता हूं कि वे गांधी के शिष्य नहीं हैं।

* *

गोलमेज परिषद के लिए महात्मा गांधी इंग्लैंड गये थे। उनके लिए वहां भी महल तैयार था। वे तो हिंदुस्तान के प्रतिनिधि बनकर गये थे। बादशाह ने उनसे बातें कीं। लेकिन गांधीजी ने महल में रहना कबूल नहीं किया। लंदन में जो गरीब बस्ती थी, जिनकी उपेक्षा होती थी, जो लंदन का सबसे गरीब हिस्सा था, वहां वे ठहरे। इसमें उनका हेतु यही था कि गरीबों की ताकत बढ़नी चाहिए।

* *

पड़ा। यानी यही सत्य कम पड़ा कि मनुष्य के लिए मनुष्य ही मूलतत्त्व है, यह हम भूल गये और मनुष्य से ज्यादा नियम को माना।

* *

गांधीजी का यह स्वभाव ही था कि जिस चीज को वे ठीक समझते थे, फौरन उसका अमल शुरू कर देते थे। प्रगति का यही श्रेष्ठ नियम है। जो चीज ठीक लगी, उसके अमल में जो देरी करता है, वह जिंदगी का अमूल्य समय खोता है। इसके सिवा यह भी ध्यान में रखें कि विचार और आचार के बीच अंतर रखकर किसी को जीवन में समाधान नहीं मिलता।

* *

गांधीजी अपने पक्ष के दोष जाहिर करते थे तो कुछ खोते नहीं थे। मनु ने कहा है, ख्यापन से दोषों का क्षय होता है, गोपन से वे बढ़ते हैं।

* *

बापू एक व्यक्ति नहीं रह गये थे, समूचे राष्ट्र की भावना के प्रतिनिधि बन गये थे। उनकी वाणी में और उनके चिंतन में लोक-वाणी और लोक-चिंतन प्रकट होता था। इतनी विशाल राष्ट्रभावना उनके कारण पैदा हुई थी।

* *

महात्मा गांधी ने अपने साथियों के पाप का बोझा नहीं उठाया होता, तो उनकी हत्या नहीं होती। यह हत्या इसलिए हुई कि हमारे पापों का बड़ा बोझा वे उठाकर चलते थे। ईसा ने कहा था कि मैं सबके पाप का बोझ उठा रहा हूं। यही हालत गांधीजी की थी। नहीं तो कोई कारण नहीं था कि दुनिया को प्यार करनेवाला एक शख्स मारा जाये और प्रार्थना में खड़ा-खड़ा चला जाये और जिसने गोली मारी, उसे वहीं हाथ जोड़कर प्रणाम करके जाये। इससे बेहतर और कोई अंत नहीं हो सकता।

* *

मेरा मन तो कहता है कि **क्षण-क्षण क्षीण होतसे जीवन** हरक्षण हमारा जीवन क्षीण होता जा रहा है। यह मैं केवल देह के बारे में नहीं, गांधी-आचार के बारे में भी कह रहा हूं। गांधी-विचार के बारे में तो हर्गिज नहीं – कारण वह तो इतना अमर है कि लाखों चपेटें खाकर भी अब तक अभंग

उसका अंतर-तत्त्व अमर रहेगा। इसलिए गांधी-विचार के बारे में मुझे चिंता नहीं। मात्र गांधी-आचार क्षण-क्षण क्षीण होता जा रहा है, इस बारे में चिंता, उतावली हो रही है।

* *

गांधीजी की एक आध्यात्मिक किताब है 'मंगल प्रभात'। उसमें इस जमाने का नया अध्यात्म है।

* *

गांधीजी ने बताया है, 'जो काते सो पहने और जो पहने सो काते'। इसमें शोषणमुक्ति और शासनमुक्ति दोनों आ जाते हैं।

* *

गांधीजी ने भी ईसा की तरह लोगों को पकड़ने के लिए तरह-तरह के जाल फैलाये थे। खादी का जाल, ग्रामोद्योग का जाल, स्त्री-उद्धार, हरिजन सेवा, आदि तरह-तरह के जाल आपके हाथ में दिये थे, ताकि आप हर किसी को पकड़ सकें। कुछ जाल छोटे छिद्रवाले थे, कुछ बड़े छिद्रवाले, ताकि हर मछली किसी-न-किसी जाल में फंस जाये। ये सारे जाल आपके पास हैं ताकि आप अहिंसा की शक्ति को संगठित कर सकें। अगर अहिंसा, संगठन-शक्ति नहीं दिखायेगी तो टिकेगी नहीं।

* *

गांधीजी का चित्र घर-घर में जाये, इसे मैं बहुत ज्यादा जरूरी नहीं मानता। प्रदर्शनी की गैलरी में चित्र हो, उसे मैं पसंद करूंगा, लेकिन घर-घर में गांधीजी का चित्र टांग दें, यह तो एक प्रकार से मूर्तिपूजा ही हो जायेगी। वह करने के लिए कृष्ण भगवान हैं, राम भगवान हैं। इतना बस है हमारे लिए।

* *

गांधीजी ने पंचीया (घुटने तक की धोती) पहनना शुरू किया। क्यों? उन्होंने देखा कि कोई एक बहन गंदे कपड़े पहने हुए थी। किसी ने उससे पूछा कि तुम कपड़े क्यों नहीं धोती हो? उसने जवाब दिया कि दूसरे कपड़े हैं नहीं। यही एक कपड़ा है। जब भी इसे धोने की इच्छा होती है तो खुले

हिंदुस्तान में कई लोग ऐसे हैं जो लंगोटी भी नहीं पहनते। वे नंगे बदन रहते हैं। कुंभमेले में ऐसे कई लोग आते हैं। लेकिन उनका त्याग करुणामूलक नहीं है। इसलिए उसकी आध्यात्मिक कीमत भी नहीं है। जीवन के जो मुख्य अंग – सामाजिक क्रिया और चित्त-शोधन, वे दोनों अलग-अलग नहीं होने चाहिए। उनका परस्पर संपर्क बना रहना चाहिए।

* *

गांधीजी हमेशा सर्वाधिक आवश्यकतावाले की मदद का तरीका ढूंढ़ते थे। इसी में से चरखा निकला। वह उनकी अद्‌भुत प्रतिभा थी, काव्यशक्ति थी। केवल कुछ पंक्तियां लिख डालने से कोई कवि नहीं होता। **कविः क्रांतदर्शी** कहा है। जिसे क्रांतदर्शन होता है, दूर का दर्शन होता है, सूक्ष्म दर्शन होता है, वह कवि है। इस अर्थ में गांधीजी कवि थे। उन्होंने सालों पहले कह दिया था कि भारत को ग्रामद्योगों की जरूरत है। उन्होंने नयी तालीम, राष्ट्रभाषा, जमीन का बंटवारा आदि के संबंध में भी कई साल पहले ही कह रखा था। कितना उनका उपकार, कितनी उनकी महान बुद्धिमत्ता, कितनी प्रतिभा, कितनी उनकी वत्सलता! इतना सब होने पर भी, उनसे इतना प्रकाश पाकर भी हम आज लड़खड़ा रहे हैं, तो हम कितने कमबख्त हैं!

* *

जब गांधीजी के नाम पर कोई काम करते हैं तो उसकी कसौटी होनी चाहिए, क्रांति। फुटकर काम गांधीजी के नाम पर करने की अपेक्षा प्रसंगप्राप्त उचित काम करते रहें।

* *

महिला यानी महान। बापू में जितनी शक्ति थी, उससे ज्यादा कस्तूरबा में थी। बाबा भी स्त्री है। बा+बा। एक 'बा' कस्तूरबा का, एक 'बा' बापू का।

* *

एकमात्र गुण सत्यनिष्ठा को लेकर मैं बापू के पास पहुंचा था। मुझमें प्रेम बहुत कम था। करुणा उससे भी कम थी और इन गुणों की मुझे बहुत जरूरत थी, आज भी है। सत्यनिष्ठा के साथ ये दो चीजें मुझे बापू के पास मिलीं। उसमें मेरी जो कठिन परीक्षा, कसौटी ली गयी, उसमें अगर उस वक्त मैं कम पड़ता, तो उनके पास नहीं रह सकता था। भगवान की अपार करुणा थी कि उसने मुझे उनके चरणों में स्थिर किया।

* *

था। उनके साथ मेरा आंतरिक अनुबंध था। कुछ वैचारिक अनुबंध भी था। ऐसा मनुष्य जब जाता है, तब शोक करना बालिश माना जायेगा। वह नहीं होना चाहिए। लेकिन कर्तव्य के निर्णय का सवाल आता है तब मनुष्य सोच में पड़ जाता है। हिंदी का 'सोच' शब्द दो अर्थ का है। सोच यानी चिंतन और सोच यानी शोक। वैसे आज देश की परिस्थिति ठीक है। बड़े पुरुष अपने जाने के बाद अगर देश को बदतर हालत में छोड़कर जायेंगे तो बड़े कैसे कहलायेंगे? उनके जाने पर स्थूल आधार कम हो जाता है, लेकिन सूक्ष्म में लाभ पहुंचाकर वे जाते हैं।

* *

बापू द्वारा स्वराज्य का आंदोलन चलाये जाने पर कुछ लोग पूछने लगे कि स्वराज्य का क्या अर्थ है? बापू ने एक दिन सहजभाव से स्वराज्य का अर्थ बता दिया – स्वराज्य यानी गलतियां करने का अधिकार। उन्होंने ऐसी सुंदर व्याख्या बतायी कि मैं तो देखता ही रह गया!

* *

जिस दिन बापू गये यह खबर मुझे मिली उस दिन मैंने समझ लिया कि मेरे लिए इशारा है कि अब मुझे बैठे नहीं रहना है। मेरा एक-डेढ़ साल चिंतन में गया। फिर देश में घूमना हुआ। सर्वोदय सम्मेलन में मैं गया था। पहले एक-डेढ़ साल रेल्वे में घूमा। फिर एक साल कांचन-मुक्ति का प्रयोग हुआ और फिर निकला तो निकला ही। किशोरलालभाई के साथ यह निश्चय किया कि हम घूमते ही रहेंगे। जिस दिशा में हम जा रहे हैं उस दिशा में सोचते हुए समाज के लिए भी घूमना जरूरी है – ऐसा मैंने अपने लिए तय किया था। जिस दिन बापू गये उस दिन एकदम अंदर से आवाज आयी "तुम्हारे लिए अब **चरैवेति चरैवेति** है।"

* *

मुझे तो ऐसे बिरले महापुरुष का आश्रय मिला है, जिनमें वे सब दोष नहीं थे, जो मुझमें हैं, और वे सब गुण बहुत ही उत्कृष्ट रूप में थे, जो मुझमें न्यून रूप में थे। उनके मार्गदर्शन में मैंने बहुत कुछ पाया है। उन्हीं की यह भूमि है, जो मुझे हमेशा खींचती है। मेरी जन्मभूमि महाराष्ट्र है, पर यह कहने में कोई संकोच नहीं होता है कि उसकी अपेक्षा मेरी जो दूसरी जन्मभूमि गुजरात है, मुझे ज्यादा खींचती है। पहले जन्म से दूसरा जन्म

हिंदू-संघटन के औचित्य के बारे में प्रश्न पूछा गया है। हिंदू-संघटन यानी मुस्लिम-द्वेष तो नहीं हो सकता। अगर चारित्र्य-संघटन होता है या सेवा-संघटन होता है, और **सर्वेषां अविरोधेन** के तत्त्व से होता है, तो उसका औचित्य हो सकता है। क्या गांधीजी से बढ़कर हिंदूधर्म पर प्रेम करनेवाला और हिंदू-संघटन को बल देनेवाला कोई हुआ है? गीता-प्रचार को गांधीजी ने जितना महत्त्व दिया, उतना शंकराचार्य और ज्ञानदेव के बाद किसी ने नहीं दिया। लेकिन उन्होंने उसी 'सर्वेषाम्' के सिद्धांत से काम किया। इस तत्त्व को पहचानो, इसकी कसौटी पर अपने काम को कसो।

* *

सामाजिक न्याय छोटी बात है। यह मिनिमम रिक्वायरमेंट ऑफ दी केस है। आज जरूरत है करुणा की। सोशल जस्टिस जो होता है वह मिनिमम मांगता है। यानी आपके पिताजी का किसी ने खून किया तो सामाजिक न्याय कहेगा कि उसको फांसी चढ़ाना चाहिए यह सोशल जस्टिस है। अगर उसको फांसी नहीं चढ़ाते हैं तो अन्याय होता है। गोडसे ने गांधीजी को गोली मारी और रामदास गांधी को छटपटाहट रही कि गोडसे को फांसी नहीं चढ़ाना चाहिए। रामदास ने उसके लिए कितनी कोशिश की! गोडसे ने स्वयं पत्र-व्यवहार किया रामदास से कि मैंने बड़ा अन्याय किया तुम्हारे ऊपर। तुम्हारे पिताजी के बारे में तो मैं जब तुमसे बात करूंगा तो तुम्हें समझा सकूंगा यह उम्मीद मुझे है। सत्यनिष्ठा के लिए जो मुझे लगा वह मैंने किया, ऐसा मेरा दावा है। लेकिन तुम पर तो बड़ा ही अन्याय हुआ है क्योंकि तुम्हारे पिताजी को मैंने इस प्रकार से कत्ल किया है। तुम्हारा मैं गुनहगार हूं, यह उसने रामदास को लिखा। और रामदास ने कोशिश की कि उसको फांसी पर नहीं चढ़ाना चाहिए। इस सिलसिले में बात करने के लिए किशोरलालभाई और मेरा नाम भी सुझाया गया। वह पत्र भी मेरे पास आया। मैंने कहा कि इस निमित्त से फांसी की सजा रद्द, ऐसा अगर भारत सरकार करे तब तो मैं समझ सकता हूं। लेकिन संत पुरुष को जो मारेगा वह फांसी नहीं चढ़ेगा और मामूली मनुष्य को मारेगा वह फांसी पर चढ़ेगा यह तो कानून में बैठेगा नहीं। यह असंभव है। इसलिए मैं इसको सपोर्ट नहीं कर सकता कि वह फांसी पर न चढ़े। फिर वह गोडसेवाला आदमी मेरे पास आया और मुझे कहने लगा कि आप तो अहिंसा के प्रेमी हैं, तो

नहीं? बोला – मानता हूं। तो गीता में क्या है, आत्मा मरता है? नहीं मरता। तो मेरे पास क्यों आये? चुप होकर वह चला गया। * *

गांधीनिधि जबसे निकली है, मैं घबड़ा-सा गया हूं। गांधीजी का स्मरण हम कैसे कायम कर सकते हैं? वह तो उनके गुणों के अनुकरण और अनुशीलन से हो सकता है। वे जैसे त्यागी थे, भोग छोड़कर बैठे थे, वैसे हमको बनना चाहिए। गांधीजी का सारा जीवन परार्थ था। वे सतत जागरूक थे, चिंतनशील थे, वैराग्य की मूर्ति थे। उनके उन गुणों का स्मरण ही हमारी उत्तम निधि है। उससे हमारा निःसंशय भला होगा। लेकिन उनके नाम से हमने पैसे इकट्ठे किये तो उस निधि से हमारा भला ही होगा ऐसा नहीं कह सकते। भला भी हो सकता है, अगर हम विष्णु भगवान जैसे अलिप्त रहें। लक्ष्मी पांव के पास पड़ी थी, पर विष्णु भगवान को उसका पता भी नहीं था। ऐसी अलिप्तता कठिन है। लेकिन वही हममें होनी चाहिए। वह उसी में होती है जो अपना जीवन उत्तरोत्तर कठोर बनाता जाता है।

* *

मैंने किसी जगह एक मौके पर कहा कि 'सत्याग्रहियों का शस्त्र है सत्य और अहिंसा है ढाल।' तो मेरे सामने बापू का एक वाक्य रखा गया, जिसमें शायद यह था (अगर मुझे ठीक याद हो) कि 'अहिंसा है शस्त्र और सत्य है ढाल।' मैंने सुन लिया और कह दिया कि भाई, उनकी जो भी ढाल हो और मैंने भी जो कोई ढाल बतायी हो; लेकिन मेरी अपनी ढाल है 'समन्वय', मेल-जोल करना। मैं दोनों विचारों को कबूल कर लेता हूं। अगर सोचो तो सत्य को शस्त्र कह सकते हो या ढाल भी। इसी तरह अहिंसा को शस्त्र और ढाल भी कह सकते हो। फैसला करना मुश्किल है। लेकिन इतना सच है कि सत्य के साथ अहिंसा आती ही है। एक दफा गांधीजी ने कहा कि "अहिंसा तो मुझे पीछे से मिली, सत्य की खोज करते हुए।" ध्यान में आया कि सत्य की खोज अहिंसा द्वारा ही हो सकती है, हिंसा द्वारा नहीं। आध्यात्मिक क्षेत्र में यह बहुत बड़ी खोज मानी जायेगी कि सत्य की खोज के लिए अहिंसा रास्ता है।

गांधीजी के बारे में हम देखते हैं कि उन्होंने अनेक प्रयत्न किये। धीरे-धीरे उनकी ताकत बढ़ती गयी। कपिलादि की तरह वे अलौकिक सिद्धियुक्त

और हम अपने स्थान में। आपका अनुकरण हम नहीं कर सकते। आप महान हैं, सूर्यनारायण हैं। लेकिन हमें तो पृथ्वी पर ही चलना है। आप हमारे नमस्कार-पात्र अवश्य हैं। लेकिन आपके पीछे हम चल नहीं सकते। श्रेणी ही बिल्कुल अलग है। यक्ष, किन्नर, गंधर्व में आपकी गिनती होगी, पर हम तो सामान्य मानव हैं।''

किंतु यह बात हम गांधीजी के बारे में नहीं कह सकते। हमें, हरएक को मानना होगा कि गांधीजी जन्मतः एक सामान्य मनुष्य थे। और वे मेहनत करके महान हुए। उनका सारा पराक्रम इसी जन्म का है। अगर वे पूर्वजन्म की कुछ सिद्धि लेकर आये होते, तो वह हमारे लिए आदरणीय होते, अनुकरणीय नहीं। लेकिन वे पूर्वजन्म की सिद्धि लेकर नहीं आये थे। अगर सिद्धि थी, तो यही थी कि सत्य पर निष्ठा थी।

गांधीजी का चरित्र अनुकरणीय है यह हमको समझना चाहिए। अगर हमने उनको अवतार वगैरह बना दिया तो मामला खत्म हो जायेगा। अवतार की भी जरूरत होती है। मानवरूप में परमात्मा आये हैं ऐसा मानकर उपासना-भक्ति करना मनुष्य के लिए लाभदायी होता है। इसलिए अवतार की भी मानवों को जरूरत होती है, पर उसके लिए राम हैं, कृष्ण हैं, इतने अवतार बस हो गये। इससे ज्यादा अवतारों की जरूरत नहीं, अब मानवों की जरूरत है। अगर हमने कभी गांधीजी को अवतार बना दिया तो उनका हमको कुछ भी उपयोग नहीं होगा, सिवा इसके कि उनका नाम वगैरह हम लें। नाम लेने के लिए राम-कृष्ण का आधार हमारे लिए बस है। इसलिए गांधीजी का मानवरूप हम कायम रखें, उनका कोई संप्रदाय न बनायें।

* *

गांधी शताब्दी के उत्साह का उपयोग मत कीजिए। वह बड़ा खतरनाक है। जो 99 में नहीं था, 100 में है और 101 में समाप्त हो जायेगा, वह एक ज्वार है, जो उतर जायेगा।

दो अक्टूबर क्षमादिन

कल रात को गाढ़ निद्रा में से जागने के बाद एक विचार मुझे सहज सूझा। उसकी चर्चा सुबह मैंने हमारे साथियों से की, जो यहां मेरे जन्मदिन के निमित्त इकट्ठा हुए थे, बिहार के प्रखंडदान के बारे में आगे की दिशा

2 अक्टूबर महात्मा गांधी का जन्मदिन नजदीक आया है, उसको भारत में क्षमादिन के तौर पर मनाया जाये। उसके लिए चार बातें सूझी हैं। दो हरएक व्यक्ति को निजी तौर पर करने की हैं, और दो हमारे देश की सरकार को – अगर वह पसंद करेगी – करने की हैं।

व्यक्तिगत दो बातें –

1. जिस किसी ने हमारा कोई बुरा किया हो, और जिसके लिए हमारे मन में गुस्सा हो, उसे हम क्षमा करें।

2. हमारे अपने अनंत अपराधों के लिए हम विश्वशक्ति से नम्रतापूर्वक क्षमा-याचना करें।

सरकारी तौर पर करने की दो बातें –

1. गुनहगार माने गये कैदियों को, जो पांच साल सजा भुगत चुके हों, मुक्त किया जाये, चाहे उन्हें आजन्म कारावास की सजा हुई हो।

2. राजनैतिक कारणों से बिना ट्रायल के डिटेन्शन में रखे हुए सब बंदियों को मुक्त किया जाये – चाहे वे किसी पार्टी के हों – सिवा उनके कि जिन्होंने हिंसक कृत्यों में सक्रिय भाग लिया हो।

अगर ये चार बातें अमल में आती हैं तो उससे होनेवाले लाभ स्पष्ट हैं। फिर भी उनका थोड़ा जिक्र करना ठीक होगा।

नंबर 1 में दूसरों को हम क्षमा करें यह बात है, और नंबर 2 में हमारे व्यक्तिगत अपराधों के लिए क्षमा मांग रहे हैं। यह क्रम महत्त्व का है। जब तक हम दूसरों को क्षमा नहीं करते, तब तक हम क्षमा-याचना के अधिकारी नहीं बन सकते। दोनों मिलकर हृदय-परिवर्तन और हृदयशुद्धि की आशा हम रख सकते हैं।

सरकारी स्तर पर करने की पहली बात, बिना दलील के, सर्वमान्य हो सकती है। भारतीय अध्यात्मविद्या और आधुनिक अपराधशास्त्र दोनों की उस विषय में सम्मति है। सरकारी तौर पर करने की दूसरी बात, हिंदुस्तान की आज की परिस्थिति में, हमारे गणतंत्र की रक्षा, प्रतिष्ठा और मजबूती के लिए, बहुत ही लाभदायी होगी। अगले साल चुनाव होनेवाले हैं, उसके लिए इससे शुभ वातावरण बनेगा। अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में उससे भारत की इज्जत बढ़ेगी।

अपने बारे में

स्कूलों में क्या पढ़ाई होती है? हमें क्या स्कूल में शिक्षण मिला? हमारी मां तो बिल्कुल अनपढ़ थी। हमने ही उसे हरिपाठ की पुस्तक और मराठी गीता पढ़ायी। उम्रभर ये दो पुस्तकें उसके काम आयीं। तीसरी पुस्तक उसने पढ़ी नहीं। उन दोनों पुस्तकों को पढ़ने में तीन घंटे काफी होंगे। लेकिन नित नया भजन उसके मुख से हमें सुनने को मिलता। उसके संस्कार हुए हैं चित्त पर! बारह बजे तक वह घर का कामकाज करती। जब सबको खिला-पिला चुकती, तो हाथ-पांव धोकर फिर भगवान के पास जाकर पंद्रह मिनट पूजा करती। कुल पंद्रह मिनट, परंतु एकाग्रभाव से, सब दुनिया को भूलकर पूजा में मग्न हो जाती और अंत में जब "हे अनंत कोटि ब्रह्मांड नायक, मेरे सारे अपराध क्षमा कर" कहती, तो उसकी आंखों से अश्रुधारा बह निकलती। ईश्वर का और उसका मानो सीधा संबंध हो, ऐसा वह अद्‌भुत दृश्य होता था। वे संस्कार हम पर हैं। उस बल पर यह ग्रामदान और भूदान चल रहा है। क्या किसी हाईस्कूल-कॉलेज में या किसी पुस्तक द्वारा हमें ये संस्कार मिल सकते थे?

* *

मेरी मां की सुगंध आसपास फैली थी। जब उसकी मृत्यु हुई, तो कितने ही लोगों ने कहा कि एक 'महान योगिनी' की मृत्यु हुई। उसको खयाल में रखकर ही मैंने 'गीता-प्रवचन' में लिखा है कि ऐसी कितनी ही माताएं होंगी, जो आगे बढ़ी होंगी और योगी अहंकार में फंसे होंगे।

* *

मुझे सबसे अधिक मां का स्मरण होता है। मैं मां का लड़का हूं। कोई मां के बच्चे होते हैं, कोई पिता के तो कोई दादाजी के। मैं मां का हूं। आपको लगेगा कि यह क्या कहना! लेकिन यही मेरी सच्ची पहचान है। मैं मां का लड़का हूं यानी मेरे जीवन पर माता का परिणाम जितना हुआ है, उतना और किसी का शायद ही हुआ हो! मुझ पर मेरी मां की जितनी सत्ता चलती है, उतनी और किसी सगे-संबंधी की नहीं। उसने लगायीं वे

नहीं होता। स्त्रियों की ओर देखने की मेरी दृष्टि भी वैसी ही है। मैं आज तक स्त्रियों की ओर मातृदृष्टि से ही देखता आया हूं। मैंने जो गीता का मराठी अनुवाद किया है, उसको नाम भी 'गीताई' दिया है। लड़कियों को, बच्चों को, स्त्रियों को समझ में आये इस दृष्टि से सुलभ किया है। गीताई नाम देने का उद्देश्य भी यही कि सारी दुनिया का आश्रय छूट जाये तो भी मां का आश्रय कभी छूटता नहीं। अर्थात् मां की योग्यता गीता में है। मां के पास बालक को जो सुरक्षितता अनुभव में आती है, वही गीता के पास भी हो इसलिए गीता के साथ आई (मां) शब्द जोड़ा है। स्त्रियों को धार्मिक शिक्षा देनेवाली गीता से अच्छी किताब नहीं।

* *

बचपन से ही मुझे प्रेरणा थी कि शीघ्र-से-शीघ्र घर छोड़ना चाहिए। मैंने आयु के बीसवें साल घर छोड़ा और तबसे आश्रम में या घूमने में ही सारे दिन बिताये। लेकिन घर छोड़ने का संकल्प बचपन से ही था। अपना मटका कच्चा न रहे, पक्का हो जाये, इस दृष्टि से मैंने विभिन्न शास्त्रों का खूब अध्ययन किया। रात-दिन अध्ययन में ही बीतता। यह सारा इसलिए था कि बाहर निकलते हैं तो अपनी पूरी तैयारी होनी चाहिए। कारण लोगों के बीच पहुंचने पर दूसरा कोई आधार न रहता।

* *

अभी बच्चे नंगे नहीं घूमते, उनको बचपन से चड्डी पहनाते हैं। लेकिन हम बिल्कुल नंगे घूमते थे। और कब तक? नौ साल की उम्र तक! बिल्कुल नंगे। देहात में दूसरे हमारे साथी बच्चे भी नंगे। उसके बाद हमारा उपनयन संस्कार हुआ। उपनयन के बाद हमने लंगोटी पहनी। तो साल-डेढ़साल तक लंगोटी पहनी। उसके बाद हम गये बड़ौदा। वहां हमारे पिताजी थे इसलिए हम वहां गये, विद्याभ्यास के लिए। हम तो लंगोटी पहने गये थे, तो पिताजी ने कहा – 'अब शहर में आये हो। अब तो तुमको धोती पहनना ठीक रहेगा।' देखा कि यहां तो कोई लंगोटी पहनते नहीं, तो हमने धोती पहनना शुरू किया। बहुत बोझ मालूम होता वह सारा लपेटना, तब फिर घर में आने के बाद तुरंत सब फेंक देते थे। केवल लंगोटी पहने रहते थे। ऐसा चला 4-6 महीने। फिर पिताजी ने कहा 'तुम घर में लंगोटी पहनते हो यह ठीक है, लेकिन घर में भी मेहमान वगैरह आया करते हैं। इसलिए अब

बचपन का एक किस्सा। हमारे घर के पास पत्थर फोड़ने का काम चलता था। मैं वह देखने जाता था और उन मजदूरों से कहता था कि मुझे भी पत्थर फोड़ना है। तो वे मुझे ऐसा पत्थर फोड़ने को देते थे जो बिल्कुल फूटने की तैयारी में होता था। फिर मैं अपनी छोटी-सी हथौड़ी से उस पर प्रहार करता था और वह फूट जाता था, तो सब लोग खुशी से चिल्ला उठते थे – 'विन्या ने पत्थर फोड़ा।'... उस घटना का मेरे मन पर गहरा असर हुआ है। मैं मानता हूं कि आखिरी प्रहार, जो कि सफलता का प्रहार होता है, जिसके हाथ से होता है, वह व्यक्ति सबसे कम योग्यतावाला होता है। जो उसके पहले काम करते हैं, वे उससे महान होते हैं। भगवान बुद्ध, शंकराचार्य आदि का नाम दुनिया जानती है। वे तो महान थे ही, परंतु उनसे भी महान उनके गुरु थे जिनको दुनिया नहीं जानती। जो सर्वश्रेष्ठ पुरुष होते हैं, वे कभी दुनिया के सामने आते ही नहीं, लेकिन उनके हाथ में वे लोग होते हैं, जिनको दुनिया महापुरुष कहती है।

* *

आज हमारे शरीर के साठ साल पूरे होते हैं। लेकिन इन वर्षों का कोई भार बाबा को मालूम नहीं हो रहा है। वृद्धावस्था तो दूर रही, बाबा को जवानी का भी अनुभव नहीं। बाबा का तो अभी बचपन ही चल रहा है।

* *

मैं दिन-प्रतिदिन जवान होता जा रहा हूं। वास्तव में मैं न तो वृद्ध हूं और न युवक, बल्कि बलवान बालक ही हूं। आखिर बालक की व्याख्या भी यही है कि 'जो बलवान हो, वह बालक'। इन दिनों मैं बाल-दशा में ही हूं। खूब पैदल घूमता हूं। इसलिए आपलोग मेरी गिनती बूढ़ों या जवानों में न कर बालकों में ही करें और इसे बाल-वाणी मान वैसे ही स्नेहपूर्वक सुनें, जैसे कि मां अपने बच्चे की बोली सुनती है।

* *

हमें तो बचपन से अज्ञात में ही कूदने का शिक्षण मिला। 25 मार्च 1916 को जब हम घर छोड़कर निकले, तो हमारी उम्र 20-21 साल की थी। हमने कॉलेज छोड़ 'ब्रह्मविद्या' का नाम लेकर अज्ञात में कूदने का साहस किया। हमें मालूम नहीं था कि दुनिया में कौन-सा आश्रय मिलेगा। लेकिन दो-तीन महीने के अंदर गांधीजी का आश्रय मिला। हम तो अज्ञात

गुरुदेव हमें सिखा रहे हैं, अरे डरना क्या है? तू तो अज्ञात में प्रवेश कर ही चुका है। क्या तेरी मां तुझे पहले ज्ञात थी? भगवान ने तुझे प्रथम से ही अज्ञात में प्रवेश करने की हिम्मत दी है। तो जैसे अज्ञात में जन्म लिया, अज्ञात में स्नेहमयी माता मिली, वैसे ही हमने ब्रह्मविद्या में कूदने का साहस किया तो महात्मा गांधी जैसी स्नेहमयी माता हमें मिली।

* *

गांधीजी के आश्रम में आया, तबसे आज तक मैं उन्हीं के आश्रय में हूं और मैंने अपने लिए और कोई दूसरा धर्म नहीं पाया। अपने लिए वही मैंने धर्म माना, जो आदेश उन्होंने दिया और उसी से मेरी निष्ठा बनी।

* *

साधारणतया व्याख्यानों के लिए अध्यक्ष होता है। लेकिन मेरे व्याख्यान के लिए अध्यक्ष की आवश्यकता नहीं पड़ती। कारण जिस-जिस सभा में मैं बोलता हूं, वहां गांधीजी अव्यक्तरूप में रहते ही हैं।

* *

1916 में गांधीजी के पास पहुंचा – लेकिन उनके नजदीक बहुत कम रहा। दूर रहकर ही काम किया। उनके लेख बराबर पढ़ता रहता था। उस समय हरिजन में उनके प्रश्नोत्तर आते थे, प्रश्नपेटी के नाम से। वे मैं पढ़ा करता था। पहले मैं प्रश्न देख लेता था, उत्तर नहीं पढ़ता था। फिर सोचता था, मुझे यदि यह प्रश्न पूछा जाता तो मैं क्या उत्तर देता? ऐसा खयाल करके मन में उस प्रश्न का उत्तर तैयार करता। उसके बाद उनका उत्तर पढ़ता। तो उनके और मेरे चिंतन में कहां फरक पड़ा, उनके चिंतन में कहां विशेषता रही, कहीं कमी भी हो तो उसका अध्ययन होता था। वह प्रश्न-पेटी मैंने पढ़ने का साधन नहीं माना था, अध्ययन का साधन माना था।

* *

मुझे अपना जीवन अत्यंत भाग्यवान मालूम पड़ता है, कारण इसमें मुझे भरत-भक्ति का अनुभव होता है। शास्त्रों में जिसे वियोग-भक्ति कहा जाता है, उसका मुझे अनुभव हुआ है। बापू से दूर रहकर उनके विचारों का मैं बड़ी ही बारीकी से अध्ययन करता और उसमें से जो मिलता, उस पर अमल करने का यथाशक्ति यत्न भी करता था। यह मेरा बड़ा-से-बड़ा सौभाग्य था।

तो प्रेम और करुणा का "पाथेय" नहीं ले गया था। वैज्ञानिक मन का लक्षण है कि वह सत्य को ही सर्वेसर्वा मानता है। वेद, उपनिषद पढ़कर मैं 'सत्य' को ही एक मुख्य प्रमेय मानता हूं। परंतु सत्य की उपासना, सत्य की खोज प्रेम और करुणा के बिना हो नहीं सकती। इसलिए करुणा और प्रेम मेरे हृदय में पैठ गये और यह करुणा ही मुझे घुमाती है। मेरे शरीर में दूसरी कोई शक्ति नहीं। सात-साढ़ेसात सालों से सिर्फ कारुण्य की शक्ति ही मुझे घुमा रही है। परंतु यह करुणा मुझमें पीछे से आयी। मेरी मूल प्रकृति तो सत्य, विज्ञान और गणित के शास्त्र की है।

* *

साबरमती में बापू रोज कातने का आग्रह रखते थे। मैं रोज कातता था, लेकिन रोज कातने का महत्त्व मैं नहीं मानता था। बाद में मैं पवनार गया, वहां भी मेरा रोज का कातना जारी था। उस वक्त बापू ने पत्र लिखा था कि "तू रोज कातता तो है, लेकिन रोज कातने पर तेरा विश्वास नहीं, यह मेरी कमी है।" मुझे लगा कि उनकी 'कमी' दीखना ठीक नहीं। इसलिए मैंने उन्हें लिख दिया था कि मैं बारह साल रोज कातूंगा। उसके बाद मैं कई बार बीमार भी पड़ा, लेकिन एक भी दिन मेरा नागा नहीं गया। बाद में उन्होंने पूछा तो मैंने कहा कि मैं रोज कातता हूं। मेरा कहने का मतलब यह है कि मैं कर्मकांड नहीं चाहता।

* *

ब्रह्मांड में जो संकल्प है वह परमेश्वर है, देह में जो संकल्प है वह आत्मा है। आत्मा में कमी होती है, तो उसके लिए उधर से मदद आती है। बाबा की यात्रा चल रही है, कभी ताकत कम पड़ती है फिर बाबा उधर से शक्ति मांगता है। वह मिल जाती है। फिर बाबा बादशाह जैसा चलता है।

* *

मेरा अपना मन एक खास ढंग से सोचता है। मैं समझता हूं कि इस दुनिया में एक शक्ति काम करती है। वह परम चेतन है। उसके अलावा दूसरी कोई शक्ति दुनिया में नहीं और उसकी इच्छा सर्वोपरि है। उसके अनुसार सब काम होता है। ऐसा मेरे मन में पूर्ण विश्वास है। इसलिए जिससे जितना काम बना, उसके लिए मैं उनका उपकार मानता हूं। उसकी प्रशंसा करता हूं। जिससे काम नहीं बना, उसका मैं उच्चारण नहीं करता।

है। दूसरों को मेरी मदद में दौड़ आने की प्रेरणा क्यों नहीं देता?' तो वह जवाब भी दे सकता है। वह कह सकता है, 'कम्बख्त, तू नहीं समझता कि मैं तेरा यश बढ़ाना चाहता हूं।'

* *

मेरे अंतर से सदैव ईश्वर ही बोलता है। अभी हमारा संवाद चल रहा है। मैं उससे कहता हूं कि तुझसे मेरी तकरार नहीं है। मैंने जितनी भक्ति की है उसकी अपेक्षा तूने कम फल दिया, ऐसी मेरी फरियाद नहीं है। मेरे द्वारा जो अल्प भक्ति हुई, उसकी अपेक्षा बहुत अधिक फल मिला है। बहुत लोग कहते हैं कि 13 वर्ष तक भूदान चला, परंतु अभी तक उसका परिणाम नहीं आया। मैं कहता हूं कि आपका कहना ठीक होगा। परंतु मैंने जो पुरुषार्थ किया, जिस पुरुषार्थ का निर्माण किया, और हमारी मंडली ने जो कुछ किया उसके परिमाण में अधिक परिणाम आया। इसलिए मेरे मन में कृतज्ञता ही है।

* *

भगवान मुझे मेरी पात्रता से कहीं अधिक सफलता दे रहा है। मैं जानता हूं कि ज्यों-ज्यों मेरी चित्तशुद्धि बढ़ेगी, त्यों-त्यों सफलता की मात्रा भी बढ़ेगी।

* *

लोग पूछते हैं कि यह काम असफल हुआ तो क्या होगा। लेकिन हम इस तरह सोचते नहीं हैं। यह काम विनोबा का नहीं है, परमेश्वर का है इसलिए यह असफल हुआ तो विनोबा की फजीहत नहीं होगी बल्कि परमेश्वर की फजीहत होगी।

* *

मेरे देवताओं की मैं क्रमानुसार भक्ति करता हूं। प्रथम अपील भगवान को। वे सबके प्रभु हैं। उनसे संवाद और प्रार्थना करता हूं। यह बाबा की बड़ी शक्ति है। दूसरा देवता जनता। ये दो मेरे देव हैं। जिनको आप सरकार कहते हैं, वे देवता नहीं, वे नौकर हैं। लोग खेती में सेवा के लिए सालदार रखते हैं। वैसे पांच साल के लिए इनको चुना है।

* *

जिस दिन मुझे पहला सौ एकड़ का दान मिला उस रात को मैं सोचने लगा कि इस घटना का कोई अर्थ है? तो मेरे ध्यान में आया कि दुनिया

निमित्तमात्र हूं। फिर मैंने सोचा कि क्या मुझमें यह काम उठाने की शक्ति है? तो अंदर से आवाज आयी मैं शक्तिशून्य हूं। लेकिन यद्यपि मैं शक्तिशून्य था, विश्वासशून्य नहीं था। इसलिए मैंने सोचा कि अगर मैं अभिमानशून्य हो जाऊं तो जिसने रामावतार में बंदरों से काम लिया वह मुझसे भी काम लेगा। दूसरे दिन दूसरे गांव में जाकर मैंने कहा कि अगर आपके घर में पांच लड़के हैं तो मैं छठा हूं, मुझे छठा हिस्सा दीजिए। वहां के लोग इसके लिए बिल्कुल तैयार नहीं थे कि ऐसी कोई मांग की जायेगी। लेकिन हिरोशिमा में एटम बम का जो परिणाम हुआ वह मेरे उस वक्तव्य का वहां पर हुआ। मुझे पचीस एकड़ जमीन मिल गयी और भूदान-यज्ञ का आरंभ हुआ। * *

जब हमें प्रथम भूदान मिला तो हम चिंता में पड़े कि क्या किया जाये? अंतर में आवाज आयी – **ओरे भीरु तोमार हाते नाइ भुबनेर भार,** डरने का कोई कारण नहीं है। मेरे कान में आवाज आयी कि निकल पड़, किसी से सलाह-मशविरा मत कर। अगर सलाह-मशविरा करते और मित्रों से पूछते कि भारत में घूमने से क्या लाखों एकड़ जमीन दान में मिलेगी, तो वे क्या जवाब देते? हम ही अपने मन में नहीं कह सकते थे कि जमीन मिलेगी, तो दूसरे कौन ऐसी सलाह देते? शास्त्रवचन है – **एकाकी पौरुषं कुर्यात्** – पुरुषार्थ अकेले को करना चाहिए। जब कोई पराक्रमी संकल्प करना है तो अकेले निकल पड़ना चाहिए, ऐसी प्रेरणा मिलनी चाहिए। उस प्रेरणा से काम करने के लिए भगवान ने हमें शक्ति दी है। गुरुदेव गाते हैं – **तोमार पताका जारे दाओ तारे बहिबारे दाओ शकति** । उसने पताका दी है और उसे वहन करने की शक्ति भी दी है। इसलिए उसके उपकार का स्मरण करते हैं।

दूसरा उपकार हम स्मरण करते हैं भारतीय हृदय का। हम कश्मीर, केरल, कामरूप या जहां भी गये, सर्वत्र हमें प्रेम का ही अनुभव आया। हर प्रांत में हिंदू, मुस्लिम, ईसाई सबने बाबा को अपना माना। उसके संदेश को प्रेम से स्वीकार किया। यह जो भारत का हृदय है, उदार हृदय, व्यापक हृदय, उस हृदय का हमें परिचय हुआ और उसका बड़ा उपकार मालूम हुआ।

भूदान-यज्ञ में 15 लाख एकड़ जमीन वितरित हुई। एक एकड़ में एक व्यक्ति की जीविका चल सकती है। तो 15 लाख लोगों का पेट भरा। एक बड़ा उद्योगपति भी कुछ हजार लोगों को ही काम देगा। उस हिसाब से देखा जाये तो काफी काम हुआ।

मैंने हिसाब किया है कि कितने समय में कितना काम हुआ। भगवान की जितनी भक्ति हमसे हुई उससे दस गुना फल मिला है। लोगों में हमारे काम के लिए कितनी अनुकूलता है इसका भान हुआ और उससे हमारी आत्मनिष्ठा बढ़ी। कार्यकर्ताओं में जनता के लिए विश्वास उत्पन्न हुआ कि जनता कितनी उदार है।

* *

(भीड़ को देखकर) जैसे आपलोगों को मेरे दर्शन की इच्छा होती है। वैसे मुझे भी आपके दर्शनों की बहुत प्यास है, उत्कंठा है। आप मेरे भगवान हैं। भगवान केवल काशी-रामेश्वर के मंदिरों में नहीं रहते। वे मेरे इन सब भाइयों में मौजूद हैं। ऐसा नहीं होता तो कौन ऐसा पागल है जो व्यर्थ घूमता?

* *

मेरे कृष्ण सिर्फ मथुरा में नहीं हैं, मैं तो जहां जाता हूं, वहीं मुझे मेरे कृष्ण के दर्शन हो जाते हैं। आप सब मेरे कृष्ण हैं और मैं आपके दर्शन के लिए आया हूं।

* *

हम समझते हैं कि बारह साल में हमें जितना दर्शन हुआ, उतना बहुत थोड़े लोगों को हुआ होगा। हमारा जो लोकसंपर्क होता है, वह चेहरों का लोकसंपर्क नहीं, हृदयों का लोकसंपर्क है।

* *

हम जब आपलोगों को सामने देखते हैं, तो केवल मनुष्यों के चेहरे नहीं देखते। उनमें हमें परमात्मा की ज्योति का दर्शन होता है। बारह साल में हमने जितना पाया, अगर यह यात्रा नहीं करते तो उसका एक अंश भी हमें मिलनेवाला नहीं था। हमें ईश्वर की लीला का दर्शन हुआ, मानव-हृदय की उदारता का दर्शन हुआ। हमारे लिए यही मुख्य निधि है।

* *

वृद्धावस्था में पदयात्रा से मनुष्य थक जाता है, लेकिन हम अपने को

रूप देखने को मिलता है। भगवन्मूर्ति हमारे सामने खड़ी है और हम उसकी सेवा में लगे हैं, ऐसा साक्षात् दर्शन हमें रोज होता है।

* *

सबके चेहरे में जो भाव हम देखते हैं, उसके अलावा मित्र के चेहरे में और भी भाव देखते हैं। सबके चेहरों में भगवान की मूर्ति दीखती है, लेकिन मित्र के चेहरे में अपनी ही मूर्ति दीखती है।

* *

मैं तो सबके प्रेम का भूखा हूं। चाहता हूं कि सबमें जो नारायण है, उसके दर्शन करूं। मेरे लिए **नर नारी बाळें अवघा नारायण** हैं। नारद जिस वृत्ति से हर किसी के पास पहुंच जाते थे, वैसे मैं भी पहुंच जाता हूं। मेरे लिए तो सब अंतरात्मा और परमेश्वर के ही रूप हैं। उनमें से हरएक में गुण हैं। उन गुणों के जरिये मैं सबके अंतःकरण में प्रवेश पाने की कोशिश करता हूं। यदि मेरी आवाज सच है, तो वह हर घर में जायेगी, हर हृदय में पहुंचेगी।

* *

आज सुबह मैं जरा थका हुआ था, पर यहां आते ही पुनः ताजा हो गया। प्रातःकाल जनता के दर्शन हुए तो थकावट भी उतर गयी। जनता का दर्शन यानी क्या? वेद में आया है कि प्रभु हजारों मस्तकों से शोभित है। हजारों हाथ-पांव से काम करनेवाला है, ऐसा उपनिषदों और गीता में भी आया है। जनता के रूप में वही यह प्रभु है। **सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपाद्।** वह प्रभु कहां है? इस पर विचार करने पर मुझे ऐसा भास होता है कि उसी का मुझे अखंड दर्शन हो रहा है। तेरह वर्ष तक वह दर्शन मैंने प्राप्त किया और उसके द्वारा मेरा पोषण हुआ। हमारा यह देह अन्न का बना हुआ है। क्योंकि अन्नाधारित उसका पोषण होता है। पर देह के लिए केवल अन्न का पोषण ही पर्याप्त नहीं। दूसरे पोषणों की भी अपेक्षा होती है। तेरह वर्ष तक मुझे वह पोषण मिला, जिसके कारण मैं अनेकविध विषम परिस्थितियों में भी इस शरीर द्वारा सेवा कार्य कर सका। वह पोषण हरिदर्शन का ही पोषण है।

* *

इन 13 वर्षों में जो कुछ काम हुआ उसमें जनता ने मेरी मांग के

हूं। वह मेरी परम देवता है। इसी लिए मैं उससे श्रद्धापूर्वक मांगता हूं। माता चाहे जैसी हो पर पुत्र आकर जब उससे कुछ मांगता है, तब नहीं दे सकने के कारण पुत्र को जितना बुरा लगता है, उसकी अपेक्षा माता को ही अधिक बुरा लगता है। वह अपनी शक्ति के अनुसार देने का प्रयत्न करती है। क्योंकि वह बालक की मांग है। उसके सामने मां का नहीं चलता। उसी तरह बाबा ने जनता के सामने मांग की। तब जनता मना नहीं कर सकी। परंतु जितनी सफलता मिलने की अपेक्षा थी, उसकी अपेक्षा कम मिली। इसका मुख्य कारण यह है कि बाबा की इच्छा अभी तक पूर्ण निरहंकार रूप में परिणत नहीं हुई, शून्यरूप नहीं हुई।

वह शून्यता प्राप्त होने पर उस शून्य के आगे दूसरी संख्या प्रविष्ट होगी। शून्य के पहले पांच होने पर पचास होंगे। और आठ होने पर अस्सी होंगे। शून्य स्वतंत्र बैठा रहेगा तो बन-बनकर कितना बनेगा? दो, तीन, चार, अधिक-से-अधिक नौ बनेगा, आगे उसकी गति नहीं। उस शून्य ने एक का स्थान प्राप्त किया और दस दूसरे को दिया तो बहुत बड़ा अंक होगा। और सौ देने पर तो और भी बड़ी संख्या होगी। यह शून्यशक्ति सिद्ध करने का प्रयत्न करने पर भी अभी तक पूर्ण सिद्ध नहीं हुई है। पर जो सफलता मिली, वह योग्यता की अपेक्षा अधिक मिली है।

* *

हमारी यात्रा चल रही है। शरीर तो दिन-ब-दिन वृद्ध होता जा रहा है, लेकिन हृदय में अत्यंत संतोष है। अगर आज परमेश्वर हमको बुलाये और हम यहीं से उसके पास जायें, तो पूर्ण समाधान के साथ जायेंगे। हमको यह नहीं लगेगा कि कोई इच्छा शेष है। यह ठीक है कि भगवान ने और कुछ दिन शरीर में रखा तो हम नाराज नहीं होंगे। उस समय का उपयोग भगवान की सेवा में किया जायेगा। उसमें भी हमको प्रसन्नता है। इस प्रकार का समाधान जिंदगी में आने से हम समझते हैं कि मानव-जन्म सार्थक हुआ।

आज भी हमारे शरीर में कोई थकान महसूस नहीं होती, क्योंकि अंदर एक प्रेरणा का झरना है। हम समझते हैं कि यह प्रेरणा भगवत्-प्रेरणा है। वही हमको हिलाती-डुलाती रहती है। हम कौन हैं, चिंता करनेवाले? हमने सारी चिंता ऊपरवाले पर छोड़ दी है। सफलता, निष्फलता, गुण-दोष, सब

मेरा शरीर तो पहले से ही कमजोर था। मैंने यदि शरीर को कसा न होता; सर्दी, गर्मी, बरसात, आंधी आदि सहन करने की शक्ति प्राप्त न की होती, तो मैं इस भूदान-यात्रा में नहीं टिकता। सात-आठ साल से यह यात्रा चल रही है और कौन जाने कब तक चलेगी। वर्षा, गर्मी, सर्दी सहनी पड़ती है। कभी-कभी तो जहां अधिक-से-अधिक वर्षा होती है, वहां भी सतत बारिश में चलना पड़ा।

प्रकृति हमारी मित्र है। खूब पानी गिरे, तो मानना चाहिए कि हमारा मित्र हमें मिलने आया है। कड़ाके की धूप हो, तो भी ऐसा ही मानना चाहिए। धूप से मिट्टी गरम होगी और उस पर पानी पड़ेगा, तो फसल पैदा होगी। धरती को धूप न लगे, तो केवल पानी से फसल नहीं होगी। उसी तरह अपना शरीर भी मिट्टी है, उसे सूर्यनारायण का स्पर्श होना चाहिए। ये सब हमारे मित्र हैं और मित्ररूप में ही हमें उनका स्वागत करना चाहिए।

कसा हुआ जीवन ही मधुर जीवन है। जीवन में माधुर्य कायम रह सके, इस तरह का जीवन बनाना चाहिए।

* *

मुझे लोग कहते थे कि वर्षा के इन दिनों अक्राणी महाल में जाना बड़ा ही कठिन है। वहां नदी-नाले, जीव-जंतु आदि का काफी भय रहता है। मैंने कहा – आखिर वहां आदमी रहते हैं या नहीं? अगर वे रहते हैं, तो मैं अवश्य जाऊंगा, भले ही कैसी भी मुसीबत उठानी पड़े।

* *

आज तो बिल्कुल भरे पैरों चलना हुआ। आज पैर उठाते समय स्त्रियों की जेवरों के कारण क्या स्थिति होती होगी, इसकी अच्छी कल्पना आयी। बरसात के जैसी आनंददायी यात्रा दूसरी नहीं। चारों ओर हरीभरी प्रसन्न सृष्टि, मंद शीतल वायु, गर्मी का बिल्कुल कष्ट नहीं। मोरोपंत ने एक पत्र में लिखा था कि 'अभी वर्षा के दिनों के कारण बुद्धिमांद्य होने से अधिक लिखना नहीं होता।' इसका कारण है, वे घर में बैठे रहते थे। वर्षा के दिनों में घूमनेवाले की प्रतिभा विशेष खुलती है, यह मैं अनुभव से कहता हूं।

* *

(उस दिन रास्ते में बहुत कीचड़ था। बाबा ने कहा –) कीचड़ में चलने से तीन लाभ होते हैं। पहला लाभ, व्यायाम। दूसरा लाभ, पैरों की मालिश सहज

उस समय उत्तर प्रदेश की यात्रा चल रही थी और चुनाव के दिन थे। एक साथी ने कहा कि आप पंद्रह दिन एक जगह रुकिए। हमें चुनाव के लिए जाना है, क्योंकि पहले से ही वादा किया हुआ है। मैंने जवाब दिया कि गंगा नहीं ठहरती, तो मैं क्यों ठहरूंगा? मैं तो चलता ही रहूंगा।

* *

रास्ते में सुबह तीन ग्रामदान जाहिर हुए। लोग काम करते हैं। बाबा के नाम पर वह चलता है। लेकिन बाबा उसे अपने को छूने नहीं देता। ईश्वर के पास पहुंचा देता है। ऐसा यह फुटबाल का खेल चल रहा है।

* *

मैंने अपना स्वार्थ समाज के स्वार्थ से भिन्न कभी नहीं माना। मैं जिंदा हूं, समाज के लिए। लिखता हूं, समाज के लिए और कोई काम भी करता हूं तो समाज के लिए। यही कारण है कि मेरा अपना सारा काम समाज ही उठा लेता है। मैं दो हाथों से लोगों के लिए काम करता हूं तो लोग हजारों हाथों से मेरा काम करते हैं।

* *

'मैं म्युनिसिपालिटी की तरफ से उसके अध्यक्ष के नाते आपका स्वागत करता हूं।' ऐसा कहकर एक भाई ने सूत की एक गुंडी दी। आजकल स्वागत भी प्रातिनिधिक होता है। उसमें इन्सान का दिल नहीं होता। परंतु जब मेरे स्वागत के लिए बच्चे आते हैं तो देखिए उनका प्रेममय हास्य! यों जब कोई हृदय से मेरा स्वागत करता है, तब उसमें मुझे साक्षात् नारायण का दर्शन होता है। पर जब कोई प्रतिनिधि आकर मेरे गले में माला डालता है तो मुझे वह फांसी ही मालूम होती है। इन प्रतिनिधियों से मैं बहुत डरता हूं। वे न नर होते हैं, न नारायण।

* *

आज हमें सूत से तौलने की बात कही गयी। जिस तुला में प्रभु श्रीकृष्ण बैठे थे, उसकी तो मैं इज्जत ही कर सकता हूं। मैं भक्त हूं और मेरे लिए यह असंभव है कि मैं श्रीकृष्ण-चरित्र का अनुसरण करूं। हमें तो भक्तों का अनुसरण करना चाहिए। अलावा इसमें मैं साधक का श्रेय नहीं देखता। शरीर की तुला यानी शरीर की पूजा ही है और यह देहपूजा अनुचित है।

* *

ही नहीं कर सकता। सृष्टि में कोई मामूली सौंदर्य नहीं है। वहां परमेश्वर ही सजकर खड़ा है। और (3) मानवों के चेहरों को देखकर होनेवाला दर्शन। शांति और एकाग्रता के साथ श्रवण करनेवाली इतनी सारी नारायण-मूर्तियां मेरे सम्मुख बैठी रहती हैं। वे मुझसे बुलवाती हैं। तुकाराम कहते हैं, **शिकवूनि बोल, केलें कवतुक** यानी मेरे विठ्ठल बाबा ने मुझे बोलने के लिए सिखलाया और बुलवाकर मेरी सराहना की तथा स्वयं को रिझा लिया। इसी तरह मुझे लगता है कि आप सब शांति और प्रेम से सुनकर मुझसे बुलवा रहे हैं तथा इस बच्चे की सराहना कर रहे हैं। आप सब मेरे लिए नारायणस्वरूप ही हैं। आपलोगों के दर्शन के लिए ही मेरी यह यात्रा चल रही है।

* *

जब मैं प्रवचन करता हूं तो मुझे खूब उत्साह आ जाता है और इससे मुझे ऑक्सीजन मिल जाता है। बहुत-से लोग मुझसे पूछते हैं कि "इस तरह रोज पैदल चलने से क्या आप थक नहीं जाते?" मैं कहता हूं कि "क्या रामनाम लेने में कभी थकान मालूम पड़ती है?" मेरे लिए तो यही रामनाम है। इसका वर्णन करने में ही उत्साह आता है – इतना अधिक बोल गया, फिर भी थका नहीं। बल्कि इससे थकान ही जाती रही। अब मैं बड़े उत्साह और उमंग के साथ अपने कमरे में जाऊंगा।

* *

आज हम कुछ थक भी गये हैं। सुबह से अब तक चलते तो इतनी थकान नहीं लगती। लेकिन हमें चार घंटा लांच (नौका) में बैठना पड़ा। वहां इन्तजाम फर्स्ट क्लास जैसा था, लेकिन हमेशा हम जिस क्लास में रहते हैं, वह इस फर्स्ट क्लास से बहुत ऊपर का क्लास होता है। हम बिल्कुल आराम से निकलते हैं और सतत आकाश सेवन करते हैं। और हम पर परमेश्वर की छत और गगन का वितान रहता है। परंतु इधर तो हम पर कोई बनावटी वितान था। चार घंटे के बाद हमें कोई आधा मील चलना पड़ा तो थोड़ी चेतना आ गयी। अगर चलने का उतना भी मौका न मिलता, तो हम अचेतन जैसे बन जाते।

* *

मेरा स्वभाव ऐसा नहीं कि जन-समुदाय के बीच घुलमिल जाऊं। लोगों

कि सारा शक्ति-संचय अंदर ही है, बाहर नहीं, इसलिए उसे अर्जन करने का अवसर मिल रहा है, तो व्यर्थ न खोया जाये। आज अगर बापू होते तो मैं पहले जैसा ही काम में लगा रहता। अगर वे आदेश देते तो बाहर भी आता। लेकिन वैसे मैं जिस काम में लगा था, उसी में तन्मय रहता। किंतु उनके जाने के बाद मुझे लगा कि अब इस समय यदि मैं जन-समुदाय के बीच दाखिल नहीं होता तो वह कर्तव्य का अवसर खोने जैसा होगा।

* *

मेरी मां मुझे कहती थी कि 'विन्या माणुसघाणा' है, यानी उसको मनुष्य की बू आती है। वह मनुष्य को टालनेवाला है। लेकिन अजीब बात है कि हम मनुष्यों के पीछे हैं और मेरे साथ इतने लोग हैं। और मेरा हार्दिक परिचय इतने लोगों से है कि उतना बहुत ही कम लोगों का होगा। बिल्कुल बचपन से आज तक। उसका कारण क्या था? मनुष्यों का संग्रह क्यों हुआ? अपना रक्षण कैसे करना और दूसरे के काम में कैसे आना, यह बाबा जानता था। अपने रक्षण के लिए गोपन करना, दूसरे के लिए खोलना, यह नल बंद करने और खोलने जैसी सादी बात है। यह शक्ति बाबा को हासिल थी। इसलिए उसने अपने पर किसी का आक्रमण नहीं होने दिया, और न होने देता है। न मित्रों का, न बड़ों का, न अपरिचितों का। लेकिन उपयोग के लिए खोलता है और किसी का अच्छा असर होता है तो उसके लिए भी दिल खोलता है। और जहां जरूरत नहीं, एकदम बंद कर लेता है।

* *

गुण-दोष तो सबमें होते हैं। बाबा में तीन गुण हैं। एक तो करुणा, गरीबों का दुःख मिटाना चाहिए, यह बाबा के हृदय में चल रहा है। दूसरा, जो काम लिया उसको छोड़ना नहीं, सतत करते ही रहना। लोगों का सहकार मिले अथवा नहीं, सातत्यपूर्वक उस काम को करते रहना। और तीसरी बात, बाबा की ईश्वर पर श्रद्धा है। ये तीन गुण उसके हैं, बाकी अनंत दुर्गुण हैं।

* *

यदि विनोबा इस काम में हारा तो आप सभी हार जायेंगे और देश भी हार जायेगा। इस काम से गरीब जो आशा लगाये हुए हैं, यदि वह

ही काम कर रहा हूं, इसलिए मेरे लिए सफलता या विफलता का कोई प्रश्न ही नहीं है।

* *

आज यहां कुछ लोगों ने मुझे लिखा है कि आप उत्पीड़ित, शोषित लोगों की सेवा करनेवाले साधुओं जैसे ही एक साधु हैं। लेकिन मैं साधु नहीं हूं। जो सेवा ही नहीं कर सकता, वह साधु कैसा? मैं तो सिर्फ लोगों का मन मोड़नेवाला हूं। जो लोग दान देते हैं, वे ही साधु हैं।

मैं सिर्फ मालिक के एजेंट के नाते उसका संदेश सुना रहा हूं। जिसका संदेश है, उसी की मिठास है, मेरी नहीं। मैं तो उसका पोस्टमैन हूं। मान लीजिए कि कोई पोस्टमैन आपको पत्र देता है और उसमें मां के मरने की खबर है, तो क्या आप पोस्टमैन को पीटेंगे? अथवा उसके द्वारा लाये गये पत्र में आपको दस हजार रुपये मिलने का समाचार है, तो क्या आप उसे इनाम देंगे? वह तो केवल संदेशवाहक है। इसलिए जिन्होंने मुझे जमीन दी, वे ही साधु हैं। मैं तो सिर्फ घूमता हूं। मुझे कोई कष्ट नहीं होता। लोग अच्छे घर में रखते हैं, अच्छा-अच्छा खाना खिलाते हैं, मेरा कुछ भी त्याग नहीं। उलटे मेरा घूमने का व्यायाम ही हो जाता है, इसलिए मेरी कोई तपस्या नहीं। मैं तो सिर्फ मजदूर हूं, ढोनेवाला हूं। माल तो मालिक का है, परमेश्वर का काम है।

* *

आज हमारे स्वागत में करीब साठ-सत्तर लड़के खड़े थे। मेरी आंखें उन लड़कों के पांवों की तरफ गयीं। मैंने देखा कि उनकी आंखें मेरे चेहरे की ओर थीं। सिवा एक के, किसी के पांव में जूते नहीं थे। धूप कड़ी थी। मैं लज्जित था कि मेरे पांव में जूता था और वे नंगे पांव खड़े थे। ऐसा क्यों होना चाहिए कि एक को पहनने के लिए ठीक कपड़ा मिले और दूसरे अनेक नंगे बदन रहें? एक को अच्छा भोजन मिले और दूसरे अनेक भूखे पेट रहें, ऐसा क्यों?

मुझे अपने व्याख्यानों या भाषणों के विषय, दर्शनमात्र से मिल जाते हैं। अंधकार से मिलते हैं और प्रकाश से भी मिलते हैं। लेकिन मेरा आज का व्याख्यान लोगों को रिझा नहीं सकता, क्योंकि मुझे तो रखा गया है छांह में और मेरे श्रोतागण हैं धूप में। अगर मुझे भी धूप में रखा गया होता

मेरा काम 'भूदान' का है, यह जिसने माना, उसने मुझे पूरा समझा नहीं है। हमारे लिए जो पत्रक निकला है, उसमें दो प्रकार के धर्म की बात की है – निवृत्तिधर्म और प्रवृत्तिधर्म। लिखा है कि बाबा का प्रवृत्तिधर्म चलता है, क्योंकि वह भूदान का काम करता है। मेरे नम्र विचार में उन्होंने इसमें धोखा खाया है। वे समझे ही नहीं कि प्रवृत्तिधर्म और निवृत्तिधर्म क्या होता है? अगर कानून से जमीन बांटने की बात होती, तो वह प्रवृत्तिधर्म होता। लेकिन जहां करुणा से जमीन बांटने की बात होती है, वहां निवृत्तिधर्म हो जाता है। बुनियाद आध्यात्मिक और नैतिक होती है।

* *

हम एक आध्यात्मिक विचार के प्रतिनिधि हैं, इस खयाल से आपको काम करना है। अब तक जो-जो आध्यात्मिक प्रवाह भारत में बहे हैं – बुद्ध-महावीर-शंकर-रामानुज-कबीर, राम-कृष्ण, बसव इन सबके विचारों का समन्वयकारी स्वरूप सर्वोदय में आ गया है। बहुत-से लोग सर्वोदय को केवल सामाजिक विचार मानते हैं। परंतु ऐसा नहीं है। मुझे तो बिहार जाता हूं, तो बुद्ध भगवान से प्रेरणा मिलती है, कालड़ी जाता हूं, तो शंकर से मिलती है और बंगाल जाता हूं, तो चैतन्य महाप्रभु से। मैं क्या कहूं, ये सारी शक्तियां हमारे इस कार्य में हैं, ऐसा मुझे अनुभव होता है।

* *

मैं प्रेम के एक प्रांत से प्रेम के दूसरे प्रांत में बढ़ता गया – तुलसी और कबीर के प्रांत से चैतन्य और जगन्नाथ के चरणों में और फिर शंकर और रामानुज तथा बसवेश्वर का दर्शन लेकर आज मैं ज्ञानोबा माउली के चरणों में...।

* *

इन दिनों हम जरा जूते निकालकर चलने का अभ्यास कर रहे हैं। हम जानते हैं कि इससे आंखों को बहुत तकलीफ होनेवाली है। इसका अनुभव भी हमने किया है। जीवन के तीस-बत्तीस साल जूते पहने ही नहीं। उससे आंखें खराब हुईं। हम मानते हैं कि पथिक को जूता पहनना ही चाहिए। फिर भी कुछ दिन हुए हमने जूते छोड़ दिये हैं। वह इसलिए कि 'गंगासागर' जा रहे हैं। बहुत-से लोग वहां तपस्या करने जाते हैं। हमारा अपना ऐसी तपस्या पर विश्वास नहीं है। लेकिन असंख्य यात्री वहां पादत्राणरहित जाते

मैं अंतर्मुख तो पहले से हूं लेकिन जैसे-जैसे देशभर काम का विस्तार हो रहा है, मेरी अंतर्मुखता भी बढ़ रही है। प्रभु का काम प्रभु पार करेगा। हम निमित्तमात्र हैं। हमें काष्ठपुतलीवत् रहना है।

* *

मैं तेरह साल से बोल ही रहा हूं। केवल व्याख्यानों का हिसाब करना हो तो, दिन में तीन दफा बोलना इस हिसाब से तेरह हजार व्याख्यान हुए। और दूसरी अनेक चर्चाएं हुईं, उसकी गिनती ही नहीं। इन व्याख्यानों में असंख्य विषयों पर चर्चा हुई। उस हालत में कुछ अंतर में जाऊं, थोड़ा वाणी का उपयोग कम करूं, ऐसा मुझे जरूरी लगा। इतना अखंड बोलने के बाद स्वाभाविक इच्छा हुई कि अब कुछ नया दर्शन होना चाहिए।

* *

सर्वोदय-सम्मेलन में जाने का मैंने जान-बूझकर छोड़ा है। लोग कहते हैं कि विनोबाजी हैं, इसलिए काम बनेगा। मैं चाहता हूं कि मेरे रहते भी मेरा मार्गदर्शन न लें और काम करें। विनोबाजी के न रहते जो होगा, वह रहते हुए होना चाहिए। और उसमें मामला बिगड़ा, तो भी अच्छा ही है। तालीम मिलेगी, शिक्षण होगा। इंदौर के बाद तो मैं लोगों के काम में बिल्कुल दखल देनेवाला नहीं हूं। यह बात सही है कि पहले जैसी मेरी स्थिति अब नहीं रही। कहीं भी जाऊं, तो लोग मेरे पीछे आयेंगे। पहले तो दुनिया को पता भी नहीं चलता था। मैं अकेला मस्ती से घूमता था। पेपरों में खबर नहीं आती थी। इसलिए वह आनंद अब नहीं रहा है। अज्ञात यात्रा चलेगी, तो शायद उसमें मुझे वह आनंद फिर से मिले। संभव है कि बीच-बीच में मेरा कार्यक्रम ज्ञात भी हो, लेकिन मेरी कोशिश यही रहेगी कि आज तक मेरे जो लेख और ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं, उसी पर से लोग मार्गदर्शन लें। अब मार्गदर्शन देने की जिम्मेवारी मेरी नहीं रहेगी। मैं मार्गदर्शन देता रहूंगा, तो लोग कमजोर होंगे।

* *

जी चाहता है फिर से अज्ञात यात्रा आगे चले। अज्ञात से ज्ञात में बीच-बीच में कूदना पड़ता है। लेकिन शक्ति का संचय अज्ञात में होता है, उसका खर्च ज्ञात में।

* *

के लिए थोड़ा समय लगा है, तो मैंने यही देखा कि वह विचार मैं पूरी तरह से समझा नहीं हूं। विचार पूरी तरह समझने के बाद भी उसे अमल में लाने में समय जाता हो, ऐसा मुझे कभी अनुभव नहीं हुआ। इसका एकमात्र कारण विचारनिष्ठा ही है। विचार और भावना से अधिक संरक्षण देनेवाली दूसरी कोई भी चीज इस दुनिया में नहीं है। इसके जैसा कोई स्नेही, कोई आप्त नहीं। भावनाएं मूल विचार का ही विकसितरूप है। निश्चित और स्थिर विचार ही भावना का रूप लेता है। वह हृदयंगम होता है, इसी लिए उसे भावना का स्वरूप मिल जाता है।

* *

अपने जीवन में मुझे हमेशा जो विचार जंचा, उस पर उसी क्षण अमल करना शुरू किया। विचार जीवन में लाये बिना विचारों का आकलन ही नहीं हो सकता, सिर्फ शब्दों के अर्थ मालूम हो जाते हैं। मैंने एक साल तक अर्थशास्त्र का अध्ययन किया था। उस वक्त मैं दिन में सिर्फ दो आने का आहार लेता था। लोग मुझसे पूछते थे कि अर्थशास्त्र के अध्ययन का इस 'दो आने आहार' से क्या ताल्लुक है? लेकिन क्या दुनिया में गरीबी है, यह सिर्फ किताब पढ़ने से मालूम हो सकता है? मैंने अर्थशास्त्र की बहुत ज्यादा किताबें नहीं पढ़ीं, चार-पांच किताबों का अध्ययन किया, बाकी मेरा काम और चिंतन चलता था। एक साल में मुझे अर्थशास्त्र का पर्याप्त ज्ञान हो गया।

* *

मैं फकीर हूं। पैसे को कोई कीमत नहीं देता। इतना ही नहीं, जिसे संगठन कहते हैं, उसको भी कोई कीमत नहीं देता। जो मनुष्य पैसा और संगठन, दोनों को कीमत नहीं देता, वह आखिर किस चीज को कीमत देता होगा? वह विचार को कीमत देता है। इसलिए विचार की हद तक आप जो मदद मुझसे चाहेंगे, जरूर पा सकेंगे।

* *

मेरे जीवन पर दो प्रवाहों का, दो विचारों का असर है। एक तो आत्मज्ञान का प्रभाव। उसका असर बचपन से ही है। दूसरा प्रवाह विज्ञान-विचार का, पर शुरू में वह ज्यादा महत्त्व नहीं रखता था। पहले प्रवाह का बहुत जोर था और वह आज भी कायम है। परंतु अब आत्मज्ञान के विचार

निवृत्ति नहीं है। काम न करना भी काम करने की तरह ही एक वृत्ति है। निवृत्ति में दोनों से मनुष्य भिन्न हो जाता है और वह मुझे हमेशा आकर्षक लगता है, तथा मेरा विश्वास है कि उसमें ताकत है। पारमाणविक शक्ति सूक्ष्म है और विस्फोट से वह प्रकट होती है। वैसे एक आत्मशक्ति है। वह सब शक्तियों से भिन्न है। बहुत सारी नहीं, बल्कि सब-की-सब शक्तियां उसी में हैं, भले ही वे पूरी प्रकट न हों। जीवन में वही काम भी आती है। जीवन उसके साक्षीस्वरूप स्पर्श से ही चलता है। जाने-अनजाने हरएक के जीवन में उसका स्पर्श रहता है। उसका स्फोट होता है, तब उसका दर्शन होता है। आत्मज्ञान की वह प्रक्रिया मुझमें है। सृष्टि में भी वही शक्ति है। उसे जितना मौका देते हैं, उतना अच्छा है।

जो निवृत्ति का प्रवाह है, उसका असर मुझमें दीखता है। मेरी एक वैचारिक भूमिका है। उसी पर मैं खड़ा हूं। जरा लोगों से अलग हुआ, तो उसी पर पहुंच जाता हूं। वह मुझे कहती है कि बस, 'केवल-स्वरूप' होकर ही अब मुझे घूमना चाहिए। नदी की तरह समुद्र में तू पहुंच जा। स्वाभाविक कर्म कर। जिस तरह नदी अपनी ओर से कुछ नहीं करती, दूसरे जैसा चाहते हैं, वैसा ही वह करती है, उसी तरह मैं भी चलूं।

बनने-बनाने की बात केवल-स्वरूप के विरुद्ध है, पर मुझे केवलता के लिए कुछ नहीं करना पड़ेगा। वह जो कुछ है, ध्यान की बात है। मुझे एकाग्रता के लिए कुछ नहीं करना पड़ता। प्रज्ञा भी एक शक्ति है। उसकी आवश्यकता है। प्रज्ञा में ज्ञान है, समाधि में समाधान है। मुझे समाधि की कोशिश नहीं करनी पड़ती। वह है, उस पर विश्वास भी है और अनुभव भी। अतः केवल-स्वरूप बनना मेरे लिए स्वाभाविक है। अब मेरे मन में आता है कि 1957 के बाद उसी तरह मैं घूमूं, तो मेरे लिए ज्यादा अच्छा होगा। यह वेदांत का विचार है।

दूसरा जो विचार है उसको विज्ञान-विचार नाम दूं। गांधी-विचार में विज्ञान-विचार भी आता है, अतः गांधी-विचार नाम न देकर उसे विज्ञान-विचार ही कहूंगा। यह विचार ज्यादातर मुझे गांधीजी से मिला। विज्ञान के इस जमाने में यह विचार प्रकट हुआ है कि साधना सामूहिक ही हो सकती है, एकांत जैसी साधना मनुष्य के लिए नहीं है। मनुष्य स्वयं एक समूह

उन्होंने अपनी आत्मकथा को भी 'प्रयोग' नाम दिया। आज तक किसी ने ऐसा नहीं किया। जिसने अपनी आत्मकथा को भी 'सत्य के प्रयोग' नाम दिया, वह विज्ञान-विचार की ही तो देन हो सकती है।

उनके जाने के बाद मैं भी शोध में ही लगा था और देखता था कि अहिंसा तो गायब हो रही है! जिनका उस पर विश्वास नहीं, उनकी बात नहीं करता। लेकिन श्रद्धावालों के कार्यक्रम में भी उसका स्थान नहीं है। मुझे एक के बाद एक चीज उठानी पड़ी। प्रथम दान का जो प्रभाव मुझ पर हुआ, उसे मैं टाल नहीं सका। मुझे कोई आदेश दे रहा है। मैं उसका विरोध कर रहा हूं और वह मुझे आदेश दे रहा है। अंदर से ऐसा खिंचाव हुआ कि वह टल नहीं सका।

आज देश में वास्तविक शांति नहीं है। कोई भी छोटा-बड़ा कारण लेकर झगड़ा हो जाता है। पर यह जमाने के अनुकूल नहीं है। आज विज्ञान इतना बढ़ा है कि हमारा काबू हिंसा पर नहीं है। आज कहीं भी तुरंत हिंसा हो जाती है। अतः उसका कुछ उपाय करना चाहिए। पर जो भी उपाय करें, वह हमारे मूल विचार से भिन्न न हो। इसके लिए मुझे जरूर तीव्रता महसूस होती है। विज्ञान हमसे कुछ त्वरा करा रहा है। वह हम मंदबुद्धि से मंद नहीं, त्वरित पुण्य करवाना चाहता है। यह अच्छा है। **त्वरेतं कल्याणं** । यह मेरा दूसरा विचार-प्रवाह है। गहराई में बोया बीज कभी-न-कभी उगेगा यह मैं मानता हूं, पर त्वरा की कीमत हमें पहचाननी चाहिए।

* *

लगता है कि चिंतन के तरीके में फर्क होना चाहिए। मैं बहुत गहराई से सोचता हूं, क्योंकि अपनी बात रोजमर्रा दुहराता चलूं, इसकी मुझे आदत नहीं। यह ठीक है कि रोज वही अन्न खाता हूं, रोजमर्रा के अन्न में फर्क नहीं होता लेकिन जहां तक विचार का ताल्लुक है, जिस दिन विचार में कुछ नयी ताजगी, नयी सूझ – चाहे वह विचार पुराना ही क्यों न हो – न हुई हो, ऐसा नहीं होता।

* *

योगसूत्र में लिखा है मनुष्य विचार से परे हो जाता है, उसमें विशारद हो जाता है, तो उसे आध्यात्मिक प्रसाद मिलता है। वह एक ऐसी चीज

के काम के लिए विचार-शक्ति है और अपने काम के लिए निर्विचार-शक्ति है, जो अपने को ऊंचे अनुभव में पहुंचाती है। विचार-शक्ति मनुष्य के नित्य के उपयोग के बारे में बताती है। ज्यादातर मैं लोगों के साथ ही विचार-चिंतन करता हूं। कुछ चिंतन ऐसा होता है जो उसी दिन के काम में आता है। कुछ ऐसा भी होता है, जो उस दिन काम में नहीं आता, कुछ देरी से उसका उपयोग होता है।

* *

मैंने सारे जीवन में किसी काम में सबसे ज्यादा मेहनत अगर की हो तो वह शास्त्र के अध्ययन में। दूसरे किसी काम में मैंने इतनी मेहनत नहीं की। शास्त्र का अध्ययन कर मैंने धर्म सीखा है और वह मैंने अपने पास रखा है।

* *

मैं इतिहास का अध्ययन पुस्तकों से नहीं करता, बल्कि लोगों के चेहरों से करता हूं। किसी लेखक ने लिखा है कि 'राष्ट्र का इतिहास आदमी की आंखों में पढ़ो'। उसी के अनुसार मैं लोगों की आंखों में इतिहास का अध्ययन करता हूं।

* *

मुझे गणित का शौक है। मैं चाहता हूं कि हर बात में गणित हो। खुद भी हर काम गणित से करता हूं। रात को जाग गया तो पहले अंदाज करता हूं कि 11 बजकर 15 मिनट हुए होंगे। अगर उसमें दो-चार मिनट की भूल हुई तो मैं अपने को माफ करता हूं, पास कर देता हूं, नहीं तो फेल। अगर पौने बारह बजे हों, तो अपने को उलाहना देता हूं। निद्रा में भी जागृति रहनी चाहिए। एकबार मैंने विनोद में कहा था कि 'बाबा घड़ी देखे बिना मरेगा भी नहीं। अगर रास्ते में ही कहीं ठोकर लगकर मर गया तो अलग बात है। नहीं तो घड़ी देखूंगा 12 बजकर 7 मिनट हुए हैं, अब मैं मर रहा हूं। प्राण निकलने में कितना समय लगा, यह देखूंगा।' यह इसलिए कहा कि व्यवहार-कुशलता का अर्थ है गणित और गणित से ही काम करना चाहिए। हर कार्यकर्ता को इसका ध्यान रखना चाहिए।

* *

इतने थोड़े शब्दों में जीवन का इतना समग्र दर्शन गीता छोडकर दूसरे किसी ग्रंथ में मैंने नहीं पाया। भागवत बहुत सुंदर ग्रंथ है, मधुर है, भक्ति

होगा कि हरएक ने अपनी दृष्टि से भाष्य किया है। परंतु मुझे 'ज्ञानेश्वरी' प्रिय है, क्योंकि गीता के इस विचार का एक कुशल चित्रकार की तरह परिपूर्ण सुंदर चित्र ज्ञानदेव ने खींचा है। वे हर विचार से उतने ही तद्रूप होते हैं।

* *

आजकल लोग अदालतों में जाते हैं, तो प्रतिपक्षी का दोष बताते हैं। तेलंगाना में घूमता था तब लोग मेरे पास शिकायतें लेकर आते थे। मैं उनसे कहता, "इस अदालत का न्याय निराला है। यहां आपको प्रतिपक्षी के दोष नहीं बतलाने हैं। आपके हाथ से कौन-सी गलतियां हुईं यही बतलाना है। क्योंकि उनकी गलतियां सुनकर, उन्हें तराजू पर रखकर तौलनेवाला मैं कौन हूं?" यह बात उन लोगों को जंच गयी। इस तरह रोज 10-12 मामले हमारी अदालत में हल हो जाते थे।

* *

यहां इस गांव में झगड़े हैं। यहां के लोगों ने आज मुझसे न्याय की अपेक्षा रखी है, पर मैं सोचता हूं कि इस पक्ष के अपराध कितने और उस पक्ष के कितने? मान लो, इस पक्ष के पांच अपराध हैं और उसके तीन हैं। इसके पांच और उसके तीन यों मिलकर आठ अपराध मेरे ही हो गये। अगर इस पक्षवाले मेरे हैं तो वे भी मेरे ही हैं। एक ही बाप के बेटे आपस में लड़ें?

* *

मैं किसी का न्याय नहीं करता। मुझ पर यह आक्षेप भी किया जाता है कि तुममें मनुष्य को परखने की शक्ति नहीं है। ठीक भी है। मैं तो हर मनुष्य में जो ब्रह्मबीज है उसे ही पहचानता हूं। कुछ लोग कहते हैं कि तुम बिना पहचाने मनुष्य के सामने उच्च आदर्श रखते हो, लेकिन वे वहां पहुंच नहीं सकते। ऐसा आक्षेप लोग उठाते हैं। परंतु मैं तो ब्रह्मबीज को ही जानता हूं और सबके सामने बात रखता हूं। मुझे लोग कहते हैं, मनुष्य को परखो। परखो यानी क्या? मेरे पीछे, मेरी अनुपस्थिति में क्या करते हैं, कैसे सोचते हैं, कैसे बरतते हैं सो देखो और पहचानो। मैंने यह धंधा न कभी किया, न करनेवाला हूं। मैं तो इतना जानता हूं, मेरी श्रद्धा बैठ गयी है कि मेरे पास जो रूप प्रकट होता है वही सच्चा रूप है, असली रूप है, सत्यरूप

बयालीस के आंदोलन में हुई हिंसा का मुझ पर खास असर नहीं हुआ; लेकिन उसमें जो छिपाना आदि असत्य हुआ वह मुझे ठीक नहीं लगा। वह मुझे भयंकर लगा। वैसा कुछ थोड़ा अपने यहां भी हुआ। मुझे बचपन से ही असत्य की चिढ़ है। जान-बूझकर कभी असत्य बोला, ऐसा मुझे याद नहीं। इसलिए मेरे शब्द की प्रतिष्ठा थी।

आगे इतिहास के अध्ययन से देश के लिए असत्य बोलने में हर्ज नहीं, ऐसा लगने लगा और मेरा बर्ताव भी वैसा होने लगा। 25 मार्च 1916 को एक लगन से मैंने घर छोड़ा। हृदय में शंकराचार्य की सिखावन थी, सामने बुद्ध का चित्र था और स्वामी रामदास की मिसाल थी। मैंने घर छोड़ा वह आध्यात्मिक भावना से ही, लेकिन उस दिन की याद करता हूं तो दुख होता है। परीक्षा के लिए जाता हूं कहकर घर छोड़ने में असत्य हुआ। रामदास के पलायन में असत्य नहीं था। 'सावधान' सुनकर उसका अर्थ ध्यान में ले वे निकल पड़े। वैसा करने में कोई हर्ज नहीं था। पर मैं परीक्षा के लिए जा रहा हूं कहकर भाग गया! बुद्ध की मिसाल, उन्होंने भी असत्याचरण किया ऐसा नहीं कह सकते। पत्नी को बिना बताये चले गये, उसे चाहे तो विश्वासघात या वचनभंग कह सकते हैं। विवाह के गहरे अर्थ को देखें तो ऐसा कहना होगा। इसलिए बुद्ध की कृति केवल निर्दोष थी ऐसा नहीं कह सकते। लेकिन परीक्षा के लिए जा रहा हूं कहकर चला गया, उसमें तो स्पष्ट ही असत्य था। आगे जीवन में जब चिंतन बढ़ा, तब यह गलती ध्यान में आयी।

देश के लिए असत्य और व्यक्तिगत असत्य, ऐसा अंतर कैसे और कब करना? वह संभव नहीं। यह बात जब स्थिर हो गयी तो फिर व्रत ले लिया। यह बात मैं अब तक कभी बोला नहीं था। जेल में एकबार एक लड़के से कहा था। व्रत वर्धा में आने के बाद लिया। वैसे तो जो भी आश्रम में आये, उसे सत्य का व्रत लेना ही चाहिए। फिर भी मैंने सवा माह के बाद व्रत लिया। तबसे अब तक जान-बूझकर असत्य नहीं हुआ। अज्ञानवश कुछ हुआ हो तो पता नहीं।

आत्मदर्शन के लिए घर छोड़ा। देशसेवा का भी उद्देश्य उसमें था। आत्मदर्शन 20 वर्षों में कुछ हुआ, पर अपेक्षानुसार नहीं हुआ। इसका

होता है। उसका प्रायश्चित्त लूं तो भी दुष्परिणाम टलता नहीं। तो यहां हुए असत्य की जिम्मेवारी मैं लेता हूं और सबको प्रार्थना करता हूं कि अपने अंदर का, सब तरह का सारा असत्य निकाल दें।

मैं एकबार बोल गया था कि असत्यरहित हिंसा हो तो मुझे हर्ज नहीं, लेकिन युद्ध के लिए असत्य का शास्त्र ही बना है। उसे कॅमुफ्लाज कहते हैं। उसके बिना युद्ध हो ही नहीं सकता। इसलिए अपने अंदर का असत्य पूरा दूर करें, चाहे लोग बेवकूफ समझें। तुकाराम ने कहा है, भक्त को चतुराई की जरूरत नहीं, वह भोला ही अच्छा! तो अब सब भूलकर और सोचकर छुपाने की वृत्ति छोड़ दें। बिना लुका-छिपी के लड़ाई कैसे होगी, यह मुझे न पूछें। अल्प चातुर्य की भी हमें जरूरत नहीं, इस निश्चय पर मैं आ गया हूं। हमको तो सत्य संभालना है। सत्य-पालन मुक्तता से हो, उसके लिए मूर्ख कहलवाने में भी हर्ज नहीं।

* *

मेरा विश्वास है, यहां की जनता पर।
- विश्वास है, महापुरुषों पर।
- विश्वास है, परिस्थिति पर।
- विश्वास है, विज्ञानयुग पर।
- विश्वास है, परमेश्वर पर।
- विश्वास है, कार्य पर। और
- विश्वास है, अपने-आप पर।

इस प्रकार सप्तविध विश्वास लेकर आया हूं।

* *

मेरे पास चार प्रकार की सूचियां हैं – 1. मैं किन-किन को पहचानता हूं, 2. वृद्धों की गिनती, 3. कौन-कौन पत्र लिखते हैं? (करीब 300), 4. कौन-कौन मरा।

इस्लाम ने कहा है कि मृतकों का स्मरण करना चाहिए और भगवान उन्हें सद्बुद्धि दे ऐसी उनके लिए प्रार्थना भी करनी चाहिए। वे सूक्ष्म देह में पड़े रहते हैं। प्रार्थना से उन्हें मदद पहुंचेगी।

* *

मैं वर्धा गया और वहां मैंने आश्रम शुरू किया। बारह साल तक मैं

थे। यह एक बंगाली गाली है। परंतु मैं उसको सहर्ष स्वीकार करता था।

* *

जिंदगी के पांच साल जेल में बिताने का मौका हमको मिला है। वहां बहुत-से काम करने का भी मौका मिला। रसोई का काम किया है, रस्सी बंटने का काम किया है, दरी बुनने का काम किया है, आटा पीसने का काम किया है और गिट्टी फोड़ने का काम किया है। गिट्टी फोड़ने का काम आसान नहीं, लेकिन मैंने वह किया है। हम समझते हैं कि काम करने में मनुष्य की इज्जत है।

हमें करना क्या है? देह से मुक्त होना है। मरने से यह नहीं होता। मरता तो हर कोई है, लेकिन वासना नहीं छूटती। इसलिए हम मानते हैं कि जितने मानव देहधारी हैं, सब जेल में हैं और सबको उस जेल से मुक्त होना है। सचाई से रहना, किसी पर अपना भार न पड़े, और सतत काम करते रहना। यह है मुक्ति की साधना। इसके लिए आपको बहुत अच्छा मौका मिला है, आप उसका उपयोग करें। भगवान का ध्यान करें। जेल में ध्यान के लिए अच्छा मौका मिलता है।

* *

मैंने एक छोटी-सी कविता मराठी में बनायी थी। उसका आरंभ था –

कल्याणकारी, शक्तिशाली, सर्वलभ्य उपासना
चित्तीं मुरो विश्वांत पसरो हीच माझी वासना ।

उपासना का लक्षण क्या? उपासना कैसी हो सकती है? जो कल्याणकारी हो, जिसमें सबका कल्याण हो। जिसमें उत्थान की शक्ति भरी हो और ऐसी चीज हो, जो सबके लिए लभ्य हो। जैसे सूर्यनारायण की उपासना है – कल्याणकारी है, शक्तिशाली है और सर्वलभ्य है। यानी हरएक को भगवान सूर्यनारायण प्राप्त हैं। उपासना में ये तीनों चीजें होनी चाहिए, यह उपासना की कसौटी है। मेरी यही वासना है कि वह मेरे चित्त में स्थिर हो जाये और विश्व में फैले।

* *

उपवास जैसी तपस्या को मैं मानता नहीं। उस पर मेरी श्रद्धा नहीं। मेरी श्रद्धा ठीक खाने पर है। ठीक से श्वास लिया तो प्राणायाम में मैं

भजन-कीर्तन लोग घंटों-घंटों करते हैं। जहां तक बाबा का ताल्लुक है, नाचना-कूदना बाबा को अनुकूल नहीं है। **शांतं शिवं अद्वैतम्** – शांत रहना। उछल-कूद अच्छी नहीं लगती, उसमें चित्त की शांति नहीं रहती। सांसारिक लोगों की विषयों की आसक्ति में उछल-कूद होती है। उनकी प्रतिक्रियारूप यह उछल-कूद है। ये दोनों रस ही हैं। शांतं शिवं यह परमेश्वर का स्वरूप है।

* *

मानना यह चाहिए कि वह मनुष्य अविश्वास रखता है, तो 'मुझ' पर नहीं, परंतु उसकी कल्पना का जो 'मैं' हूं, उस पर अविश्वास रखता है। मुझे यह कला बहुत सध गयी है, कुछ लोग मुझ पर आक्षेप करते हैं, तो मैं यही मानता हूं कि वे दोष मेरे दोष नहीं, बल्कि आप मुझे जिस तरह देखते हैं, जैसा मैं देखा जाता हूं, उस पर यह आक्षेप है।

* *

जब मैं बजाजवाड़ी में रहता था, तो नित्य सुबह-शाम प्रार्थना में एक कुत्ता आया करता था। वह कभी प्रार्थना छोड़ता न था। रोज तीन बार भोजन की घंटी बजती तब भी वह वहां उपस्थित रहता। एक दिन म्युनिसिपैलिटीवालों ने कुत्ते कम करने के लिए उसे भी विष खिला दिया। दौड़ता-दौड़ता वह आश्रम में आया। उसे तड़फड़ाता देख विष चढ़ने की बात ध्यान में आ गयी। उल्टी कराने की दृष्टि से उसे आश्रम में जितनी छाछ थी, सारी पिला दी। फिर भी वह बच नहीं पाया। हमारा एक मित्र चला गया मानकर हममें से किसी ने भी उस दिन खाया नहीं। सारे आश्रम ने उस दिन उपवास किया। एक गड्ढा खोदकर उसमें उसे दफनाया गया। उस समय मैंने वेदमंत्र पढ़े। वह कुत्ता साधक था और था हमलोगों का मित्र!

* *

बड़ौदा में रहते समय हमलोगों के घर से दो फर्लांग दूर एक मंदिर के पास संपतराव गायकवाड का हाथी बंधा रहता था। मैं रोज घूमकर आता तो उस मंदिर में जाकर भजन गाया करता। नित्य दस-पांच मिनट बैठता। एक दिन जल्दी थी इसलिए एक मिनट बैठकर भजन न गाते हुए ही चल पड़ा, तो वह हाथी जोर-जोर से चिंघाड़ने लगा। मुझे लगा, इसे क्या हो गया? इसलिए मैं वापस वहां लौटा तो वह शांत हो गया। मैं पुनः चलने

तबसे वह मेरा गुरु बना। वह हाथी मेरी साधना का मित्र बना। ऐसे अनेक साथी, मित्र हैं।

* *

तीन साल के कारावास के बाद मैं जब 1945 में जेल से छूटा, तब बाहर की दुनिया का जो पहला प्रकाश मैंने देखा, उसका स्मरण भूलना असंभव है। मैंने क्या देखा? इतवारी स्टेशन (नागपुर) के नजदीक, रेल्वे लाइन के पास के मैदान में पचासों पुरुष खुले सूर्यप्रकाश में सर्व लज्जा छोड़कर शौचविधि कर रहे हैं। क्योंकि रिहाई के बाद का यह मेरा पहला दर्शन था, मेरे दिल पर इसका तीव्र असर हुआ। उसी के परिणामस्वरूप मैंने सुरगांव का भंगीकाम बीस महीने सूर्य की नियमितता से सतत चलाया।

* *

महापुरुषों की स्मृतियों का मनुष्य के चित्त पर बहुत गहरा असर रहता है, यह दुनिया का और मेरा अपना भी विशेष अनुभव है। मैं उन स्मृतियों में इतना तन्मय हो जाता हूं कि उनसे अपने को अलग नहीं कर पाता, स्व-चित्त को भूल जाता हूं। जब कभी महापुरुषों के स्मरण का प्रसंग आता है, मैं अपने शरीर से उठकर उनके शरीर में दाखिल हो जाता हूं। **चित्तस्य परशरीरावेशः** – चित्त परशरीर में आविष्ट होता है, इसकी एक प्रक्रिया योगशास्त्र में बतायी गयी है। मैं तो वह प्रक्रिया नहीं करता, फिर भी मेरा चित्त उनके शरीर में प्रविष्ट हो जाता है। उन महापुरुषों के हृदय में शब्द द्वारा चित्त प्रविष्ट होता है।

* *

बाबा को कोई पूछेगा, 'जय जगत्' कहते हो तो तुमने इंग्लैंड और जर्मनी को कितना समय दिया? इसमें पक्षपात नहीं है। भारत को समय ज्यादा मिलता है, लेकिन भारत को प्रेम ज्यादा नहीं मिलता। प्रेम सबको समान मिलता है। नहीं तो बाबा संकुचित प्रेमी साबित होगा। कोई व्यक्ति सारे विश्व को समान समय नहीं दे सकता, विश्व को समान सेवा नहीं दे सकता, लेकिन समान प्रेम दे सकता है। वह अपने देश, प्रदेश या जिले के लिए ऐसा कोई काम नहीं करेगा जिससे दुनिया का नुकसान हो।

* *

इन दिनों बाबा हंसता ही रहता है। इसलिए हंसता है कि रोना वाजिब

ध्यान में रखकर बाबा हंसता है। और वह इसलिए भी हंसता रहता है कि वह इस दुनिया को निकम्मी समझता है। बहुत ज्यादा वास्तविक अस्तित्व इसको है, ऐसा बाबा को प्रतीत नहीं होता।

* *

आजकल बाबा अभी छह-साढ़ेछह बजे सो जाता है, पांच बजे उठ जाता है। तो लोग पूछते हैं कि इतना सोकर क्या करते हैं? तो मैं कहता हूं कि जितनी निद्रा आती है उतनी 'समाधि' है, जो नहीं आती है उतना 'ध्यान' है। इन लोगों को समझाता हूं कि सोना बिल्कुल 'सोना' (सुवर्ण) – बिना पैसे का सोना है।

* *

केरल यात्रा में मैं अचानक बीमार हुआ। उस बुखार में भी आत्मचिंतन करने का मुझे बहुत समय मिला। वैसे तो आत्मचिंतन और विश्वचिंतन का अवकाश मुझे मिलता ही है। और अगर अवकाश नहीं मिलता, तो मैं उसे प्राप्त कर ही लेता हूं, क्योंकि चिंतन के लिए अवकाश न मिलने को मैं एक भयानक अवस्था मानता हूं, उस अवस्था में मैं अपने को कभी भी डालना नहीं चाहूंगा। इसलिए उस चिंतन में मेरे ध्यान में आया कि हमलोगों ने आज तक अनेक काम किये, लेकिन उसके लिए लोगों की सम्मति कहां प्राप्त की? हमारे सभी कामों में लोकसम्मति मिलनी चाहिए। इसलिए मेरे मन में आया कि हमारे कार्यकर्ताओं में से कम-से-कम आधे लोग तो लोगों पर ही आश्रित रहें, तो उनमें शक्ति आयेगी। इसलिए मैंने आजकल शांतिसेना, सर्वोदय-पात्र आदि का ही जप चला रखा है। जिन बातों पर मेरी श्रद्धा है, वे होनी ही चाहिए, यह मेरी आंखों को दीखता है और मैं उस काल्पनिक आनंद में मग्न रहता हूं। लेकिन यह 'कल्पनानंद' सबको पच नहीं सकता, वे प्रत्यक्ष आनंद चाहते हैं।

* *

मुझे ब्रह्मविद्या सहज सधती है क्योंकि मैं बड़ा आलसी हूं। क्योंकि उसमें करने का है नहीं, न करने का ही है। बहुत दफा मैंने अनुभव किया है कि खाने में मजा नहीं आता। जिसको मराठी में 'कंटाला' कहते हैं, वैसा होता है। यानी खा लो, लेकिन मजा नहीं। उसकी रुचि नहीं। कंटाला आता

में कंटाला नहीं आता। सोने को मिल जाये तो मुझे सोना मिल गया। क्योंकि उसके लिए पुरुषार्थ की जरूरत नहीं। और इसके कारण सैंकड़ों झंझटों से मैं बच गया। तो मुझे ब्रह्मविद्या से आसान चीज कोई मालूम ही नहीं होती। मैं आलस का इतना प्यार और गौरव करता हूं।

* *

शुरू में मैं कांग्रेस का सदस्य था। 1924 में उससे मुक्ति पायी। पर रचनात्मक कार्य करनेवाली संस्थाओं में मेरा नाम था। फिर बापू ने स्नेह से वह भी हटा दिया। और उस दिन से मेरी ताकत बढ़ी और अनुभूति हुई कि अब मैं भगवान का हो सकता हूं। मनुष्य भगवान का तब हो सकता है जब वह और किसी का न हो। जब तक हम दूसरे के रहेंगे तब तक ईश्वर के नहीं हो सकते और इसलिए मैंने सब संस्थाओं से नाम हटा दिया। इससे हिंदुस्तान ने कुछ खोया नहीं और मैंने भी कुछ खोया नहीं। जब-जब त्याग करने की जरूरत हुई, मैंने किया है। संस्थाओं से अलग होने के कारण मुझे आनंद और शक्ति महसूस होती है इसलिए मेरी कामना रहती है कि लोग संस्थाओं में न फंसे। जो नये लोग हैं, वे समझें कि हमें रागद्वेष-रहित होकर, किसी प्रकार का नाम न रखकर काम करना है।

* *

वैसे तो मुझे अनेक दोष स्पर्श करते हैं, परंतु मैंने अपने में एक दोष नहीं पाया, जो बहुतों ने मुझमें पाया। यह एक अजीब-सी बात है कि दूसरे लोग मुझमें जो दोष पाते हैं, उसे मैं खुद अपने में नहीं पा रहा हूं। और वह दोष है अपने लिए अभिमान। मुझे अपने लिए अभिमान रखने का कोई कारण ही नहीं। यह ठीक है कि मेरी बुद्धि उत्तम काम करती है, परंतु वह मेरी वजह से नहीं है। उसको उत्तम बनाने में कितनों के उपकार हैं, यह देखा जाये तो उसको 'मेरी' कहने का अधिकार ही मुझे प्राप्त नहीं होता।

आजकल मैं कृत्रिम दांत नहीं लगाता। उसके सौंदर्य की प्रशंसा भी हुई है। लेकिन मैं जानता हूं कि उन दांतों के सौंदर्य के साथ 'मेरा' ताल्लुक नहीं है। जैसे दांत के बारे में मुझे स्पष्ट अनुभव होता है, वैसा ही अपनी बुद्धि के बारे में महसूस होता है कि मुझमें जो बुद्धिप्रकाश दीखता है, वह मेरा नहीं है। उसमें शास्त्रग्रंथों की मदद, गुरुजनों की मदद, मित्रों, विद्यार्थियों,

वर्धा आश्रम में रहते हुए अध्ययन-अध्यापन, चिंतन-मनन आदि और भंगीकाम से लेकर रसोई तक के काम और बीमारों की सुश्रुषा एवं खादी-काम आदि जो भी विचार सूझ पड़े, उन पर मैं अपनी शक्तिभर अमल करता रहा। किंतु उन सबमें मेरी एक ही दृष्टि थी और वह थी आत्मदर्शन की। मुझे यह कहते हुए आनंद होता है कि मेरा समाधान होनेभर का आत्म-दर्शन मुझे हो गया है। मैं मानता हूं कि परिपूर्ण दर्शन तो सदैव दूर ही रहता है। और ज्यों-ज्यों हम आगे बढ़ते जाते हैं त्यों-त्यों वह दूर भागता जाता है। उसके और हमारे बीच सदैव खेल (आंखमिचौनी) चलता रहता है और उस खेल में ही मजा है। आत्मदर्शन का स्पर्श होने पर तो यह खेल ही खत्म हो जाता है। फिर तो आनंद भी रफू हो जाता है। इसलिए आत्मदर्शन और हमारे बीच थोड़ा अंतर रहना ही अच्छा है। यह सच है कि मानव-जीवन में आत्मदर्शन की प्रेरणा रहती है, लेकिन समाधानभर का आत्मदर्शन हो जाये तो मानव निश्चिंत, निर्भय और निःशंक हो जाता है। यही अनुभव में आता है। घर और कॉलेज छोड़ने में मेरी यही मुख्य प्रेरणा थी।

* *

वल्लभ मेरे पास रहा, सीखा, मैंने उसे पढ़ाया, उसकी सेवा की, इसके कारण उसकी जितनी उन्नति हुई होगी, उस तुलना में उसने मुझ पर जो श्रद्धा रखी और उसके कारण मेरी जो उन्नति हुई, वह कम नहीं है। वल्लभ ने मुझ पर जो श्रद्धा रखी, उसने मुझे उन्नत बनाया है। मेरी अपनी खुदकी जो भी स्थिति हो, लेकिन इस प्रकार की श्रद्धा उस स्थिति को ऊंचा उठाती है।

इस प्रकार हम एक-दूसरे पर श्रद्धा रखेंगे तो उससे हमारी अपनी उन्नति तो होती ही है, लेकिन दूसरे की भी उन्नति होती है। मैं आशा करता हूं कि हम जितने लोग विचारवश, कार्यवश, स्नेहवश एकत्र हैं, वे एक-दूसरे के प्रति आदर और श्रद्धा बढ़ायेंगे, तो उन्नति का मार्ग हासिल करेंगे।

* *

हम कोई आरंभ ऐसा नहीं करते, जिसे भाररूप समझें। बल्कि निश्चित हुआ, निर्णय हुआ, तो हमको ऐसा मालूम होता है कि हमारे सिर पर का भार उतर गया। हमको महसूस नहीं होता कि कोई बहुत कठिन कार्य हमने उठा लिया है। बल्कि कठिन तो हमारे लिए कुछ हो ही नहीं सकता। ऐसे

पेट, आंत, हर जगह यमदूतों ने अड्डा बना रखा है। जब चाहे उड़ा सकते हैं। इन लेकिन यमदूतों को हम पहचानते ही नहीं। क्योंकि हम कोई काम उठा ही नहीं रहे हैं।

* *

पंढरपुर में जब आना हुआ तब चर्चा चली कि मैं अहिंदुओं को लेकर मंदिर में घुसनेवाला हूं। इस तरह घुसना मेरे लिए असंभव है। आक्रमण करना न मेरे शील में है, न मेरे विचार में है और न मेरे गुरु ने मुझे ऐसा सिखाया है। मुझे कोई जबरदस्ती नहीं करनी है। पंढरपुर के विठोबा के लिए मेरे मन में जो भक्ति है, उसका साक्षी और कोई नहीं हो सकता, उसका साक्षी साक्षात् भगवान ही हो सकता है।

* *

हिंदी में जिसको प्रचार कहते हैं, वह मैं नहीं चाहता। मैं प्रकाश चाहता हूं। यह बिल्कुल स्वतंत्र शब्द है। हिंदुस्तान का खास शब्द है। इंग्लिश के प्रपोगंडा और पब्लीसिटी शब्द बिल्कुल ऊपर-ऊपर के हैं। मैं पब्लीसिटी, प्रचार नहीं चाहता, प्रकाश चाहता हूं। सिक्ख लोगों में रिवाज है कि सुबह उठकर प्रातःविधि समाप्त करके भक्तिभाव से अपने घर में एक स्थान पर बैठकर गुरुग्रंथ खोलते हैं और सहज ही जो खुल जाता है, वह यह कहकर पढ़ते हैं कि आज के लिए हमें क्या प्रकाश मिलेगा? इस विधि को सिक्ख लोग प्रकाश कहते हैं। मैं भी ऐसा प्रकाशन चाहता हूं।

* *

झगड़ों की बात मेरे कानों तक तो पहुंचती है पर अंदर पैठती नहीं। झगड़े आश्रम में भी होते हैं और बाबा की टोली में भी होते हैं। सात्त्विक बुद्धि का लक्षण है, अनंत भेदों से अभेद ग्रहण करना। मृगजल लहरें मार रहा है। पर वह मृगजल है, मानवजल नहीं है। मानव को वह भ्रम छूता ही नहीं। जिनको अपने जीवन का क्षय करना है, उनको झगड़ों में जरूर पड़ना चाहिए और ध्यान देना चाहिए। उससे बेहतर क्षयकारिणी शक्ति हो ही नहीं सकती।

* *

निर्गुण में मेरी गति अच्छी चलती है। पहले शब्द सूझता है और शब्द के पीछे-पीछे निःशब्द की ओर जाया जा सकता है। किसी अव्यक्त विचार

सर्व साधारण को उसे व्यक्त में लाने के लिए, सगुण करने के लिए अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। तुलसीदासजी ने रामचरितमानस के उत्तरकांड में कहा है कि निर्गुण से सगुण कठिन है। मुझे यह विचार अधिक जंचता है। निर्गुण में आकलन होने की आवश्यकता पड़ती है। एकबार आकलन होने पर निर्गुण भी सगुण में आ जाता है।

* *

मेरे पेट में अल्सर है, उसके लिए मुझे मंत्र मिला है – No hurry, no worry (नो हरी, नो वरी) और उसमें मैंने जोड़ा है 'हरि, हरि'।

* *

मैं व्यक्तिगत जीवन के लिए खास कोई हिदायतें नहीं देता। ईश्वर से प्रार्थना करता हूं। उसमें से जिसको जो मिलता हो।

* *

मैं किसी के विषय में किसी तरह का आग्रह नहीं रखता। मुझे जो गुण दीखते हैं उनकी मैं मुक्तकंठ से स्तुति करता हूं। इसे मैं भगवान की उपासना समझता हूं। जीवित लोगों की उपासना का यह तरीका है।

* *

जो कोई मुझे सलाह पूछते हैं, उनको उत्तर देने की मैं कोशिश करता हूं। इसके अलावा व्यावहारिक बातों में मेरी ओर से किसी को कुछ खास कहने की मुझे प्रेरणा नहीं होती।

* *

बचपन से मेरा झुकाव रहा है कि मैं मनोवृत्तियों के जंजाल में नहीं पड़ता। इसलिए मेरे निकटवर्तियों के साथ जो भी चर्चाएं हुईं, वे तत्त्व-विषयक या सार्वजनिक सेवा के बारे में हुईं। मेरे साथ जो साथी रहते हैं, उनके मन में क्या चल रहा है, यह मैं उनसे पूछता नहीं। वे ही कभी अपने मन की बातें मुझे लिख देते हैं, तब मैं उनको सलाह देता हूं। मेरी इस वृत्ति के कारण मेरा मैत्रीभाव अखंड रहा, ऐसा मेरा दावा है। और इसी लिए जिनके साथ मेरा संबंध आया उन्होंने मुझे छोड़ा ही नहीं। क्योंकि मेरा मन उनके लिए अत्यंत आदरयुक्त रहा।

* *

मैं किसी मनुष्य की आजादी में जरा भी बंधन नहीं चाहता। पर हरएक

परिचित लोगों के संबंध में मनुष्यों की कुछ भावनाएं, धारणाएं बन जाती हैं। उनको निकालना मनुष्य के लिए बहुत ही कठिन होता है। पर मुझे वह अच्छा सधा है। उसके लिए मेरी एक सरल युक्ति है। मैं ऐसी धारणाएं बनाता ही नहीं। प्रतिपल मनुष्य नया ही होता है, यह बात मेरे मन में जम गयी है।

* *

उपाधियां लेकर चिंतन करने पर वह मुक्त चिंतन नहीं होता। उसमें नयी चीज की खोज नहीं होती। सौ एकड़ जमीन का जो प्रथम दान मिला, उसे मैंने ईश्वर का इशारा समझा। अगर मेरे मन में परंधाम की आसक्ति होती, तो वह काम हाथ में लेने की मुझमें शक्ति ही नहीं रहती। मैंने उसे ईश्वर का इशारा समझकर उठा लिया और निकल पड़ा। यह इसलिए कि मेरा चिंतन सभी उपाधियों से मुक्त था।

* *

आज से मेरे मौन की शुरुआत होगी। फिर चौबीस घंटे मैं क्या करूंगा, यह मैं नहीं जानता। उसका अनुभव आयेगा। इतना जानता हूं कि समय बेकार नहीं जायेगा। बाकी जितना विश्व बाहर है उतना ही विश्व अंदर है। बाहर के विश्व के साथ मेरा संपर्क छूटनेवाला नहीं। सब प्रकार की जानकारी रखूंगा। और अंदर का संपर्क, जो पहले से ही रखता था, पक्का, गहरा रखूंगा। इसलिए फुल एम्प्लायमेंट (पूरा रोजगार) मिलेगा।

* *

मेरी निवृत्ति की भी एक विशेषता है। वह मुझे कर्मयोग से कहीं रोकती नहीं। निरंतर क्रियाशील रहने देती है। लेकिन भाषण और लेखन के साथ उसकी कुछ दुश्मनी-सी है। वह बेखटके मुझे बोलने और लिखने नहीं देती। इस कारण वाचिक सेवा में मुझे कुछ झिझक लगती है। और क्योंकि इससे किसी का कोई खास नुकसान नहीं होता, बल्कि शायद कुछ लाभ ही होगा, ऐसा मैंने मान लिया है, इसलिए मैं इस स्वभावविशेष का अनुसरण करता हूं। यद्यपि वाणी की शक्ति का मुझे भान है और उसकी कीमत मैं समझता हूं, तथापि या इसी वजह से, मेरा यह स्वभाव बना हुआ है।

* *

बंगलोर में दंगा हुआ, शिमोगा में दंगा हुआ। बड़ौदा और अमदाबाद

अपने मन के अंतस्तल में मैं परिपूर्ण समाधान अनुभव करता हूं और परिपूर्ण शांति भी वहां है। इसका दूसरा कोई कारण नहीं सिवा इसके कि मुझे अंदर एक दर्शन है, आत्मदर्शन है, जिसके कारण अंदर की शांति मैं नहीं खोता। वह होते हुए भी मन के बाहर का जो अंश है, उसमें आजकल बहुत व्याकुलता है।

* *

अभी-अभी मैंने एक व्याख्यान में विनोद से कहा था कि मैं असफल होना चाहता हूं और चाहता हूं कि साथी सफल हों। सफलता मिलने का आभास होने लगता है, उतने में तो मैं आगे का कार्यक्रम खोजने लगता हूं और असफलता को साथी बनाकर आगे चलता हूं।

* *

लोग पूछते हैं कि मैं किस पक्ष का हूं। मेरा पंथ मैं आपको सुना दूं। मेरा पंथ पागल-पंथ है। मैं खुद पागल हूं और सबको पागल बनाना चाहता हूं। कांग्रेसवाले या अन्य पार्टी के लोग पागल नहीं हैं, जो मेरे साथ अपने काम के लिए घूमें। उसके लिए उनके पास हवाईजहाज़ और मोटरें पड़ी हैं। हां, जो मेरे जैसे पागल हैं, वे मेरे साथ जरूर घूम रहे हैं। लोग मुझे पागल कहते हैं, क्योंकि मैं जमीन मांगता हूं। लेकिन मैं मांग रहा हूं तो लोग दे भी रहे हैं। तो देनेवालों में भी पागल मौजूद हैं। पर तुलसीदासजी ऐसे आदमी को पागल नहीं कहते। उन्होंने सयाने का वर्णन किया है –
बरषा हिम मारुत घाम सदा सहिकै, जो भजे भगवान, सयान सोइ ।

* *

आज का रास्ता बड़ा ही सुंदर था। चर्चा हो रही थी कि पृथ्वी सपाट है या ऊबड़-खाबड़। बाबा का हाल भी ठीक ऐसा ही है। जो बाबा को दूर से देखना है, उसे लगता है कि बाबा की क्या-क्या महिमा है। लेकिन जो नजदीक रहता है, उसे उसका ऊबड़-खाबड़ पता है। जीवन का ऐसा ही दुहरा स्वरूप है। नजदीक से ऊबड़-खाबड़ और दूर से सुंदर। रात को आकाश में चमकनेवाले सितारे कितने सुंदर होते हैं। कहते हैं कि अगर आंख हमेशा उन्हें देखती रहे तो उसकी तेजस्विता बढ़ती है। परंतु वे ही तारिकाएं अगर हमारे नजदीक आ जायें तो शरीर जलना शुरू हो जायेगा। जो संसार का दूर से दर्शन करेगा, उसे वह बड़ा सुंदर मालूम

स्थूल कामों में चित्त विशिष्ट बनता है इसलिए हमने सूक्ष्म में प्रवेश किया है। सूक्ष्म प्रवेश का रहस्य आकाशवत् होने में है। आकाश में अवकाश है, प्रकाश है। प्रकाश के लिए सहूलियत है। लेकिन आकाश न प्रकाश से चिपकता है और न उसमें जो हलचलें होती हैं उनके साथ मर्यादित बनता है। तो चित्त बिल्कुल आकाश के समान होना चाहिए। एक बाजू से अनंत, दूसरी बाजू से शून्य। ऐसा रहने में जो अकर्म में कर्म की कल्पना है उसकी अनुभूति आ सकती है।

हमारे कुछ मित्र चाहते हैं कि वेद का कुछ चयन आदि करूं। लेकिन उसमें चित्त विशिष्ट बनेगा, आकाशवत् नहीं बनेगा। अपनी ओर से चित्त को विशिष्ट उपाधि में हम दाखिल नहीं होने देते। निर्बाध (निरुपाधिक) चित्त रहे। अकर्म में कर्म का अनुभव है उसमें जरूरी नहीं कि बाहर के स्थूल कर्म की कसौटी पर उसे कसा जाये। चित्त में अकर्म, संकल्प-शून्यता, अहं-मुक्ति हो तो बाहर कर्म प्रचंड होगा। लेकिन मान लीजिए न हुआ तो चिंता नहीं। कसौटी में, बाह्य कर्म की कसौटी में अकर्म खरा उतरा नहीं, ऐसा नहीं। कसौटी तो अंतर में है। बाहर का कर्म हजार साल बाद हो सकता है। लोग अपेक्षा रख सकते हैं बाहर के कर्म की, क्योंकि उनके पास कसौटी का अन्य साधन नहीं।

* *

मुझे अनुभव आता है कि अब कोई खास मेरा अपना जीवन नहीं रह गया है। चल रहा है खाना-पीना... वह चलेगा मरने तक! लेकिन चित्त में कोई व्यक्तिगत आकांक्षा या इच्छा का अनुभव नहीं होता। गलतियां होती हैं बोलने में, व्यवहार में, काम करने में; मैं देखता हूं, मुझे मालूम होती हैं; लेकिन उसकी चिंता नहीं करता।

अभी आपने तुकाराम का वचन सुना : "जहां जाता हूं, तुम मेरे साथ हो।" आप ठीक अक्षरार्थ से इसे मेरा वाक्य मानिए। जब मैं किसी का हाथ पकड़ता हूं चलने के लिए, तो मैं उसे भगवत्‌रूप ही समझता हूं। किसी लड़के का हाथ या किसी लड़की का हाथ ऐसा नहीं लगता; भगवत्-स्पर्श का अनुभव आता है! यह शब्द का विषय नहीं है। इसकी व्याख्या नहीं की जा सकती है। यह अनुभव का विषय है।

शब्द भी मैं ममत्वभाव से नहीं बोला। उतनी ही हमारी शक्ति है, ज्यादा नहीं।

* *

हमारा तो अपना कोई स्थान नहीं है। घूमता था तो लोग पूछते कि आप कहां के हैं? मैं पूछता था, ब्रह्मपुत्र नदी कहां की है? वह तिब्बत की भी है, पाकिस्तान (बंगलादेश) की भी है और भारत की भी। वैसे ही बाबा भी सब जगह का है।

* *

चर्चा करते समय अगर विनोबा को गुस्सा आया तो समझिए कि उतने समय के लिए विनोबा मरा हुआ था। जिंदा विनोबा गुस्सा नहीं करेगा।

* *

इंदौर में हमने कुल मिलाकर 125 से ज्यादा व्याख्यान दिये। बचपन से आज तक बोलता ही रहा हूं। इस तरह जो मनुष्य सतत बोलता रहता है, उसके मन में पूर्ण सद्‍भावना होने पर भी उसके मुंह से ऐसे कई शब्द निकल सकते हैं, जिनका किसी को सदमा पहुंचे। उसके लिए मैं उन सबकी क्षमा मांग लेता हूं, जिनके दिलों को मेरे शब्द चुभे होंगे। उन्हें क्षमा करनी ही चाहिए; क्योंकि वे सोचेंगे, तो उन्हें पता चलेगा कि इसने जो कहा है, उसमें इसका कोई निजी स्वार्थ या द्वेष नहीं है, उसने प्रेम से ही कहा है। साधारणतः मेरे शब्दों पर मेरा काबू रहता है। मुझे शब्दों का ज्ञान भी पर्याप्त है। मैं शब्दशास्त्र अच्छी तरह जानता हूं। बावजूद इसके मेरे शब्दों से किसी को ठेस पहुंची होगी, इसलिए मैं यहां पर सबकी क्षमा मांगना उचित समझता हूं।

* *

स्वयं बाबा को हृदय-परिवर्तन की और हृदयशुद्धि की जरूरत है। दूसरे को देखने के पहले बाबा अपने हृदय को देखता है। बारह साल में बाबा का हृदय-परिवर्तन हुआ है या नहीं, अपने दोषों का दर्शन हुआ है या नहीं, वे दोष कम हुए हैं या नहीं, ये सब बाबा परखता है। बाबा के जीवन में अपना हृदय-शोधन काफी हुआ है। परमात्मा की कृपा से हुआ। यह किसने किया? डाकुओं ने किया और दाताओं ने, जिन्होंने अपनी जमीन श्रद्धापूर्वक बाबा को अर्पण की।

* *

का जीवन स्वीकार करने में मुझे कोई तकलीफ नहीं हुई। लोग इसे संन्यास कहते हैं, लेकिन मेरे लिए तो वह शुद्ध आनंद है। मुझे तो लगता है संसारी-लोग तपस्या कर रहे हैं। वे उसे सुख-आनंद मानते हैं, पर वह असल में तपस्या है।

* *

हमारी इस 66 साल की उम्र में हम ईश्वर से यह नहीं कह सकते कि तूने हमें दुःख का दर्शन कराया। सर्वत्र सुख-ही-सुख हमने पाया। जितना प्रेम हमने पाया, उसका एक अंशमात्र भी हम नहीं चुका सके हैं। प्राचीनों से, अर्वाचीनों से, दूरवालों से, नजदीकवालों से हमें जो मिला उसका वर्णन हम नहीं कर सकते। हमें जो मिला, वह इतना अधिक मिला है कि हम कुछ दे रहे हैं, ऋण चुका रहे हैं ऐसा भास भी हमें नहीं होता। इसलिए लोगों को नमस्कार करने के सिवा दूसरा कोई उपाय नहीं है। सबको हम भक्तिभाव से प्रणाम करते हैं।

•

परिशिष्ट

विनोबाजी के जीवन की प्रमुख घटनाएं

1895 सितंबर 11 : गागोदा (महाराष्ट्र) में **जन्म** : नौ साल की उम्र तक दादा-दादी की संस्कार-छाया में

1900 जून 18 : छोटे भाई बालकोबाजी का जन्म

1903 : आठ साल की उम्र में ज्ञानेश्वरी का प्रथम संपर्क

- अगस्त 16 : छोटे बंधु शिवाजी का जन्म

1905 : बड़ौदा (गुजरात) : विद्याभ्यास : दस साल की उम्र में **ब्रह्मचर्य का निश्चय** और राष्ट्रसेवा का संकल्प

1913 : मैट्रिक पास

1914 : विद्यार्थी-मंडल (साथियों के समूह) की स्थापना

1915 : माता द्वारा गीता का सुलभ मराठी पद्यानुवाद कर देने की मांग

1916 मार्च 25 : अथातो ब्रह्मजिज्ञासा : दो साथियों के साथ **गृहत्याग** : काशी में दुर्गाघाट पर श्री खुर्देकर के मकान की तीसरी मंजिल पर लगभग तीन महीने निवास : अध्ययन-अध्यापन : क्रांतिकारियों से संपर्क और उनके खोखलेपन की पहचान : एक साथी की मृत्यु, उसका अग्निसंस्कार : गांधीजी के काशी हिंदू विश्व-विद्यालय में हुए क्रांतिकारी भाषण की रिपोर्ट का अवलोकन : गांधीजी के साथ पत्रव्यवहार

- जून 7 : गांधीजी के निमंत्रण पर कोचरब **आश्रम में प्रवेश** : बाद में कोचरब आश्रम का साबरमती में स्थानांतर

1917-18 : गांधीजी से एक साल की छुट्टी : वाई (महाराष्ट्र) की प्राज्ञ पाठशाला के प्रमुख आचार्य श्री नारायणशास्त्री मराठे के मार्गदर्शन में दर्शन-ग्रंथों का अध्ययन : गीता पर प्रवचन करते हुए दक्षिण महाराष्ट्र का भ्रमण

1917 मार्च 6 : लोकमान्य तिलक से प्रथम भेंट

1918 अक्तूबर 24 : आश्विन कृष्ण चतुर्थी के दिन, 42 साल की उम्र में माता रुक्मिणीदेवी की मृत्यु : उसी दिन से **वेदाध्ययन का आरंभ**

1921 अप्रैल 8 : श्री जमनालालजी बजाज के आग्रह पर, गांधीजी के आदेश से चार

1923 जनवरी से अप्रैल : 'महाराष्ट्र-धर्म' मासिक में उपनिषदों पर लेखमाला (बाद में 'उपनिषदों का अभ्यास' नाम से पुस्तकरूप में प्रकाशित)

- अप्रैल 13 : भारत के प्रथम व्यापक (नागपुर झंडा) सत्याग्रह का संचालन : प्रथम बार चार माह का कारावास

1924 फरवरी 12 : सत्याग्रह आश्रम का (अभी के महिलाश्रम में) स्थानांतर

- जून 18 से 15 अप्रैल 1927 : 'महाराष्ट्र-धर्म' साप्ताहिक में संत तुकाराम के अभंगों पर लेखमाला (1945 में 'संतांचा प्रसाद' नाम से पुस्तकरूप में प्रकाशित)
- आश्रम में कताई-बुनाई के वैज्ञानिक प्रयोग और संशोधनकार्य : जातीय एकता के लिए गांधीजी के 21 दिन के उपवास के समय दिल्ली में गांधीजी के साथ

1925 : गांधीजी के आदेशानुसार वायकम् (केरल)-मंदिर-हरिजन-प्रवेश सत्याग्रह का निरीक्षण : पंडितों से चर्चा और सत्याग्रह के तरीकों में सुझाव : वायकम् से लौटते समय मद्रास में डॉ. एनी बेसेंट की थिऑसॉफिकल सोसायटी में अंग्रेजी में प्रवचन

1926 जून : 'दो आने आहार योजना' का प्रयोग : वर्धा में जमनालालजी द्वारा स्थापित हायस्कूल की जगह राष्ट्रीय विद्या-मंदिर की स्थापना, बचपन के साथियों के द्वारा उसका संचालन

1928 जुलाई 16 : वर्धा में कन्याशाला का आरंभ

- जुलाई 19 : लक्ष्मीनारायण मंदिर (वर्धा) हरिजनों के लिए खुला
- दिसंबर 7 से 13 मार्च 1931 : सायं-प्रार्थना के बाद मौन का आरंभ : 'विचार-पोथी' लेखनकार्य

1930 अक्तूबर 7 से 6 फरवरी 1931 : महिलाश्रम (वर्धा) में गीता के मराठी पद्यानुवाद **गीताई की रचना**

1931-32 : वर्धा जिले में मंदिर और कुएं हरिजनों के लिए खुले करने के लिए प्रचार

1932 जनवरी 7 से 14 जुलाई : धुलिया जेल (महाराष्ट्र) में निवास : गीताई का प्रथम संस्करण प्रकाशित

- फरवरी 21 से 19 जून : धुलिया जेल में, हर रविवार को गीता पर प्रवचन – साने गुरुजी द्वारा प्रवचन लिपिबद्ध : **गीता-प्रवचन** नाम से प्रसिद्ध
- अगस्त 7 : ग्रामाधारित विकेंद्रित आश्रम-केंद्र योजना का प्रारंभ; वर्धा की एक तहसील में 14 केंद्र बनाकर आश्रमवासियों के द्वारा ग्राम-रचना और प्रचार-कार्य

- दिसंबर 25 : वर्धा से दो मील दूरी पर **नालवाड़ी की हरिजन बस्ती में** निवास प्रारंभ : एकादश व्रत-माला की रचना

1933 जुलाई 26 : साबरमती आश्रम विसर्जित

- सितंबर 26 : गांधीजी का वर्धा में आगमन और स्थायी तौर पर निवास : प्रारंभ में सत्याग्रह आश्रम में निवास फिर सेवाग्राम

1934 मई 6 : वर्धा जिले में आश्रम की ओर से चलनेवाले विविध कार्यों और प्रवृत्तियों को संगठित रूप देने की दृष्टि से 'ग्राम-सेवा-मंडल' की स्थापना

- जून 16 : अखिल भारत हरिजनयात्रा से, गांधीजी की गीता के साप्ताहिक पाठ की योजना की मांग पर, जवाब में पत्र द्वारा 'गीताध्याय-संगति' का लेखन

1935 अप्रैल 1 : देवली (वर्धा) में प्रथम खादीयात्रा का आयोजन

- जून 7 : मजदूरी के क्षेत्र में प्रयोग : कताई के द्वारा न्यूनतम आवश्यक मजदूरी प्राप्त करने की दृष्टि से, लगभग एक साल रोज 16 लटी सूत कातने का प्रयोग : हैदराबाद से आश्रम में आये हुए मुस्लिम लड़के को सिखाने के निमित्त से कुरानशरीफ का अध्ययन आरंभ

- जुलाई 1 : आश्रम-कार्यकर्ता द्वारा नालवाड़ी (वर्धा) में चर्मालय का प्रारंभ

1936 मई 18 : वर्धा में महारोगी-सेवा मंडल (दत्तपुर) की स्थापना को प्रेरणा; कुष्ठ सेवा-क्षेत्र में प्रथम भारतीय संस्था का पदार्पण

- जून 16 : गांधीजी का सेवाग्राम में स्थायी तौर पर निवास प्रारंभ

1938 मार्च 7 : गांधीजी के आदेशानुसार स्वास्थ्य-सुधार के लिए **पवनार आगमन।** 'संन्यस्तं मया' का त्रिवार उच्चारण। विचार-शून्यता, अकर्म-स्थिति का अनुभव : स्वास्थ्य में आश्चर्यकारक सुधार : पवनार में स्थायी निवास : जमीन खोदते समय (1932 में गीता पर प्रवचन करते हुए वर्णित भरत-राम-भेंट के कल्पित चित्र के अनुरूप) **भरत-राम-मूर्ति की प्रसाद-लब्धि**

1940 अक्तूबर 17 से 3 दिसंबर 1941 : व्यक्तिगत सत्याग्रह के लिए गांधीजी द्वारा **प्रथम सत्याग्रही** घोषित : सत्याग्रही के रूप में पवनार में प्रथम भाषण : तीन बार सत्याग्रह, तीन बार सजा – क्रमशः तीन माह, छह माह, एक साल : नागपुर जेल – गुनाहखाना नं. 1 में निवास : वहीं महाराष्ट्र के संत ज्ञानेश्वर, एकनाथ, नामदेव के भजनों का चयन : गांधीजी की 'मंगल-प्रभात' पुस्तक के आधार पर पंचव्रतों का 'अभंग व्रतें' नाम से मराठी पद्यानुवाद : 'स्वराज्य-शास्त्र' पुस्तक की रचना

1941 जनवरी 17 : सेवाग्राम में युद्धविरोधी भाषण

1942 अगस्त 9 से 9 जुलाई 1945 : जेल-निवास। वर्धा जेल – आंदोलन शुरू होने से पूर्व गांधीजी से हुई चर्चा के अनुसार, जेल में प्रवेश करते ही उपवास आरंभ : यरवड़ा से गांधीजी द्वारा उपवास की कल्पना स्थगित होने का संदेश, तदनुसार एक दिन के बाद उपवास-समाप्ति : नागपुर जेल – वेलोर (तमिलनाड) जेल – गांधीजी से हुई पुरानी बातचीत के अनुसार, गांधीजी के 21 दिन के उपवास के साथ (जानकारी एक दिन देरी से मिलने के कारण) 20 दिन का उपवास (11.2 से 3.3.1943) : सहयोगी बंदियों के सामने गीता पर प्रवचन : **दक्षिण की चारों भाषाओं का** लिपियों के साथ **अध्ययन** : संशोधित लिपि – **लोकनागरी की खोज** : सिवनी जेल (म.प्र.)– गांधीजी की आज्ञा के अनुसार ईशावास्योपनिषद पर लिखी हुई पुरानी टिप्पणी का विवेचनात्मक भाष्य में रूपांतर–'ईशावास्यवृत्ति' का लेखन : ईशावास्योपनिषद का मराठी अनुवाद : साथियों के सामने गीता के स्थितप्रज्ञ के श्लोकों पर मराठी में विवेचनात्मक प्रवचन (बाद में **स्थितप्रज्ञ-दर्शन** नाम से पुस्तकरूप में प्रकाशित) : 9 जुलाई सिवनी जेल से मुक्ति

1945 जुलाई : सिवनी जेल-मुक्ति के बाद गोपुरी (वर्धा) में निवास : परंधाम आश्रम की सरकारी जब्ती उठने के बाद पवनार आगमन : प्रातःकालीन प्रार्थना में ईशावास्य के मराठी अनुवाद का समावेश : पत्रव्यवहार आदि के लिए लोकनागरी लिपि का आरंभ

- नवंबर 21 से 20 मई, 1946 : 'गीताई-शब्दार्थ-कोश' की रचना

1946 अप्रैल 2 : पवनार से तीन मील दूर सुरगांव में प्रतिदिन सुबह **भंगी-कार्य** आरंभ, सूर्यसी नियमितता से बारिश में भी 20 माह सतत जारी

1946-47 : पवनार : ज्ञानदेव के भजनों पर चिंतनिका-लेखन–समाधिवत् अवस्थामें : चैत्र शुद्ध प्रतिपदा 1947 को पवनार, आश्रम में भरत-राम प्रतिमा की प्रतिष्ठापना

1947 अक्तूबर 29 : शरदपूर्णिमा (आश्विन शुद्ध) के दिन धुलिया में पिताजी का देहांत : 'गीताई अधिकरण-माला' (गीता के 60 विभागों के नामों की पद्य-रचना) का प्रथम बार प्रकट पाठ : पिताजी की अस्थियां भूमि में ही विसर्जित

1948 जनवरी 15 : लोकनागरी लिपि में 'सेवक' मासिक का प्रकाशन

- जनवरी 30 : गांधीजी का बलिदान
- जनवरी 31 से 12 फरवरी गांधीजी को श्रद्धांजलि : वर्धा, सेवाग्राम, गोपुरी में 13 दिन प्रवचन
- फरवरी 12 : पवनार की धाम नदी में गांधीजी के अस्थि-विसर्जन-प्रसंग पर

बहुत सारे राष्ट्रनेता तथा सेवक उपस्थित : **सर्वोदय समाज** की कल्पना प्रस्तुत, **सर्व सेवा संघ की स्थापना** : "हर 12 फरवरी को सर्वोदय-यात्रा व सूत्रांजलि-समर्पण" का विचार प्रस्तुत

- मार्च 30 : पंडित नेहरू के निमंत्रण पर निर्वासितों के पुनर्वसन व शांतिकार्य के लिए दिल्ली प्रस्थान : दिल्ली, पंजाब, राजस्थान में मेवों के पुनर्वसन का कार्य, करीब छह माह तक : अजमेर दर्गाहशरीफ में सामूहिक सर्वधर्म-प्रार्थना
- दिसंबर 14 : जयपुर कांग्रेस में खादी प्रदर्शनी का उद्‌घाटन
- दिसंबर 26 से 14 जनवरी 1949 : धुलिया (महाराष्ट्र) गांधी तत्त्वज्ञान मंदिर में निवास : प्रतिदिन सायं-प्रवचन में सर्वोदय विचार का विवरण

1949 मार्च : राऊ (इंदौर) सर्वोदय सम्मेलन में : पंडित नेहरू के अनुरोध पर हैदराबाद रियासत का प्रवास

- अप्रैल 13–20 : वेडछी (गुजरात) : स्वराज्य आश्रम में आश्रम-जीवन संबंधी प्रवचन-माला : केरल और दिल्ली का प्रवास
- जुलाई 9 : हिंदूधर्म की व्याख्या – 'हिंसया दूयते चित्तम्'
- अगस्त 15 : 'सर्वोदय' मासिक का आरंभ तथा संपादन
- अगस्त 18 : एक सप्ताह उरुलीकांचन के निसर्गोपचार आश्रम में निवास
- अगस्त 28–30 : मशहूर सिंधी कवि श्री दुखायलजी के अनुरोध पर कल्याण के सिंधी कैंप में
- अगस्त 31 : बंबई : जिना हॉल में कांग्रेस कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन
- नवंबर 1 : डिओडिनल अल्सर का डॉक्टरों द्वारा निदान
- दिसंबर 15 : सेवाग्राम : जागतिक शांति परिषद का उद्‌घाटन – "अहिंसा को अणुबम का भय नहीं है, भय है छोटे (कन्वेन्शनल) शस्त्रों का।"

1950 जनवरी 1 : पवनार के परंधाम आश्रम में साथियों के साथ **कांचनमुक्ति-प्रयोग** तथा **ऋषि-खेती** का आरंभ – "प्रचलित अर्थ-व्यवस्था को तोड़े बिना संभाव्य क्रांति नहीं होगी।"

- मार्च : गांधीजी की 'रामनाम' (संबंधित विचार की) पुस्तक के परीक्षणार्थ सर्वोदय पत्रिका में 'रामनाम – एक चिंतन' का लेखन-प्रकाशन

1951 फरवरी 27 से मार्च 6 : सेवाग्राम में नयी तालीम सम्मेलन के निमित्त निवास

- मार्च 6 : सेवाग्राम : सर्व सेवा संघ की बैठक : शिवरामपल्ली सर्वोदय सम्मेलन के लिए पैदल शिवरामपल्ली जाने का संकल्प घोषित
- मार्च 7 : सेवाग्राम से सर्वोदय-यात्रा का शुभारंभ : प्रथम पड़ाव पवनार –

श्रमः शांतिः समर्पणम्' – पंचविध कार्यक्रम प्रस्तुत : सम्मेलन-मंच से – "स्वराज्य के बाद जो काम करना है, वह बहुत गहरा और कठिन है। समाज की बुनियाद के मजबूती का काम करना है। सामाजिक और आर्थिक क्रांति का काम हाथ में लेना है। हमारी सेवा आत्म-विचार की सेविका हो।"

- अप्रैल 15 : रामनवमी को अशांतिशमनार्थ तेलंगाना की पदयात्रा का आरंभ
- अप्रैल 18 : पोचमपल्ली : श्री रामचंद्र रेड्डी द्वारा सौ एकड़ का **प्रथम भू-दान**
- अप्रैल 19 से : भूदान-यात्रा का शुभारंभ : लगभग सवा दो माह में 12,000 एकड़ भूमिदान की प्राप्ति
- जून 27 : पवनार आगमन : 'एकनाथांचीं भजनें' पुस्तक के प्रस्तावना-खंड का लेखन
- अगस्त 10 : परंधाम आश्रम में योजना आयोग के सदस्य श्री रा. कृ. पाटील से चर्चा, प्रथम पंचवर्षीय योजना के बारे में
- सितंबर 12 : पंडित नेहरू के निमंत्रण पर योजना आयोग के साथ प्रथम पंचवर्षीय योजना के बारे में चर्चा करने दिल्ली के लिए पैदल प्रस्थान : नयी अहिंसक क्रांति की ओर देश-विदेश का ध्यान आकृष्ट : प्रेम से मांगने पर प्रेम से जमीन मिल सकती है, इस निष्ठा का निर्माण
- सितंबर 30 : जीवन-मंत्र-श्लोक की रचना –

वेद-वेदांत-गीतानां विनुना सार उद्‌धृतः
ब्रह्म सत्यं, जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्य-शोधनम्

- अक्तूबर 2 : सागर (म.प्र.), भारत की कुल उपजाऊ जमीन के छठे हिस्से – पांच करोड़ एकड़ उपजाऊ जमीन की मांग
- नवंबर 1,2 : मथुरा में उत्तरप्रदेश के कार्यकर्ताओं का सम्मेलन
- नवंबर 13-23 : राजघाट, दिल्ली : दिल्ली तक यात्रा में 18 हजार एकड़ भूमि की प्राप्ति। योजना आयोग के साथ चर्चा – अन्नं बहु कुर्वीत तद् व्रतम् : सरदार वल्लभभाई के "हमें 'वॉर पोटेंशिअल' (युद्धसहायक शक्तिशाली) उद्योगों की जरूरत है" व्याख्यान के जवाब में "भारत को 'पीस पोटेंशिअल' (शांतिसहायक शक्तिशाली) उद्योगों की आवश्यकता है – ग्रामोद्योगों की जरूरत है।"

1951 नवंबर 24 : **उत्तरप्रदेश पदयात्रा आरंभ**

1952 जनवरी 19 : बदायूं, देहरादून की पर्वतमाला की यात्रा में कालीकमलीवालों ने

- अप्रैल 12–19 : सेवापुरी सर्वोदय सम्मेलन : कुल एक लाख एकड़ भूदान-प्राप्ति की घोषणा : सर्व सेवा संघ का दो साल में 25 लाख एकड़ जमीन प्राप्त करने का संकल्प
- मई 8 : लखनऊ : बुद्ध-पूर्णिमा – "भगवान बुद्ध ने बोया हुआ बीज अंकुरित हो रहा है, भूमि की समस्या शांति से हल करने का प्रयास है, यह धर्मचक्र-प्रवर्तन का कार्य है।"
- मई 23 : मंगरोठ (उत्तरप्रदेश) भारत का **प्रथम ग्रामदान** घोषित
- जुलाई 4 से सितंबर 11 : काशी : चातुर्मास का निवास और स्वच्छ-काशी आंदोलन
- सितंबर 12 : **बिहार-प्रवेश :** व्यापक भूमिदान
- अक्तूबर 23 : पटना : **संपत्तिदान**-विचार की घोषणा – गांधीजी के ट्रस्टीशिप सिद्धांत का व्यापक रूप
- दिसंबर 12 से 12 मार्च 1953 : चांडिल (सिंहभूम, बिहार) : रुग्णावस्था : महाराष्ट्र के संत समर्थ रामदासस्वामी के 'दासबोध' ग्रंथ का चयन और 'मनाचे श्लोक' का सटीप वर्गीकरण : 'धम्मपद' की पुनर्रचना : शंकराचार्य के प्रकरणग्रंथों का चयन : सर्वोदय सम्मेलन में हिंसा-विरोधी और दंड-निरपेक्ष **तीसरी शक्ति** की घोषणा

1953 सितंबर 19 : वैद्यनाथधाम (संथाल परगना, बिहार) का प्रसाद – मंदिर में हरिजनों के साथ प्रवेश करने पर पंडों के द्वारा प्रहार

1954 अप्रैल 12–25 : बोधगया : सर्वोदय सम्मेलन में 25 लाख एकड़ भूदान-प्राप्ति के संकल्प-पूर्ति की घोषणा

- अप्रैल 18 : बोधगया में **समन्वय आश्रम** की स्थापना
- अप्रैल 20 : जयप्रकाशजी के आवाहन पर भूदानमूलक ग्रामोद्योगप्रधान अहिंसक क्रांति के लिए **जीवन-समर्पण**
- दिसंबर 31 : सवा दो साल की बिहार यात्रा में 23 लाख एकड़ भूदान प्राप्त

1955 जनवरी 1 से 25 : **बंगाल-यात्रा :** प्रेमयात्रा : 25 दिन की यात्रा में कार्यकर्ताओं के साथ अंतरंग-चर्चा ('कार्यकर्ता-पाथेय' नाम से पुस्तकरूप में प्रकाशित)

- जनवरी 10 : विष्णुपुर (बंगाल) : श्रीरामकृष्ण परमहंस का समाधि-स्थान : **सामूहिक समाधि** का नया दर्शन
- जनवरी 26 : **उड़ीसा-प्रवेश :** भूमिक्रांति : भूदान का अगला कदम – ग्रामदान का व्यापक प्रचार और लब्धि

- मार्च 25–27 : जगन्नाथपुरी सर्वोदय सम्मेलन : भूदान-क्रांति का आवाहन – "हर भूदान-पत्र विश्वशांति के लिए वोट है" : "सत्याग्रह यानी सौम्य-सौम्यतर-सौम्यतम पद्धति" का विवेचन
- अप्रैल 7–12 : ब्रह्मपुर (उड़ीसा) : अ.भा. कांग्रेस कमिटी की विशेष बैठक के सामने, "आक्रमणकारी अहिंसा की आवश्यकता, युनिलॅटरल डिस्-आर्मामेंट (एक तरफा शस्त्र-मुक्ति) से शस्त्र-स्पर्धा के दुष्टचक्र का भेद संभव" का विचार प्रस्तुत
- जून-जुलाई : भागवत के एकादश स्कंध का चयन – ('भागवत-धर्म-सार' के नाम से प्रकाशित)
- अगस्त 31 : डांगसुरुडा (कोरापुट, उड़ीसा) : निबिड़ जंगल में प्राप्त प्रेरणा के अनुसार **साम्यसूत्र** की रचना पूर्ण
- अक्तूबर 1 : **आंध्र-प्रवेश** : "आरंभ से ही सत्ता के विकेंद्रीकरण से, राज्यविलयन संभव" का विचार प्रस्तुत : सामूहिक प्रार्थना की नयी पद्धति, मौन प्रार्थना – सामूहिक ध्यान का आरंभ – "भगवान का जो नाम जिसे प्यारा हो, और जिस नाम की जिसे आदत हो, वह नाम अपने मन में लें और भगवान से प्रार्थना करें कि वह हमें सत्य दे, प्रेम दे, करुणा दे – सत्य, प्रेम, करुणा, यही भगवान से प्रार्थना।"
- नवंबर 20 : अमलापुरम् (आंध्र) : दान-न्यास-मीमांसा – "दान यानी सम्यक् विभाजन, न्यास यानी विकेंद्रीकरण।"

1956 जनवरी 30 : पोचमपल्ली (तेलंगाना) – भूदानगंगा की गंगोत्री में पुनरागमन : "छठा हिस्सा भूमि मिले, तो शांतिमय क्रांति : क्रांति का इससे सस्ता सौदा क्या हो सकता है? आत्मज्ञान और विज्ञान के योग से ही भारत सफल होगा।" का संदेश

- मार्च 24 : अडोनी (आंध्र) : व्यापारियों को आवाहन – "व्यापारियो, आओ! धर्मनिष्ठा आपमें है। शास्त्रकारों ने आपमें विश्वास और निष्ठा रखी है। जो गुण आपको हासिल हैं, उनका उपयोग कर देश और दुनिया को बचाओ। आप प्रजा के सेवक बनो। हमारे देश के व्यापारी वैश्यधर्म को पहचानते हैं, व्यवस्थाबुद्धि और करुणाबुद्धि सबकी सेवा में लगाते हैं, तो हमारे देश की सरकार अत्यंत निर्भय बनेगी।"
- मई 13 : **तमिलनाड-प्रवेश** : गांव-गांव में भव्य मंदिर : "मंदिर-संस्कृति ग्रामस्वराज्य की बुनियाद। प्रथम, दक्षिण के आचार्यों का भारत पर असर था

- मई 26 से 3 जून 1956 : कांचीपुरम् (तमिलनाड) सर्वोदय सम्मेलन : ''सर्वोदय का आधार ब्रह्मविद्या। विज्ञानयुग में अतिमानस भूमिका अपरिहार्य है। व्यक्तिगत नेतृत्व के स्थान पर गणसेवकत्व का उदय हो रहा है।'' : संकल्प-शक्ति बढ़ाने के लिए तीन दिन का उपवास
- जुलाई 9 पांडिचेरी : अरविंद आश्रम : माताजी के आशीर्वाद – ''यू लिव फॉर डिवाईन, वर्क फॉर डिवाईन, ॲस्पेअर फॉर डिवाईन (आप दिव्यता के लिए जीते हैं, दिव्यता के लिए काम करते हैं, दिव्यता के लिए उत्कंठित हैं)।''
- जुलाई 10 से 2.11.56 : तमिलनाड : रोज दो पड़ाव
- नवंबर 16–22 : पलनी (तमिलनाड) : ''जनआंदोलन के लिए **निधिमुक्ति** व **तंत्रमुक्ति** आवश्यक'' – सर्व सेवा संघ का क्रांतिकारी निर्णय

1957 अप्रैल 15 : कन्याकुमारी : ग्रामस्वराज्य की प्रतिज्ञा और संकल्प

- अप्रैल 18 : **केरल-प्रवेश** : ''इस प्रेमराज्य के राजा ईसा मसीह और शंकर। ईसा मसीह ने कहा था, पड़ोसी पर वैसा ही प्यार करो, जैसा अपने पर करते हो। शंकराचार्य एक कदम आगे बढ़े। अभेद की बात समझाते हुए कहते हैं – कस्य स्विद् धनम् – धन किसका है, मालिकी किसकी है?''
- मई 3 : कल्लरा : ख्रिश्चन चर्चेस के बिशपों का एकसाथ मिलन : उनको संबोधन – ''व्यक्तिगत स्वामित्व पवित्र वस्तु है, लेकिन स्वेच्छा से स्वामित्व-विसर्जन पवित्रतम है।''
- मई 4 : वायकम् (केरल) पुनरागमन – ''सत्याग्रहनिष्ठ जीवन की तालीम जनता को मिलनी चाहिए।''
- मई 8–13 : कालड़ी सर्वोदय सम्मेलन – ''साम्यवाद की गंगा और समाजवाद की यमुना सर्वोदय सागर में विलीन होंगी'' : 'गुरुबोध' (शंकराचार्य के प्रकरण ग्रंथों के चयन) का प्रकाशन
- जुलाई 11 : कोझिक्कोड़ (केरल) : **शांतिसेना** की घोषणा – ''हिंसाशक्ति ऊपर न उठे, इसके लिए शांतिसेना खड़ी की जाये । शांति-सैनिक सामान्य समय में समाजसेवा, ग्रामदान-प्राप्ति का काम करेंगे और विशिष्ट मौके पर शांति स्थापना के लिए अपना सिर समर्पण करने की तैयारी रखेंगे।''
- अगस्त 23 : मंजेश्वरम् (केरल) : शांतिसेना की स्थापना
- अगस्त 24 : **कर्नाटक-प्रवेश**
- सितंबर 21-22 : येलवाल (कर्नाटक) : सर्वपक्षीय ग्रामदान परिषद – ''ग्रामदान 'डिफेन्स मेजर' (संरक्षण का साधन)'' : सर्वपक्षीय राष्ट्रनेताओं की ओर से

- अक्तूबर 15–19 : बेंगलूर : **विश्वनीडम्** आश्रम की परिकल्पना – यत्र विश्वं भवति एक नीडम्
- नवंबर 1 : कडबा, तुमकूर (कर्नाटक) : **जय जगत्** : संयुक्त कर्नाटक के प्रथम वर्षदिन पर नये मंत्र का प्रथम उद्घोष

1958 जनवरी 7 : हंसभावि : देशभर के वरिष्ठ शिक्षा-अधिकारियों के सेमिनार का उद्घाटन – "आज शिक्षा के नाम पर केवल 'इन्फरमेशन सप्लाई' (जानकारी-वितरण) होता है। शिक्षा का दावा होना चाहिए कि देश की रक्षा अहिंसाशक्ति से कर सकते हैं। ज्ञानरूपी शस्त्र के सामने सब शस्त्र निकम्मे हैं।"

- फरवरी 1 : धारवाड़ : **सर्वोदय-पात्र** की घोषणा
- मार्च 23 : **महाराष्ट्र-प्रवेश** : "ज्ञानोबा माउली के चरणों में आया हूं। खुला होकर आया हूं। निरुपाधिक होकर आया हूं। मेरे पास विचार है और प्रेम है। विचार सदा सर्वदा खुला रहता है। उसको बंधन नहीं हो सकता।"
- मई 28 से 3 जून : पंढरपुर : 63 साल की उम्र में, प्रथम बार आगमन – "मानवजाति के उद्धार के लिए आध्यात्मिक विद्या का आदितीर्थ" : सर्वोदय सम्मेलन – "विज्ञान का योग अहिंसा के साथ करना, यही सर्वोदय का काम है। उसकी प्रयोगशाला बड़े-बड़े शहरों में नहीं, देहातों के घर-घर में होनी चाहिए। पहले जमाने में साम्ययोग शिखर था, अब वह नींव बना है। उसके आधार पर जीवन बनाना है। विज्ञानयुग की यह मांग है।"
- मई 29 : **पंढरपुर** के विश्वप्रसिद्ध विठोबा मंदिर में सर्वधर्मियों के साथ प्रवेश : अ.भा. शांतिसेना समिति की स्थापना

1958 अगस्त : महाराष्ट्र : कृष्णजन्माष्टमी : गीताई के अंतिम श्लोक पर टिप्पणी लिखकर 'गीताई-चिंतनिका' का लेखन समाप्त

- अगस्त 14 : धुलिया (महाराष्ट्र) : जेल में गीता-प्रवचन के स्थान का दर्शन – "प्रवचन भगवान ने ही मुझसे कहलवाये।"
- अगस्त 16 : भांबुरवाड़ी (महाराष्ट्र) : जीवनतंत्र-श्लोकरचना –

वेदांतो विज्ञानं विश्वासश्चेति शक्तयस् तिस्रः
यासां स्थैर्ये नित्यं शांति-समृद्धी भविष्यतो जगति

- सितंबर 19 : जवापुर (महाराष्ट्र) : भारत का पहला (धुलिया जिले के अक्राणी महाल और अक्कलकुआ) **प्रखंडदान**
- सितंबर 22 : **गुजरात-प्रवेश** : सोनगढ़ : "भगवान की अपार दया थी कि मेरा हृदय और मेरा जीवन गांधीजी के चरणों में स्थिर रहा। 'गुरुमुखी' –

- सितंबर 27 : बारडोली (गुजरात) " गुजरात का हृदय वैष्णव और बुद्धि व्यावहारिक। दोनों का योग होता है, वहां योगेश्वर कृष्ण और धनुर्धर अर्जुन एकत्र रहते हैं। तो श्री, विजय, भूति मिलती ही है।" "ग्रामदान यानी अभयदान।"
- अक्तूबर 28 : सोखड़ा (गुजरात) में वेद-सम्मेलन
- अक्तूबर 29 : बड़ौदा : करीब 40 साल से कार्यवश, विचारवश, स्नेहवश साथ रहे हुए मित्रों (पुराने विद्यार्थी-मंडल) का मिलन – "मैत्री का रिश्ता सर्वश्रेष्ठ है। दास्यभक्ति का युग बीत गया, सख्यभक्ति का युग आया है।"
- नवंबर 8 : भावनगर : "विज्ञान युग में आज पॉलिटिक्स 'आऊट ऑफ डेट' (कालबाह्य) है। उसे जो पकड़े रखेगा, वह मार खायेगा और हार खायेगा।"
- नवंबर 28 : बोरसद (गुजरात) : "सत्याग्रह नैमित्तिक कार्यक्रम नहीं, प्रतिक्षण की प्रक्रिया है। सत्याग्रह में हार-जीत का सौदा नहीं, उसमें दोनों पक्षों की विजय है। विचारनिष्ठा ही सत्याग्रह का प्राणतत्त्व है।"
- दिसंबर 21 : साबरमती – हरिजन आश्रम – "यह गांव बन गया है, गांव के मसले यहां भी हैं, ग्रामदान हो जाता है तो सभी मसले हल हो जायेंगे।"

1959 जनवरी 15 : **राजस्थान-प्रवेश**

- फरवरी 27 से 1 मार्च 1959 : अजमेर सर्वोदय सम्मेलन
- मार्च 1 : अजमेर दर्गाहशरीफ में महिलाओं के साथ प्रवेश और सर्वधर्म-प्रार्थना
- मार्च 2 : गगवाना (राजस्थान) : शांतिसेना की प्रथम रैली
- मार्च 13 : काशीकाबास (राजस्थान) : स्व. जमनालालजी बजाज के जन्म-स्थान में **ब्रह्मविद्या-मंदिर** के स्थापना की घोषणा
- अप्रैल 1 : **पंजाब-प्रवेश** : 'बिसर गयी सब तात पराई' – "हमें निर्भय, निर्वैर और निष्पक्ष बनना है।"
- मई 22 : बुद्ध-जयंती : **जम्मू-कश्मीर-प्रवेश** : "यहां अल्ला और लल्ला का साम्राज्य है। मोहब्बत का पैगाम देने आया हूं।"
- मई 24 से जून 23 : जम्मू क्षेत्र : सिक्खों का धर्मग्रंथ 'जपुजी' का सामूहिक पाठ : उस पर विवरणात्मक प्रवचन : कुरान का सामूहिक पाठ
- जून 9-10 : जम्मू : "मसले हमने बनाये हैं, परमेश्वर के बनाये नहीं हैं। अगर हम ठीक ढंग से पेश आते हैं, तो मसले काफूर हो जाते हैं। सियासी ढंग कश्मीर को तोड़ेगा। यहां काम करने का तरीका सियासी नहीं, रूहानी हो।"
- जून 10 : श्री शेख अब्दुल्ला से जम्मू जेल में मुलाकात
- जुलाई 11 : पीर-पंजाल की साढ़े तेरह हजार फीट की हिमाच्छादित ऊंचाई पर

जो सबसे ज्यादा जरूरतमंद है, उसे ढूंढ़कर उसको मदद पहुंचाने का काम करना चाहिए। और गुर्बत मिटानी चाहिए। नहीं तो ब्यूटीस्पॉट (सौंदर्य-स्थल) यानी 'डर्टी-स्पॉट' (गंदगीस्थल) बनेंगे।''

- अगस्त 2–6 : श्रीनगर : राजनीति + विज्ञान = सर्वनाश; अध्यात्म + विज्ञान = सर्वोदय। ''मसले राजनीति से हल नहीं होंगे। अध्यात्म से हल होंगे। विज्ञान के युग में राजनीति और धर्मपंथों के दिन लद गये। मजहब, कौम, जबान, वगैरह सब तरह के भेद मिटाकर हम अपने दिल को व्यापक बनायेंगे, तभी कश्मीर और हिंदुस्तान की ताकत बनेगी।''
- सितंबर 21 : पंजाब में पुनरागमन
- सितंबर 23 : पठानकोट : **प्रस्थान आश्रम** की परिकल्पना
- अक्तूबर, 11-12 : अमृतसर : ''पक्षों के जूते गुरुद्वारा में न आयें।'' ''भाकरा नांगल आधुनिक तीर्थक्षेत्र तभी बनेगा, जब हर भूमिवान भूमिहीनों को अपनी छठा हिस्सा भूमि देगा।'' : अखिल भारत साहित्यिकों का सम्मेलन : **अज्ञात-यात्रा**-प्रारंभ। केवल तीन दिन का कार्यक्रम जाहिर
- दिसंबर 16-17 : सिरसा : ''तिब्बत पर हमला हुआ तो भारत ने सावधानी के लिए सीमा पर सेना भेजी। इससे गांधी-विचार खंडित नहीं होता। कोई सिर पर प्रहार करता है। तो सिर के बचाव के लिए हाथ तुरंत आगे आता है। भारत ने सेना रखी है, वह केला खाने के लिए नहीं। सेना रखनी पड़ी है, यही हमारे लिए चुनौती है।''

1960 मई 12 : पिनहट (भिंड, म.प्र.) : **चंबल घाटी-प्रवेश**

- मई 19 : कनेराग्राम (भिंड) : अहिंसा का साक्षात्कार : 19 **बागियों का आत्म-समर्पण** – ''बिगरी जनम अनेककी सुधरत पल लगै न आधु।''
- जुलाई 24 से अगस्त 25 : इंदौर – सर्वोदय नगर अभियान; शून्य समिति की स्थापना : वानप्रस्थ मंडल की स्थापना : अशोभनीय पोस्टरों का विरोध : 'शुचिता से आत्मदर्शन'-प्रवचनमाला
- अगस्त 15 : इंदौर में **विसर्जन आश्रम** की स्थापना
- अगस्त 26 से सितंबर 1 : कस्तूरबाग्राम – मातृस्थान में। सप्त नारी-शक्तियों का विवेचन : ''शांति-रक्षा और शील-रक्षा बहनों का कर्तव्य।''
- सितंबर 30 राऊ (म.प्र.) : पंडित नेहरू का असम जाने के लिए अनुरोध प्राप्त : इंदौर में दुबारा आगमन : असम की दिशा में यात्रा प्रारंभ
- दिसंबर 5-6 : वाराणसी : साधना-केंद्र में निवास : ''बाप के बाह्य राजनीति

में। तुलसीदासजी ने कहा – जन्म जन्म मुनि जतनु कराहीं । अंत राम कहि आवत नाहीं।''

- दिसंबर 25 से 9 फरवरी 1961 : बिहार यात्रा : **'बीघे में कट्ठा**, दान दो इकट्ठा' अभियान

1961 जनवरी 7 : बोधगया : बुद्ध मंदिर के प्रांगण में 'धम्मपद नवसंहिता' का पाठ
- फरवरी 10 से मार्च 4 : उत्तर बंगाल की यात्रा
- मार्च 5 : **असम प्रवेश** : ''ग्रामदान सामूहिक उत्थान का कार्यक्रम; जो खुद स्वामी बनेगा वह अवैष्णव होगा; विष्णु सृष्टि का स्वामी; नाम-संकीर्तन के साथ सहजीवन।''
- अप्रैल 8-9 : गुवाहाटी : महिला लोक-सेवक संघ की कल्पना
- दिसंबर 15 : असम : करीब डेढ़ साल के सतत परिश्रम से 'कुरान-सार' पूर्ण

1962 फरवरी 22 : असम के महापुरुष श्री माधवदेवकृत 'नाम-घोषा' का चयन
- मार्च 5 : लीलाबारी (असम) : **मैत्री आश्रम** की स्थापना
- जुलाई 31 : गोविंदपुर (असम) : ''घुसपैठ रोकने के लिए ग्रामदान आवश्यक। सीमा-क्षेत्र तुरंत ग्रामदानी क्षेत्र हो।''
- सितंबर 5 : **पूर्व पाकिस्तान-प्रवेश** : भुरुंगामारी : द्वार खुल गया – पहले ही दिन भूदान-प्राप्ति और उसका वितरण
- सितंबर 8 : पूर्व पाकिस्तान : '' बहनों को परदे में रखना गलत । उनको समाजसेवा में लगाना चाहिए।''
- सितंबर 13 : रंगपुर : (पूर्व पाकिस्तान) ''वर्ल्ड फेडरेशन का पहला कदम – 'भारत-पाक कॉन्फेडरेशन'। उससे दोनों देशों की समस्याओं का हल होगा।''
- सितंबर 19 : दिनाजपुर : (पूर्व पाकिस्तान) ''जिसके पास प्रेम है, उसको संसार से प्रेम ही मिलेगा। गरीबों का दुःख दूर करें। जनता का उद्यम 'जबर' (मुख्य) और सरकारी सहायता 'जेर' (गौण)।'' ''जैसे किसी नदी में कई नदियां मिलने से नदी खूब बड़ी और वेगवान होती है, उसी तरह वैदिक ध्यानयोग, बौद्धों की अहिंसा, वैष्णवों का प्रेमधर्म और इस्लाम का बंधुभाव मिलने से बंगला भाषा समृद्ध हुई है।''
- सितंबर 20 : पाकिस्तान-यात्रा का अंतिम दिन : ''अल्लाह एक है वैसा मानव भी एक है। जाति, धर्म, पंथ, देश, इन सबसे मानवता श्रेष्ठ है। यहां प्यार मिलेगा ऐसा मुझे 'इलमुल यकीन' (ज्ञानजन्य विश्वास) था। यहां प्रेम का जो साक्षात्कार हुआ, अब 'आइनुल यकीन' (प्रत्यक्ष दर्शन से विश्वास) हुआ।''

- दिसंबर 25 : नवग्राम (प. बंगाल) : पंडित नेहरू से अंतिम मुलाकात

1963 जनवरी 4 से 6 : नवद्वीप (प. बंगाल): अ.भा. खादी कार्यकर्ता सम्मेलन : "खादी की आखिरी लड़ाई – 'द लास्ट अ‍ॅण्ड द बेस्ट' – सरकारी मदद से खादी को मुक्त करना आवश्यक।" : मुफ्त बुनाई योजना का निर्णय

- अप्रैल 18 : कामारपुकुर (प. बंगाल) : "ग्रामस्वराज्य के द्वारा करुणामूलक साम्य का विचार दुनिया में फैलाना है।"
- अप्रैल 25 से मई 2 : आरामबाग (प. बंगाल) : **सुलभ ग्रामदान** का आविष्कार : "सुलभ ग्रामदान में समाज-प्रेरणा और स्वार्थ-प्रेरणा का समन्वय"
- मई 27 : गंगासागर : "कपिल महामुनि ने यहां से सांख्य-विचार फैलाया। अब यहां से ग्रामस्वराज्य का विचार फैले।"
- जून 13 से 28 : कलकत्ता : बलि प्रथा पर प्रहार "जो मां अपने बच्चे का बलि मांगती है, वह मां नहीं हो सकती।" : शांति-सेवकों का संगठन : 'कुरान-सार' का प्रकाशन
- जुलाई 13 से नवंबर 11 : **उत्कल-यात्रा** : "ग्रामदान में व्यक्तिगत स्वातंत्र्य और सामुदायिक समर्पण का सुंदर संगम।"
- दिसंबर 21 से 31 : रायपुर सर्वोदय-सम्मेलन : **त्रिविध-कार्यक्रम** : " त्रिमूर्ति-उपासना – ग्रामदान, ग्रामाभिमुख खादी, शांतिसेना।"

1964 मार्च 3 : **महाराष्ट्र-प्रवेश**

- मार्च 5 से 7 : गोंदिया : आश्रम सम्मेलन
- अप्रैल 6 : सेवाग्राम : **मुफ्त बुनाई** योजना की घोषणा
- अप्रैल 10 से 20 : ब्रह्मविद्या-मंदिर, पवनार : 13 वर्ष 3 महीने 3 दिन के बाद भरत-राम का भावभीना दर्शन : ब्रह्मविद्या-मंदिर की स्थापना के बाद प्रथम बार आगमन
- अप्रैल 21 से जून 18 : वर्धा जिला यात्रा
- जून 19 से नवंबर 3 : ब्रह्मविद्या-मंदिर, पवनार में लंबा निवास
- नवंबर 4 : पदयात्रा प्रारंभ : गोपुरी (वर्धा) : 'गीताई-मंदिर' का भूमिपूजन
- नवंबर 13 : 'लॅबरंथाइन व्हर्‌टिगो' के कारण चक्कर की तकलीफ : पदयात्रा समाप्ति : ब्रह्मविद्या-मंदिर में पुनरागमन

1964 नवंबर 14 से 9 जुलाई 1965 : ब्रह्मविद्या-मंदिर में निवास : अकर्मयोग : 'वेदांत-सुधा, मनुशासनम्, विनयांजलि, गुरुबोध-सार' ग्रंथों का संकलन

"संतति नियमन और गर्भपात पर जो आध्यात्मिक आक्षेप है मैं उसे मानता

करता हूं, तो मैंने हिंदूधर्म का दावा छोड़ ही दिया, बल्कि मानवता में भी हार गया। मानव का लक्षण संयम रखना है। पुराने जमाने में ब्रह्मचर्य का आध्यात्मिक मूल्य था। आज उसको सामाजिक मूल्य भी प्राप्त हुआ है।''

1965 फरवरी 12-17 : भाषिक दंगों के कारण पवनार में उपवास : त्रिभाषी फार्म्युले के लिए सभी मुख्यमंत्रियों के आश्वासन पर उपवास समाप्ति

- जुलाई 9 से अगस्त 23 : विदर्भ (महाराष्ट्र) की वाहन-यात्रा
- अगस्त 24 : ग्रामदान **तूफान-यात्रा** के लिए बिहार की तरफ वाहन से प्रस्थान
- सितंबर 11 : **बिहार-प्रवेश**
- दिसंबर 14 : जमशेदपुर : लालबहादुर शास्त्रीजी से (उनके ताशकंद जाने से पूर्व) अंतिम मिलन : रुग्णावस्था के कारण करीब तीन महीने निवास : 'भागवत-धर्म-सार' पर विवेचन
- जून 7 : रानीपतरा (पूर्णिया, बिहार) : 50 साल का सेवाकार्य गांधीजी को समर्पित कर स्थूल प्रवृत्तियों से मुक्ति – **सूक्ष्म कर्मयोग** आरंभ : पत्रव्यवहार आदि लेखन बंद : व्यक्तिनिष्ठ निर्णय के बजाय सामूहिक निर्णय के लिए साथियों को प्रेरणा

1967 फरवरी 22 : पूसारोड (बिहार) : 'ख्रिस्तधर्म-सार' पूर्ण : बिहारदान का संकल्प

- दिसंबर 7-8 : पूसारोड (बिहार) : विद्वज्जनों की परिषद : विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक, उपकुलपति, मंत्री, शिक्षणतज्ञ उपस्थित : '' शिक्षा न्यायविभाग के समान स्वतंत्र हो। आचार्य राजनीति से मुक्त हों। देश में उनकी स्वतंत्र शक्ति बने और वे देश का मार्गदर्शन करें। एक होता है अशांति-दमन विभाग और दूसरा है अशांति-शमन विभाग। पहले विभाग को हम पुलिस विभाग कहते हैं और दूसरे को शिक्षा विभाग। अगर शमन विभाग समर्थ होगा तो दमन विभाग की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। केवल विश्वविद्यालय ही नहीं, सारा भारत ही विश्वविद्यालय-परिसर है। वहां पुलिस का होना आचार्यों पर एक कलंक ही मानना होगा।''

1968 मार्च 8 : कहलगांव (भागलपुर, बिहार) : **आचार्य-कुल** की स्थापना

- सितंबर 11 : मुजफ्फरपुर : बचे हुए पांच व्रतों पर 21 अभंग और लिखकर ''अभंग-व्रतें' पुस्तक की पूर्ति, कुल अभंग 108
- अक्तूबर 5 से 6 : बोधगया : संत सम्मेलन : अ.भा. गांधी विचारक सम्मेलन – ''भगवान बुद्ध की मुख्य देन करुणा नहीं, तृष्णाक्षय है। तृष्णाक्षय नहीं होगा,

1969 जुलाई 15 : रांची : 'अष्टादशी' (अठारह उपनिषदों का) चयन समाप्ति

- अक्तूबर 20 से 29 : राजगृह सर्वोदय सम्मेलन : **बिहार दान** की घोषणा : पुष्टि का अति तूफान चलाने का संदेश – "मेरे पास आपको देनेलायक कुछ नहीं है। लेकिन एक चीज मैं आपको दे सकता हूं – 'निद्रा'। गाढ़ निद्रा में शेर शेर नहीं रहता, मनुष्य मनुष्य नहीं रहता। आत्मा परमात्मा में लीन हो जाता है। परमेश्वर-स्पर्श का यह मौका न खोयें – रोज 8 घंटा निःस्वप्न निद्रा अवश्य लें।" : खानसाहब से मिलने सेवाग्राम जाने का निर्णय
- नवंबर 2 : सेवाग्राम आगमन और निवास : खानसाहब से भेंट
- नवंबर 8 : विनोबा, खानसाहब, जयप्रकाशजी का देश के नाम संयुक्त पत्रक
- नवंबर 15 से जून 1970 : शांतिकुटी (गोपुरी – वर्धा) में निवास

1970 जून 7 से : ब्रह्मविद्या-मंदिर में निवास : सूक्ष्मतर कर्मयोग का आरंभ

- सितंबर 23 : ब्रह्मविद्या-मंदिर में स्थिर रहने का निर्णय
- अक्तूबर 1 : सेवाग्राम में अमृतमहोत्सव-समारोह
- अक्तूबर 7 : **क्षेत्र-संन्यास** का संकल्प जाहिर

1971 फरवरी 9 : शिक्षा पर राष्ट्रीय सेमिनार

- अक्तूबर 20 : 'काल जारणम्...' इस मार्गदर्शक सूत्र की रचना : 'साम्यसूत्र-वृत्ति' का ग्रथन
- दिसंबर 2 : 'प्राज्ञ-सूत्राणि' की रचना

1972 मार्च 16 : ग्रंथ-मुक्ति

- अक्तूबर 15 : शिक्षण-परिषद – योग-उद्योग-सहयोग – शिक्षा-दृष्टि का विश्लेषण

1973 सितंबर 7-8 : उद्योगपतियों का सेमिनार : पंचशक्ति सहयोग

- सितंबर 11 : 'सर्वं ब्रह्म' की उपासना की जगह 'विमल ब्रह्म' की उपासना का विचार – **उपवासदान** का शुभारंभ
- सितंबर 23 : कार्यकर्ताओं के लिए चतुर्विध कार्यक्रम का निर्देश – 1. पंचशक्ति सहयोग 2. शं ना र ग दे 3. उपवासदान 4. सर्वसम्मति से निर्णयपद्धति
- अक्तूबर 3 : इस्लाम के उपास्य 99 नाम 'अस्माउल् हुस्ना' विष्णुसहस्रनाम में भी हैं, इसका स्पष्टीकरण
- दिसंबर 3 : सर्व सेवा संघ संगीति – जे. पी. का दस दिन पवनार में निवास, प्रभावतीजी के निधन के बाद प्रथम मिलन

1974 जनवरी 12 : प्रथम अ.भा. आचार्य-कुल सम्मेलन

- मार्च 9 : महिला सम्मेलन : शासन के लिए सप्तविध कार्य

- अगस्त 25 : हस्ताक्षर के बदले 'राम-हरि' लिखना प्रारंभ
- दिसंबर 13 : एक साल के मौन का संकल्प
- दिसंबर 25 : गीता-प्रतिष्ठान की ओर से प्रथम गीता प्रचार सम्मेलन, (गीता-जयंती + ईद + ईसाजयंती) मौन प्रारंभ

1975 मार्च 13 : संघर्ष की नीति के बाद सर्व सेवा संघ में मतभेद। सर्व सेवा संघ का मौन। प्रबंध समिति का त्यागपत्र

- मार्च 14 : सुबह 8.45 को दस मिनिट मौन-भंग करके जयप्रकाशजी से बातचीत
- मार्च 15 : सर्व सेवा संघ का विभाजन
- अप्रैल 3 : उपवासदान गीताई कार्य को समर्पित
- अप्रैल 24 : 'समणसुत्तम्' – जैन धर्म-ग्रंथ का प्रकाशन (महावीरजयंती)
- जून 25 : देश में आपात्काल घोषित
- सितंबर 6 : न्यूमोनिया से गंभीर बीमार
- सितंबर 7 : समाचार लेने इंदिराजी का आगमन
- दिसंबर 25 : भूरजस जयंती समारोह – एक साल की मौन समाप्ति : 'अनुशासन' शब्द का स्पष्टीकरण – "अनुशासन निर्भय, निर्वैर, निष्पक्ष आचार्यों का, शासन सरकार का।"

1976 जनवरी 16 : आचार्य-परिषद अनुशासन के लिए संगठन बने

- फरवरी 21 : अ.भा. देवनागरी परिषद
- फरवरी 25 : इंदिराजी से मुलाकात – गोहत्या-बंदी के लिए अंतिम चेतावनी
- अप्रैल 1 : एक दफा का आहार कम किया – (आंशिक उपवास)
- मई 17 : महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री से, गोहत्या-बंदी का पवित्र कार्य न हुआ तो आमरण उपवास की बात
- मई 29 : जन्मदिन 11.9.76 से गोहत्या-बंदी के लिए आमरण उपवास करने का संकल्प
- मई 31 : उस संबंध में जाहिर वक्तव्य
- जून 10 : वक्तव्य छापने के कारण 'मैत्री' पत्रिका जब्त
- जून 30 : सर्वोदय कार्यकर्ता सभा में सर्व सेवा संघ का विसर्जन करने की सलाह
- सितंबर 3 : बंगाल और केरल प्रदेशों को छोड़कर सभी प्रदेशों में सुप्रीम कोर्ट के निर्णयानुसार गोहत्या-बंदी की संसद में घोषणा

1978 जुलाई 18 : बीमारी के बाद जे.पी. मिलने आये

- अप्रैल 29 : उपवास की पूर्वतैयारी के लिए आहार कम किया
- नवंबर 20 : बंगाल में सरकारी इजाजत से बड़ी तादाद में होनेवाली गोधन की हत्या की बात सुनकर 1 जनवरी 1979 से आमरण उपवास की घोषणा
- दिसंबर 25 : सर्वोदय सम्मेलन : कार्यकर्ताओं के अनुरोध पर 111 दिन तक उपवास स्थगित
- दिसंबर 30 : प्रधानमंत्री मोरारजीभाई से मुलाकात

1979 फरवरी 25 : महाशिवरात्रि : उपवास की तैयारी के लिए आहार कम किया

- मार्च 13 : गोहत्या-बंदी के लिए सत्याग्रह का आवाहन
- अप्रैल 18 : केरल के मुख्यमंत्री वासुदेवन् नायर तथा बंगाल के मुख्यमंत्री ज्योति बसु से भेंट

1979 अप्रैल 22 : **गोहत्या-बंदी के लिए उपवास** आरंभ – 'आरब्धं जयजगत्'

- अप्रैल 26 : दोपहर 3 बजे प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई द्वारा संसद में पशु-संवर्धनसंबंधी संविधान-संशोधन का आश्वासन : 4.50 बजे उपवास समाप्ति
- अक्तूबर 8 : जे. पी. का देहांत
- अक्तूबर 25 : बहनों की बारह साल की पदयात्रा (लोकयात्रा) की समाप्ति
- दिसंबर 30 : विश्वमहिला सम्मेलन – 'सप्तविधप्रतिज्ञा' का संदेश

1980 अक्तूबर 7 : **गीताई-मंदिर** उद्‌घाटन

- अक्तूबर 10 : अ. भा. आचार्य-कुल सम्मेलन

1981 अगस्त 28 : बालकोबाजी की मृत्यु

- सितंबर 11 : अ.भा. खादी-सभा – 'खादी मिशन' की स्थापना
- अक्तूबर 17 : भारतीय शांतिसेना सम्मेलन

1982 जनवरी 11 : "इस देश में किसी भी उम्र के गाय-बैल न कटें" इस हेतु **देवनार, बंबई मे सत्याग्रह प्रारंभ**

- नवंबर 4 : बुखार आया
- नवंबर 5 : रात्रि 8.30 बजे हलका हार्ट अटैक
- नवंबर 8 : स्वास्थ्य लगभग पूर्ण सुधार पर
- नवंबर 8 : रात 10.30 बजे से आहार-जल-औषध का त्याग
- नवंबर 15 : **ब्रह्मनिर्वाण**
- नवंबर 16 : अग्नि संस्कार। धामनदी में गांधीस्तंभ के पास

20 खंडों का एकत्रित अनुक्रम

खंड 1 – वेद-चिंतन

खंड 3 – गीतामृत -1

खंड 4 – गीतामृत - 2

खंड 5 – गीता-भागवत

खंड 6 – शंकर-मनु

खंड 7 – बुद्ध-महावीर, योगसूत्र और ध्यान-मीमांसा

खंड 8 – बाइबिल-कुरान

खंड 9 – संत-समागम

खंड 10 – पंचामृत 1
(ज्ञानदेव-नामदेव-एकनाथ)

खंड 11 – पंचामृत 2
(तुकाराम-रामदास आदि)

खंड 12 – साहित्य और आत्मज्ञान-विज्ञान

खंड 13 – पत्र-मंजूषा

खंड 15 – आरोहण

खंड 16 – तीसरी शक्ति

खंड 17 – शिक्षा, स्त्री-शक्ति

खंड 18 – साम्ययोगी समाज

खंड 19 — धर्मामृत और चरितामृत

खंड 20 –शेषामृतम्

20 खंडों की संकलित

वचन-सूचि

(जिन वचनों पर कुछ विवेचन किया गया है वे तिरछे-इटालिक-अक्षरों में दिखाये हैं।)
(कृपया संक्षेपों का खुलासा पृष्ठ 580-81 पर देखें।)

विनोबाजी की पदयात्रा के पड़ावों की सूचि

तारीख	गांव	मील	जिला
8 मार्च 1951	वायगांव	13	वर्धा
9	राळेगांव	17	यवतमाल
10	सखीकृष्णपुर	14	,,
11	रुंझा	10	,,
12	पांढरकवड़ा	12	,,
13	पाटणबोरी	11	,,
14	अदिलाबाद	16	अदिलाबाद
15	कौसल्यापुर	13	,,
16	मांडवी	11	,,
17	तलमडगु	15	,,
18	गुडीहतनूर	11	,,
19	इच्छोडा	8	,,
20	निरडगोंडी	11	,,
21	गोपाल पेठ	13	,,
22	निर्मल	5	,,
23	सुवर्णपुर	8	,,
24	बालकोंडा	11	निजामाबाद
25	आरमूर	10	,,
26	निजामाबाद	17	,,
27	डिचपल्ली	10	,,
28	कलवरल	11	,,
29	कामारेड्डी	11	,,
30	रामायम् पेठ	17	मेड़क
31	वडियारम्	9	,,
1.4.51	तूपरान	8	,,
2	कोचारम्	8	,,
3	मेडचल	8	हैदराबाद
4	बोलारम	7	,,
5	सिकंदराबाद	7	,,
6	हैदराबाद	5	,,
7से14	शिवरामपल्ली	5	,,

तारीख	गांव	मील	जिला
19	तंगलपल्ली		नलगोंडा
20	सरवेल		,,
21	वाविळापल्ली	13	,,
22	सिवन्नागुडा		,,
23	तिरगल्लापल्ली	11	,,
24	नागिल्ला		महबूबनगर
25	अजलापुरम्		,,
26	तुरपल्ली	12	नलगोंडा
27	देवरकोंडा		,,
28	निरडगोम		,,
29	पेदामुंगल		,,
30	ओटकापल्ली		,,
1.5.51	चलकूर्ति		,,
2	राजावरम्		,,
3	विरलापल्ली		,,
4	वाडेपल्ली		,,
5	पालखेड		,,
6	चिल्लेपल्ली		,,
7	मिरियालगुडा		,,
8	कामारेड्डीगुडा		,,
9	राजपेठ		,,
10	नलगोंडा		,,
11	पज्जोर		,,
12	चरकूपल्ली		,,
13	सूर्यपेठ		,,
14	चंदुपाटला		,,
15	नायकम्गुडा		वरंगल
16	मेडपल्ली	14	,,
17	चिरुमाधवरम्		,,
18	कान्हापुरम्	10	,,
19	कोदनूर		,,

24	बलपाला	13	वरंगल
25	महबूबाबाद		,,
26	मुकपाल	12	,,
27	कल्लाडी	13	,,
28-29	गविचिराला		,,
30	यल्कातूर्ति		करीमनगर
31	हुजूराबाद	8	,,
1.6.51	जम्मीकुंठा		,,
2	पोतकापल्ली		,,
3	कोलनूर		,,
4	पदोपल्ली		,,
5	इसमपेठ	14	,,
6-8	मंचेरिआल		अदिलाबाद
9	बेलमपल्ली	15	,,
10	रेबना	15	,,
11	आसफाबाद		,,
12	बांकडी		,,
13	देवड़ा		,,
14	राजुरा		,,
15	बल्लारपुर		चांदा
16	चांदा		,,
17	तडाली		,,
18	भांदक		,,
19	चंदनखेडा	15	,,
20	शेगांव		,,
21	वरोडा		,,
22	मांगली		,,
23	नांदुर		,,
24	हिंगनघाट		वर्धा
25	येसंबा		,,
26	सेवाग्राम		,,
27.6 से 11.9.51	परंधाम		,,
12	सेलडोह	14	,,
13	गुमगांव	20	नागपुर
14	नागपुर	10	,,

19	छिंदवाडा	15	छिंदवाड़ा
20	सिंगोड़ी	13	,,
21	अमरवाड़ा	12	,,
22	सुरलाखापा	13	,,
23	हरई	14	,,
24	कुंडाली	12	
25	नरसिंहपुर	16	
26	करेली	13	
27	बरमान	14	
28	तितरपानी	14	
29	देवरी	13	
30	गौरझामर	14	
1.10.51	सुरखी	10	सागर
2-3	सागर	18	,,
4	मेहेर	13	,,
5	रजवांस	13	,,
6	मालथोन	12	झांसी
7	विरधा	18	,,
8	ललितपुर	12	,,
9	खितवास	12	,,
10	महरौनी	12	टीकमगढ़
11	टीकमगढ़	13	,,
12	कुराई	14	,,
13	जेवरां	12	,,
14	पृथ्वीपुर	11	,,
15	निवाड़ी	12	झांसी
16	चिरगांव	18	,,
17	बड़ागांव	9	,,
18	झांसी	11	,,
19	दतिया	18	,,
20	उपराया	10	
21	डबरा	14	
22	जौरासी	14	
23	लश्कर	14	
24	बामोर	13	

तारीख	पड़ाव	दूरी	जिला
29	आग्रा	9	आग्रा
30	रणकुता	14	
31	बरारी	14	
1-2.11.51	मथुरा	11	
3	सोनई	13	
4	हाथरस	11	
5	सासनी	7	-
6	अलीगढ़	14	अलीगढ़
7	गभाना	13	
8	खुर्जा	17	
9	बुलंदशहर	11	
10	सिकंदराबाद	11	
11	दादरी	13	
12	गाजियाबाद	14	
13 से 23	दिल्ली (राजघाट)	14	
24	सिरोली	13	मेरठ
25	डौला	13	,,
26	जानी	13	,,
27	खरखौंदा	17	,,
28	मेरठ	12	,,
29	सरधना	14	,,
30	खतौली	14	मुजफ्फरनगर
1.12.51	मुजफ्फरनगर	16	,,
2	देवबंद	17	सहारनपुर
3	कोटा	17	,,
4	सहारनपुर	9	,,
5	बेहट	16	,,
6	बादशाहीबाग	12	,,
7	टिमली	8	देहरादून
8	कालसी	17	,,
9	भाऊवाला	15	,,
10	देहरादून	16	,,
11	डोईवाला	12	,,
12	ऋषीकेश	16	,,
13	हरिद्वार	15	सहारनपुर
18	नगीना	16	बिजनौर
19	धामपुर	12	,,
20	रतनगढ़	18	,,
21	चुचैला	10	मुरादाबाद
22	गजरौला	12	,,
23	अमरोहा	13	,,
24	चुहड़भर	12	,,
25	मुरादाबाद	13	,,
26-27	रामपुर	16	रामपुर
28	स्वार	15	,,
29	काशीपुर	16	नैनीताल
30	बाजपुर	13	,,
31	कालाडूंगी	15	,,
1.1.52	हल्दवानी	13	,,
2	लालकुआं	10	,,
3	कीछा	10	,,
4	बहेड़ी	11	बरेली
5	चमरोआ	12	,,
6	नवाबगंज	15	,,
7	पीलीभींत	14	पीलीभींत
8	कल्याणपुर	7	,,
9	माधवटांडा	15	,,
10	घुंघचाई	15	,,
11	देवरिया	11	,,
12	बिसलपुर	11	,,
13	बुधौली	11	बरेली
14	फरीदपुर	10	,,
15	बरेली	13	,,
16	बल्लिया	13	,,
17	आंवला	11	,,
18	कुंवरगांव	11	,,
19	बदायूं	10	बदायूं
20	उझानी	9	,,
21	नगरिया	13	,,
22	कासगंज	13	एटा

27	कुरावली	11	मैनपुरी
28	मैनपुरी	14	,,
29	करहल	17	इटावा
30	इटावा	16	,,
31	बरालोकपुर	15	,,
1.2.52	किशनी	9	मैनपुरी
2	बेवर	14	,,
3	मुहमदाबाद	11	फर्रुखाबाद
4	फर्रुखाबाद	13	,,
5	कमालगंज	11	,,
6	खमौरा	12	हरदोई
7	दुर्गागंज	16	,,
8	हरदोई	16	,,
9	सकाहा	11	,,
10	शहाबाद	11	,,
11	सेहरामऊ (दक्षिणी)	7	शहाजहांपुर
12	शहाजहांपुर	12	,,
13	कोरोकुंइयां	10	,,
14	पवांया	6	,,
15	खुटार	14	,,
16	मैलानी	12	लखीमपुर
17	छत्तीपुर	16	,,
18	गोलागोकर्णनाथ	8	,,
19	कैम्हरा	13	,,
20	लखीमपुर	10	,,
21	हरगांव	13	सीतापुर
22	सीतापुर	13	,,
23	परसेंडी	14	,,
24	बिसवां	14	,,
25	रेऊसा	14	,,
26	कोलैला	12	बहराइच
27	रमपुरवां	8	,,
28	बहराइच	13	,,
29	गिलौला	13	,,
1.3.52	इकौना	11	,,
2	श्रावस्ती	8	गोंडा

6	पिपरा	15	गोंडा
7	इटईरामपुर	16	,,
8	मसकिनवां	17	,,
9	बभनान	10	बस्ती
10	टिनिच	10	,,
11	बस्ती	11	,,
12	रुधौली	17	,,
13	बांसी	14	,,
14	धानी	17	गोरखपुर
15	फरेंदा	8	,,
16	पीपीगंज	12	,,
17-18	गोरखपुर (लच्छीपुर)	12+3	,,
19	चौरीचौरा	16	,,
20	देवरिया	16	देवरिया
21	गडेर	7	,,
22	बरहज	10	,,
23	घोसी	21	आजमगढ़
24	दोहरीघाट	13	,,
25	जियानपुर	16	,,
26	आजमगढ़	12	,,
27	मुहमदाबाद	15	,,
28	मऊ	13	,,
29	बिलौंझा	13	बलिया
30	सीयर	15	,,
31	नगरा	13	,,
1.4.52	रतसंड	14	,,
2	बलिया	14	,,
3	चितबडागांव	11	,,
4	नरही	7	गाजीपुर
5	कोटवानारायणपुर	11	,,
6	मुहमदाबाद	13	,,
7	गाजीपुर	13	,,
8	नंदगंज	13	,,
9	सैदपुर	11	,,
10	बलुआ	11	वाराणसी
11	[illegible]	[illegible]	[illegible]

22	मड़ियाहू	9	जौनपुर
23	जौनपुर	14	,,
24	गोराबादशाहपुर	9	,,
25	मेहेरवां	13	,,
26	शाहगंज	14	,,
27	सुरहुरपुर	14	फैजाबाद
28	अकबरपुर	16	,,
29	गुसांईगंज	15	,,
30	पूरा बाजार	13	,,
1.5.52	फैजाबाद	13	,,
2	सुचितागंज	12	,,
3	शुजागंज	17	बाराबंकी
4	दर्याबाद	14	,,
5	सफ्दरगंज	14	,,
6	बाराबंकी	12	,,
7	चिनहट	11	लखनऊ
8-9	लखनऊ	9	,,
10	बंथरा	14	,,
11	नवाबगंज	12	उन्नाव
12	उन्नाव	13	,,
13-14	कानपुर	11	कानपुर
15	सचेंडी	14	,,
16	बारा	11	,,
17	डींग	10	,,
18	पुखरांया	5	,,
19	काल्पी	9	जालौन
20	आटा	12	,,
21	ओरइ	11	,,
22	डकोर	11	,,
23	इटैलिया	14	हमीरपुर
24	राठ	14	,,
25	पनवाड़ी	13	,,
26	कुलपहाड़	14	,,
27	महोबा	13	,,
28	कबरई	12	,,

2	शिवरामपुर	12	बांदा
3	पहाड़ी	14	,,
4	राजापुर	12	,,
5	सरधुवा	7	,,
6	कमासीन	13	,,
7	किशुनपुर	12	फतेहपुर
8	खागा	10	,,
9	बहरामपुर	11	,,
10	फतेहपुर	12	,,
11	मोजमाबाद	13	,,
12	लालगंज	12	रायबरेली
13	अटौरा बुजुर्ग	9	,,
14	रायबरेली	10	,,
15	टेकारी	10	,,
16	जायस	15	,,
17	गौरीगंज	10	सुलतानपुर
18	अमेठी	10	,,
19	धम्मोर	10	,,
20	सुलतानपुर	11	,,
21	त्रिसुण्डी	12	,,
22	प्रतापगढ़	14	प्रतापगढ़
23	छेत्रपालगढ़	16	,,
24	शिवगढ़	12	इलाहाबाद
25	इलाहाबाद	13	,,
26	करछना	16	,,
27	मेजारोड	12	,,
28	बामपुर	13	,,
29	विजयपुर	12	मिर्जापुर
30	मिर्जापुर	16	,,
1.7.52	मोहनपुर	10	,,
2	चुनार	14	,,
3	शेरपुर	10	,,
4.7 से 11.9.52	वाराणसी	13	वाराणसी
12	मुगलसराय	10	,,
13	सैयदराजा		,,

18	डेहरी	15	शाहाबाद
19	नासरीगंज	16	,,
20	विक्रमगंज	13	,,
21	नावानगर	12	,,
22	इटारही	12	,,
23-24	बक्सर	8	,,
25	डुमरांव	10	,,
26	ब्रह्मपुर	11	,,
27	बिहिया	12	,,
28	धमरा	10	,,
29	आरा	9	,,
30	अखगांव	10	,,
1.10.52	वागा	9	,,
2	पालीगंज	8	पटना
3	विक्रम	9	,,
4	बिहटा	8	,,
5	मनेर	7	,,
6	छपरा	18	सारन
7	माझी	8	,,
8	एकमा	8	,,
9	महराजगंज	10	,,
10	सिवान	10	,,
11	मीरगंज	10	,,
12	बडहरिया	9	,,
13	गोपालगंज	10	,,
14	बरौली	10	,,
15	गोरियाकोठी	10	,,
16	बसंतपुर	9	,,
17	मसरख	9	,,
18	देवरिया	9	,,
19	अमनौर	10	,,
20	परसा	9	,,
21	शीलपुर	9	,,
22	सोनपुर	10	,,
23-25	पटना	5	पटना

30	बेला	7	गया
31	टेकारी	9	,,
1.11.52	राजपुर	9	,,
2	गया	8	,,
3	बोधगया	7	,,
4	शर्मा	14	,,
5	अमारुत	11	,,
6	शेरघाटी	10	,,
7	आमसा	10	,,
8	रानीगंज	10	,,
9	देव	10	,,
10	औरंगाबाद	8	,,
11	अंबा	10	,,
12	बभंडी	10	पलामू
13	छतरपुर	10	,,
14	नावा	11	,,
15	रजहारा	10	,,
16	डाल्टेनगंज	11	,,
17	लेस्लीगंज	11	,,
18	सतबरवा	10	,,
19	मनीका	9	,,
20	लातेहार	13	,,
21	सासन	11	,,
22	चंदवा	6	,,
23	बड़की चांपी	11	रांची
24	लोहरदग्गा	10	,,
25	कुरु	11	,,
26	ओपा	10	,,
27	मांडर	9	,,
28	रातु	9	,,
29	रांची	7	,,
30	तिरिल	7	,,
1.12.52	कालामाटी	10	,,
2	खूंटी	10	,,
3	मूरहू	10	,,

8	चक्रधरपुर	6	सिंहभूमि
9	खूंटपानी	8	,,
10	चाईबासा	8	,,
11	सरायकेला	14	,,
12	कालावेरा	10	,,
13	जमशेदपुर	12	,,
14	कांडरवेरा	11	मानभूमि
15.12 से 11.3.53	चांडिल	9	,,
12	नीमडी	7	,,
13	मालती	6	,,
14	बलरामपुर	7	,,
15	बड़ा उरमा	7	,,
16	कांटाडीह	7	,,
17	पुरुलिया	10	,,
18	लागदा	4	,,
19	सिंदरी	7	,,
20	गढ़जयपुर	8	,,
21	बेगुन कोदर	9	,,
22	झालदा	7	,,
23	महतो मारा	8	,,
24	वोरलंगा	10	हजारीबाग
25	गोला	8	,,
26	पेटरवार	10	,,
27	टेबु	8	,,
28	गोमिया	6	,,
29	बेरमो	10	,,
30	चपरी	9	,,
31	खुंटहा	10	,,
1.4.53	डुमरी	10	,,
2	छछंदो	10	,,
3	कठवारा	9	,,
4	गिरिडीह	10	,,
5	घर चांची	12	,,
6	मिर्जागंज	10	,,
7	कादंबरी	9	,,

12	कोड़रमा	8	हजारीबाग
13	दिवौर	12	,,
14	रजौली	8	गया
15	अकबरपुर	7	,,
16	नवादा	9	,,
17	मंडरा	9	,,
18	फुलडीहा	9	,,
19	कौआकौल	9	,,
20	गुलनी	9	,,
21	पकरीबरांवा	10	,,
22	वारसलीगंज	9	,,
23	ओढ़नपुर	10	,,
24	नादिरगंज	10	,,
25	हिसुआ	10	,,
26	खनवां	7	,,
27	सिरदला	7	,,
28	फतेहपुर	14	,,
29	तरवां	11	,,
30	मीरगंज	7	,,
1.5.53	भिंडस	8	,,
2-3	गया	7	,,
4	चेरकी	11	,,
5	गुरुआ	9	,,
6	बालासोत	9	,,
7	भलुहार	7	,,
8	इमामगंज	6	,,
9	मैंगरा	6	,,
10	बिकोपुर	7	,,
11	चक	11	पलामू
12	मनातु	7	,,
13	सिलदिलिया	14	,,
14	करार	7	,,
15	तरहसी	12	,,
16	किशुनपुर	8	,,
17	लामीपतरा	10	,,

22	विशुनपुरा	8	पलामू
23-27	नगर उटारी	10	,,
28	रंका	44	,,
29-31	डाल्टेनगंज	33	,,
1.6.53	कौड़िया सूईया	4	,,
2	केथकी	5	,,
3	पोखरी	5	,,
4	बरवाडीह	8	,,
5	छिपादोहर	8	,,
6	मुन्डू	8	,,
7	गारु	6	,,
8	मारोमार	7	,,
9	वोरसाल	7	,,
10	अकसी	8	,,
11	महुआडाड	8	,,
12	वराही	8	,,
13-14	नेतरहाट	8	,,
15	सालेमनावा टोली	8	रांची
16	बिसुनपुर	7	,,
17	आदर	9	,,
18	घाघरा	6	,,
19	टोटो	11	,,
20	गुमला	7	,,
21	बधिमा	7	,,
22	पालकोट	8	,,
23	सेमरा	7	,,
24	गुमला	8	,,
25	खोरा	8	,,
26	नागफेरी	7	,,
27	सिंसई	9	,,
28	भरमो	8	,,
29	बेड़ों	9	,,
30	नगड़ी	8	,,
1.7.53 से 7.7	रांची	9	,,
8	बूटी	5	,,

13	रामगढ़	13	हजारीबाग
14	कुज्जू	7	,,
15	मांडू	6	,,
16	चरही	6	,,
17	मोरागी	6	,,
18	हजारीबाग	9	,,
19	वोंगा	6	,,
20	इचाक	4	,,
21	दाउजीनगर	7	,,
22	पदमा	5	,,
23	खुराहर	7	,,
24	बरही	3	,,
25	पांडेवारा	6	,,
26	ढूट्टी	6	,,
27	चौपारन	6	,,
28	दनुवा	7	,,
29	काहूदाग	7	गया
30	भदेया	6	,,
31	डोभी	6	,,
1.8.53	सहदेवखाप	6	,,
2	बोधगया	6	,,
3-4	गया	7	,,
5	सादीपुर	6	,,
6	सरैया	4	,,
7	खिजिरसराय	5	,,
8	बनवरिया	4	,,
9	हुलासगंज	6	,,
10	इसलामपुर	7	पटना
11	एकंगरसराय	5	,,
12	हिलसा	5	,,
13	भतहर	6	,,
14	नूरसराय	6	,,
15	सलेमपुर	6	,,
16	बिहारशरीफ	3	,,
17	नालंदा	5	,,

22	माउर	2	मुंगेर
23	फरीदपुर	5	,,
24	शेखपुरा	7	,,
25	कैथमा	7	,,
26	चेबारा	5	,,
27	तुरही	6	,,
28	सिकंदरा	5	,,
29	महादेव सिमरिया	5	,,
30	जमुई	6	,,
31	मलेपुर	5	,,
1.9.53	बरहट	3	,,
2–5	खादीग्राम	6	,,
6	कटौना	6	,,
7	परसंडा	7	,,
8	केशेपुर	4	,,
9	झाझा	5	,,
10	सोनो	7	,,
11	वटिया	7	,,
12	वामदह	7	,,
13	चकाई	5	,,
14	किया जोरी	6	,,
15	पुनासी	8	संथाल परगना
16	रोहिणी	10	,,
17	चंदाडीह	8	,,
18-19	देवघर	9	,,
20	पारडीह चनन	7	भागलपुर
21	इनारा वरन	7	,,
22	कटोरिया	7	,,
23	करझौंसा	6	,,
24	जमदाहा	7	,,
25	जवरा	7	,,
26	मंदार विद्यापीठ	8	,,
27	वाराहाट	7	,,
28	वांका	8	,,
29	पुनसिया	7	,,
4	सवौर	6	भागलपुर
5	भागलपुर	8	,,
6	कजरैली	8	,,
7	अमरपुर, डुमरांत्रा	8	,,
8	मेढियानाथ	9	,,
9	शाहकुण्ड	8	,,
10	अकबरनगर	9	,,
11	सुलतानगंज	9	,,
12	असरगंज	8	मुंगेर
13	तारापुर	12	,,
14	गौंगाई	10	,,
15	संग्रामपुर	4	,,
16	मिल्की	9	,,
17	खड़गपुर	7	,,
18	वृंदावनगालीमपुर	7	,,
19	वरियारपुर	5	,,
20-21	मुंगेर	10	,,
22	जमालपुर	6	,,
23	शिवकुणु	9	,,
24	अमरपुर	6	,,
25	सूर्यगढ़ा	7	,,
26	रामचंद्रपुर	6	,,
27	लखीसराय	6	,,
28	बड़हिया	10	,,
29	मोकामा	10	पटना
30	तेघरा	4	उत्तर मुंगेर
31	बिहट	8	,,
1.11.53	बेगूसराय	7	,,
2	मझौल	10	,,
3	शकरपुरा	10	,,
4	गंगौर	8	,,
5	खगड़िया	8	,,
6	मानसी	5	,,
7	गोगरी	11	,,
8	नया गांव	8	,,

13	सदैपुर	8	उ. भागलपुर
14	कहलगांव	5	,,
15	इशीपुर	11	,,
16	शेरमारी बाजार	7	,,
17	कामतटोला	8	,,
18	रानी दियरा	5	,,
19	कुरसैला	6	पूर्णिया
20	टीकापट्टी	7	,,
21	ब्रह्मज्ञानी	8	,,
22	विष्तेपुर	8	,,
23	धमदाहा	5	,,
24	वरेटा	12	,,
25	कामाख्यास्थान	10	,,
26	काझा	6	,,
27-28	पूर्णिया	9	,,
29	कसवा	9	,,
30	जलालगढ़	7	,,
1.12.53	वागनगर	7	,,
2	अररिया	8	,,
3	छतियौना	7	,,
4	रानीगंज	8	,,
5	भटगावां	8	,,
6	जानकीनगर	9	,,
7	मुरलीगंज	8	सहरसा
8	वभनगामा	8	,,
9	किशुनगंज	8	,,
10	आलमनगर	12	,,
11	शाहजादपुर	9	,,
12	बड़गांव	9	,,
13	पतरघट	7	,,
14	मधेपुरा	8	,,
15	श्री नगर	12	,,
16	सहरसा	12	,,
17	चंद्रायण	5	,,
18	सुखपुर	10	,,

23	झंझारपुर	10	दरभंगा
24	कोईलख	10	,,
25	मधुबनी	10	,,
26	मकरमपुर	10	,,
27	नेहरा	10	,,
28	सोनकी	12	,,
29	दरभंगा	8	,,
30	सिंहवारा	13	,,
31	धनौर	10	मुजफ्फरपुर
1.1.54	उनसर	8	,,
2	सिमरा	10	,,
3	मुजफ्फरपुर	15	,,
4	भटौना	10	,,
5	सरैय्या	9	,,
6	लालगंज	14	,,
7	भगवानपुर	11	,,
8	कन्हौली	6	,,
9	हाजीपुर	12	,,
10-12	पटना	5	पटना
13	फतहपुर	11	,,
14	फतुहां	9	,,
15	खुशरूपुर	6	,,
16	बख्तियारपुर	9	,,
17	बाढ़	10	,,
18	सकसोहरा	7	,,
19	हरनौत	10	,,
20	चंड़ी	12	,,
21	नगरनौसा	5	,,
22	सिगियावां	7	,,
23	वीर	9	,,
24	केउरा हॉल्ट	8	,,
25	कियावां	8	,,
26	नौवतपुर	9	,,
27	ऐन खां सिंघारा	10	,,
28	सेहरा	8	,,

2	कुर्था	7	गया
3	लारी	6	,,
4	मउ	10	,,
5	खटांगी	7	,,
6	तुरुकतेलपा	6	,,
7	देवकुंड	8	,,
8	शहरतेलपा	5	,,
9	करपी	5	,,
10	बेलखरा	5	,,
11	अरवल	6	,,
12	वलिदाद	6	,,
13	बेलसार	6	,,
14	दाउदनगर	10	,,
15	हसपुरा	10	,,
16	गोह	11	,,
17	कोंच	10	,,
18–23	टेकारी	13	,,
24	परैया	8	,,
25	डबूर	8	,,
26	रफीगंज	6	,,
27	जाखिम	10	,,
28	मलवां	13	,,
1.3.54	ओबरा	7	,,
2	डिहरा	10	,,
3	बारुन	12	,,
4	बरेन	11	,,
5	नवीनगर	9	,,
6-7	हुसेनाबाद	8	पलामू
8	पोलडीह	10	,,
9	पिपरा	6	,,
10	हरिहरगंज	8	,,
11	कुटुंबा	8	गया
12	सुंदरगंज	9	,,
13	पोइयावां	8	,,
14	वार	8	,,

19	दूवा	5	गया
20	वरवां	7	,,
21	पूना	8	,,
22	पड़रिया	7	,,
23	बसाढ़ी	6	,,
24	जानी विगहा	7	,,
25	इसरवें	7	,,
26	चौमार	6	,,
27	कैंनार	6	,,
28	सहिया	8	,,
29	रसलपुर	8	,,
30से 2.4.54	गया	7	,,
3	अमवां	5	,,
4	पांका डीह	5	,,
5	सेलारू	5	,,
6	बजउरा	6	,,
7	शेरघाटी	11	,,
8	निसखा	10	,,
9–11	खजवती	15	,,
12–25	बोधगया	4	,,
26	मटिहानी	7	,,
27	कलंदरा कचहरी	6	,,
28	शेरघाटी	6	,,
29	सांबू	8	,,
30	नगमतिया	10	,,
1.5.54	कनबहरी	8	,,
2-3	औरंगाबाद	6	,,
4	सिरिस	8	,,
5	डालमियानगर	10	शाहाबाद
6	पटनवां	5	,,
7	तिलौथू	5	,,
8	धाहू ढाढ़	7	,,
9	सिकरिया	6	,,
10	दरियांव	5	,,
11	सदोखर	5	,,

16	अखलासपुर	8	शाहाबाद
17	मोहनिया	8	,,
18	लहुरीवारी	6	,,
19	सोहसा	7	,,
20	कोचस	7	,,
21	दिनारा	8	,,
22	नटवार	6	,,
23	सूर्यपुरा	6	,,
24	कोआथ	8	,,
25	पीरो	8	,,
26	जमुआंव	4	,,
27	जगदीशपुर	9	,,
28	बिमवां	8	,,
29	असनी	6	,,
30	आरा	6	,,
31	गुंडी	7	,,
1.6.54	गजियापुर	6	,,
2	सिताबदियारा	3	सारन
3	ताजपुर	5	,,
4	सिसवन	6	,,
5	मुरारपट्टी	7	,,
6	खुंजवा	5	,,
7	अर्कपुर	5	,,
8	जीरादेई	5	,,
9	फुलवरिया फार्म	6	,,
10	हथुआ	6	,,
11	जगरनाथा	6	,,
12	कुचायकोट	5	,,
13	विश्वंभरपुर	6	,,
14	बधना	6	चंपारण
15	पखनाहा	7	,,
16	बेतिया	8	,,
17	गुरबलिया	6	,,
18	पकरीहार	6	,,
19	लौरिया	6	,,
24	साठी	7	चंपारण
25	चनपटिया	7	,,
26	वृंदावन	7	,,
27	सरिसवा	7	,,
28	मझौलिया	7	,,
29	सुगौली	8	,,
30	कनछेदवा	9	,,
1.7.54	अरेराज	7	,,
2	मछरगांवा	7	,,
3	तुरकबलिया	6	,,
4	मोतीहारी	8	,,
5	भखरिया	7	,,
6	मधुबनी आश्रम	7	,,
7	ढाका	5	,,
8	बखरी	6	,,
9	चैता	7	,,
10	पिपरा स्टेशन	7	,,
11	चकिया	8	,,
12	बाकरपुर	8	,,
13	केसरिया	7	,,
14	साहेबगंज	8	मुजफ्फरपुर
15	मनाईन	7	,,
16	बरहिमा बाजार	8	,,
17	कथइया	7	,,
18	मोतीपुर	7	,,
19	नरियार कोठी	6	,,
20	भोलाईपुर	9	,,
21	सिरखिया मठ	9	,,
22	वैरिया	5	,,
23–30	मुजफ्फरपुर	6	,,
31	तुर्की	8	,,
1.8.54	कुढ़हनी	6	,,
2	सोंधो	7	,,
3	महुआ	7	,,
4	चकउमर	8	,,

9	बाजीदपुर	6	दरभंगा
10	दलसिंगसराय	7	,,
11	पतेली	8	,,
12	रुपौली	5	,,
13	समस्तीपुर	6	,,
14	हासा	3	,,
15	सिंधिया	8	,,
16	समरथा	6	,,
17	नरहन	6	,,
18	रोसड़ा	3	,,
19	सिंगियाथाना	11	,,
20	सुंभा वंगरहटा	6	,,
21	पोखराम	8	,,
22	बंदा	6	,,
23	हथौड़ी	6	,,
24	वारिसनगर	6	,,
25	बीरसिंहपुर	6	,,
26	बैनी (पूसा रोड)	6	,,
27	सादीपुर	5	,,
28	पातेपुर	7	मुजफ्फरपुर
29	सकरा	8	,,
30	रघुनाथपुर	10	,,
31	मुजफ्फरपुर	8	,,
1.9.54	भीषमपुर	6	,,
2	छपरा	8	,,
3	जनाढ़	7	,,
4	सैदपुर	6	,,
5	बेलसंड	10	,,
6	परसौनी	5	,,
7	शिवहर	8	,,
8	धनकौल	6	,,
9	रेवासी	5	,,
10	बभनगामा	7	,,
11	सीतामढ़ी	7	,,
12	वथनाहा	7	,,
17	पुपरी	7	मुजफ्फरपुर
18	दोघरा आश्रम	9	दरभंगा
19	कमतौल	8	,,
20	परसौनी	7	,,
21	धकजरी	7	,,
22	बेनीपट्टी	4	,,
23	साहरघाट	5	,,
24	खिरहर	7	,,
25	उमगांव	7	,,
26	छतौनी	7	,,
27	जयनगर	5	,,
28	पदमाग्रूप	6	,,
29	खजौली	8	,,
30	बाबू बरही	8	,,
1.10.54	खुटौना	9	,,
2	सिसवार	7	,,
3	नरहिया	6	,,
4	लौकही	6	,,
5	भरफोरी	6	,,
6	कुनौली बाजार	7	सहरसा
7	करजाइन बाजार	10	,,
8	दौलतपुर	6	,,
9	गनपतगंज	9	,,
10	पिपरा बाजार	9	,,
11	मौरा	9	,,
12	त्रिवेणीगंज	7	,,
13	कोरियापट्टी	6	,,
14	छातापुर	8	,,
15	जीवछपुर	8	,,
16	बलुवा बाजार	8	,,
17	नरपतगंज	8	पूर्णिया
18	कन्हौली	8	,,
19	फारबिसगंज	7	,,
20	कुशमाहा	6	,,
21	कपड़फोड़ा	6	,,

26	बहादुरगंज	6	पूर्णिया
27	कुंभिया हाट	8	,,
28	सुखानी	7	,,
29	ठाकुरगंज	9	,,
30	सोनापुर	9	,,
31	चोपड़ा	6	,,
1-2.11.54	इस्लामपुर	14	,,
3	कचनाहाट	8	,,
4	पांजीपाड़ा	6	,,
5	किशनगंज	6	,,
6	कानकी	9	,,
7	निचितपुर	8	,,
8	नवाबगंज पोखरिया	7	,,
9	कल्याणगांव	7	,,
10	वारसोईघाट	10	,,
11	सालमारी	6	,,
12	सोनौली	9	,,
13	चांदपुर	8	,,
14	भटगामा	5	,,
15	रानीपतरा	7	,,
16	बिनोदपुर	8	,,
17	कटिहार	9	,,
18	कुमारीपुर	8	,,
19	मनीहारी	8	,,
20	वाखरपुर दियारा	10	भागलपुर
21	साहेबगंज	11	संथाल परगना
22	मिर्जाचौकी	10	,,
23	चपरी	9	,,
24	वलबड्डा	9	,,
25	महगामा	8	,,
26	पत्थरगामा	7	,,
27	लोहरडीहा बाजार	9	,,
28	बाओरीजोर	8	,,
29	बोरियो	10	,,
30	वृंदावन	8	,,

5	शहरगामा	10	संथाल परगना
6	महेशपुर राज	9	,,
7	रौदीपुर	9	,,
8	पकुड़िया	8	,,
9	सरस डंगाल	9	,,
10	शिकारी पाड़ा	9	,,
11	गान्दो	8	,,
12	दुमका	8	,,
13	रानी घाघर	14	,,
14	फतेहपुर	12	,,
15	चित्रा	9	,,
16	करों	8	,,
17	पविया	11	,,
18	जामताड़ा	6	,,
19	गेरिया	8	,,
20	केवटजाली	9	,,
21	कुमारडूबी	10	मानभूमि
22	निरसा	6	,,
23	गोविंदपुर	12	,,
24	धनबाद	7	,,
25	राजगंज	10	,,
26	मालकेरा	9	,,
27	झरिया	11	,,
28	बलियापुर	7	,,
29	चोलियामा	9	,,
30	रघुनाथपुर	9	,,
31	ढेकसिला	11	,,

[बिहारयात्रा के कुल 5567 मील ऊपर बताये हैं लेकिन वे आंकड़े ठीक नहीं हैं – कुल मील 6940 होते हैं।]

1.1.55	शालतोड़ा		बांकुड़ा (बंगाल)
2	पावड़ा		,,
3	मेजिया		,,
4	बन आशुरिया		,,
5	अमर कानन		,,

11 बांकादह बांकुड़ा
12 गड़बेता मेदिनीपुर
13 चंद्रकोना रोड ,,
14 शालबनि ,,
15 गोदापियाशाल ,,
16 मेदिनीपुर ,,
17 खड़गपुर ,,
18-19 बलरामपुर ,,
20 भेटिया ,,
21 खेजरा ,,
22 कुकाइ ,,
23 रसुलपुर ,,
24 नेकुड़सेनी ,,
25 दांतन ,,
26 लक्ष्मणनाथ रोड उड़ीसा यात्रा आरंभ
27 नाम्पो
28 बढ़ापाल
29 जामसूलि
30 मथानी
31 रूपसा
1.2.55 बैलिंगा
2 माणित्री
3 पूर्णा बारिपदा
4 अयोध्या
5 रेमुना
6 बालेश्वर
7 शेरगढ़
8 बहानगांबाजार
9 सोरो
10 जामझाड़ी
11 मैतापुर
12 भद्रक
13 गणीगंज
14-15 हाटड़िही
16 आनंदपुर

21 सुजनपुर
22 रामचंद्रपुर
23 सैयदपुर
24 प्रीतिपुर
25 राधारमणपुर
26 मानापुर
27 राजकनिका
28 औल
1.3.55 पट्टामुंडई
2 बोधगांव
3 मधुसागर
4 ठाकुरपाटणा
5 एंडरा
6 असुरेश्वर
7 नियाकुंडा
8 कनकपुर
9 डीहसाही
10 तग‌तंग
11 राणीपड़ा
12 बिरीबाटी
13 कटक
14 फुलनखरा
15 भुवनेश्वर
16 संगलेइ
17 दांडमुकुंदपुर
18 साक्षीगोपाल (सेवासदन)
19 चंदनपुर
20-31 पुरी
1.4.55 बेलदल
2 चंडीब्रह्मपुर
3 मलाग्राम
4 कोणार्क
5 बेगुनिया
6 निमापारा
7 रेखला

13	तारनोई	
14	खुर्दा	
15	सरुआ	
16	चकादा	
17-18	राजसुनाखला	
19	टांगान्नाही	
20-21	नयागढ़	
22	गोदीसाही	
23	नंदीघर	
24	ओड़गा	
25	रोहीबांक	
26	कराचुली	
27	कराड़बाड़ी	
28-29	बुगुड़ा	
30	बालीपदर	
1.5.55	भटनई	
2	आस्का	
3	पितल	
4-5	हिंजलीकाटु	
6		
7–11	ब्रह्मपुर	गंजाम
12	बालीपदा	,,
13	गोकर्णपुर	,,
14	दिगपहंडी	,,
15	पुड़ामारी	,,
16	तप्तपाणी	,,
17	लोहागुड़ी	,,
18	सिकुंडीपदर	,,
19	रानीखमा	,,
20	वाघमारी	,,
21	लुबारसिंगी	,,
22	छेलिगुड़ी	,,
23	सुंदरबा	,,
24	तुमन	,,
25	उदयगिरी	,,
30	जुंपापुर	कोरापुट
31	मेरिंग	,,
1.6.55	विक्रमपुर	,,
2-3	कुजेन्द्री	,,
4	चाकिंडा	,,
5	सूंटिढ़मिगि	,,
6	दुर्गी	,,
7	हजारीडांग	,,
8	विषमकटक	,,
9	कुटारागुड़ा	,,
10	डांगसुरुड़ा	,,
11	कुटारागुड़ा	,,
12	विषमकटक	,,
13	चाटिकोना	,,
14	भातपुर	,,
15	बुधुनी	,,
16	देवदल	,,
17	रायगड़ा	,,
18	जपाखाल	,,
19	गुमा	,,
20	कुंभी	,,
21	कुटली	,,
22	कुटिंगा	,,
23	लक्ष्मीपुर	,,
24	डुमरीपदर	,,
25	काकरीगुमा	,,
26	अंबिली अंबगुड़ा	,,
27	कोटागुड़ा	,,
28	डोंगरी	,,
29	कोरापुट	,,
30	देवदल	,,
1.7.55	जयपुर	,,
2	रेंडापल्ली	,,
3	बोरीगुम्मा	,,
4	कमरा	,,

9-10 डाबूगांव	कोरापुट	22 कुंभारढमिणी	कोरापुट
11 जपाखाल	,,	23 नानीरीगुड़ा	,,
12 मखिआ	,,	24 हाटमुनीगुड़ा	,,
13 नारागांव	,,	25 मुनिगुड़ा	,,
14 मिरगानगुड़ा	,,	26 शिवपदर	,,
15 नरसिंगुड़ा	,,	27-28 अंबादला	,,
16 मिरगानगुड़ा	,,	29 जगदलपुर	,,
17 आंवली	,,	30 आगुलि	,,
18 आंचला	,,	31-1.9.55 डांगसुरुड़ा	,,
19 फफुगांव	,,	2-3 हनुमंतपुर	,,
20 रानीगुड़ा	,,	4 जरापा	,,
21 कोरापुट	,,	5 यंकान्नागुड़ा	,,
22 डुमगगुड़ा	,,	6 बेलमगुड़ा	,,
23-24 सुनाबेड़ा	,,	7 श्रीगुड़ा	,,
25 दलिआंब	,,	8 गुड़ारी	,,
26 सेमिलीगुड़ा	,,	9 डेरीगांव	,,
27 मातलपुर	,,	10 बाभुनी	,,
28 भीतरगुड़ा	,,	11-12 गुणुपुर	,,
29 काकरीगुमा	,,	13 उकंबा	,,
30 डुमरीपदर	,,	14 पद्मपुर	,,
31 लक्ष्मीपुर	,,	15 खिलिंगराई	,,
1.8.55 पांगीपालुर	,,	16 पेनकम्	,,
2-3 नारायणपटना	,,	17 तुंबकोणा	,,
4 कुंभारी	,,	18 बड़मुलगा	,,
5 बंदगांव	,,	19 गरंडा	,,
6 आलमोंडा	,,	20 निलमगुड़ा	,,
7 राविकणा	श्रीकाकुलम् (आंध्र)	21-29 कुजेन्द्री	,,
8 पार्वतीपुरम्	,,	30 जगन्नाथपुर	,,
9 कोटीपाम	,,	1.10.55 वातीली	श्रीकाकुलम् (आंध्र)
10 केरड़ा	कोरापुट	2 भामिनी	,,
11 बड़राइसिंग	,,	3 कोथुरु	,,
12 पितामहल	,,	4 हीरामंडलम्	,,
13 कत्तापेटा	,,	5 नौथाला	,,
14 अटामुंडा	,,	6 सर्वकोटा	,,
15-16 सिकरपाई	,,	7 राणा	,,

12	चिल्कापालेम्		श्रीकाकुलम्
13	पोण्डुरु		,,
14	राजम्		,,
15	बोंडापाले		,,
16	चिपुरुपल्ली		,,
17	गरिविड़ी		,,
18	मोहदा		विशाखापट्टनम्
19	विजयनगरम्	8	,,
20	ढेंकाड़ा	6	,,
21	भोगपुरम्	6	,,
22	पोलेपल्ली	6	,,
23	भिमलीपट्टनम्	7	,,
24	परदेशीपालेम्	6	,,
25	येंडादा	6	,,
26	वॉल्टेयर	7	,,
27	विशाखापट्टनम्	3	,,
28	कानिथी	9	,,
29	पर्वदा	6	,,
30	अंकापल्ले	7	,,
31	तालापालेम्	9	,,
1.11.55	येल्लमनचिली	7	,,
2	इटिकोप्पक	8	,,
3	नक्कापल्ली	8	,,
4	गुंटापल्ली	8	,,
5	तुनी	10	पूर्व गोदावरी
6	अन्नवरम्	10	,,
7	कठिपुड़ी	8	,,
8	पिठापुरम्	10	,,
9	सामलकोटा	8	,,
10	काकिनाड़ा	8	,,
11	वेलंगी	10	,,
12	रामचंद्रपुरम्	8	,,
13	तापेश्वरम्	10	,,
14	काडियाम्	10	,,
15	राजमहेंद्री	8	,,

20	अमलापुरम्	9	पूर्व गोदावरी
21	नगरम् (मामिड़िकुडुरु)	8	,,
22	राजोलु	7	,,
23	पालाकोलु	9	पश्चिम गोदावरी
24	वीखासरम्	7	,,
25	भीमावरम्	7	,,
26	केसवरम्	10	,,
27	ताड़ेपल्लीगुड़म्	11	,,
28	तालुकु	11	,,
29	कानुरु		,,
30	निदादावोलु	10	,,
1.12.55	नेलातुरु	10	,,
2	देवरपल्ली		,,
3	चिन्मयगुड़म्		,,
4	कोयालागुड़म्		,,
5	झांगरेड़ीगुड़म्		,,
6	बोरमपालेम्		,,
7	जीलाकुरगुड़म्		,,
8	भोगोलु		,,
9	पेड़ावंगी		,,
10	इलुरु		,,
11	हनुमान जंक्शन	8	कृष्णा
12	गोलापल्ली	9	,,
13	नुझविड़	6	,,
14	अमिरीपल्ली	8	,,
15	नुत्रा	9	,,
16-19	विजयवाड़ा	6	,,
20	मंगलगिरी		गुंटूर
21	नांबुरु		,,
22	गुंटूर		,,
23	लाम		,,
24	लामाले		,,
25	अमरावथी		,,
26	कंचिक चेरला		कृष्णा
27	जुझुर		,,

1.1.56	तिरुवुर		कृष्णा
2	कालेर	9	खम्मामेठ
3	तल्लाड़ा	8	,,
4	एंकुर	8	,,
5	गुंडेपुडी	8	,,
6	सिरिपुरम्	9	,,
7	कोट्टेगुड़म्	6	,,
8	अंशतपल्लेयेल्लंडु	7	,,
9	टेकुलापले	7	,,
10	रगबिनगुडम्	9	,,
11	येल्लंडु	8	,,
12	स्तोक्कारापल्ली	8	,,
13	फुल्लुरु	8	,,
14	गारला	8	,,
15	राजोले	8	वारंगल
16	महबूबाबाद	8	,,
17	अय्यगुगरिपल्ली	7	,,
18	पुरुषोत्तमगुड़म्	8	,,
19	गुंडेपुडी	9	,,
20	येर्रपुड़ी	11	नलगोंडा
21	वेलुगुपल्ली	8	,,
22	जाजिरेड़ीगुड़ा	8	,,
23	येरुकुलापाडु	5	,,
24	वल्लाला	8	,,
25	काटंगुर	8	,,
26	नरकटपल्ली	9	,,
27	रामनापेट	9	,,
28	केलावरम्	8	,,
29	वेंकाममाडी	8	,,
30	पोचमपल्ली	6	,,
31	दातासिंगारम्	8	हैदराबाद
1.2.56	रापोल	8	,,
2	इब्राहिमपट्टम्	8	,,
3	तुर्कयामजाल	8	,,
4	सरुनगर	8	,,

10	नांदगांव	7	महबूबनगर
11	शादनगर	5	,,
12	मोगलगिड्डा	6	,,
13	कोंदुर्ग	6	,,
14	येलकिचेरला	8	,,
15	कुल्कचेरला	8	,,
16	वेंचेडु	8	,,
17	गुंडमाल	7	,,
18	मुड्डुर	7	,,
19	कोथाग	8	,,
20	धनवाड़ा	8	,,
21	मारिकल	6	,,
22	पहारदीपुर	7	,,
23	डेकुर	7	,,
24	मन्नेमकुडा	8	,,
25	महबूबनगर	8	,,
26	जड़चेरला	8	,,
27	अवांचा	8	,,
28	सिरसावड़ा	8	,,
29	सेपुर	8	,,
1.3.56	राहुपट्टीपेट	8	,,
2	मरिपल्ले	8	,,
3	तालकापल्ले	8	,,
4	पेड्डामुदनुर	8	,,
5	तिगापल्ली	8	,,
6	माधवरावपल्ली	8	,,
7	श्रीरंगपुरम्	8	,,
8	गुम्माडम्	8	,,
9	क्याथुर	8	,,
10	अलमपुर	8	,,
11-12	कुर्नूल	6	कुर्नूल
13	पेटापाडु	5	,,
14	नागलापुरम्	7	,,
15	अमदागुंटला	7	,,
16	कोंडुनूर	6	,,

21	कप्पाटा	6	कुर्नूल
22–24	अड़ोनी	6	,,
25	कान्नूरचेडु	8	,,
26	अलूर	8	,,
27	नागरिदोना	7	,,
28	चिप्पगिरी	6	,,
29	गुंटकल		अनंतपुर
30	कोनाकोंडला	5	,,
31	रघुलापाडु	8	,,
1.4.56	उर्वकोंडा	7	,,
2	पत्रोबालम्	8	,,
3	जल्लिपल्ली	7	,,
4	कोडेरु	8	,,
5	रातानुपल्ली	7	,,
6	अनंतपुर	8	,,
7	कोरापोडु	8	,,
8	बंदामिडीपले	6	,,
9	नयनपले	7	,,
10	मुट्चुकोटा	7	,,
11	तड़पात्री	8	,,
12	कोंडेपले	8	,,
13	दथापुरम्	7	कड़प्पा
14	गंदलुर	6	,,
15	खदेराबाद	7	,,
16	जम्मालमाडुगु	5	,,
17	देवगुड़ी	7	,,
18	प्रोड्डेतूर	8	,,
19	चापाड़	8	,,
20	आनंदाश्रम	5	,,
21	खाजीपेट	7	,,
22	चेन्नूर	8	,,
23	कड़प्पा	8	,,
24	कानमलोपले	8	,,
25	वोन्तिमिट्टा	7	,,
26	मंतापमपले	7	,,
27	गुंडलूर	7	

1.5.56	कुडूर	9	कडप्पा
2	सेट्टिगुंटा	8	,,
3	मामंदुर	9	चित्तूर
4	करकमपाडु	7	,,
5	तिरुपति	8	,,
6	खयामपेट	7	,,
7	के.आर्. राजकुट्टला	6	,,
8	पुत्तूर	8	,,
9	नगरी	8	,,
10	नेल्लत्तूर	7	,,
11	अरकाडुकुप्पम्	8	,,
12	तिरुवलमगुडु, तिरुवांगुड़ी	7	,,
13	तिरुवल्लूर		चिंगलपेट (तमिलनाड़)
14			
15	आवड़ी		मद्रास
16	अंबत्तूर		,,
17–19	मद्रास		,,
20	मौलीवाकम्		,,
21			
22	पेरंबुदुर		चिंगलपेट
23	तिरुमंगलम्		,,
24	तेन्नेरी		,,
25	राजमपेठ		,,
26से 6.6.56	कांचीपुरम्		,,
7	कलकादुर		,,
8	अवलूर		,,
9	किलपुत्तुर		,,
10	तमनूर		,,
11	कावाननु (दंडनूर)		,,
12	कल्यानकुलम्		,,
13	मारगल		,,
14	तिरुपुल्लिवनम्		,,
15	उत्तरमेरूर्		,,
16			
17	वयलूर		,,
18	[illegible]		

22			चिंगलपेट
23			,,
24	उलुथामंगलम्		,,
25	पुदुपट्टु		,,
26			,,
27	वेड़ाल		,,
28	चुनमपेट		द. अर्काट
29			,,
30			,,
1.7.56	ब्रह्मदेशम्		,,
2	गुरुवम्मापेट		,,
3	तिंडीवनम्		,,
4	उमकुर, ओमंदुर		,,
5	किलियापुर		,,
6	ओलिंडियमपट्टु		,,
7	इरंबाई		,,
8-9	पांडिचेरी		पांडिचेरी
10	इडयारपालयम्		द. अर्काट
10	किरुमम्बकम्		,,
11	कडलूर	7.4	,,
12	नेल्लिकुप्पम्	7	,,
12	मेल्लपट्टांबकम्	4.4	,,
13	पनरुती	5	,,
14	सेमाकोट्टाइ	4	,,
14	वीरपेरुमलनल्लूर	6.4	,,
15	थिरुनामनल्लूर	4	,,
15	पोदुर	6	,,
16	अलुन्दरपेट	7.2	,,
16	कुमारमंगलम्	4.4	,,
17	सेंबिमादेवी	5.6	,,
17	त्यागदुर्गम्	5	,,
18	कल्लकुरुचि	7.4	,,
18	उलगामकथान	3.7	,,
19	चिन्नसेलम्	6.6	,,
19	वसुदेवानूर	3.4	,,

22	पडुनायकनपालयम्	सेलम
22	कोट्टावाड़ी	,,
23	वलपड़ी	,,
23	बेलूर	,,
24	कट्टाशुपट्टी	,,
24	अयोध्यापटनम्	,,
25	गांधीग्राम, सेलम	,,
26	सूर्यमंगल	,,
26	पागलपट्टी	,,
27	ओमलूर	,,
27	पुसारी	,,
28	कालयमपट्टी	,,
28	वडहमपट्टी	,,
29	कणवायपुदुर	,,
29	केतनायकम्	,,
30	वसागौंडनुर	,,
30	मेनासी	,,
31	रायमपट्टी	,,
31	चिंदनापाडी	,,
1.8.56	मोरप्परु	,,
2	मन्वेनल्लूर	,,
2	इसमात्तूर	,,
3	आर्यकुलम्	,,
3	धर्मपुरी	,,
4-5	धर्मपुरी (सर्वो. पुरम्)	,,
6	माटलामपट्टी	,,
6	करीमंगलम्	,,
7	अगारम्	,,
7	वेल्लामपट्टी	,,
8	थोगरापल्ली	,,
8	संतूर	,,
9	अंजूर	,,
9	कृष्णगिरि	,,
10	चिनिमुचुर	,,
10	कावेरीपट्टनम्	,,

13	मल्लपुरम्	सेलम
13	पालकोडु	,,
14	पापारपट्टी	,,
14	इंदूर	,,
15	सोगतुर	,,
15	नल्लमपल्ली	,,
16	पालयमपुदुर	,,
16	तोपुर	,,
17		
17	मेचेरी	,,
18	कोटैपट्टी	,,
18	वनवासी	,,
19	अलकंठपुरम्	,,
19	चिन्नूर	,,
20	कुल्लमपट्टी	,,
20	एडपाड़ी	,,
21		
22-23	भवानी	कोयम्बतूर
24	कावंडपाड़ी	,,
24	पेरियपुलिउरम्	,,
25		,,
26	धवलपेट	,,
27		
28	नेरिंजीपेट	,,
28	सिंगसपेट	,,
29	गुरुवरेड्डियार	,,
30		
31		
1.9.56	नुक्कनायकन्पालयम	,,
1	एलुर	,,
2	काशीपालयम	,,
2	सत्यमंगलम्	,,
3	माक्कानायकन्पालयम्	,,
3		
4	गोपिचेट्टीपालयम्	,,
5	कुगलुर	,,

8	कुलंदैपालयम्	कोयम्बतूर
8	कोप्पाम्पालयम्	,,
9	पुजयमपुलयमपट्टी	,,
9	पुलियापट्टी	,,
10	दोड्डामपालयम्	,,
10	राजन्नगर	
11	राजनगर	,,
11	पुट्टकडनूर	,,
12	अम्मापालयम्	,,
12	चिनकल्लीपट्टी	,,
13	कणवुकराय	,,
13	पसूर	,,
14	मुंडीपालयम्	,,
14	सूरीपालयम्	,,
15	शैयूर	,,
15	पडूरपालयम्	,,
16	अविनाशी	,,
17	करुवलुर	,,
17	अन्नूर	,,
18	पुगलुर	,,
18	सिरुपुहईपुदुर	,,
19	मेट्टुपालयम्	,,
20	कारमडै	,,
20	मेकपालयम्	,,
21	पेरिनायकम्पालयम्	,,
22		
22	कोविलपालयम्	,,
23	वेलाकिनारु	,,
24	चित्रतडागम्	,,
24	अेड़यारपालयम्	,,
25	वीरकालयम्	,,
25	चूड़ापाणी	,,
26		,,
26	टोंडामुटुर	,,
27	अलंदुराई	,,

29	मधुकरै	कोयम्बतूर
30	कोड़ीपालयम्	,,
30	पालातुराई	,,
1-2.10.56	कोयम्बतूर	,,
3	पीलमेडु	,,
3	सिंगनल्लुर	,,
4	नंजूड़ापुरम	,,
4	वेल्लालूर	,,
5	चेट्टीपालयम्	,,
5	कट्टापाल्येम्	,,
6	इरुकूर	,,
6	मुलुर	,,
7	लक्ष्मीनायकम्पालयम्	,,
7	अप्पनायकन्पट्टी	
8	चंद्रपुरम्	,,
8		
9	वदमचेरी	,,
9	मलैकौंडनपालयम्	,,
10	अनुप्पपट्टी	,,
10	पल्लडम्	,,
11	केथनुर	,,
11	वडुमपालयम्	,,
12	गंगनायकम्पालयम्	,,
13	नागलिंगपुरम्	,,
13	वेलायुधम्पालयम्	,,
14	काटुपालयम्	,,
14	अमरावतीपालयम्	,,
15	बजाजनगर (वीरपांडी)	,,
16	तिरुपुर	,,
17	गांधीनगर तिरुपुर	,,
18	तिरुपुर	,,
19		,,
19	अंगिरीपालयम्	,,
20	वेलंपालयम्	,,
20	मेरट्टुपालयम्	,,
23	शेत्रीमलं	कोयम्बतूर
23	काशीपालयम्	,,
24	परेन्दुराई	,,
24	नसियानूर	,,
25	इरोड	,,
26	चित्रीयमपालयम्	,,
26	इलमतुर	,,
27	मिवागिरि	,,
27	तांडम्पालयम्	,,
28	कस्तूरबाग्राम (कोइंबतूर)	,,
29	मलयकोटाई	,,
29	कुट्टपालयम्	,,
30	चित्रमतुर	,,
30	मेटुपालयम्	,,
31	वेल्लैकोविल्	,,
31	कण्णावरम्	,,
1.11.56	कंगयम्	,,
1	आरसम्पालयम्	,,
2	पोत्रनकलीवलसु	,,
2	नेजलीकन्गोडन्पालयम्	,,
3	कुंडम्	,,
4-11	धारापुरम्	,,
12	तेरपट्टी	,,
13	दासनायकम्पट्टी	,,
14	कंदपनकोण्डवलयुर (कदप्पकोन्डनवलसु)	मदुरै
15	मुलियम्पालयम्	,,
16-22	पलनी	,,
23	कन्नालमपट्टी	,,
24	छत्रम्पट्टी	,,
25	ओडुमछत्रम्	,,
26	समलयपट्टी	,,
27	कोंडवनायकनपट्टी	,,
28	डिंडिगल	,,
29-30	गांधीग्राम	,,

5	कल्लुपट्टी		मदुरै
6	देवदानपट्टी		,,
7	पेरियकुळम्		,,
8	पुडुपट्टी		,,
9	तेनी		,,
10	बोड़ीनायकनूर		,,
11			,,
12	नेवारम्		,,
13	पट्टीवीरमपट्टी (उत्तमपालयम्)		,,
14	कन्नम्		,,
15	कागीलपुरम्		,,
16	चित्रमनूर		,,
17	कलुतिलि		,,
18	कोडुविलारपुट्टी	7.1	,,
19	अरैपडिथेवनपट्टि	6	,,
20	आंडिपट्टी	6.4	,,
21	चेट्टियपट्टी	8.6	,,
22	उसिलमपट्टी	6	,,
23	चिंगकट्टले	9.1	,,
24	पेरिय्युर	8.7	,,
25-26	कल्लुपट्टी	6	,,
27	पुदुपट्टी	7	,,
28	तिरुमंगलम्	6.7	,,
29	तिरुपरंकुड्रम्	8.5	,,
30-31	मदुरै	7.5	,,
1.1.57	कुमारन्		,,
2	बेविडमनुडुर		,,
3	कल्लांदरी		,,
4	चिट्टामपट्टी		,,
5	तिरुवादऊर		,,
6	मेलूर		,,
7	वांजीनगरम्		,,
8	कुट्टमपट्टी		,,
9	पुरीलीपट्टी		,,
10	तोरंगकुरुनी		तिरुचिरापल्ली

15	कुलितलै	तिरुचिरापल्ली
16	रामकृष्ण कोडिले	,,
17	श्रीरंगम्	,,
18	त्रिचनापल्ली	,,
19	तिरुवरमपुर	,,
20	कल्लनी	तंजावर
21	तिरुक्काटपल्ली	,,
22	तिरुवेय्यार	,,
23	तंजावर	,,
24	पुंडी	,,
25	उक्कडाई ओक्कड़े	,,
26	वलंजीमन	,,
27	कुंभकोणम्	,,
28	कोडावसल	,,
29	कोराडाचेरी	,,
30	तिरुवारूर	,,
31	तिरुक्कारवयले	,,
1.2.57	तिरुतुरायपुंडी	,,
2	करिपट्टिनम्	,,
3	वेदारण्यम्	,,
4	वैमुदु	,,
5	तिल्लैवलाहम्	,,
6	तंबीकोट्टै	,,
7	पट्टुकोट्टै	,,
8	तिरुचिरामवलम्	,,
9	कीरमंगलम्	
10	पुनैमावहर	
11	अरमृतांगी	
12	आवुडैयारकोविल्	
13	एम्बाल	
14	शाक्कोट्टै	रामनाड़
15	करैकुडी	,,
16	कुण्ड्रकुडी	,,
17	तिरुप्पुक्कुइ	,,
18	नेरकुप्पै	,,

23	सिरुगुड़ी		
24	काट्टुपुट्टी		
25	नत्तम्		
26	परली		
27	पलामड्डु		
28	पुदुपट्टी		
1.3.57	शोलवंदान		
2	विक्रमंगलम्		
3	सेवकानुराई		
4	कंडाई		
5	अप्पाकराई		
6	कोटापट्टाई		
7-8	सापटूर		
9	एम. कल्लुपट्टी		
10	कोट्टापट्टी		
11	पेरुनगमनालूर		
12	थीडीयन		
13	नट्टमपट्टी		
14	उत्तमनायकुर (कल्लुपट्टी)		
15	अरसमरथपट्टी		
16	शेलमपट्टी		मदुरै
17	ओरप्पनूर		,,
18	आचम्पट्टी		,,
19	पोपुनायकन्पट्टी	8	,,
20	अरसपट्टी	8	,,
21	गोपीनायकन्पट्टी	5	,,
22	पोत्तनदी	7	,,
23	पुलीअमपट्टी	7	,,
24	एस्. पी. नाथम	7	,,
25	नेडुंकुलम्	5	,,
26	करियापट्टी	8	रामनाड
27	तिरुचूली	12	,,
28	एम. रेडिआपट्टी	9	,,
29	अरुपुकोट्टाई	12	,,
30	विरुधुनगर	10	,,

4	करिवलम्वन्दनलूर	12	तिरुनलवेली
5	शंकरन्कोविल्	7	,,
6	कळ्हुमलै	13	,,
7	तिरुमंगलकुरुची	11	,,
8		13	,,
9	तिरुनलवेली	13	,,
10	मुंदरादइप्पु	12	,,
11	नान्गुनेरी	7	,,
12	वळ्ळीयुर्	10	,,
13	अंबलवणपुरम्	12	,,
14-15	कन्याकुमारी	12	कन्याकुमारी
16	नागरकोविल्	13	,,
17	मुलक्कूमूड्डु	13	,,
1	पारशाल	12	त्रिवेंद्रम् (केरल)
19	नेय्याट्टिन्कारा	7	,,
20	काटक्कडा	8	,,
21	मलयाडी	12	,,
22	नेडुमंगाड	11	,,
23	त्रिवेंद्रम्	11	,,
24	कन्याकुलंगरा	12	,,
25	किलिमानूर	13	,,
26	अयूर	11	,,
27	काट्टारकरा	12	क्विलोन
28	अडूर	13	,,
29	अलंतूर	13	,,
30	चेंगन्नूर	10	,,
1.5.57	चंगनाचेरी	10	कोट्टायम्
2	कोट्टायम	12	,,
3	कल्लारा	13	,,
4	वायकम्	13	,,
5	नड्क्काव	10	,,
6	अर्नाकुलम्	11	अर्नाकुलम्
7	आलवाय्	12	,,
8-13	कालड़ी	12	,,
14	करूकुट्टी	7	त्रिचूर

19	मुल्लूरकरा	8	त्रिचूर
20	चेल्लकरा	8	,,
21	मायन्नूर	11	,,
22	पलयन्नूर	10	,,
23	तरूर	11	पालघाट
24	अलतूर	10	,,
25	वड़क्कानचेरी	10	,,
26	नेम्मारा	12	,,
27	कोल्लंगोड	12	,,
28	चिट्टूर	12	,,
29	कोझिन्हानृपारा	11	,,
30	एलप्पुली	10	,,
31	पालघाट	9	,,
1.6.57	कोटुवायुर	8	,,
2	पेरुवेंबा	7	,,
3	कोड़वायुर		,,
4			,,
5	एरुमप्पेट्टी (एरीमयूर)		,,
6	कुत्तनूर	10	,,
7-8	परली	10	,,
9	कण्णंपरियारम्	8	,,
10	पेरूर	6	,,
11	कोंगाड	8	,,
12	कटंबझिपुरम्	8	,,
13	वल्लिनेल्लि	9	,,
14	कोतकुर्षी	8	,,
15	शोरनुर	13	,,
16	आरंगोट्टुकरा	10	,,
17	कूट्टनाड़	10	,,
18	पेरुंपिलाव	8	,,
19	कुन्नंकुलम्	6	,,
20	चावक्काड़	11	,,
21	पुन्नरयूरकुलम	9	,,
22	पोन्नानी	11	,,
23	तवनूर	8	,,
24	[illegible]	[illegible]	

28	मंचेरी	12	कोझिकोड
29	तिरुवाली	7	,,
30	वाणियंबलम्	6	,,
1.7.57	पांडिक्काडु	8	,,
2	करुवारुकुंड	7	,,
3	पुल्लंगोड	8	,,
4	अमरंबलम्	9	,,
5	निलंबूर	9	,,
6	एड़वना	9	,,
7	अरिकोड	12	,,
8	कोंडोट्टी	9	,,
9	रामनाट्टुकरा	9	,,
10	चेरुवन्नूर	6	,,
11–14	कोझिकोड	5	,,
15	पारोपडी	6	,,
16	कुन्नमंगलम्	8	,,
17	कोडुवल्ली	6	,,
18	तामरश्शेरी	8	,,
19	उण्णिकुलम्	5	,,
20	बालुश्शेरी	7	,,
21	काकुर	6	,,
22	कक्कोटी	6	,,
23	एलत्तूर	8	,,
24	पोयिलकाव	6	,,
25	कोयिलांडी	4	,,
26	तेरियत्तुकडवु	5	,,
27	पेरांब्र	7	,,
28	पाक्कनारपुरम्	8	,,
29	मेलड़ी	6	,,
30	वटकरा	7	,,
31	विल्यापल्ली	6	,,
1.8.57	वट्टोली	7	,,
2	कायक्कोड़ी	6	,,
3	कुट्टिपुरम्	8	,,
4	हरंगन्नूर	7	,,
5	[illegible]	[illegible]	

9	एड़क्काड़	8	कण्णूर
10-11	कण्णूर	7	,,
12	पप्पिनिशेरी	7	,,
13	पलयंगाडी	11	,,
14	पय्यान्नूर	10	,,
15	करिवेल्लूर	6	,,
16	नीलेश्वरम्	8	,,
17	कान्हनगड	8	,,
18	पेरिया	7	,,
19	उडुम	9	,,
20	कासरगोड़	6	,,
21	कुंबला	9	,,
22	मंगलपाड़ी	6	,,
23	मंजेश्वरम्	8	,,
24	उल्लाल		मंगलूर (कर्नाटक)
25-26	मंगलूर		,,
27	फिरंगीपेठ		,,
28	पाणे मंगलोर		,,
29	मणी		,,
30	पत्तुर		,,
31	कुंब्रा		,,
1.9.57	कनकमजलू		
2	सुलिया		
3	अरंतोडु		
4	संपाजे		
5	घाटपर–जंगल में		
6	मधे		
7	मड़िकेरी		
8	मुरनाड़		
9	विराजपेट		
10	हातुर		
11	पोनमपेट		
12	तितिमानी		
13	आनेचौकूर		
14	पेरियपट्टणम		
15	कलहल्ली		

19		
20		
21–24	येलवाल	मैसूर
25–28	मैसूर	,,
29	श्रीरंगपट्टणम्	,,
30	पांडवपुरम्	,,
1.10.57	बेल्लाळ	,,
2	मेलकोटे	मंड्या
3	सोमनहळ्ळा	,,
4	दुद्दा	,,
5	मंड्या	,,
6	हनगेरे	,,
7	मद्दूर	,,
8	मत्तिकेरे	,,
9	चेन्नपट्टण	बंगलोर
10	रामनगर	,,
11	बिड़दी	,,
12		,,
13	नायनहल्ली	,,
14		,,
15–20	बंगलोर	,,
21	वेलामंगला	,,
22	महादेवपुरा	
23		
24–26	हेब्बूरु	
27	गुलूर	
28	सिद्धगंगामठ	तुमकुर
29	तुमकुर	,,
30	गोल्लाहल्ली	,,
31	गुब्बी	,,
1.11.57	कड़वा	,,
2	कल्लुरु	,,
3	मायसंद्रा	,,
4	तुरवेकेरे	,,
5	नोणवीणाकेरे	
6	तिपटूर	

13	मत्तीगट्टा	चिकमंगलूर
14	कडूर	
15	कुडलुर	
16	तरिकेरे	
17	वेरंदूर	
18	भद्रावती	
19	निड़िगे	
20	शिवमोगा	
21	अमनूर (अयावरम्)	
22	सावलेगा (सावलंगा)	
23	न्यामति	
24	होन्नाळी	
25	हरेकेरे	धारवाड
26	मेलेवेनूर	,,
27	बेल्लोड़ी	,,
28	हरिहर	,,
29-30	दावणगेरे	,,
1.12.57	हीरेमंगलगेरे	,,
2	कंचीकेरे	,,
3	अर्सीकेरे	,,
4	हरपनहल्ली	बेल्लारी
5	कानेहल्ली	,,
6	हलगल्ली	,,
7	हिरेहड़गली	,,
8	होलालु	,,
9	हावनूर	धारवाड़
10	होसरित्ति	,,
11	सिद्दापुर	,,
12	शिगली	,,
13	लक्ष्मेश्वर	,,
14	येलवगी	,,
15	सावनूर	,,
16	बंकापुर	,,
17	नरेगल	,,
18	संगूर	,,
19	हावेरी	,,

24	कोड़	8	धारवाड
25–27	हिरेकेरूर	7	,,
28	नागवनदे	6	,,
29	रट्टेहल्ली	7	,,
30	मासूर	6	,,
31	नेलबागिल्	7	,,
1.1.58	शिकारपुर	5	शिमोगा
2	कुक्कूर	8	,,
3	शिरालकोप्पा	7	,,
4	तोगरसी	7	,,
5	येण्णेकोप्प	7	,,
6	चिक्केरूरु	9	
7–9	हंसभावी	5	धारवाड़
10	सोंदगी	8	,,
11	मुड्डाडमल्लपुर	3	
12	तिलवल्ली	8	शिमोगा
13	कुसनुर	6	
14	आलूर	5	धारवाड
15	आडूर	8	,,
16	बेळंगालपेट	6	,,
17	बम्मनहल्ली	6	,,
18	हानगल	8	,,
19	परली (कामाक्षिकोप)	8	,,
20	मळगी	7	कारवार
21	कातूर	8	,,
22	मुंडगोड	8	,,
23	बम्मीगट्टी	8	,,
24	कलघटगी	8	धारवाड
25	मिश्रिकोटी	10	,,
26–30	हुबली	9	,,
31-1.2.58	धारवाड़		,,
2	तुमवाड़		,,
3	दास्तीकोप्प		,,
4	देपीकोप्प		,,
5	करवत्ती		,,
6	येल्लापुर		कारवार

10	वासरे	कारवार
11	अंकोला	,,
12	गोकर्ण	,,
13	काठाल	,,
14	कुमठा	,,
15	होन्नावर	,,
16	चंदावर	,,
17	वड़ाल	,,
18		,,
19	दोड्डमने	,,
20	बिलगी	,,
21	हलगेरी	,,
22-23	जोग	,,
24	मनमने	,,
25	सिद्धापुर	,,
26	चंद्रगुत्ती	शिमोगा
27	बनवासी	,,
28	सुगावी	,,
1.3.58	शिरसी	कारवार
2	हुलगोळ, स्वादी	,,
3	मंचीकेरी	,,
4	सवणगेरी	,,
5	कण्णीगेरी	,,
6	भगवती	,,
7	सम्ब्राणी	,,
8	हल्याळ	,,
9	अळणावर	धारवाड
10	गोलीहल्ली	बेलगांव
11	नंदगड	,,
12	खानापुर	,,
13	देसूर	,,
14-15	बेलगांव	,,
16	कड़ोली	,,
17		,,
18		,,
19	यमकनमरड़ी	,,

23	खड़केवाड़ा	रत्नागिरी (महाराष्ट्र)
24	कापशी	,,
25	उत्तूर	,,
26	गड़हिंग्लज	,,
27	वायवण, भादवण	,,
28-29	आजरा	,,
30	दाभोळ	,,
31	घाटकरवाड़ी	,,
1.4.58	अंबोली	,,
2	दानोली	,,
3	बांदा	,,
4	सावंतवाड़ी	,,
5	माणगांव	,,
6	कसाल वेंतोरे	,,
7	कुड़ाळ	,,
8	कट्टा	,,
9		,,
10-11	गोपुरी (कणकवली)	,,
12	साबडांग	,,
13	हड़पड़	,,
14-15	खारेपाटण	,,
16	कोंड्ये	,,
17	राजापुर	,,
18	ओणी	,,
19	वाकेड़	,,
20	लांजे	,,
21		,,
22	हरचेरी	,,
23	रत्नागिरी	,,
24	हातखंब्रा	,,
25	आंबा	,,
26	देवळें	,,
27	साखरपा	
28		
29	आंबें	कोल्हापुर
30	मलकापुर	,,

4	केर्ली	कोल्हापुर
5-6	कोल्हापुर	,,
7	गुड़मुड़शिंगी	,,
8	रुकडी	,,
9	इचलकरंजी	,,
10	कुरुंदवाड	,,
11	जयसिंगपुर	,,
12-13	सांगली	सांगली
14	मिरज	,,
15	कवलापुर	,,
16	तासगांव	,,
17	सावर्डे	,,
18	मांजर्डे	,,
19	वायफळें	,,
20	नेलकरंजी	,,
21	करगणी	,,
22	आटपाडी	,,
23	दिधंची	,,
24	कटफल	
25	मोहूद	सोलापुर
26	सोनके	,,
27	गारेगांव	,,
28.5 से 3.6.58	पंढरपुर	,,
4	तुंगत	,,
5	पोखरापुर	,,
6	अर्जुनखोंड	,,
7	कोंडी	,,
8	सोलापुर	,,
9	उले	,,
10	मालडंबरा	उस्मानाबाद
11	तुळजापुर	,,
12	वड़गांव	,,
13	उस्मानाबाद	,,
14	उपले	,,
15	तेर	,,
16	मुराड़	,,

20	महापूर	बीड
21	रेणापुर	,,
22	पळशी	,,
23	सायगांव	,,
24	चनई	,,
25	आंबेजोगाई	,,
26	दिघोल-अंबा	,,
27	चंदनसावरगांव	,,
28	केज	,,
29	मस्साजोग	,,
30	यळंब	,,
1.7.58	उदंड वड़गांव	,,
2	वैधकिन्ही	,,
3	पाटोद	,,
4	थेरल	,,
5		,,
6	राजुरी	,,
7	बीड़	,,
8	हिरापुर	,,
9	गेवराइ	,,
10	शाहागड़	औरंगाबाद
11	वड़ी	,,
12	पाचोड़	,,
13	जामखेड़	,,
14	आडूळ	,,
15		,,
16	चिकलठाणा	,,
17-18	औरंगाबाद	,,
19	नक्षत्रवाड़ी	,,
20	बिड़किन्	,,
21	ढोरकिन्	,,
22	पिंपळवाडी	,,
23	पैठण	अहमदनगर
24	घोटण	,,
25	शेवगांव	,,
26	चिलखनवाड़ी	,,
27	भानस हिवरा	,,

31	वड़गांव	औरंगाबाद
1.8.58	लासूर	,,
2		,,
3	वेरूळ	,,
4	टापरगांव	,,
5	कन्नड़	,,
6	भांबुरवाड़ी	,,
7		
8-9	चाळीसगांव	धुलिया
10	उंबरखेडें	,,
11	कलमड़ू	,,
12	शिरूड़	,,
13	बोरविहीर	,,
14-15	धुलिया	,,
16	कापड़णें	,,
17		,,
18	बोरीस	,,
19	शिरधाने	,,
20	वर्धाने	,,
21	साक्री	,,
22	पिंपळनेर, कासारे	,,
23		,,
24	डांगशिरवाडे	,,
25	रोहड़	,,
26	धनेर	,,
27	पिंजार	,,
28	छड़वेल कोर्डे	,,
29	अष्टे	,,
30	नंदुरबार	,,
31	वड़गांव कोलदे	,,
1.9.58	प्रकाशे	,,
2	शहादे	,,
3	पाडलदे	,,
4	पाटिलवाड़ी	,,
5	घाटली	,,
6	खामले	,,

11		धुलिया
12		,,
13-14	अक्कलकुवा	,,
15	नटावद	,,
16	खांडबारा	,,
17		,,
18	चिंचपाड़ा	,,
19	नवापुर	,,
20		,,
21		,,
22	सोनगढ़	सूरत (गुजरात)
23	कीकाकुई कपूरा	,,
24	व्यारा	,,
25	वेड़छी	,,
26	बांकानेर	,,
27	बारडोली	,,
28	कटोदरा	,,
29	सूरत	,,
30	कठोर	,,
1.10.58	सियालज	,,
2	धमड़ोद	,,
3	अंकलेश्वर	भरुच
4	भरुच	,,
5	शुक्लतीर्थ	,,
6	राजपारड़ी	,,
7	नवाराजूवाड़िया	,,
8	ओरी	,,
9	राजपीपळा	,,
10	मांगरोळ	,,
11	डेकाई	,,
12	नारधा	बडौदा
13	गजलावाट	,,
14	काशीपुरा	,,
15	रंगपुर	,,
16	मोरांगणा	,,
17	छोटाउदेपुर	

22	ओरवाडा	पंचमहाल
23	गोधरा	,,
24	वेजलपुर	,,
25	कालोल	,,
26	सांडासाल	बड़ौदा
27	सावली	,,
28	सोखड़ा	,,
29	बड़ौदा	,,
30	रणोली	,,
31	वासद	खेड़ा
1.11.58	आणंद	,,
2	बोरसद	,,
3	बोचासण	,,
4	पेटलाद	,,
5	तारापुर	,,
6	खंभात	,,
7-8	भावनगर	भावनगर
9	वरतेज	गोहिलवाड़
10	सोनगढ़ (सिहोर)	,,
11	आंबला (सणोसरा)	,,
12	इंगोराळा	,,
13	मालपरा	,,
14	चावंड	,,
15	(चावंडा) कावरा	,,
16	कोरड़ा पीठा	,,
17	जसदण	,,
18	वीरनगर	,,
19	सतधार	,,
20	त्र्यंबा	राजकोट
21	राजकोट	,,
22	घंटेश्वर	,,
23	पड़धरी	,,
24	हड़मतिया	,,
25	जामवंथली	,,
26	अलियाबाड़ा	जामनगर

2	कुंताई	कच्छ
3	बागथला	
4	मोरबी	राजकोट
5	नीचीमांडल	
6	कड़ियाणा	
7	हळवद	
8	चूली	
9	धांगध्रा	
10	राजसीतापुर	
11	सुरेंद्रनगर-वढवाण	
12	अंकेवाळिया	
13	लिमड़ी	
14	पाणशीणा	
15	बरौल	
16	गूंदी	अमदाबाद
17	गांगड़	,,
18	बावळा	,,
19	सरखेज	,,
20	अमदाबाद	,,
21	साबरमती	,,
22	कोबा	,,
23	कलोल	महेसाणा
24	डोंगरवा	,,
25	जगुदण	,,
26	महेसाणा	,,
27	वालम	,,
28	ऊंझा	,,
29	सिद्धपुर	,,
30	नवासर	बनासकांठा
31	पालनपुर	,,
1.1.59	चित्रासणी	,,
2	धाणधा	,,
3	मोमनवास	साबरकांठा
4	नवावास	,,
5	सतलासणा	महेसाणा

11	भिलोड़ा		साबरकांठा
12	शामळाजी		,,
13	ईसरी		,,
14	कसाणा		,,
15	सीमरवाड़ा		बांसवाड़ा (राजस्थान)
16	लिखतिया	10	,,
17	गलियाकोट	10	,,
18	भूखिया, आनंदपुर	10	,,
19	अरथोना	10	,,
20	परतापुर	10	,,
21	सागवाड़ा	11	,,
22	टामटिया	9	,,
23	हडमतिया(जोगीवाड़ा)	10	,,
24	रघुनाथपुरा	11	,,
25	डूंगरपुर	11	,,
26	घोड़ी	9	उदयपुर
27	ऋषभदेव	10	,,
28	परसाद	10	,,
29	टीड़ी	10	,,
30	काया	10	,,
31	उदयपुर	10	,,
1.2.59	डबोक	12	,,
2	वल्लभनगर	10	,,
3	फतेहनगर	11	,,
4	भोपालसागर	9	,,
5	कपासन	7	चित्तौड़
6	घोसंडा (सिंहपुर)	10	,,
7	चित्तौड़	10	,,
8	चित्तौड़गढ़	6	,,
9	चेंदेरिया	10	,,
10	गंगरार	10	,,
11	हमीरगढ़	10	भीलवाड़ा
12	भीलवाड़ा	10	,,
13	सांगानेर (सुवाणा)	7	,,
14	बनेड़ा	9	,,
15	ढींकोला	10	,,

19	देवली	12	टोंक
20	सावर	9	अजमेर
21	पारा	9	,,
22	केकड़ी	9	,,
23	सरवाड़	12	,,
24	ठांठोनी	12	,,
25	नसीराबाद	10	,,
26	हटुण्डी	8	,,
27–1.3.59	अजमेर	7	,,
2	गगवाना	9	,,
3	किशनगढ़	10	,,
4	हरमाड़ा	11	,,
5	रूपनगर	10	,,
6	परबतसर	10	नागौर
7	मकराना	11	,,
8	कुचामनसीटी	12	,,
9	निमोद	8	,,
10	डरबड़ा	8	,,
11	लोसल	10	सीकर
12	खूड़	9	,,
13	कासीकाबास	9	,,
14	सीकर	8	,,
15	रसीदपुरा (खड़ी)	9	,,
16	लक्ष्मणगढ़	8	,,
17	हरसावा	8	,,
18	फतेहपुर	8	,,
19	होड़सर	7	,,
20	रामगढ़	7	,,
21	रतननगर	6	चूरू
22-23	चूरू	6	,,
24	बिसाऊ	8	,,
25	बिरमी	9	झुंझुनू
26	रिजानी	8	,,
27	झुंझुनू	5	,,
28	बगड़	8	,,
29	चिड़ावा	10	

3	कुड़ल	7	
4	जूई जुमली	8	
5	लोहानी	7	
6	भिवानी	9	
7	मिताथल	8	
8	बवानीखेड़ा	11	
9	मिलकपुर	7	
10	हांसी	5	
11	गमनखेड़ी	5	
12	नारनोद	7	
13	रामगई	7	संगरूर (पंजाब)
14	जिंद	7	
15	खाड़खर	8	
16	उछना	9	
17	नरवना	10	
18	उझाना	8	
19	खतौरी पक्की	9	
20	मोमिआन	9	पटियाला
21	मनहेर	9	,,
22	समाना	9	,,
23	ढेनथाल	6	,,
24	रणबीरपुरा	6	,,
25	पतियाला	6	,,
26	ढरेहरी	8	,,
27-28	राजपुरा	8	,,
29	भांकरपुर	9	अंबाला
30	चंडीगढ़	9	
1.5.59	मालोदा	6	
2	माजरी सैलवा	8	
3	महानपुर	8	
4	रापर R.S	4	
5	तेनसा	8	होशियारपुर
6	बलाचौरा	9	
7	बलाचौरा-महादपुर	8	
8	गढ़शंकर	7	
9	वांगीकला छावेवाल	8	
14	मुकरियां	10	
15	हर्शमनसार	7	
16	अंडोरा	9	कांगड़ा
17	कोठी	7	,,
18	जैसूर	6	,,
19	जंदाइल	7	,,
20-21	पठानकोट		
22	लखनपुर		जम्मू-कश्मीर
23	बसंतपुर		,,
24	थेन		,,
25	बसौली		,,
26	सबार		,,
27	पर्नाला		,,
28	बिलावर		,,
29	मांडली		,,
30	गुजरुनगरौटा		,,
31	रामकोट		,,
1.6.59	बिलासपुर		,,
2	मानसर		,,
3	नयीकल्डी		,,
4	सांबा		,,
5	रामगढ़		,,
6	अर्निया		,,
7	रणवीरसिंहपुरा		,,
8	मीरासाहिबा		,,
9–11	जम्मू		,,
12	दुमाना		,,
13	अखनुर		,,
14	गंधारवान		,,
15	चौकीचौरा		,,
16	खुरोट		,,
17	सुंदरबनी		,,
18	सियार		,,
19	बगनौटी		,,
20	नौशेरा		,,
21	नारियां		,,

26	डेरा की गली	जम्मू-कश्मीर	22	बेरीनाग	जम्मू-कश्मीर
27	बफलियाज	,,	23	टटहार	,,
28	मूरनकोट	,,	24	बनीहाल	,,
29		,,	25	राममू	,,
30–1.7.59	पूंच	,,	26	डिगड़ोल	,,
2	चांडक	,,	27	रामबन	,,
3–8	मंडी राजपुरा	,,	28	पीड़ा	,,
9-10	लोरेन	,,	29	बटोन	,,
11	मोलसर	,,	30	कूद	,,
12	बोटपथरा	,,	31	चंपियाड़ी	,,
13	तुंगन	,,	1.9.59	सस्मोली	,,
14	गोरबन	,,	2-3	उधमपुर	,,
15–19	गुलमर्ग	,,	4	गढ़ी	,,
20	बाबारेषि	,,	5	टिकारी	,,
21	मागाम	,,	6-7	कटरा	,,
22	पट्टण	,,	8	दोमेल	,,
23	दिलना	,,	9	नगरौठा	,,
24	बारामुल्ला	,,	10-11	जम्मू	,,
25	बत्तरगाम	,,	12	भटिंडी	,,
26	हिंदवारा	,,	13	बम्मनवाड़ी	,,
27	बूमे	,,	14	विजयपुर	,,
28	वटलब	,,	15	सांबा	,,
29	सोपोर	,,	16	गगवाल	,,
30	हमेर	,,	17	हीरानगर	,,
31	सिंगपुरा	,,	18	हमीरपुर	,,
1.8.59	शालटेंग	,,	19-20	कठुवा	,,
2–6	श्रीनगर	,,	21	सुजानपुर	पंजाब
7	पामपुर	,,	22–24	पठानकोट	,,
8	अवंतीपुरा	,,	25	बुधाला	,,
9	बीजबेहारा	,,	26	धारबंगला	,,
10	मार्तण्ड	,,	27	डुडेरा	,,
11	अक्कड़	,,	28	ककिरा	,,
12	गनेशपुर	,,	29	नौशीखड़	,,
13-14	पहलगांव	,,	30	बनीखेत	,,
15	बटकुट	,,	1.10.59	बाथरी-मनौला	,,
16	ऐशमुकाम	,,	2	द्रढ़ा के बास	,,

9 चवाड़ी
10 परछोड़
11 टुंडी
12 स्योहनाट
13 चुलेल
14 द्रमण
15
16
17
18
19
20
21
22
23 भरवाईं
24 मुबारिकपुर
25 ओएल
26 दौलतपुर
27 भूल
28 रिह
29
30
31
1.11.59
2
3
4
5 तारापुर
6
7
8
9
10
11-12 अमृतसर
13
14 तरनतारन

19 फिरोजपुर
20
21 ममरोट
22 गुरुहरसहाय
23
24
25 फाजलका
26
27 शिवपुर हैड गंगानगर (राजस्थान)
28-29 गंगानगर ,,
30 ,,
1.12.59
2
3
4
5 सरांवा बोदल
6 मलोट
7 मसभांवाला
8 बादल
9 डबवाली
10 संगतमंडी
11 भटिंडा
12 शेरगढ़
13 रामांमंडी
14 कालांवाली
15 बड़ागुड़ा
16-17 सिरसा
18
19
20
21
22
23
24
25-26 संगरिया राजस्थान
27 नगराना ,,

1.1.60 तलवाड़ा झील राजस्थान
2 एलनाबाद पंजाब
3
4
5
6
7 निवारण
8 केरांवाला
9 डिंग
10 चिट्ठकलां
11 फतेहाबाद
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27
28
29
30
31
1.2.60
2
3
4
5-6 मोगा

11 बिलगा
12–15 फिल्लौर
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26 करतारपुर जालंधर
27
28
1.3.60
2
3
4
5-6 जालंधर शहर
7 जालंदर छावनी
8 फगवारा
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22

27		
28		
29		
30		
31		
1.4.60		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8	बागपत	मेरठ
9	पिलाना	,,
10	बालेनी	,,
11	कालिंजरी	,,
12-13	मेरठ	,,
14	भूड़वराल	,,
15		,,
16		,,
17	हापुड़	,,
18	गुलावटी	बुलंदशहर
19		,,
20	बुलंदशहर	,,
21	रौड़ा	मेरठ
22		,,
23	अनूपशहर	बुलंदशहर
24	डिवाई	
25		
26	अतरौली	अलीगढ़
27	शाहपुर	,,
28	अलीगढ़	,,
29	पालिरजापुर	,,
30	सासनी	,,
1.5.60	हाथरस	,,
2	चंदवारा	,,

9	डोकी	आगरा
10	फतेहाबाद	,,
11	अन्नोटा	,,
12	पिनहट	,,
13	रछेड़	मुरैना
14-15	अंबाह	,,
16	पोरसा	,,
17	नगरा	,,
18	कनेरा	भिंड
19	कदोरा	,,
20	सुरपुरा	,,
21	उदीतपुरा	,,
22-23	भिंड	,,
24	कचोंगरा	
25	स्योंड़ा	
26	पांढरी	
27	नयागांव	
28	रेरुआ	
29	रेऊंझा	
30	अड़ोखर	
31	जरसेना	
1.6.60	वरहद	
2	छेमका	
3	तुकेड़ा	
4	बरेठा	
5	मुरार	
6-7	लश्कर	
8	नयागांव	
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		

21			
22	कस्बाथाना		राजस्थान
23	देवरी	8	
24	शाहबाद	7	
25	कलौनी	7	
26	समरानियां	7	
27	सीतावाड़ी	9	
28	भंवरगढ़	7	
29	किसनगंज	11	
30	बारां	10	
1.7.60	बामली	8	
2	बपावर	8	
3		7	
4	खानपुर	7	
5	लुकट	7	
6	मंडावर	7	
7	झालरापाटन	8	
8	बीदा	8	
9	सुवास	8	
10	सोयराकलां		शाजापुर (मध्य प्रदेश)
11	शाजापुर		,,
12			
13			
14	आगर		
15			
16			
17			
18			
19			
20			
21			
22			
23			
24.7 से 25.8.60	इंदौर		
26.8 से 1.9.60	कस्तूरबाग्राम		
2			

7		
8		
9		
10		
11	महेश्वर	
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28	इंदौर	
29		
30		
1.10.60		
2		
3		
4		
5		
6		
7	हरदा	
8	टिमरनी	9
9	टेमागांव	11
10	ढेकना	10
11	कुरसना	11.5
12	चिरायारला	6

17-18	बैतूल	7
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		
29		
30	चोरगांव	
31	चोरइ	
1.11.60	फुलेरा	
2	सिवनी	
3		
4		
5		
6	लखनादौन	
7		
8		
9		
10		
11	जबलपुर	
12	,,	
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		

27			
28			
29			
30			
1.12.60			
2			
3	हनुमाना		
4	ड्रामलगंज		
5	वगौधा		
6	लालगंज		
7	पथरौला		
8	मड़िहान		
9	कोटवा		उत्तर प्रदेश
10	मिर्जापुर		,,
11	कछवा		,,
12	सेवापुरी		,,
13			,,
14			,,
15-19	काशी		,,
20	मुगलसराय		,,
21			,,
22			,,
23			,,
24			,,
25	दुर्गावती	10	शाहाबाद(बिहार)
26	मोहनियां	9	,,
27	पुसौली	7	,,
28	कुवरा	7	,,
29	भद्रशीला	10	,,
30	सासाराम	8	,,
31	डेहरी	12	,,
1.1.61	जम्होर	10	गया
2	औरंगाबाद	9	,,
3	रानीगंज	11	,,
4	आमस	10	,,
5	शेरघाटी	10	,,

11	जमुआवां	9	गया
12	हिसुआ	9	,,
13	नवादा	9	,,
14	वारसलीगंज	12	,,
15	रोह		,,
16-17	सोखोदेवरा आश्रम	12	,,
18	अलीगंज	10	,,
19	धधौर	10	मुंगेर
20	जमुई	10	,,
21	खादीग्राम	9	,,
22	लक्ष्मीपुर	8	,,
23	वनहारा	8	,,
24	तारापुर		,,
25	बेंराई		,,
26	सुलतानगंज		भागलपुर
27	गौरीपुर-मकनपुर		,,
28	भागलपुर		,,
29	तुलसीपुर		,,
30	नौगछिया		,,
31	भौवाड्योढ़ी		पूर्णिया
1.2.61	बलिया		,,
2	कुकरौन		,,
3	सहरा		,,
4	रानीपतरा		,,
5	पूर्णिया		,,
6	लखना		,,
7	खरैया		,,
8	कांजिया		,,
9	किशनगंज		,,
10	इकरछाल		प.दिनाजपुर (बंगाल)
11	इसलामपुर		,,
12	रामगंज		,,
13	सोनारपुरहाट		,,
14	भीमभार		दार्जिलिंग
15	बागडोगरा		,,
16	सिलिगुड़ी		,,
20	मयनागुड़ी		जलपाइगुड़ी
21	हुजलुडांगा		,,
22	विद्याश्रम-धुपगुड़ी		,,
23	शालबाड़ी		,,
24	फालाकाटा		,,
25	शीलबाड़ी		,,
26	सोनापुर		,,
27	अलीपुरदुवार		,,
28	बानेश्वर		कुचबिहार
1-2.3.61	कुचबिहार		,,
3	मारुगंज		,,
4	तुफानगंज		,,
5	हालाकुरा	7	ग्वालपाड़ा (असम)
6	छत्रशाल	8	,,
7-8	गोलकगंज	9	,,
9	काछखाना	7	,,
10	धेपधेपि	9	,,
11	धर्मशाला	8	,,
12	धुबुरी	10	,,
13	आलमगंज	10.5	,,
14	बगरीवारी	11.5	,,
15	रेकारवाटा	10.5	,,
16	लक्ष्मीगंज	6	,,
17	कोकराझार	10	,,
18	दामोदरपुर	8	,,
19	शालकोचा	7	,,
20	चापर	8	,,
21	योगीघोपा	8	,,
22	ग्वालपाड़ा (नाव से)		,,
23	दोबापाग	6.5	,,
24	आगिया	10	,,
25	कृष्णाई	8	,,
26	दूधनै	8	,,
27	दरंगिरी	7	,,
28	शिमलीतला	11	,,
29	रंगजुलि	9	,,

3	कर्कापारा	7	कामरूप
4	छयगांव	7	,,
5	रामपुर	6	,,
6	पलाशबारी	6	,,
7	जालुकबारी	8	,,
8-9	गुवाहाटी	6	,,
10-11	गुवाहाटी शरणिया	2	,,
12	सातगांव	8	,,
13	सोनापुर	12	,,
14	खेत्री	7.5	,,
15-16	निबिरा	4	,,
17	जागीभकतगांव	9	नगांव
18	धरमतुल	9	,,
19	मरिगांव	10	,,
20	चराइबाही	8	,,
21	रहा	9	,,
22	डिमौं	7	,,
23	जाजरि	6.5	,,
24	बरदोवा	9	,,
25	नगांव	10	,,
26	रूपही	7	,,
27	पुरनिगुदाम	6	,,
28	रंगागड़ा	8	,,
29	कुंवरीटोल	10	,,
30	शिलघाट	8	,,
1.5.61	तेजपुर नाव से	13.5	दरंग
2	पाचमाइल	5	,,
3	जामुगुरि	9	,,
4	चतिया	7	,,
5	चारिआलि	7	,,
6	जिंजिया	9.5	,,
7	बिहाली		,,
8	जमिरि		,,
9	बुरंगाबारी		,,
10	गहपुर		,,
11	कलाबारी	41	,,

16	गोहांइबारी	5	उ.लखीमपुर
17	बिहुपुरिया	7	,,
18	बदति	6	,,
19	खोरा	8	,,
20	लालुक	7	,,
21	नाउबोइचा	6	,,
22	उ. लखीमपुर	8	,,
23-25	कमलाबोरिया	5	,,
26	पानीगांव	2	,,
27	आझाद	2	,,
28	बहादुरचुक	2	,,
29	उज्ज्वलपुर	6	,,
30	उ. लखीमपुर	5	,,
31	लक्षौं	7	,,
1.6.61	सोनापुर	5	,,
2	फुलबारी	6	,,
3	लालुक	6	,,
4	दौलतपुर	5	,,
5	लाहलियाल	5	,,
6	धुनाबारी	3.5	,,
7-8	सांदहखोवा	3	,,
9	संतपुर	3.5	,,
10-15	खोरा	2	,,
16	जापजुप	7	,,
17-18	डूंगीबिल	5.5	,,
19-20	श्रीभुआं	8	,,
21-22	बरबाली	3	,,
23	पथालीपहाड़	2	,,
24	मभुपुर	6	,,
25	जराबारी	8	,,
26	तातिबहार	3.5	,,
27	रंगति	3.5	,,
28	चराइदलनि	4	,,
29	दुलियापथार	4	,,
30	पानबारी	6	,,
1.7.61	बदती	7	,,

6	भेरेकी दुलियागांव	3	उ.लखीमपुर
7	माजगांव	7	,,
8	महारा सत्र	7	,,
9	कदम	7	,,
10	बगीनदी	6	,,
11	आनंदबगान	7	,,
12	मइनापारा	6.5	,,(सुवर्णश्री)
13-14	बरदलनी	9	,,
15	माइचा	2.5	,,
16	चुतियाकारी	3.5	,,
17	पदुमनि	5	,,
18	घिलामारा	9	,,
19	शिंगिया	4	,,
20	बान्टांगांव	7.5	,,
21	बामुनगांव	2.5	,,
22	ढकुवाखाना	3.5	,,
23	मातमरा	6	,,
24	बकुलगुरि	6	,,
25	जियामुरिया	7	उ.लखीमपुर
26-31	गोविंदपुर	3	,,
1.8.61	माछखोवा	7	,,
2-3	बाटघरिया	6.5	,,
4-5	धेमाजी	8	,,
6	मोटिखोला	3	,,
7	बाउली		,,
8	चिचिमुख		,,
9	जोरकटा		,,
10	धेनुखना	20	,,
11	घांईगांव	3	,,
12	घुघुहा	6	,,
13	केकूरी	10	,,
14	नलनीपाम	5.5	,,
15-16	मरीढ़ोल	5.5	,,
17	चिचिबरगांव	5	,,
18	चापखाटी	5	,,
19	देउरीघाट	4	,,

26	टेंगाघाट	9	डिब्रूगड़
27	चाबुवा	8.5	,,
28	ओपनीमुरिया	10	,,
29	तिनसुखिया	6	,,
30	माकूम	5	,,
31	डुमडुमा	10	,,
1.9.61	पानीखोवा	9	,,
2	दिग्बोई	10	,,
3	बरजान	7	,,
4	भादैंपांचआलि	7	,,
5	नाहरकटिया	10	,,
6	कुवरीगांव	9	,,
7	टिंगखांग्	4	,,
8	राजगड़	10	,,
9	ओफुलिया	7	,,
10	मरान	8	,,
11	हेनसुवा पुखुरी	10	,,
12	चेपन	12	शिवसागर
13	पाटचाको	6	,,
14	नेमुगुरि	5	,,
15	गड़गांव	8	,,
16	गेलेकि	12	,,
17	नामति	10	,,
18	आमुगुरि	8	,,
19	चारिंग्	7	,,
20	गौरीसागर	7	,,
21-22	जयसागर	5	,,
23-24	शिवसागर	3	,,
25	आखैफुतिया	5	,,
26-27	दिसांगमुख	6	,,
28	बानमुख	5	,,
29	कोंवरपुर	7	,,
30	बोकाबिल	9	,,
1.10.61	दिखौमुख	4	,,
2	खनामुख	7	,,
3-7	जांजी	7	,,

14-16	दोलाखरिया	4	शिवसागर
17-18	मेजेंगा	3	,,
19	कहारगांव	4	,,
20-22	नाजिरा	6	,,
23	टेंगापुखुरी	6	,,
24	मथुरापुर	6	,,
25	दिचांगपानी	7	,,
26-28	बकटा आश्रम	8	,,
29	बरपियाल	6	,,
30	आखैया	6	,,
31	काकतीबारी	11	,,
1.11.61	लंगपतिया	10	,,
2-3	चापेखाटी	5	,,
4	बरुवानगर	6.5	,,
5-15	बरहाट	9	,,
16-17	टियकिया	7.5	,,
18	बरहाट	7.5	,,
19-21	चापेखाटि	8.5	,,
22	कानुबारी	6	,,
23	बेंगनाबारी	7.5	,,
24	सोनारी	06	,,
25	चाफ्राई	5.5	,,
26	लाकुवा	6	,,
27	दलबागान	6.5	,,
28	गड़गांव	7.5	,,
29	मेटेका	8	,,
30	कालुगांव	5	,,
1.12.61	हातीबारी (चारिंग)	8.5	,,
2	हांहचरा	7	जोरहाट
3	टियक	4	,,
4	माइबेलिया	10	,,
5	मरियानी	9	,,
6	तिताबर	5	,,
7	माधवपुर	11	,,
8	नआलिढ़ेकियाजुली	8	,,
9	जोरहाट	8	,,

15-17	बामुनगांव	4	उ.लखीमपुर
18-20	करेगुरी (केकुरी)	6.5	,,
21-23	बेबेजिया	10	,,
24-25	बिलमुख	10	,,
26-27	देवलिया	6.5	,,
28	घटापारा	6.5	,,
29-30	दीघला	7	,,
31	बकुलगुरी	6	,,
1.1.62	मलिगांव	4	,,
2	मदारगुड़ी	6	,,
3-4	भोमाजारनी (जोगीखुटा)	5	,,
5	जोरकटा	5	,,
6-7	रोहा	6	,,
8	मूरतिया	6	,,
9-12	ढकुवाखाना	7	,,
13-16	गोविंदपुर	4	,,
17	देवलिया	10	,,
18	पदुमनि	11	,,
19	धेमाजी	11	,,
20	गरमरा	11	,,
21	माटिखोला	8	,,
22	बेंगनागड़ा	11	,,
23	गोविंदपुर	8	,,
24	बामुनगांव	8	,,
25	घांहीं गांव	10	,,
26	माइचा	12	,,
27	धेमाजी	11.5	,,
28	चिचिबरगांव	11	,,
29	मरिढ़ोल	5	,,
30	माटिखोला	8	,,
31	टंगनपड़ा	5	,,
1-2.2.62	बाटघरिया	7	,,
3	नरोवाथान	6	,,
4-5	घुघुहा	2.5	,,
6-7	पुवासाइकिया	6	,,
8	हाथीपाड़ा	5	,,

16-17	मरिढ़ोल	3	उ.लखीमपुर
18-19	रंगपुरिया	2	,,
20-21	चौखाम	3.5	,,
22-23	नौपाम	4	,,
24-25	माटिखोला	2	,,
26-28	धेमाजी	4.5	,,
1.3.62	माछखोवा	12	,,
2	जियामरिया	11	,,
3	बामुनगांव + बेबेजिया	11	,,
4	घामरा	12.5	,,
5-10	मैत्री आश्रम	8	,,
11	नौबोइचा	12	,,
12	डोंगीबिल	12	,,
13	माधवपुर	12	,,
14	डुबिया	11	तेजपुर
15	बालीजान	10	,,
16	बोटियामारी	12	,,
17	माजगांव	8	,,
18	विश्वनाथ चाराली	11	,,
19	चुतिया	8	,,
20	जामुगुरी	8	,,
21	तेजपुर	13	,,
22	पिथोखोवा	10	,,
23	ढेकियाजुली	12	,,
24	ओरांग	12	मंगलदै
25	रोवटा चाराली	8	,,
26	उदलगुरी	10	,,
27	कबिराली पुथिमारी	10	,,
28-29	कलैगांव	8	,,
30	राजघाट	8	,,
31	मंगलदै	6	,,
1.4.62	देवरमाई	11	,,
2	बुरीनागांव	6	,,
3	निज चराबारी	7	,,
4	खैराबारी	8	,,
5-6	गोरेश्वर	12	उ. कामरूप
12	बांहजानी	11.5	उ.कामरूप
13	दामोदरधाम	7	,,
14	घगरापारा		,,
15	रंगिया	7	,,
16	दुवारकुचि	8	,,
17	तामुलपुर	8	,,
18	धमधमा	8	,,
19	बरमा	8	,,
20	बरिमरवा	6	,,
21-24	गेरुवा आश्रम	11	,,
25	बरबरि	5	,,
26-27	मचलपुर	5	,,
28	चराहमारी	5	,,
29-30	जालाह	6	बरपेटा
1.5.62	बाघमारा	7	,,
2	नित्यानंद	7	,,
3	आठियाबारी	7	उ. कामरूप
4	बेत्राबारी	5	,,
5	पोलुकटा	7	,,
6	जरतालुक	5	,,
7	कटाहबारी	5	,,
8-9	कुमरिकटा	8	,,
10	चंदनपुर	6	,,
11	नागरिजुलि	6	,,
12	कोचुबारी	5	,,
13	नाओकाटा	5	,,
14	मोहोरीपारा	3	,,
15	कारिपारा	1.5	,,
16	गोरेश्वर	3	,,
17	मुक्तापुर	6	,,
18	खटरा सत्र	8	मंगलदै
19	पकादलि	7	,,
20	सिमाझार	6	,,
21	आउलाचौंका	9	,,
22	गधियापारा	6	,,
23	दलगांव	6	,,

29	उदाला	8	मंगलदै
30	हरिसिंगा	5	,,
31	छैबारी	7	,,
1.6.62	चमलाबारी	6	,,
2	औतोला	5	,,
3	टेंगाबारी	5	,,
4-5	निजबरमपुर	8	,,
6	बियासपारा	5	,,
7	हाजरिकापारा	6	,,
8	गंगामाटी	5	,,
9	गरुखुटि	6	,,
10	बिजुली बारी	6	,,
11	खास सोनापुर	5	,,
12	डुमनि चकि	3	,,
13	करा	8	उ. कामरूप
14	कमलपुर	7	,,
15-16	बोरका	5	,,
17	उत्तर गुवाहाटी	9	,,
18	दलिबारी (आमीनगांव)	6	,,
19	चेचामुख	5	,,
20	हाजो	5	,,
21	सोवालकुचि	8	,,
22-23	बिजयनगर	3+ नाव	द. कामरूप
24	कुकुरमारा	6	,,
25-26	चौधुरीपारा	6.5	,,
27	बाटरहाट	6.5	,,
28-29	करकापारा	3	,,
30	आगचिया	4	,,
1.7.62	बाटाकुचि	6	,,
2	बको	4	,,
3-7	मौमान आश्रम	2.5	,,
8	रायपारा	4.5	,,
9	भालुकघाटा	4	,,
10	चिचापीठ	3.5	,,
11	खलिहा	5	,,
12	बंधापारा	7	,,

18	भेंहुआ	5	द.कामरूप
19	जुंगाखुली	8	,,
20	शांतिपुर	11	,,
21	कुलची	11	,,
22	लोहारघाट	5	,,
23	मनिहारी निनिचुक	7	,,
24	बामुंडी	8	उ. कामरूप
25	रामदिया	5	,,
26	लाघपाड़ा 8+5 मील नाव में		,,
27	मुकालमुवा	7	,,
28	दौलाशाल	7	,,
29	चेंगा	6	बरपेटा
30	नगांव	4	,,
31	बरपेटा	10	,,
1.8.62	सुन्दरिदिया	2	,,
2	भवानीपुर	9	,,
3	सरुपेटा	2.5	,,
4	पाठशाला	8	,,
5	भकतरभिठा	7	,,
6	गिरीशविद्यापीठ	11	,,
7	गोवर्धना	5.5	,,
8	बरपेटा रोड़	6	,,
9	हाजली	5	,,
10	चकचका	7	,,
11	माणिकपुर	7	ग्वालपाड़ा
12	बिजनी	8	,,
13	पोपरगांव	11	,,
14	लाजुरीपारा	6.5	,,
15-16	सिदली	7	,,
17-20	बासुगांव	7	,,
21	क्षुद्र बासुगांव	7	,,
22-23	देबरगांव	5	,,
24	सिंबरगांव	7	,,
25	बनरगांव	3	,,
26	रामफलबिल	8.5	,,
27	दतमा	7	,,

1.9.62	टमारहाट	7	ग्वालपाड़ा	10	बुनियादपुर	5	प. दिनाजपुर
2	पागलाहाट	7	,,	11	दौलतपुर	6	,,
3	गोलकगंज	10	,,	12	देवतला	4	मालदा
4	सोनारहाट	5	,,	13	गाजोल	8	,,
	[पूर्व पाकिस्तान – बंगलादेश]			14	राणिपुर	06	,,
5	भुरुंगामारी	8	रंगपुर	15	बामनगोला	6	,,
6	रायगंज	7	,,	16	राहुताड़ा	8	,,
7	नागेश्वरी	6	,,	17	नकैल	8	,,
8	भीतरबंद	7	,,	18	हबिपुर	5	,,
9	कुड़ीग्राम	8	,,	18	बुलबुलचंडी	4	,,
10	पांगा	9	,,	19	मालदा	10	,,
11	तिस्ता	9	,,	20	पुरातन मालदा	5	,,
12	मीरबाग	8	,,	21	रायग्राम	|	,,
13	रंगपुर	8	,,	22	शोभानगर	|	,,
14	पगलापीर	7	,,	23	मथुरापुर	20	,,
15	तारागंज	9	,,	24-25	राजमहल		संथाल परगना (बिहार)
16	सय्यदपुर	8	,,	26	काजीगांव		,,
17	आलोकदिहि	7	दिनाजपुर	27	मंगलहाट		,,
18	खुशालपुर	10	,,	28	सरकंडा		,,
19	दिनाजपुर	9	,,	29	महाराजपुर		,,
20	विरळ	6	,,	30	सकरीगली		,,
21.9.62	राधिकापुर	10	प. दिनाजपुर(बंगाल)	31	साहेबगंज		,,
22	डालिमगांव	3	,,	1.11.62	नवाबगंज		पूर्णिया
23	कालियागंज	4	,,	2	मरंगी		,,
24	हेमताबाद	8	,,	3	कटिहार		,,
25	रायगंज	8	,,	4	बस्तौल		,,
26	दुर्गापुर	8	,,	5	भोगांव		,,
27	इटाहारा	8	,,	6	आजमनगर		,,
28	पतिराजपुर	8	,,	7	सीतलामणी		,,
29	कुशमंडी	9	,,	8	आबादपुर		,,
30	जोड़दीघी	6	,,	9	बिशनपुर	4	,,
1.10.62	बंशीहारी	6	,,	10–12	पिपला	8	मालदा (बंगाल)
2	गंगारामपुर	7	,,	13	भिंगोल	|	,,
3	रामपुर	10	,,	14	मालिग्राम	|	,,
4	पतिराम	8	,,	15	मालतीपुर	|	,,
5	बालूरघाट	8	,,	16	सामसी	|	,,

20	कालिंद्री	6	मालदा
21	बांगीटोला	8	,,
22	बिरामपुर	8	,,
23	जलालपुर	7	,,
24	कालियाचक	6	,,
25	वैष्णवनगर	7	,,
26	फरक्का	5	,,
27	नयनसुख	6	,,
28	धुलियान	7	,,
29	औरंगाबाद	10	,,
30	नूरपुर	6	,,
1.12.62	गांगीन	5	,,
2	बंशबाटी	7	,,
3	जाजिग्राम	6	वीरभूमि
4	रघुनाथगंज		मुर्शिदाबाद
5	सम्मतिनगर-तेधरी		,,
6	खांदुवा		,,
7	लालगोला		,,
8	भगवानगोला		,,
9	जियागंज		,,
10	मुर्शिदाबाद		,,
11	बहरमपुर		,,
12	सारगाछी		,,
13	बेलडांगा		,,
14	दामपुर		,,
15-16	पलासी		नदिया
17	शक्तिपुर		मुर्शिदाबाद
18	आलुग्राम		,,
19-20	कान्दि		,,
21	खड़ग्राम		,,
22	नगर		,,
23	इंद्रानी		,,
24	पांचग्राम		,,
25	नवग्राम		,,
26	सागरदीघी		,,
27	बोखारा		,,

1.1.63	सोनारकुंडु	6	वीरभूमि
2	रामपुरहाट	6	,,
3	बसोया-बिष्णुपुर	7	,,
4	वीरचंद्रपुर	7	,,
5	तारापीठ	5	,,
6	मल्लारपुर	5	,,
7	भांडकाटा	6	,,
8	देवचा	5	,,
9	पटेलनगर	7	,,
10	सेवड़ाकुड़ि	6	,,
11	सिउड़ी	5	,,
12	पुरंदरपुर	5	,,
13	अविनाशपुर	5	,,
14	बेरुग्राम	6	,,
15-16	शांतिनिकेतन	5	,,
17	श्रीनिकेतन	2	,,
18	शियान		,,
19	नानुर		,,
20	कीर्नहार		,,
21	दासकलग्राम		,,
22	कांदरा	5	वर्धमान (बर्दवान)
23	आमगड़िया	6	,,
24	निरोल	6	,,
25	केतुग्राम	4	,,
26	गंगाटिकुटी	6	,,
27	काटोया	7	,,
28	श्रीखण्ड	5	,,
29	करजग्राम	5	,,
30	सिंगी+अग्रद्वीप	6	,,
31	पिंगला	6	,,
1.2.63	बिश्वराड़ा	5	,,
2	पूर्वस्थली	4	,,
3	विद्यानगर	5	,,
4-6	नवद्वीप	6	नदिया
7	बेलपुकुर	6	,,
8	नयापाड़ा	6	,,

13	पलाशीपाड़ा	6	नदिया
14	नेहइजुटिया	7	,,
15	सुरिया	6	,,
16	बड़ आंदुलिया	5	,,
17	चापड़ा	7	,,
18	दैयेर बाजार	7	,,
19	कृष्णनगर	8	,,
20	चित्रशाली	6	,,
21	बगुला	7	,,
22	मामजोयान	8	,,
23	बादकुल्ला	5	,,
24	दिगनगर	6	,,
25	फुलिया	8	,,
26	शांतिपुर	7	,,
27	कालना टाउन		वर्धमान (बर्दवान)
28	नोयारा गोयारा		,,
1.3.63	अकाल पौष		,,
2	वैद्यपुर		,,
3	सेनपुर		,,
4	सिमलोन		,,
5	धात्रीग्राम		,,
6	समुद्रगढ़		,,
7	नादनघाट		,,
8	काइग्राम		,,
9	मंतेश्वर		,,
10	काटाशाही		,,
11	मध्यमग्राम		,,
12	पारशाही (पाहरहटी)		,,
13	मेमारी		,,
14	कलानवग्राम		,,
15	बड़शूल		,,
16	काशीपाड़ा		,,
17	वर्धमान		,,
18	सोंचका		,,
19	गुलसी	7	,,
20	बुदबुदचरी	8	,,
25	एकषार	5	वर्धमान
26	नूतनहाट	6	,,
27	माजिग्राम	6	,,
28	चैतन्यपुर	5	,,
29	बलगुना	8	,,
30	भातार	5	,,
31	महाचारा	8	,,
1.4.63	साधनपुर	7	,,
2	पोलेमपुर	4	,,
3	श्रेहारा बाजार	7	,,
4	उचालन	6	,,
5	केन्दुर	5	,,
6	आकुइ	9	बांकुड़ा
7	शामपुर	5	,,
8	इन्दाम	4	,,
9	रसुलपुर	6	,,
10	हाटकृष्णनगर	5	,,
11	पात्रशायेर	4	,,
12	बालसी	4	,,
13	बांकिशोले	5	,,
14	हतिया	7	,,
15	रासग्राम	5	,,
16	कोतुलपुर	8	,,
17	जयरामबारी	7	,,
18	कामारपुकुर	4	हुगली
19	गोहाट	5	,,
20	बाली	9	,,
21	बड़डोंगल	3	,,
22	रामनगर	9	,,
23	राधानगर	3	,,
24	धामसा	8	,,
25–2.5.63	आरामबाग	8	,,
3	मुखाडांगा	5	,,
4	छांगरा	5	,,
5	जंगलपाड़ा	7	,,
6	राज बलहाट	8	,,

11	उत्तरपाड़ा	9	हुगली
12	कलकत्ता	9	कलकत्ता
13	ठाकुरपुकुर	8	24 परगना
14	उदयरामपुर	8	,,
15	फतेपुर	8	,,
16	सरिषा	6	,,
17	डायमंडहारबर	4	,,
18	हट्टुगंज	6	,,
19	कुल्पी	6	,,
20	केवडानला	9	,,
21	निश्चिंतपुर	5	,,
22	शिवकलीनगर	7	,,
23	काकद्वीप	5	,,
24	उकीलेरहाट, राजनगर	5	,,
25	बामनखाली	3	,,
26	रुद्रनगर	7	,,
27	गंगासागर	8	,,
28–30	रुद्रनगर	8	,,
31	बामनखाली		,,
1.6.63	काकद्वीप		,,
2-3	हारकुड़पॉइन्ट		,,
4-5	पाथर प्रतिमा (लांच से)		,,
6	रायदीघी		,,
7	काशीनगर	7	,,
8	जयनगर	8	,,
9	इसराला	8	,,
10	बारुइपुर	7	,,
11	नरेंद्रपुर	7	,,
12	यादवपुर	6	,,
13	कमला हाय. बालीगंज	6	कलकत्ता
14	खिदिरपुर	7	,,
15	हेयारस्कूल	7	,,
16	लेडीब्रेबॉर्न कॉलेज	5	,,
17	नारकेलडांगा	6	,,
18	महाजातिसदन	5	,,
19	ज्ञानभारती	6	,,
20	शाम बजार	4	

24	टालीगंज	8	कलकत्ता
25	जगत्सुधार गुरुद्वारा	5	,,
26	आशुतोष कॉलेज	4	,,
27	न्यूअलीपुर	5	,,
28	डॉ. विधानराय बाड़ी	6	,,
29	शिवपुर	9	हावड़ा
30	महियारी-आंटुल	7	,,
1.7.63	रानीहाटी	7	,,
2	जगत्पुर	6	,,
3–6	उलुबेड़िया	6	,,
7	कोलाघाट (मोटर से)	13	मेदिनीपुर
8	पाशकुड़ा	12	,,
9	नाहकुड़ी	12	,,
10	तमलुक	6	,,
11	नंदकुमार	6	,,
12	लक्ष्या	8	,,
13	सूताहाटा	7	,,
14	द्वारिबेनिया	5	,,
15	महिषादल	7	,,
16	कल्याणचक	9	,,
17	चंडीपुर	5	,,
18	ठाकुरनगर	7	,,
19	सुभाषपल्ली	3	,,
20	नाचिन्दा	9	,,
21	कांथी	7	,,
22	सातमाइल	7	,,
23	बालिघाई	6	,,
24	एगरा	5	,,
25	खतुइ	5	,,
26	ललाट	8	,,
27	खाकुड़दा	4	,,
28	बेलदा	7	,,
29	बाखराबाद	6	,,
30	नारायणगड़	6	,,
31	बेनापुर	9	,,
1.8.63	बलरामपुर	6	,,
2	[illegible]	[illegible]	

6	झाड़ग्राम	9	मेदिनीपुर
7	बीरिहांडी	8	,,
8	चंद्री	6	,,
9	चिचड़ा	5	,,
10	जयपुरा	4	सिंहभूमि (बिहार)
11	खंडामोदा	8	,,
12	बहरागोड़ा	4	,,
13	सिरसा	7	मयूरभंज (उड़ीसा)
14	राजालुका	6	,,
15	कुंभारमुंडकटा	4	,,
16	कुलीओना	6	,,
17	कुचेई	6	,,
18	बारीपदा	6	,,
19	रामनगर	7	,,
20	भालियाडीहा	7	,,
21	मोरड़ा	6	,,
22	रासगोविंदपुर	6	,,
23	नलगजा	7	,,
24	अमरदा	6	,,
25	बालियापाड़ा (बोट से)	21	बालेश्वर
26	सिंगला	8	,,
27	दरड़ा	5	,,
28	बहारड़ा	5	,,
29	रूपसी	7	,,
30	हळदीपदा	5	,,
31	बालेश्वर	9	,,
1.9.63	कुरुड़ा	5	,,
2	खंतापाडा	6	,,
3	बहानगा	6	,,
4	सोरो	7	,,
5	साबिरा	5	,,
6	मारकोणा	7	,,
7	राणीतोळा	5	,,
8	भद्रक	8	,,
9	भुदरड़ा	6	,,
10	भंडारी पोखरी	6	,,

15	जाजपुर रोड	7	कटक
16	दानगजि	5	,,
17	दुबुरि	8	,,
18	सुकिंड़ा	5	,,
19	मंगलपुर	5	,,
20	भुवन	6	ढेंकानल
21	गढ़नरसिंहप्रसाद	5	,,
22	मठका गोला	5	,,
23	बाहसिंगा	6	,,
24	कामाख्यानगर	5	,,
25	मुक्तापुर	9	,,
26	बरिहापुर	5	,,
27	परजंगा	5	,,
28-29	तालचेर	9	,,
30	दुमदुमा	8	,,
1.10.63	संबल	7	,,
2	सीलिंग	5	,,
3	कंटियापसी	6	,,
4	खमार	6	,,
5	बतीसीमा	9	,,
6	पाललहाड़ा	6	,,
7	बमपरडा	8	संबलपुर
8	बारकोटा	7	,,
9	कादोपाड़ा	8	,,
10	कसड़ा	11	सुंदरगढ़
11	केनभटा	5	,,
12	केनाइगड़	7	,,
13	लवणीपड़ा	6	,,
14	दर्जींग	7	,,
15	चांदीपोष	7	,,
16	बांकी	8	,,
17	जलदा	8	,,
18	राउरकेला	10	,,
19	वेदव्यास	7	,,
20	कांसबाहाल	9	,,
21	राजगंगपुर	8	,,

26	देवकरणपुर	8	सुंदरगढ़
27	करबड़ीहि	6	,,
28	सुंदरगढ़	5	,,
29	भंड़ाबहाल	7	,,
30	तालपटिया	8	संबलपुर
31	झारसुगुड़ा	7	,,
1.11.63	श्रीपुरा	8	,,
2	लपंगा	6	,,
3	रंगाली	7	,,
4	सासन	9	,,
5	संबलपुर	8	,,
6	हीराकुड	7	,,
7	कंटापाली बुरला	9	,,
8	गोड़भंगा	7	,,
9	अताबिरा	7	,,
10	कालापानी बुरला	7	,,
11	बरगढ़	8	,,
12	नीलेश्वर	7	,,
13	पानीमोरा	9	,,
14	बरपाली	11	,,
15	महादा	6	,,
16	डुंगापाली	6	बलांगीर
17	सालहाभाटा	5	,,
18	लुइसिंगा	9	,,
19	छटामखना	6	,,
20	बलांगीर	6	,,
21	झंकारपली	8	,,
22	चिड़ापाली	6	,,
23	भैंसा	7	,,
24	पटनागर	6	,,
25	परहेल	6	,,
26	लोहासिंहा	7	,,
27	दहित्स	6	संबलपुर
28	पदमपुर	7	,,
29	पलासाड़ा	9	,,
30	पुरेना	9	,,
1.12.63	[illegible]	8	

5	अंगाथी	8	संबलपुर
6	नरसिंहनाथ (पाइकमाल)	6	,,
7	बरटूंडा	9	,,
8	सुलेपारा	6	कलाहांडी
9	नूरपुरा (नवापाड़ा)	9	,,
10-11	खरिआर रोड	7	,,
12	कोमाखान	10	रायपुर (छत्तीसगढ़)
13	बागबहरा	9	,,
14	ओगंडबरी	9	,,
15	मामाभांजा	7	,,
16	महासमुंद	6	,,
17	बेलसोंडा	7	,,
18	आरंग	4.5	,,
19	(नबाबगंज) नवागांव	7	,,
20	समनडीह	7	,,
21-31	रायपुर	8	,,
1.1.64	रायपुर विवेकानंदाश्रम	4	,,
2	कुंभारी	6.5	दुर्ग
3	भिलाई	11.5	,,
4	सेलूद	12	,,
5	मर्रा	6	,,
6	भाठागांव	8	,,
7	अचौद	5	,,
8	हलदी	9	,,
9	एंगरा	6	,,
10	बालौद	9.5	,,
11	दुधली	5.5	,,
12	डौंडी लोहारा	7	,,
13	अचौली	7.5	,,
14	रानीतलाई (जबरतला)	7.5	,,
15	राजनांदगांव	11	,,
16	सोमानी	7	,,
17	दुर्ग	11	,,
18	कोटेरा	6	,,
19	नंदकठी	8	,,
20	धमधा	11	,,
21	[illegible]	7	

25	खड़ुवा		रायपुर
26	विश्रामपुर		,,
27	टेमरी		दुर्ग
28	बैतलपुर		बिलासपुर
29	सरगांव		,,
30	बिल्हा		,,
31	चकरभाटा		,,
1-2.2.64	बिलासपुर		,,
3	कटाकना		,,
4	तखतपुर		,,
5	धरमपुर		,,
6	मुंगेली		,,
7	फॉस्टरपुर		,,
8	महलीसूरजपुरा		,,
9	पंडरिया		,,
10	पांडातराई		,,
11	बोड़ला		दुर्ग
12	पालक		,,
13	चिल्पी		,,
14	सूपरवार		बालाघाट
15	जैतपुरी		,,
16	गढ़ी	7	,,
17	मुक्की	12	,,
18	बैहर	9.5	,,
19	परसाटोला	7	,,
20	उकुवा	8.5	,,
21	लौगुर	9	,,
22	टिकारी	10	,,
23	बालाघाट	7.5	,,
24	वारासिवनी	10	,,
25	मेंडकी	7	,,
26	नेबरगांवकला	11	,,
27	किरणापुर	7	,,
28	चंगेरा	9	,,
29	मोहझरी	8	,,
1.3.64	लांजी	9	,,

8	बोरगांव	8	भंडारा
9	मंगेझरी	8	,,
10	सुकळी	7	,,
11	तिरोड़ा	7	,,
12	बड़ेगांव	7	,,
13	करड़ी		,,
14	कोका		,,
15	रेंगेपार		,,
16	लाखनी		,,
17	धारगांव		,,
18	भंडारा		,,
19	दहेगांव		,,
20	तुमसर		,,
21	हर्दोली		,,
22	आंधळगांव		,,
23	कांद्री		,,
24	महादुला		नागपुर
25	रामटेक		,,
26	बनपुरी		,,
27	कन्हान		,,
28	भिलगांव		,,
29	नागपुर		,,
30	खापरी		,,
31	शिरूळ		,,
1.4.64	टाकळघाट		,,
2	सेलडोह		वर्धा
3	घोराड		,,
4	पवनार		,,
5	वर्धा		,,
6-7	सेवाग्राम		,,
8	महिलाश्रम	4	,,
9	गोपुरी	4	,,
10-20	परंधाम	5	,,
21	सुकळी	9	,,
22	झाड़गांव	7	,,
23	वायफड	7	,,

28	भिडी	6	वर्धा
29	इंझाळा	6	,,
30	दहेगांव धांदे	6	,,
1.5.64	पुलगांव	6	,,
2	सोनेगांवआबाजी	9	,,
3	सालोड हिरापुर	10	,,
4	बजाजवाडी, वर्धा	5	,,
5	दहेगांव मिस्किन्	8	,,
6	लोणसावळी	4	,,
7	कुरझडी	4	,,
8	मुरदगांव	5	,,
9	लोणी	8	,,
10	नाचणगांव	5	,,
11	सोरटा	6	,,
12	विरूळ	5	,,
13	धानोरी	8	,,
14	नांदोरा	5	,,
15	आर्वी	6	,,
16	कौंडण्यपुर	6	अमरावती
17	वरखेड	7	,,
18	भिष्णुर	4	वर्धा
19	सिरसोली	7	,,
20	आष्टी	7	,,
21	अंतोरा	7	,,
22	नांदोरा	6	,,
23	वडाळा		,,
24	लोणी		अमरावती
25	साहूर		वर्धा
26	तारासावंगा		,,
27	माणिकवाडा		,,
28	सुसुंद्रा		,,
29	नारा		,,
30	बाटोदा		,,
31	किन्हाळा		,,
1.6.64			,,
2	येनगांव		,,

7			वर्धा
8			,,
9	वाढ़ोणा	3.5	,,
10	पिंपळखुटा	3.5	,,
11			,,
12	खरांगणा		,,
13	मांडवा		,,
14	पवनूर		,,
15	आंजी		,,
16	जामनी	3	,,
17	येळीकेळी	4	,,
18	पिपरी	2	,,
19.6से3.11.64	परंधाम	7	,,
4	गोपुरी	4.5	,,
5	राष्ट्रभाषा, वर्धा	2.5	,,
6-7	महिलाश्रम	2.5	,,
8	सेवाग्राम	4	,,
9	खरांगणा (गोडे)	3.5	,,
10	करंजी काजी	3	,,
11	मदनी	3	,,
12	भानखेडा	4	,,
13	सोनेगांव (स्टे.)	4	,,
14.11से9.7.65	ब्र.वि.मं. परंधाम		,,

मोटर यात्रा

10 से 26 विदर्भ (महाराष्ट्र)
27 चांदा
28 भद्रावती
29
30 यवतमाळ
31.7 से 2.8.65 विदर्भ (महाराष्ट्र)
3 मंगरूळपीर
4-5
6 चौंहट्टा
7 से 11 मराठवाडा (महाराष्ट्र)
12 हिंगोली

30	कटनी	
31		
1.9.65	रीवा	
2		
3-4	इलाहाबाद	
5	पसना	
6	मिरजापुर	
7–10	काशी	
11-13	पटना	
14	मोकामा	
15	मुंगेर	
16	हवेली खड़गपुर	
17	जमुई–खादीग्राम	
18	झाझा	
19	लखीसराय	
20	खगड़िया	
21	बेगूसराय	
22	सिकंदरा (मुंगेर)	
23	सोखोदेवरा	
24	गया	
25	शेरघाटी	
26	आमस	
27	औरंगाबाद	
28	डाल्टेनगंज	
29	लातेहार	
30	रांची	
1.10.65	हजारीबाग	
2	चतरा	
3	हंटरगंज	
4-5	बोधगया	
6	रजौली	
7	झूमरीतलैया	
8	डोरंडा	
9	चकाई	
10	देवघर	
11	घोरमारा	
12	जामताड़ा	संथाल परगना
16	गोड्डा	,,
17	सरैयाहाट	संथाल परगना
18	बांका	भागलपुर
19	कमालपुर-मुलतानगंज	
20	नौगछिया	भागलपुर
21	पूर्णिया	
22	किशनगंज	
23	कटिहार	
24	रानीपतरा	
25	फारबीसगंज	पूर्णिया
26	रुपौली	,,
27	बनमनखी	,,
28	करजाइन बाजार	सहरसा
29	सहरसा	,,
30	सुपौल	,,
31	मधेपुरा	,,
1.11.65	कुरसैला	पूर्णिया
2	बिहिपुर	भागलपुर
3	बलिया	मुंगेर
4	रोसडा	दरभंगा
5	समस्तीपुर	,,
6	बहेड़ा	,,
7	केउटी	,,
8	जयनगर	,,
9	बेनीपट्टी	,,
10	मधुबनी	,,
11	लहेरियासराय	,,
12	नरसिंहपुर	मुजफ्फरपुर
13	सीतामढ़ी	,,
14	पुपरी	,,
15	मुजफ्फरपुर	
16	महेसी	चंपारण
17	धाका	,,
18	मोतिहारी	,,
19	रक्सौल	,,
20	वृंदावन आश्रम	,,
21	नरकटियागंज	,,

25	सरैया	मुजफ्फरपुर
26	बेलसर हाट	,,
27	हाजीपुर	,,
28	छपरा	सारन
29	शाहपुर सिंथबलिया	,,
30	गोरियाकोठी	,,
1.12.65	हथुवा	,,
2	भोरे	,,
3	मैरवा	,,
4	सीवान	,,
5	ताजपुर	,,
6	दानापुर	पटना
7	आरा	शहाबाद
8	पीरो	,,
9	विक्रमगंज	,,
10	बढ़पुर ब्रह्मपुर	,,
11	बक्सर	,,
12	सासाराम	,,
13	भभुआ	,,
14	डालमियानगर	
15	बाराचट्टी	गया
16	बगोदर	हजारीबाग
17	धनबाद	
18	चांडील	सिंहभूमि
19.12.65से 15.3.66	जमशेदपुर	
16 से 17		
18	पुरुलिया	
19		
20	जमुई	
21	बिहपुर	
22.3.66 से 3.5.66	रानीपतरा	
4	रोटाहाट	
5	आमौर	
6		
7	मनिहारी	
8 से 10		
11	किशनगंज	
12-13	किशनगंज + ठाकुरगंज	
14		
15.5.66-30.6.66	रानीपतरा	
1-14.7.66	बिहपुर	
15	गोगरी	
16	साहेबपुर कमाल	
17	दलसिंगसराय	
18-13.11.66	ल. पुरी पूसारोड़-वैनी	
14	सीहो	
15-30	मुजफ्फरपुर	
1.12.66	मुजफ्फरपुर	
2	लहेरियासराय-मधुबनी	
3.12.66 से 12.2.67	मधुबनी	
13.2 से 7.3.67		
8 .3.67 से 28.12.67	ल. पुरी वैनी	

(आगे की मोटरयात्रा (1968-69) का निश्चित विवरण उपलब्ध न होने से छोड़ दिया है।)

•

इस पदयात्रा पड़ाव-सूचि में काफी स्थान खाली छूटे हैं। काफी कोशिश करने पर भी पड़ावों के उन स्थानों के नाम नहीं मिल पाये। विशेषतया अक्तूबर 1959 से दिसंबर 1960 के बीच के काफी नाम छूटे हैं।

दूसरी बात नामों में भिन्नता। अलग-अलग ग्रंथों-पत्रिकाओं में अलग-अलग नाम मिलते हैं। कभी पूर्णतया अलग तो कभी स्पेलिंग में फर्क मिलता है। खासतौर से दक्षिण भारत के गांवों के नामों की शुद्धता के बारेमें कोशिश के बावजूद हमको समाधान नहीं हुआ है। वैसे ही जिलों के बारेमें भी। कई बार वह जानकारी उपलब्ध नहीं हो पायी। अब तो पचासों नये जिले बन चुके हैं, इसलिए वैसे भी उसकी उपयोगिता कम हो गयी है। पूरी कोशिश के

खंड 1 की अन्य वचन-सूचि

(खंड 1 में जिन वचनों की सूचि छूट गयी थी मात्र उनकी यह सूचि है)

सूचियां

संक्षेप खुलासा

(20 खंडों की संकलित वचन-सूचि और 20 वे खंड की वचन-सूचि के लिए)

अथ – अथर्ववेद
अमृ – अमृतानुभव (ज्ञानदेवरचित)
अयो – तुलसीरामायण अयोध्याकांड
अव्र – अभंग-व्रतें विनोबाजीकृत (खंड 14)
आभ – आश्रम भजनावलि (नवजीवन प्रकाशन, अमदाबाद)
आरुणिक – आरुणिकोपनिषद (खंड 2)
ईश – ईशावास्योपनिषद (खंड 2)
ईशशांभा – ईशावास्योपनिषद शांकरभाष्य
ईसा – ख्रिस्तधर्म-सार (खंड 8)
उप शांतिमंत्र – उपनिषद शांतिमंत्र (खंड 2)
उरा – उत्तररामचरितम् (भवभूतिकृत)
ऋवे – ऋग्वेद
ऋ, ऋसा – ऋग्वेद-सार (खंड 1)
एक – एकनाथ (खंड 10)
ऐत – ऐतरेयोपनिषद (खंड 2)
ऐब्रा – ऐतरेय ब्राह्मण
कठ – कठोपनिषद (खंड 2)
कठशांभा – कठोपनिषद शांकरभाष्य
कठो – कठोपनिषद मूल
कुसा – कुरानसार (खंड 8)
कुसासू – कुरानसार के संस्कृतसूत्र (खंड 8)
केन – केनोपनिषद (खंड 2)
कैवल्य – कैवल्योपनिषद (खंड 2)
कौ – कौषीतकि उपनिषद (खंड 2)
कौषीतकि – कौषीतकि उपनिषद मूल
ख्रिस्त – ख्रिस्तधर्मसार (खंड 8)
गी – गीता
गीशांभा – गीताशांकरभाष्य

चैतन्य – चैतन्यमहाप्रभु
छां – छांदोग्योपनिषद (खंड 2)
छांदो – छांदोग्योपनिषद मूल
जाबाल – जाबालोपनिषद (खंड 2)
ज्ञा – ज्ञानदेवमहाराज
ज्ञाने – ज्ञानेश्वरी
ज्ञाभ – ज्ञानदेव के भजन (खंड 10)
तुका – तुकाराम के भजन (खंड 11)
तुकागाथा – तुकाराम की गाथा (चित्रशाळा 1925)
तुरा अयो – तुलसीरामायण अयोध्याकांड
तुरा अरण्य – तुलसीरामायण अरण्यकांड
तुरा उत्तर – तुलसीरामायण उत्तरकांड
तुरा किष्किं – तुलसीरामायण किष्किंधाकांड
तुरा बाल – तुलसीरामायण बालकांड
तुरा लंका – तुलसीरामायण लंकाकांड
तुरा सुंदर – तुलसीरामायण सुंदरकांड
तैत्ति – तैत्तिरीयोपनिषद (खंड 2)
तैत्तिरीय – तैत्तिरीयोपनिषद अनुवाकादि
तैब्रा – तैत्तिरीय ब्राह्मण
तैभा – तैत्तिरीयभाष्य
तैसं – तैत्तिरीय संहिता
दास, दासबो – दासबोध (रामदासकृत)
धम्म – धम्मपदं (खंड 7)
नमे, नरसी – नरसिंह मेहता
नमो – नमोदशक (भीष्मस्तवराज – महाभारत)
नाघो – नामघोषा-सार (खंड 9)
नाभसू – नारदभक्तिसूत्र
नाम – नामदेव (खंड 10)
नारा – नारायणोपनिषद (खंड 2)

प्रश्नो – प्रश्नोपनिषद मूल
प्रा – प्राज्ञसूत्राणि (स्थितप्रज्ञदर्शन पर सूत्र – खंड 3)
प्राअ – प्राज्ञसूत्र-अधिकरण (खंड 3)
प्रा, प्रास्ता – प्रास्ताविक
बाल – तुलसीरामायण बालकांड
ब्रह्मबिंदू – ब्रह्मबिंदू उपनिषद
ब्रसू – ब्रह्मसूत्र
ब्रसू उपो – ब्रह्मसूत्रभाष्य उपोद्घात
ब्रसूभा, ब्रसूशांभा – ब्रह्मसूत्र शांकरभाष्य
बृ, बृह – बृहदारण्यकोपनिषद (खंड 2)
बृहद्, बृहदा – बृहदारण्यकोपनिषद मूल
भाग – भागवत
भासा, भाग – भागवतधर्म-सार (खंड 5)
मना, मश – मनाची शतें (खंड 11)
मनु – मनुशासनम् (खंड 6)
मश, मना – मनाची शतें (खंड 11)
महाआदि – महाभारत आदिपर्व देवबोधटीका
महा वन – महाभारत वनपर्व
माणिक्क – माणिक्कवाचकर
मांका – मांडूक्यकारिका
मांडूक्य – मांडूक्योपनिषद (खंड 2)
मुंडक – मुंडकोपनिषद (खंड 2)
मैत्रा – मैत्रायणि उपनिषद (खंड 2)
मोरो केका – मोरोपंत केकाशतक (खंड 11)
यजु – यजुर्वेद
यजुवाज – यजुर्वेद वाजसनेयि संहिता
योगवा – योगवासिष्ठ
योसू – योगसूत्र
रघु – रघुवंश (कालिदासकृत)
रा करुणा – रामदास – करुणाष्टकें
राबो, बोध – रामदास बोधबिंदु (खंड 11)
राभ – रामदास के भजन (खंड 11)
रा स्फुट – रामदास स्फुट कविता
वाज – वाजसनेयि संहिता
वारा अयो – वाल्मीकिरामायण अयोध्याकांड
वारा किष्किं – वाल्मीकिरामायण किष्किंधाकांड
वारा बाल – वाल्मीकिरामायण बालकांड
विगी – विचखनुगीता (खंड 12)
विन – विनयांजलि (खंड 9)
विप – विनयपत्रिका (तुलसीदासजीकृत)
विसना – विष्णुसहस्रनाम (खंड 6)
शाकुं – शाकुंतल (कालिदासकृत)
श्वे – श्वेताश्वतरोपनिषद (खंड 2)
श्वेता – श्वेताश्वतरोपनिषद मूल
संप्र – संतांचा प्रसाद (तुकाराम की प्रसादी – खंड 11)
सरामा सुंदर – समर्थ रामदासकृत रामायण सुंदरकांड
साम – सामवेद
सा, सासू – साम्यसूत्र – विनोबाजीकृत (खंड 3)
सावृ – साम्यसूत्रवृत्ति (खंड 3)
स्फुट – रामदास की स्फुट कविता

•

(20वें खंड में आये संदर्भ-सूचि आदि के संक्षेपों का खुलासा)

ग्रासेवृ – ग्रामसेवावृत्त (मराठी पत्रिका)
परि – परिशिष्ट
प्रेप – प्रेरकपत्रांश (सं. बालकोबाजी)
भूगं – भूदानगंगा
मवि – महाराष्ट्रांत विनोबा
मैं – मैत्री (हिंदी मासिक पत्रिका)
रामरस – रामरस बरसे पुस्तक (सं. उषाबहन)
विचिं – विनोबा चिंतन

वचन-सूचि

(खंड 20)

नाम-सूचि

संदर्भ-सूचि

पृष्ठ	पॅरा	संदर्भ
		भारतीय संस्कृति
3.	1	5.5.56 तिरुपति
	2	1.2.58 धारवाड़
	3	5.5.56 तिरुपति
4.	1	5.5.56 तिरुपति
	2	7.9.57 मड़िकेरी
	3-4	13.3.55
5.	1	5.12.76
	2	15.4.58 खारेपाटण
	3	23.4.52 जौनपुर
6	पूर्ण	25.2.58
7.	1-2	25.2.58
	3	5.3.66 जमशेदपुर
8.	1-2	सत्याग्रहदर्शन – दूसरी खोज
	3	29.1.50
9.	1	सत्याग्रहदर्शन – दूसरी खोज
	2	8.4.79+11.3.58
	3	5.10.61 जांजी
10.	1	सर्वो अक्तू 49.143 (पुणे 21.8.49)
	2-3	2.8.60 इंदौर
11.	1	2.8.60 इंदौर
	2–4	17.12.59 सिरसा
	5	13.3.58
12.	1–3	16.12.59 सिरसा
	4	20.9.59
	5	1.3.55 (उड़ीसा)
13.	1	सर्वो जन 50.324
	2	1.3.55
	3–5	30.12.54
	7	भूय 11.5.70
15.	1-2	भूय 11.5.70
	3	1.2.58 धारवाड़
16.	1	2.2.59 वल्लभनगर
	2-3	मधुकर 49
	4	14.8.59
	5	2.4.58 साबडांग
17.	1	2.4.58 साबडांग
	2	15.5.58+20.9.59 जम्मू
	3	22.3.58 निपाणी
	4	1.2.58 धारवाड़
18.	1	1.2.58 धारवाड़
	2	23.12.49+भूगं 8.43
	3	5.10.61
19.	1-2	5.10.61
	3	20.9.56 मेकपालेयम्
	4	साम्ययोग साप्ताहिक
20.	1	साम्ययोग साप्ताहिक
	2	17.1.57
	3-4	27.12.54
	5	17.2.57 तिरुप्पुकुड
21.	1	5.10.53 भागलपुर
	2	गीताई चिंतनिका
	3	14.3.59 सीकर
22.	1	14.3.59 सीकर
	2	विप्र 2.35
	3	15.5.48 अजमेर
	4	14.11.56
23.	1	5.5.48 अजमेर
	2–4	6.8.58 भांबुवाड़ी

25.	1	25.6.56 पुदुपट्टु
	2	विप्र 20.4.64 पवनार
	3	8.9.65 काशी + 7.5.59
26.	1–3	5.5.56 तिरुपति
27.	1	5.5.56 तिरुपति
	2	9.5.55+24.3.55 + 15.3.55
28.	1-2	5.5.56 तिरुपति
29.	1-2	23.2.58 जोग
	3–5	15.4.57
	6	30.7.58
30.	1	25.2.57 नत्तम्
	2	14.3.59 सीकर + 30.12.54
31.	1	21.4.53 पकरीबरावां
	2	3.9.65 इलाहाबाद
	3	13.9.57 आनेचौकुर
	4	भूय 11.5.70
32.	1	22.8.56 भावानी
	2	14.2.58
	3	1.2.58
33.	1	14.2.58
	2-3	16.3.65 पवनार
34.	1	16.3.65 पवनार
	2	1.6.57 (सेवक मार्च 57.108)
35.	1–4	1.6.57 (सेवक मार्च 57.108)
	5	16.1.57 त्रिची
36.	1	24.4.58 हातखंबा
	2	1.2.58 धारवाड़
37	पूर्ण	1.2.58 धारवाड़
38.	1	मैं 77.253
	2	मैं 76.265
	3	27.4.60 इंदौर
	4	3.6.58 पंढरपुर
39.	1	9.7.58 गेवराई

	2	7.5.59
	3–5	15.4.63
41.	1	15.4.63
	2	शिक्षाविचार
	3	20.4.40 दिल्ली
42.	1	26.8.57 मंगलोर
	2	11.5.58 जयसिंहपुर
	3	8.3.58 इल्याळ
	4	खंड 2.325
	5	8.3.58
43.	1	9.4.57 तिरुनवेली
	2	14.6.57
	3	14.3.59 सीकर
44.	1	14.3.59 + 10.1.59
	2	शिक्षाविचार
	3	13.9.71 उषा डायरी
45.	1	मै मार्च 69.110
	2–5	शिक्षाविचार
46.	1	14.3.59 सीकर
	2	15.12.60 काशी
47.	1-2	15.12.60 काशी
	3	17.7.59 गुलमर्ग
48.	1	17.7.59 गुलमर्ग
	2	शिक्षाविचार
	3	14.3.58 बेलगांव
	4	15.12.60 काशी
49.	1	19.9.57
	2	27.1.59 ऋषभदेव
	3	11.3.58 नंदगढ़
	4	21.8.49 पुणे
50.	1	5.2.61 पूर्णिया
	2	21.8.49 पुणे
51	पूर्ण	15.6.63 कलकत्ता
52	पूर्ण	जन 1942 मद्रास
53	पूर्ण	आकल 22+ शिक्षाशिक्षक

	3-4	26.2.49
55	पूर्ण	26.2.49
56.	1	27.1.58 हुबळी
	2-3	12.2.58 गोकर्ण + 18.7.57 नीलेश्वर
57.	1	मवि2.132 + 19.10.57 तुमकुर
	2	7.12.67 पूसारोड़
58.	1-2	7.12.67 पूसारोड़
	3	भाषा का प्रश्न 35+80
59.	1	11.10.57 खिड़की
	2-4	17.3.65 पवनार
60.	1-2	1.1.58
	3-4	19.10.57 तुमकुर
	5	भाषा का प्रश्न
61.	1	भाषा का प्रश्न
	2	
	3	1.8.58 शिमोगा
62.	1	12.2.58 गोकर्ण
	2	भाषा का प्रश्न 38,30+ 27.1.58 हुबली + 19.10.57
	3-4	28.1.58 हुबली
	5	शांतियात्रा 46+ भाषा का प्रश्न 30
63.	1	भाषा का प्रश्न 45+ 9.11.57 अरसीकेरे
	2	9.11.57
	3	3.3.65 पवनार
64.	1-2	27.1.58 हुबली
	3-4	
65.	1	1.10.49 विजयवाड़ा
	2	14.2.58 कुमटा
66.	1-2	14.2.58 कुमटा
	3-4	1965 पवनार

68.	1	
	2-4	1956
	5	सेवक 52.53
	6	8.9.50
69.	1	8.9.50
	2	11.12.50 (सेवक)
	3	भूय 17.8.56
70.	1-3	सेवक दिसं 50.558
	4	1.2.58
71.	1-2	सेवक दिसं 50.558
	3-4	महाराष्ट्र धर्म साप्ताहिक
72.	1	महाराष्ट्र धर्म साप्ताहिक
	2	19.4.60
73	पूर्ण	19.4.60
74.	1-2	5.9.71 उषा डायरी
	3	सर्वो सितं 52.परि32
	4-5	सेवक 1952.196-202
75-76	पूर्ण	सेवक 1952.196-202
77.	1	2.6.61
	2-3	19.6.63 कलकत्ता
	4	29.10.58 बड़ौदा
78.	1	27.7.58 भानसहिवरे
	2-3	17.3.65 पवनार
79-80	पूर्ण	27.6.57 मलप्पुरम्
81-82		
83.	1	
	2	27.6.57 मलप्पुरम्
	3	सेवक 49.125
84-85		
86.	1-3	
	4	सर्वो नवं 49.226
87		
88.	1	
	2-7	मैं 74.192
89.	1-2	मैं 74.547

	2	सर्वो दिसं 49.314
93 से 99		लोकनागरी लिपि
100.	1-2	लोकनागरी लिपि
	3	सर्वो 55.440 (4.2.55)

कश्मीर का प्रश्न

103.	1	1.6.58 पंढरपुर
	2	28.2.59 अजमेर
	3	21.5.59 पठानकोट
	4	22.5.59 लखनपुर
	5	भूमिपुत्र 16.4.59
104.	1	भूमिपुत्र 16.4.59
	2–5	22.5.59 लखनपुर
	6	2.6.59 मानसर
105.	1-2	22.5.59 लखनपुर
	3-4	26.5.59 सबार
	5	20.7.59 बाबारेषि
106.	1	22.8.59 बेरीनाग
	2–4	29.5.59 मांडली
	5-6	20.9.59 कठुवा
107.	1	20.9.59 कठुवा
	2	15.7.59 गुलमर्ग
	3-4	26.7.59 हिंदवारा
	5–7	मै सितं 1994 कुसुमब. लेख
	8	2.8.59 श्रीनगर + 14.7.59 गोरबन
108.	1	14.7.59 गोरबन
	2-3	25.8.59 रामसू
109.	1	25.8.59 रामसू
	2	22.7.59 पट्टण
	3	30.6.59 पूंच
	4-5	25.8.59 रामसू
110.	1-2	25.8.59 रामसू
	3-4	15.7.59
	2-3	10.8.59 मार्तण्ड
	4-5	6.8.59 श्रीनगर
113.	1	6.8.59 श्रीनगर
	2-3	26.7.59
114.	1	26.7.59
	2-3	15.7.59 गुलमर्ग
	4-5	25.6.59 थानामंडी
115.	1–4	10.6.59 जम्मू
116.	1-2	10.6.59 जम्मू
	3	31.5.59 रामकोट
117.	1	15.7.59 गुलमर्ग
	2	14.8.59 पहलगांव
	3	17.6.59 सुंदरबनी
	4	21.6.59 नारियां
	5	20.6.59 नौशेरा
118.	1–5	17.7.59
	6	1.7.59 पूंच
119.	1	1.7.59 पूंच
	2-3	23.6.59 रजौरी
	4	4.9.59 गढ़ी
120.	1-2	4.9.59 गढ़ी
	3	20.9.59 कठुवा
	4-5	22.8.59 बेरीनाग
121.	1–4	22.8.59 बेरीनाग
	5	28.6.59 सूरतकोट
	6	20.9.59 कठुवा
122.	1	23.9.59 पठानकोट
	2-3	2.8.59 श्रीनगर
123.	1	14.8.59 पहलगांव
	2–4	6.8.59 श्रीनगर
124.	1-2	6.8.59 श्रीनगर
	3	20.7.59 बाबारेषि
	4	21.7.59 मागाम
125.	1-2	25.6.59 थानामंडी
	3	14.6.59 गंधारवान

127.	1	1.6.59 बिलासपुर
	2	30.5.59 गुजरु नगरौटा
	3	2.9.59 उधमपुर
	4	31.7.59 सिंगपुर
	5	14.8.59 पहलगांव
128.	1	14.8.59 पहलगांव
	2–4	6.8.59 श्रीनगर
129.	1	6.8.59 श्रीनगर
	2-3	30.5.59 गुजरु नगरौटा
	4	सितं 65 इलाहाबाद
130.	1-2	सितं 65 इलाहाबाद
	3-4	20.9.59 कठुवा
	5	23.7.59 दिलना
131.	1-2	23.7.59 दिलना
	3	14.6.59 गंधारवान
132.	1	21.9.59 सुजानपुर
	2	23.9.59 पठानकोट
	3-4	2.8.59 श्रीनगर

नाममालादि विविध

135–37	पूर्ण	सर्वोदय जून 1952
138.	1–6	सर्वोदय
	7–12	महादेवी पत्र 15.11.64
139.	1–7	महादेवी पत्र 15.11.64
	8–10	4.6.64 ठाणेगांव
140.	1	4.6.64 ठाणेगांव
	2–4	20.5.64 आष्टी
	5	सर्वो जन 50.962
141.	1	सर्वो जन 50.962
	2	30.3.60
	3	20.2.66
142	पूर्ण	20.2.66
143.	1–3	20.2.66
	4-5	23.11.66 मुजफ्फरपुर
144.	1–3	23.11.66 मुजफ्फरपुर

147.	1-2	भूय 10.10.58 मीरा डायरी
	3	भूय 5.9.58
148	पूर्ण	भूय 5.9.58
149.	1	27.9.66 वैनी
	2	8.3.67 वैनी
150.	1-2	29.9.63
151.	1	29.9.63
	2-3	6.1.64 भाठागांव (दुर्ग)
152.	1	6.1.64 भाठागांव (दुर्ग)
	2	11.9.58
153	पूर्ण	11.9.58
154.	1–6	रामरस बरसे 61
	7–9	रामरस बरसे 16
155.	1-2	रामरस बरसे 16
	3-4	18.3.42 कापडणें
156.	1-2	2.5.64 सोनेगांव आबाजी
157	पूर्ण	भूय 14.3.58
158.	1-2	भूय 14.3.58
	3	मै 73.619
159	पूर्ण	मै 73.619–22
160.	1-2	31.5.64 किन्हाळा
	3	ग्रासेवृ जुला 1940
	4	18.3.42 कापडणें
161	पूर्ण	18.3.42 कापडणें
162-63	पूर्ण	10.6.64
164.	1	मधर्म 20.7.25
	2-3	भूय 1.4.58
165	पूर्ण	भूय 1.4.58
166.	1	भूय 1.4.58
	2	8.10.58 ओरी (भरूच)
167	पूर्ण	8.10.58 ओरी (भरूच)
168	पूर्ण	मै 1990.175
169.	1	भूय 10.4.64
170.	1	भूय 10.4.64
	2–4	24.1.63 पथर्रा

172	पूर्ण	31.8.60 कस्तूरबाग्राम
173-74	पूर्ण	21-22.3.34 नालवाडी
175-77	पूर्ण	31.10.63
178.	1	4.3.47 पवनार
	2-4	3.9.1924
	5	मधर्म 3.8.25
179.	1-2	मधर्म 7.12.25
	3	मधर्म 12.11.24
180	पूर्ण	मधर्म 12.11.24
181	पूर्ण	1945
182	पूर्ण	मधर्म 20.9.26
183	पूर्ण	मधर्म प्रासंगिक185
184-85	पूर्ण	मधर्म 22.2.26
186.	1	मधर्म 22.2.26
	2-4	सर्वो सितं 49.115
	5	सर्वो अग49.39
187.	1	सर्वो अग49.39
	2-3	27.7.60
188	पूर्ण	27.7.60
189.	1-2	19.10.61 बरुआ पोखरी
190.	1-3	19.10.61 बरुआ पोखरी
	4	6.7.58
191	पूर्ण	6.7.58
192.	1	6.7.58
	2-4	13.4.62 दामोदरधाम
193.	1-3	13.4.62 दामोदरधाम
	4	23.6.63 कलकत्ता
194	पूर्ण	23.6.63 कलकत्ता

विचार-कणिका

195.	1	भूय 8.8.58
	2	भूय 3.1.58
	3	18.9.66 वैनी
	4-6	भूय 3.1.58
196.	1	भूय 6.12.57

197.	1	पत्र कनुभाई 15.7.60
	2-3	पत्र मदालसा 15.7.55
	4	पत्र केलकर 2.10.55
	5	भूय 18.7.58
198.	1	भूय 29.12.58
	2	20.12.58 अमदाबाद
	3	17.10.58 उदेपुर
	4	18.9.63 सुकिंदागढ़
199.	1-2	19.6.58 लातूर
	3	29.12.58
	4	6.10.61 जानी
200.	1	5.6.66 रानीपतरा
	2	20.7.64
	3	भूय 11.10.57
	4	20.9.66 वैनी
201.	1-2	3.3.60 जालंधर + 27.4.64 वाटखेड
	3	29.11.58
202.	1-2	भूय 6.12.57
	3	सर्वो फर 52.1277
	4	16.1.58
203.	1	पत्र कृष्णचंद्रजी 14.12.58
	2	29.12.58 सिद्धपुर
	3	1.6.58 पंढरपुर
204.	1	सर्वो सितं 52. परि4
	2	सर्वो मार्च 52.1347
	3	29.9.63 तालचेर
205.	1	29.9.63 तालचेर
	2	17.12.59 छोटा उदेपुर
	3	24.1.63 निरोल
206	1	27.1.63 कटवा
	2	13.11.61 बरहाट
	3	15.7.66 बिहपुर
	4-5	8.9.63 भद्रक
207.	1	8.9.63 भद्रक

208.	1	18.10.63 राउरकेला
	2	1.2.61 बलिया
	3	6.10.61 जांजी
	4	25.2.62
	5	भूय 24.8.56
	6	7.1.58 हंसभावी
	7	10.11.58 सोनगढ़
209.	1	27.7.60 इंदौर
	2	27.7.58 भानसहिवरे
	3-4	2.2.64 बिलासपुर
210	पूर्ण	2.2.64 बिलासपुर
211.	1	28.12.60 कुद्रा
	2–4	7.1.49 धुलिया
212.	1	18.4.58 ओणी
	2	23.3.49 औरंगाबाद
	3	28.9.63 तालचेर
	4	13.1.49 धुलिया
213.	1	14.11.66 मुजफ्फरपुर
	2	4.1.49 धुलिया
	3	31.5.58 पंढरपुर
214.	1	भूय 9.6.69
	2	31.12.49 पवनार
	3	भूय 28.2.58
	4	भूय 25.7.58
	5	7.3.62
215.	1	19.9.58
	2	भूय 23.9.55
	3	16.5.63 सोरिसा
	4	
216.	1	10.8.60 इंदौर
	2	10.10.58 मांगरोळ
217.	1	9.8.58 चालीसगांव
	2	प्रेप 184/45
	3	पत्र द्वारको 11.5.52
218.	1	2.11.58 बोरसद
	2	[illegible]

219.	1–3	30.3.63 भालरा
	4	11.1.62 ठकुवाखाना
	5	13.11.62 भृंगोल
220.	1–3	13.11.62 भृंगोल
	4	1.11.58 आणंद
221.	1	1.11.58 आणंद
	2	8.8.58 चालीसगांव
	3	भूय 18.7.58 निर्मला डायरी
	4	6.10.61 जांजी
	5	भूदानयज्ञवार्ता 11.8.55
222.	1-2	7.8.64 पवनार
	3	9.12.62 जियागंज
	4	22.11.62 विरामपुर
223.	1	21.11.68 रामानुजगंज
	2	24.7.60 इंदौर
	3	8.10.49 वर्धा
224.	1	8.10.49 वर्धा
	2	23.3.49 औरंगाबाद
225.	1	4.1.49 धुलिया
	2	4.12.62 रघुनाथगंज
	3	10.11.62 पीपला
	4	28.4.70 गोपुरी
226.	1	28.5.58 पंढरपुर
	2-3	15.10.63 चारीपोष
227.	1	मवि 3
	2	प्रेप 9/60
	3	भूदानयज्ञवार्ता 11.8.55
	4	24.8.60 इंदौर
228.	1	सर्वो अग 49.53
	2	7.3.62
	3	भूय 15.7.55
	4	26.7.60 इंदौर
229.	1	पत्र द्वारको नवं 52
	2	रामरस 36
	3	पत्र गोविंदराव 7.12.51
	4	[illegible]

	2	21.11.58 राजकोट
	3	8.3.57
231.	1	8.3.57
	2	22.12.58 कोबा
	3	26.7.58 चिलखनवाडी
232.	1	भूय 23.9.55
	2	25.8.60 इंदौर
	3	भूय 13.11.56
	4	भूय 7.12.56
233.	1-2	भूय 9.11.56
	3-4	भूय 28.12.56
234.	1	31.8.60 कस्तूरबाग्राम
	2	24.3.64 महादुला
	3	भूदानयज्ञवार्ता11.8.55
	4	भूय 15.8.58
	5	10.9.66 पूसारोड़
	6	सर्वो अग 49.53
235.	1	सर्वो सितं 52. परि2
	2	2.7.66 बिहपुर
	3	सर्वो सितं52. परि14
	4	19.10.50 सागताला
	5	भूय 9.11.56
	6	भूय 21.12.56
236.	1	7.7.58 औरंगाबाद
	2	भूय 5.8.58
	3	5.11.65
	4	भूय 13.12.57
	5	मै अक्तू 70 आश्रमवृत्त
237.	1	भूय 26.9.55
	2	15.10.71 उषा डायरी
	3	सर्वो मार्च 52.1325
238.	1	17.10.58
	2	1.1.64
	3	पत्र पंढरी 28.5.59
239.	1	11.2.62 घेयारी
	2	18.10.63 राउरकेला

240.	1	मैं 73.1246
	2-3	15.8.60 इंदौर
	4	14.9.59
	5-6	16.5.49
241.	1	6.6.66 रानीपतरा
	2	22.12.63 रायपुर
	3	18.10.63 राउरकेला
	4	15.9.71 उषा डायरी
242.	1	20.8.60 इंदौर
	2	15.11.58 बावळा
	3	8.5.65 गोपुरी
	4	27.2.58 वनवासी
243.	1	27.2.58 वनवासी
	2-3	9.12.58 धांगध्रा
	4	22.10.58 औरवाड़
244.	1	15.7.66 बिहपुर
	2	11.11.61 बरहाट
	3	23.5.49 तिरुपुर
	4	प्रेप 65/7
	5	12.1.49 धुलिया
245.	1	23.3.49 औरंगाबाद
	2	22.5.49
	3	30.1.49 दिल्ली
	4	7.3.49
246.	1	भूय 1.3.57
	2	23.11.66 मुजफ्फरपुर
	3	मै 67.99
	4	16.8.60 इंदौर
247.	1	19.4.58 वाकेड़
	2	भूय 12.8.55
	3	पत्र गौतम 22.6.59
	4	भूय 17.1.58
248.	1	भूय 17.1.58
	2	17.7.58 औरंगाबाद
	3	9.8.60 इंदौर
249.	1	9.11.58 वरतेज

	2-4	मैं 1990.395
	5	भूय 5.4.57
251.	1	21.5.63
	2	15.10.58 रंगपुर
	3-4	मैं 90.263
252.	1	21.2.58 हलगेरी
	2	25.2.63 फूलिया
	3	1.3.63 अकालपोस
253.	1	1.3.63
	2-3	15.10.71 उषा डायरी
	4	5.10.58 शुक्लतीर्थ
254.	1	2.12.66 मधुबनी
	2	9.12.65 विक्रमगंज
	3	24.7.60 इंदौर
	4	28.7.60 इंदौर
255.	1	भूय29.3.57 मीरा डायरी
	2	8.5.61 गोमरी
256.	1	6.3.68 भागलपुर
	2	भूय 23.9.55
	3	1.2.61 बलिया
	4	28.2.63 नोआरागोअरा
257.	1-3	5.1.63 तारापीठ
258.	1	4.8.58
	2	भूय 3.6.58
	3	7.2.64 फास्टरपुर
	4	30.12.49 पवनार
259.	1	भूय 6.4.56
	2	18.7.64
	3	11.12.58 वढवाणसिटी
260.	1	11.12.58 वढवाणसिटी
	2-3	4.6.64 ठाणेगांव
	4	19.1.58
261.	1	28.9.60
	2	23.4.58 रत्नागिरी
	3	सर्वो जन50.362
262.	1	31.8.60 कस्तूरबाग्राम

	4	2.3.63 वैद्यपुर
263.	1	2.3.63 वैद्यपुर
	2	24.2.62 दिग्नगर
	3	4.6.64 ठाणेगांव
	4-5	15.8.67
264.	1	भूय3.5.57 मीरा डायरी
	2	1.11.58 आणंद
265.	1	भूय 14.4.69
	2	पत्र द्वारको 16.6.56
	3	27.7.60 इंदौर
	4	मैं 73.622
	5	सर्वो जन 50.367
266.	1	सर्वो सितं 49.117
	2-6	
267.	1-4	
268.	1	
	2	भूय 10.5.57
	3	3.1.63 बसौजा
269.	1	1.6.58 पंढरपुर
	2	मै 90.96
	3	12.12.62 सादी गांछी
270.	1	23.8.58 पिंपळनेर
	2	भूय 24.8.56
	3	सर्वो 2.11.51
	4	प्रेप 28/175
	5	पत्र मनमोहन 8.4.56
271.	1	19.1.58
	2-3	11.11.58 सणोसरा
	4	भूय 9.6.69
272.	1	8.5.65 गोपुरी
	2	2.4.65 पवनार
	3	13.9.66
	4	7.12.67 पूसारोड़
	5	मई 1966
273.	1	25.2.65 पवनार
	2	15.9.58 नराबद

	5	25.8.60 इंदौर
	6	3.10.68
274.	1	22.10.58
	2-3	27.3.67 वैनी
	4	भूय 9.6.69
275.	1	5.1.63 नागपीठ
	2-3	रामरस 10-11
276.	1	रामरस 22
	2-4	रामरस 58-59
277.	1	रामरस 60
	2	रामरस 62
	3	रामरस 66
	4	रामरस 72
	5	रामरस 42
278.	1	रामरस 107
	2	16.10.68 (कालिंदीताई नोटस्)
	3	8.5.62 कुमरीकटा
	4	भूय 4.11.68

अमृत-बिंदु

279.	1	पत्र कृष्णदासजी 18.12.59
	2	प्रेप 29/182
	3	प्रेप 187/67
	4	पत्र रामेश्वरजी 20.1.60
	5	पत्र अंबादास 4.1.52
	6	पत्र वेंकटरमण 27.4.55
	7	सर्वो सितं 52.परि10
	8	पत्र डॉ. जोशी 2.1.57
	9	पत्र पंढरी 14.11.59
	10	पत्र सुशीला 8.2.58
280.	1-2	पत्र गौतम 16.7.57
	3	पत्र द्वारको 3.1.59
	4	मैं 67.159
	5	भूय 27.12.58 बालम
	9	पत्र सरस्वतीप्रसाद 9.4.56
	10	प्रेप 31/198
	11	प्रेप 42/277
281.	1	पत्र बाबा लक्ष्मणदासजी 13.4.62
	2	पत्र बाबाजी 17.4.62
	3	पत्र पारसबाबू 9.2.58
	4	पत्र लालबिहारी 27.6.55
	5	भूय 8.11.57
	6	पत्र श्रीमन्‌जी 7.10.52
	7	पत्र सुखराम 13.8.53
	8	पत्र जयप्रकाशजी 20.10.52
	9	मैं 67.371
	10	प्रेप 74/76
	11	प्रेप 127/9
	12	प्रेप 158/66
282.	1	पत्र हरिश्चंद्र 12.7.61
	2	पत्र द्वारको 5.10.61
	3	पत्र विमला 5.12.53
	4	प्रेप 6/31
	5	पत्र झवेरभाई 27.11.56
	6	प्रेप 8/53
	7	पत्र रामभाऊ 25.7.56
	8	प्रेप 23/141
	9	प्रेप 29/184
	10	पत्र गिरधर 1.11.55
	11	16.12.60 काशी
283.	1	29.12.58 सिद्धपुर
	2	14.11.61 बरहाट
	3	मैं सितं 69
	4	मैं 67.104
	5	भूय 19.9.58
	6	भूय 7.11.58
	7	भूय 11.10.57
	8-9	भूय 6.12.57

	2	प्रेप 95/1
	3	विप्र 18.7.64
	4	31.5.64 किन्हाळा
	5	पत्र चारुबाबू 15.5.66
	6	5.6.66 रानीपतरा
	7	13.9.71 उषा डायरी
	8	पत्र महेश 18.7.59
	9	20.12.62 कान्दी
	10	भूय 23.9.55
285.	1	प्रेप 172/23
	2	पत्र मनोहरजी 4.1.52
	3	पत्र सतीशप्रकाश 5.11.55
	4	पत्र दिवाकर 29.10.57
	5	पत्र गोविंदन् 9.12.51
	6	प्रेप प्रबोध से
	7	पत्र सुखराम 17.1.72
	8	प्रेप 65/5
	9	27.12.63 रायपुर
	10	पत्र रामभाऊ 14.1.59
	11	पत्र शिवानंदजी 23.4.24
	12	प्रेप 4/21
286.	1	प्रेप 36/232
	2	प्रेप 38/250
	3	प्रेप 56/43
	4	पत्र रविशंकर 18.1.52
	5	पत्र एली 30.9.62
	6	पत्र सद्रेजी 9.1.63
	7	पत्र दीपचंदजी 1.7.63
	8	पत्र दिवाकर 21.6.60
	9	पत्र गौतम 14.2.60
	10	पत्र सत्यनारायण 28.1.54
287.	1	मै 77.426
	2	मै 71.1151
	3	मै 78.184
	4	मै 72.1231
	5	मै 67.355
	8	मै 81.786
	9	मै 67.356
	10	मै 79.55
288.	1	मै 67.479
	2	मै 78.468
	3	मै 78.970
	4	मै 77.430
	5	मै 81.808
	6	मै 79.291+78.705
	7	मै 69.682
	8	मै 81.677
	9	मै 71.1151
	10	मै 74.1054
289.	1	मै 77.95
	2	मै 71.864
	3	मै 70.821
	4	मै 70.288
	5	मै 76.107,349
	6	मै 71.1061
	7	मै 77.783
	8	मै 79.771
	9	मै 73.199
	10	मै 72.937
290.	1	मै 70.496
	2	मै 74.976
	3	मै 73.400
	4	मै 68.88
	5	मै 77.855
	6	मै 71.549
	7	मै 74.1054
	8	मै 76.87
291.	1	मै 67.345
	2	मै 80.254
	3	मै 74.706
	4	मै 77.494
	5	मै [illegible]

	8	मै 74.352
	9	मै 70.351
	10	मै 78.740
	11	मै 77.853
292.	1	मै 76.870
	2	मै 77.593
	3	मै 79.193
	4	27.10.58 सावली
	5	मै 80.7
	6	मै 77.782
	7	मै 79.836
	8	मै 77.2
	9	मै 70.352
	10	मै 71.795
293.	1	मै 76.483
	2	मै 67.250
	3	मै 74.888
	4	भूय 5.8.58
	5	विप्र 12.8.58
	6	सर्वो सितं 52परि15
	7	सर्वो सितं 52.परि19
	8	पत्र मुन्नालालजी 27.2.51
294.	1	पत्र यमुनाताई 1.2.51
	2	पत्र मीरा 26.1.60
	3	पत्र मीरा 20.4.60
	4	प्रेप 110/70
	5	प्रेप 111/73
	6	18.9.58 चिंचपाड़ा
	7	भूय 31.3.69
295.	1	पत्र प्रभाकर 9.11.60
	2	पत्र गोविंदन् 3.9.60
	3	भूय 10.6.55
	4	भूय 12.8.55
	5	पत्र रमाकांत 20.9.59
	6	पत्र वत्सला 19.3.59
	2	पत्र प्रमोद 5.9.56
	3	पत्र शांताबाई 13.7.55
	4	पत्र साधुजी 1.11.55
	5	26.12.58
	6	22.2.58 जोग
	7	विप्र 15.8.58
297.	1	पत्र कृष्णचंद्रजी 14.12.58
	2	पत्र ज्ञानदेव 9.1.58
	3	22.11.58 राजकोट
	4	सर्वो मार्च 52.1327
	5	भूय 25.11.55
	6	मवि 3.13
	7	साधना 24.5.56
298.	1	पत्र द्वारको 23.8.59
	2	10.2.66 जमशेदपुर
	3	विप्र 20.2.66
	4	विप्र 8.12.67
	5	18.9.67 वैनी
	6	21.8.61 खसोल
	7	मै 67.11
	8	विप्र 16.7.64
299.	1	भूय 26.9.58
	2	भूय 5.10.56
	3	15.10.58 रंगपुर
	4	21.12.58 सिद्धपुर
	5	6.10.58 राजपारड़ी
	6	11.7.60 शाजापुर
	7	11.9.71 उषा डायरी
	8	पत्र दिवाकर 3.11.61
	9	18.9.58 चिंचपाड़ा
300.	1	14.3.63 कलानवग्राम
	2	20.10.58 देवगढ़बारिया
	3	15.10.71 उषा डायरी
	4	सर्वो जुला 52.परि27
	5	पत्र बाबाजी 8.9.60

	9	मैं 72.396
301.	1	मैं 67.98
	2	मैं 71.1152
	3	प्रेप 34/222
	4	प्रेप 73/67
	5	12.1.65
	6-7	5.2.66
	8	1.9.65 रींवा
	9	23.8.68
	10	30.12.49 पवनार
	11	भूय 31.3.69
302.	1	19.3.65
	2	20.11.65
	3	मैं 13.277
	4	मैं 10.400
	5	5.3.65
	6	भूय 24.8.56
	7	भूय 23.9.55
	8	पत्र हरिश्चंद्र 3.11.61
	9	मै सितं 80 (18.12.58)
303.	1	8.11.58 भावनगर
	2	1.12.66 मुजफ्फरपुर
	3	14.4.68 रानीपतरा
	4	23.11.63 भैंसा
	5	रामरस 115
	6	रामरस 119
	7	रामरस 124
	8	रामरस 125
	9	रामरस 126
304.	1	रामरस 89
	2	23.1.51 जगन्नाथ
	3	मैं 71.783
	4	भूपु 8.6
	5	भूपु 8.10
	6	भूपु 8.16

प्रश्नोत्तर

305.	1	7.8.70 पवनार
	2	पत्र प्रेमाबाई 24.9.60
	3	3.11.65 बलिया
	4	24.11.54
	5	28.3.70
306.	1	4.5.70 गोपुरी
	2	भूय 3.1.72
	3	20.5.70 गोपुरी
307.	1-2	20.5.70 गोपुरी
	3	19.8.67 वैनी
	4	भूय 14.11.56
	5	पत्र देशराज 19.1.51
308.	1	मैं 66.684
	2	मैं 73.198
	3	मैं 74.442
	4	मैं 72.496
	5	मैं 73.301
309.	1	मैं 73.301
	2	मैं 77.1122
	3	मैं 77.165
	4	मैं 71.366
	5	मैं 69.374
	6	मैं 72.1230
	7	मैं 76.500
310.	1	मैं 77.64
	2	मैं 79.756
	3	मैं 70.208
	4	मैं 73.1143
	5	मैं 73.198
	6	मैं 69.219
	7	मैं 80.271
	8	मैं 81.864
	9	मैं 77.952

	4	मैं 74.442
	5	मैं 66.1103
	6	22.1.64 देवरबीजा
	7	भूपु वर्ष 5, अंक 19, पृष्ठ5
312.	1	भूपु वर्ष5. अंक19. पृष्ठ5
	2-3	भूय 15.10.57 + 7.10.66
	4–6	भूय 7.10.66
313	पूर्ण	भूय 7.10.66
314.	1–3	सर्वो सितं 52.29-30
	4–6	मैं 65.172
315.	1	मैं 65.172
	2	रामरस 57
	3-4	रामरस 70
	5-6	रामरस 115-16
	7-8	रामरस 120-21
316.	1	रामरस 121
	2-3	रामरस 124
	4	रामरस 126
	5	मैं 76.596
	6	मैं 77.177
	7	मैं 71.489
	8	मैं 78.546
317.	1	मैं 71.681
	2	मैं 71.728
	3–5	मैं जून 96.151-52
318–20	पूर्ण	मैं जून 96.152–54
321–23	पूर्ण	मैं जून 96.155–159
324–32	पूर्ण	मैं जून 96.163–170
333–38	पूर्ण	मैं जून 96.170–178
339	पूर्ण	मैं जून 96.181–83
340.	1-2	मैं जून 96.181–83
	3–6	मैं जून 96.189-90
341	पूर्ण	मैं जून 96.189-90
342.	1	मैं जून 96.189-90
	2–5	मैं जून 96.195

344.	1	मैं जून 96.199
	2-3	मैं जून 96.201–3
345.	1–3	मैं जून 96.201–3
	4	मैं जून 96.205
346.	1	मैं जून 96.206
	2–4	मैं जून 96.209-10
347.	1–4	मैं जून 96.209-10
	5-6	तत्त्वबोध 98-99
348	1-2	तत्त्वबोध 98-99
	3-4	तत्त्वबोध 42
349.	1	तत्त्वबोध 48
	2	तत्त्वबोध 60
	3	13.11.58 मालपरा
350.	1	तत्त्वबोध 93
	2-3	मैं जून 96.200
	4	सर्वो सितं 52.परि13
351.	1	13.11.58 मालपरा
	2	मैं 11.351
	3	सर्वो जुला 52.परि31-32
352.	1	तत्त्वबोध 78
	2-3	मैं जून 96.200
	4	भूपु 9.10

पूर्ति

355.	1–4	खंड 13.6
	5	8.3.62
356.	1-2	10.4.62 नलबाड़ी
	3	खंड 4.408
	4-5	28.7.60 इंदौर
357.	1	खंड 18.329
	2	खंड 12.367
	3	खंड 4.335
	4	6.4.64 सेवाग्राम
358	पूर्ण	19.4.63 गोघाट
359.	1	खंड 13.94

	5	खंड 18.319
	6	खंड 9.226
	7	खंड 17.137
360.	1	खंड 17.278
	2	मै 68.135
	3	17.12.60
	4	भूय 11.1.57
361.	1-2	24.10.67 वैनी
	3	20.3.64 तुमसर
	4	मै 68.183
	5	सर्वो सितं 53.65
	6	सर्वो अक्तू 52
	7	भूय 22.3.57
362.	1-3	खंड 4.389-91
	4	भूय 9.6.69
	5	17.12.60
	6	17.11.65
363.	1	खंड 4.404
	2	1.1.64 रायपुर
	3	भूय 5.1.55
364.	1	11.9.69 रांची
	2	3.8.80 कुसुम डायरी
	3	12.2.80 कुसुम डायरी
	4	18.4.80 कुसुम डायरी
	5	वेदामृत 21
	6	वेदामृत 34
	7	12.5.60
365.	1	पत्र भाऊ 8.7.61
	2	पत्र गोपालकाका 4.2.34
	3	8.8.58 चालीसगांव
366.	1	9.8.58 चालीसगांव
	2	सर्वो सितं 50.170
	3	16.9.71 उषा डायरी
	4	24.11.54
367.	1	1.10.58 सियालज
	2	8.12.54
369.	1	1.10.58 सियालज
	2	8.4.60 बागपत
	3	1.12.61 बलिया
	4	विप्र 7.1.61 (बोधगया)
370.	1	7.10.49 सेवाग्राम
	2	9.9.49 वर्धा
	3	11.10.61 बारुवती
	4	30.1.64 बिलहा
	5	19.7.64 पवनार
371.	1	23.6.66
	2	9.5.65
	3	18.6.67 वैनी
	4	20.2.66 जमशेदपुर
	5	14.3.63 कलानवग्राम
372.	1	14.3.63 कलानवग्राम
	2	18.7.53 हजारीबाग
	3	मै 85.523
	4	मै 81.803
	5	भूय 17.10.58
	6	16.7.64
373.	1	14.3.63
	2	14.11.61 बरहाट
	3	24.9.58 व्यारा
	4	सर्वो फर 52.1278
374.	1	20.8.66 वैनी
375.	1	15.8.49 सेवाग्राम
	2-3	2.10.66
376.	1-2	2.10.66
	3	7.1.69 राजगीर
	4-5	12.9.66 वैनी
377	पूर्ण	12.9.66 वैनी
378.	1	भूय 31.1.58
	2	26.7.60 इंदौर
	3	नंदुरबार 1934

	2	भूय 23.9.55
	3	11.12.58 सुरेंद्रनगर
	4	25.5.63 राजनगर
381.	1	25.5.63 राजनगर
	2	भूय 10.10.58
	3	21.12.58 अमदाबाद
	4	1966
	5	21.12.58 साबरमती
	6	27.9.58 बारडोली
382.	1	24.7.60 इंदौर
	2	27.10.63 करमडीह
	3	3.6.66 रानीपतरा
383.	1	3.3.64
	2	सर्वो फर 52.1273
	3	13.7.53
	4	10.5.65 गोपुरी
	5	भूदानयज्ञ वार्ता 11.8.55
384.	1–3	12.5.63 कलकत्ता
385.	1-2	15.9.71 उषा डायरी
	3	सर्वो जुला 52.परि14
	4	सर्वो फर 52.1271
	5-6	9.11.63 अताबिरा
	7	1.2.64 बिलासपुर
386.	1	1.2.64 बिलासपुर
	2	सर्वो मार्च 52.1331
	3-4	3.3.64
387.	1	3.3.64
	2-3	18.4.62 धमधमा
388.	1-2	21.12.58 अमदाबाद
	3	5.9.58 घाटली
	4	भूय 1.8.58 पदयात्रा डायरी
	5	भूय 23.9.55
389.	1	25.9.58 वेड़छी
	2	पत्र सत्यमभाई 25.4.62
	3	भूय 27.12.58
390.	1	23.12.58 कलोल
	2	4.6.63 पाथरप्रतिमा
	3	29.10.58 बड़ौदा
391.	1	25.3.65 पवनार
	2	2.8.69 रांची
	3	29.12.58 सिद्धपुर
392.	1-2	13.7.58 जामखेड
	3	सर्वो अग 52.परि 5
	4	22.9.58 सोनगढ़
393.	1	अग1960 इंदौर
	2	भूय 21.2.58
	3	भूय 18.4.58
	4	26.5.63 रुद्रनगर
394.	1	पत्र द्वारको 11.5.52
	2	9.9.64 पवनार
	3	25.7.60 इंदौर
	4	पत्र मित्तलजी 30.5.60
	5	8.11.58 भावनगर
395.	1	भूय9.11.56 निर्मला डायरी
	2	सर्वो नवं 49.227
	3-4	16.1.58
396	पूर्ण	16.1.58
397.	1–3	16.1.58
	4-5	18.9.58 नवापुर
398.	1	5.10.58 शुक्लतीर्थ
	2	7.7.58 बीड़
	3	विचिं 52.160
	4	भूय8.3.57 पदयात्रा डायरी
399.	1	27.5.58 गारेगांव
	2	23.12.58 कलोल
	3	6.5.58 मीरा डायरी
400	पूर्ण	19.7.45 गोपुरी
401.	1	19.7.45 गोपुरी
	2	18.4.63 पुखुरियापथ
	3-4	16.9.71 उषा डायरी

	4	16.1.58 इनगळ
403.	1	मै 11.792
	2	13.11.58 मालपारा
	3-4	विचिं 52.152
404.	1	23.11.49 पवनार
	2	20.8.60 इंदौर
	3	20.10.61 नजीरा
	4	16.2.68 मुंगेर
405.	1	3.4.67 वैनी
	2	11.8.58+2.10.58
	3	25.3.65 पवनार
406.	1	भूय 22.2.54
	2-3	11.9.58
407.	1	20.12.58 अमदाबाद
	2-3	8.12.67 पूसारोड़
	4	18.7.65 पवनार
408.	1	30.5.58 पंढरपुर
	2	29.5.58 पंढरपुर
	3	पत्र पारसबाबू 5.9.59
	4	31.8.58 नंदुरबार
409.	1	पत्र निर्मला 15.3.61
	2	पत्र रविशंकर 15.5.59
	3	3.3.64 आमगांव
	4	पत्र द्वारको 18.3.52
	5	विप्र 9.9.64
	6	पत्र लोचनदासजी 17.3.57
410.	1	पत्र अनसूया 1.4.59
	2	9.8.58 चालीसगांव
	3	11.9.64 पवनार
	4	2.8.49
	5	2.10.58 धामरोद
411.	1	2.10.58 धामरोद
	2	भूय 13.12.57
	3	सर्वो जुला 52.परि 13
	4	26.5.63 रुद्रनगर
412.	1-2	15.3.67 वैनी
	3-5	11.9.61
413.	1	भूय 24.2.67
	2	मवि
	3	24.8.60 इंदौर
	4	11.11.63 संबलपुर
	5	30.10.68
414.	1	11.9.61 हेनसुवापुखुरी

•

शुद्धिपत्र

खंड. पृष्ठ. लाईन	अशुद्ध	शुद्ध
1.प्रास्ता 5. अंतिम	**त्वदीय**	**त्वदीयं**
1. प्रास्ता 9.1	प्रथमावृत्ति की	ऋग्वेदसारः के प्रथमावृत्ति की
1.6.3	दवस्य नाम	देवस्य नाम
1.92.10	आरोहन्नुतरां	आरोहन्नुतरां
1.93.4	गणांना त्वा	गणानां त्वा
1.95.2	विश्वामानुषः	विश्वमानुषः
1.96.14	श्रद्धा सूर्यस्य	श्रद्धां सूर्यस्य
1.96.14	श्रद्धापयेहः	श्रद्धापयेह
1.96.16	भुवना संच	भुवना सं च
1.100.18	रस न आयेगा	रस नहीं आयेगा
1.102.17	10558	10552
1.111.14	ज्याति	ज्योति
1.116. 22	जाकी रही	जिन्ह कें रही
1.162.18	इन उग्र ऋषि ने	उग्र ऋषि ने
1.187.17	सिर्फ दो जगह	सिर्फ दो-तीन जगह
1.189.17	ॐ भुर् भुवः	ॐ भूर् भुवः
1.189.22	'अवेम वोहु'	'अशेम वोहु'
1.190.17,20,21,25,30	भुर् भुवः	भूर् भुवः
1.202.20	**वाळ्वरे**	**वाळ्वारे**
1.227.1	तद् धामं	तद् धाम
1.227.19	यजन करता है।	यजन करता है। और वह स्वर्गोपम हो गया। यानी उसका जीवन स्वर्गमय है।
1.232.18	हम नेत्रों शुभ ही	हम नेत्रों से शुभ ही
1.261.11	तो मैं कैसे	तो मैं घी कैसे
1.272.16	माता छोड्या	मातु छोड़ि
1.297.4	**पब्बट्ठो व**	**पब्बतट्ठो व**
1.301.25	(10.8.3)	(10.18.3)
1.330.अंतिम	–पॅरा हो गया है–	–पॅरा नहीं चाहिए, चालू (रनिंग) है–
1.346.18	ॐकार के सूर में	ॐकार के सुर में

1.425.2.17	310	309
1.425.2.18	307	306
1.426.1.15	113.187	113.286
1.427.1.23	विश्वतचक्षुरुत	विश्वतश्चक्षुरुत
1.427.1 नीचे से 6	10.32.2	10.23.2
1.427.2.22	308	307
1.427.2 नीचे से 3	स्वस्तिपंथामनु	स्वस्ति पंथामनु
1.431.2.13	308	307
1.431.2.15	307	306
1.431.2 नीचे से 2	307	306
1.434.23	3 मैं 71.850	3 मैं जन 71.850
1.442.2.15	टेनीसन	'टेनीसन' शब्द ज्ञानेश्वरी के बाद चाहिए
1.444.1 नीचे से 2	व्यास ... 310	व्यास ... 309
1.445.1.13		के बाद जोड़ना एष देवो विश्वकर्मा श्वे 51 पृ. 340
1.446.1.13	यो वै धर्मः	यो वै स धर्मः
1.446.1 अंतिम	सच्च त्यच्चाभवात्	सच्च त्यच्चाभवत्
2.प्रास्ता 6.17	ऐस प्रमुख	ऐसे प्रमुख
2.79. नीचे से 5	मुदमाप देवाः	मुदमाप देवः
2.163.6	लोग ते हैं	लोग कहते हैं
2.163.6	के रा	के द्वारा
2.165.20	पोषण करनेवाला के	पोषण करनेवाले के
2.224.4	यः (नीचे के लाईन में आया है)	यः (ऊपर की लाईन में चाहिए)
2.251.21	दांत लोक	दान्त लोक
2.285 नीचे से 8	(अष्टा. बृ. 80)	(अष्टा. बृ. 60)
2.313.12	**एकमेकां करूं साह्य**	**एक एका साह्य करूं**
2.323.2. अंतिम	सूत्र चुनाव	सूत्र-चुनाव
2.376 नीचे से 3	परिणाम	परिमाण
2.377. नीचे से 3	का मूंह	का मुंह
2.387 नीचे से 3 प्रथम	**अव्यहार्यम्**	**अव्यवहार्यम्**
2.411. नीचे से 3	**यो वे भूमा**	**यो वै भूमा**
2.413.20	वह शांस्त्रीय	वह शास्त्रीय
2.416.4	**गयम**	**गमय**
2.422. अंतिम	**काय जनांसवें**	**काय या जनाशीं**

2.478.21	(ब्रसू 1.2.28)	(ब्रसू 1.2.24)
2.480.6	**विचित्र अति समझी**	**बिचित्र हरि! समुझि**
2.492.26	**दृष्टार्था हि विद्या**	**दृष्टार्था च विद्या**
2.494 नीचे से 6 (हेडिंग)	सूत्र चुनाव	सूत्र-चुनाव
2.527.2 नीचे से 10	बृ 80	बृ 60
2.528.2.7	श्वे 51	श्वे 50
2.529.2 नीचे से 3	ए एको	य एको
2.530.1.20	श्वे 28	श्वे 27
2.530.1 नीचे से 7		वृक्ष इव स्तब्धः – 'विश्वस्यैकं परि' के बाद चाहिए
2.533.1.21	80 आकाशे	60 आकाशे
2.535.1.10	असंमजसमिव	असमंजसमिव
2.535.1.12	4.1.4	4.1.1
2.535.1.14	उत्कमिष्यन् एवं	उत्क्रमिष्यत् एवं
2.535.1.16	परपक्षनिराकरेण	परपक्षनिराकरणेन
2.535.2.4	दृष्टार्था हि	दृष्टार्था च
2.535.2.10	रचनानुपतेश्च	रचनानुपत्तेश्च
3.100 नीचे से 7	परामात्मा	परमात्मा
3.258 नीचे से 8,9	श्रम-संजात वारिणा	श्रमसंजात-वारिणा
3.275.10-11	विचार-प्रचार	विचार-प्रवाह (?)
3.318.1	संगीत-शात्र	संगीत-शास्त्र
3.464.1.11	454	455
3.467.1.9	नमोः नमः स्तेनानां	नमो नमः स्तेनानां
3.469.2.11	शास्त्रीय-संयमेन	शास्त्रीय संयमेन
4.प्रा 13.6	**येथ प्रियासी भेटे**	**तेथ प्रियाची परमसीमा तो भेटे**
4.54.18	आपुल्याचा जिह्वाळा	आपुल्याचा कळवळा
4.125.12	निमित्रमात्रं	निमित्तमात्रं
4.129.11	अगले पांच	अगले तीन
4.146 नीचे से 2	करते	कहते
4.247. नीचे से 9	जदगुरू	जगद्‌गुरु
4.265 नीचे से 3	अर्थ हैं	अर्थ है
4.334.13 (हेडिंग)	**सोलहंवां**	**सोलहवां**
4.501.2.11	आपुल्याचा जिह्वाळा	आपुल्याचा कळवळा
4.502.2 नीचे से 1	द्विशरं	द्विःशरं
4.504.1.6	येथ प्रियासि	तेथ प्रियाची

5.155.6	199	198
5.155.7	201	200
5.155.8	204	203
5.155.9	206	205
5.155.10	211	210
5.199.14	बीचे में	बीच में
5.224.3	काम-कौतुकम्	काम कृत कौतुक (बाल 85)
5.256.13	श्वास श्वास... श्वास	सांस सांस... सांस
5.306.16	दोन्हीं सामर्थ्ये	दोनी सामर्थ्ये
5.489.9	प्राणेय देवमुनयः	प्रायेण देवमुनयः
5.496.10-11	तरुतल.. किये आप	तरुतर ... किए आपु
5.496.15	कृष्ण से	कृष्ण सो
5.497.9	भावी तद्	भावि तद् (?)
5.506.2.3	43	432
5.506.2.8	40	403
5.506.2.9	47	472
5.506.2.13	46	468
5.506.2.15	45	459
5.506.2.16	40	401
5.506.2.17	43	433
5.506.2.20	47	475
5.506.2.23	39	396
5.506.2.29	43	433
5.506.2.30	46	460
5.508.2.6	47	478
5.508.2.9	44	444
5.508.2.12	47	476
5.508.2.15	46	466
5.508.2.22	42	421
5.508.2.23	42	421
5.508.2.24	38	381
5.508.2.26	46	462
5.508.2.27	46	463
5.508.2.28	47	470
5.508.2.29	38	380
5.508.2.30	46	467
6.117.20	वर्डस्वर्थ	वर्ड्स्वर्थ
6.167.9	भजन्तु देवान्	भजन्तु देवताः (?)
6.173.19	नहि वरघाताय	न हि वरघाताय
6.183.19	आत्मास्थिति	आत्मस्थिति

6.416.2.2		कुंदः के बाद कुमुदः 63.87 चाहिए
6.416.2.23	दमः 91	दमः 92
6.414.2.24	दमनः 22	दमनः 21
6.431.1.19	तुलसीदासजी	नानक
6.431.2.1	ऋसा 10.13.8	ऋसा 10.13.9
6.432.1.14	मनु 4.70	मनु 4.71
6.432.2.3	धम्मपद 9.6	धम्मपद 9.1
6.433.1.7	मनु 2.59	मनु 2.49
6.434.1.4	शांतै अनन्यमतिभिः	शांतैः अनन्यमतिभिः
6.434.1.7	शिणवील म्हातारा	शिणवील म्हणती म्हातारा
6.434.1.8	शैशवेऽभ्यस्तवृतीनां	शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां
6.434.1.17	संतसंगत	सतसंगत
7.311.12	होत	होता
7.344.13	स्वतंत्रा	स्वतंत्रता
7.397.9	निस्वप्न	निःस्वप्न
7.400.14 (हेडिंग)	(2)	(3)
7.402.21 (हेडिंग)	(3)	(4)
7.411.17	**संकल्प उन्मूलय**	**संकल्पं उन्मूलय**
7.436.10	**बुद्धासी ही**	**बुद्धीसी ही**
7.472.2 अंतिम	ज्ञाने 13.440	ज्ञाने 13.441
8.189.14	**विथ दाय**	**विथ दाइन**
8.225.15	**नामनिर्घोषितः**	**नामभिर्घोषितः**
8.227. नीचे से 6	**विध्येनमिह**	**विद्ध्येनमिह**
8.236.8	**पचंविधं**	**पंचविधं**
8.419.2 नीचे से 3	खातिमुन	खातिमुन्
8.422.1.2		अर्जुन, अरबस्तान के बाद चाहिए
8.428.2.3	219	219 पत्र अच्युतभाई 4.7.59
9.163 नीचे से 2	अरण्य 30	अरण्य 31
9.167.15	गय	गयी।
9.203.9	(ज्ञाने 13.440)	(ज्ञाने 13.441)
9.332.1	गंगासागर	सागर (?)
9.333 नीचे से 11	1.70	1.71
9.498.1.13	1.70	1.71
9.498.2.15	अयो 5	अयो 51
9.499.1.16	अरण्य 30	अरण्य 31
9.503.2.4	ज्ञाने 13.440	ज्ञाने 13.441
10.95.2	जीवनस्वरूप	जीवस्वरूप